जार्ज वाशिंगटन
[व्यक्ति और स्मारक]

लेखक

मारकस कनलिफ़

अनुवादक

हरिश्चन्द्र एम. ए.

प्रकाशक

अवध पब्लिशिंग हाउस

लखनऊ

प्रथम संस्करण ५०००] १९६३ [मूल्य १·५० न.पै.

सूची

काल-क्रम

जार्ज वाशिंगटन १७३२-१७९९

१७३२	२२ फरवरी (११ फरवरी पुरानी पद्धति के अनुसार)	ब्रिज्स क्रीक (वेक-फील्ड), वैस्टमोरलैण्ड काऊंटी, वर्जीनिया, में जन्म।
१७४३	१२ अप्रैल	पिता-आगस्टीन वाशिंगटन की मृत्यु।
१७४९	२० जुलाई	वर्जीनिया की कलपैपर काऊंटी के भू-मापक के रूप में नियुक्ति।
१७५१	सितम्बर से मार्च, १७५२ तक	अपने सौतेले भाई, वाशिंगटन के साथ बारबेडोस जाना।
१७५२	६ नवम्बर	वर्जीनिया मिलिशिया में मेजर बनना।
१७५३	३१ अक्तूबर से १६ जनवरी, १७५४ तक	गवर्नर डिनविड्डी द्वारा (फोर्ट ले बोफ) में फ्रांसीसी सेनापति की ओर अन्तिम चेतावनी-पत्र देने के लिए भेजा जाना।
१७५४	मार्च से अक्तूबर तक	सीमान्त क्षेत्र के अभियान में मिलिशिया का लैफ्टीनैन्ट कर्नल बनाया जाना।
१७५५	अप्रैल से जुलाई तक	जैनरल ब्रैडाक का परिसहाय बनाया जाना।
	अगस्त १७५५ से दिसम्बर १७५८ तक	सीमान्त क्षेत्र की सुरक्षा का दायित्व निभाने के लिए वर्जीनिया रेजीमेन्ट में कर्नल का पद प्राप्त करना।
१७५८	जून-नवम्बर	फोर्ट ड्यूकवेने के विरुद्ध फौर्ब्ज अभियान में भाग लिया।
	२४ जुलाई	फ्रैड्रिक काऊंटी, वर्जीनिया के बर्गेस चुने गए।
१७५९	६ जनवरी	कमीशन से त्याग-पत्र दिया। श्रीमती मर्था डैंडरिज कस्टिस से विवाह किया।
१७६१	१८ मई	पुनः बर्गेस निर्वाचित हुए।
१७६२	२५ अक्तूबर	ट्रूरो पैरिश, फेयर फैक्स काऊंटी, के वेस्ट्रीमैन नियुक्त हुए।
१७६३	३ अक्तूबर	ट्रूरो पैरिश के पोहिक गिर्जाघर के वार्डन नियुक्त हुए।
१७६५	१६ जुलाई	फेयर फैक्स काऊंटी के बर्गेस चुने गए

		(पुन: १७६८, १७६६, १७७१, १७७४ में बर्गेस चुने गए)
१७७०	अक्तूबर	फेयर फैक्स काऊंटी के शांति-न्यायाधीश नियुक्त हुए।
१७७३	मई-जून	न्यूयार्क नगर को ओर यात्रा।
१७७४	जुलाई	फेयर-फैक्स काऊंटी में सम्पन्न बैठक के सदस्य तथा सभा-पति इसके द्वारा कई प्रस्ताव पारित हुए।
	अगस्त	विलियम्जबर्ग में सम्पन्न प्रथम वर्जीनिया प्रान्तीय सम्मेलन में शामिल हुए।
	सितम्बर-अक्तूबर	फिलेडैल्फिया में सम्पन्न प्रथम सार्वदेशिक कांग्रेस में वर्जीनिया के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए।
१७७५	मई-जून	दूसरी सार्वदेशिक कांग्रेस में प्रतिनिधि के रूप में।
	१६ जून	संयुक्त-राज्य अमेरिका की सेना के प्रधान-सेनापति चुने गए।
	३ जुलाई	बैस्टन के क्षेत्र में सार्वदेशिक सेना की बागडोर हाथ में ली।
१७७६	१७ मार्च	बोस्टन कब्जे मे आ गया।
	२७ अगस्त	लांग द्वीप का संग्राम।
	२८ अक्तूबर	ह्वाइट प्लेन्ज का युद्ध।
	२५-२६ दिसम्बर	ट्रेन्टन, न्यू जर्सी में हैसियनों पर विजय।
१७७७	३ जनवरी	प्रिन्सटन पर विजय, मोरिस टाउन, न्यू जर्सी में शरद् मुख्यालय।
	११ सितम्बर	ब्रैन्डीवाइन की लड़ाई।
	४ अक्तूबर	जर्मन टाऊन की लड़ाई।
	१७ अक्तूबर	साराटोगा पर बरगोयने का आत्म-समर्पण।
१७७७-७८		वैलीफोर्ज में शरद् गुजारना।
१७७८	जून	ब्रिटिश-सेना द्वारा फिलेडैल्फिया को खाली किया जाना। मोनामाऊथ की लड़ाई।
१७७८-७६		मिडल-ब्रुक, न्यू जर्सी, में शरद् मुख्यालय।

१७८०	जुलाई	(रोचम्ब्यू के अधीन) फ्रांसीसी बेड़े व सेना का न्यूपोर्ट, रोड द्वीप, में पहुंचना।
१७८१	अगस्त-अक्तूबर	यार्कटाऊन, वर्जीनिया पर अभियान, जिसके फल-स्वरूप कार्नवालिस का हथियार डाल देना (१९ अक्तूबर)।
१७८३	१५ मार्च	असंतुष्ट अफसरों का 'न्यूवर्ग भाषण' के प्रति उत्तर।
	८ जून	राज्यों को परिपत्र।
	१९ जून	सिनसिनेटी सोसाइटी का प्रमुख-प्रधान निर्वाचित होना।
	४ दिसम्बर	फ्रांसीस टेवर्न, न्यू यार्क नगर, में अफसरों से विदाई।
	२३ दिसम्बर	एनापोलिस में कांग्रेस को कमीशन से त्यागपत्र की सूचना देना।
१७८४	दिसम्बर	पोटोमैक नदी में नौनाम्यता के विषय में एनापोलिस में सम्पन्न सम्मेलन में भाग लेना।
१७८५	१७ मई	पोटोमैक कम्पनी का प्रधान बनना।
१७८७	२८ मार्च	फिलेडेल्फिया में सम्पन्न फैडल सम्मेलन में वर्जीनिया के प्रतिनिधि के रूप में शरीक होना।
	२५ मई	सम्मेलन का अध्यक्ष चुना जाना।
	१७ सितम्बर	संविधान के प्रारूप पर हस्ताक्षर होना: सम्मेलन का स्थगन।
१७८८	१८ जनवरी	विलियन एण्ड मेरी कालेज का चान्सलर निर्वाचित होना।
१७८९	४ फरवरी	सर्व-सम्मति से संयुक्त-राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति चुना जाना।
	३० अप्रैल	न्यूयार्क नगर के फैडल हाल में राष्ट्रपति पद का आसन ग्रहण करना।
	२५ अगस्त	माता मेरी वाशिंगटन की फ्रैडिक्सबर्ग, वर्जीनिया में मृत्यु।
	अक्तूबर-नवम्बर	न्यू इंगलैण्ड (रोड द्वीप को छोड़कर) का दौरा।

१७९०	अगस्त	रोड द्वीप का दौरा ।
	सितम्बर	संयुक्त-राज्य अमेरिका की अस्थायी राजधानी फिलेडेल्फिया में पहुँचना ।
१७९१	अप्रैल-जून	दक्षिणी-राज्यों में घोड़ा-गाड़ी के द्वारा दौरा करना (१८८७ मील ६६ दिनों में तय किए गए ।)
१७९२	५ दिसम्बर	दुबारा सर्व-सम्मति से राष्ट्र-पति का चुना जाना ।
१७९३	४ मार्च	फिलेडेल्फिया के 'इन्डीपेन्डैन्स' हाल में दूसरी अवधि के लिए राष्ट्रपति पद संभालना ।
	२२ अप्रैल	तटस्थता की घोषणा ।
	१८ सितम्बर	संघानीय राजधानी का शिलान्यास (वाशिंगटन डी०सी०) ।
	३१ दिसम्बर	थामस जैफर्सन का राज्य-मन्त्री पद से त्याग-पत्र ।
१७९४	सितम्बर-अक्तूबर	पैनसिलवेनिया के 'मद्य-सम्बन्धी विद्रोह' के विषय में निरीक्षणार्थ दौरा ।
१७९५	३१ जनवरी	अलैक्जेण्डर हैमिल्टन का वित्त-मन्त्री पद से त्याग-पत्र ।
१७९६	१९ सितम्बर	फिलेडेल्फिया के 'डेली अमेरिकन एड-वर्टाईजर' में (अंक १७, सितम्बर) विदाई भाषण का छपना ।
१७९७	मार्च	कार्य-निवृत्ति तथा माऊंट-वर्नन वापस लौटना, उसके पश्चात् जान एडम्ज का राष्ट्रपति के पद पर आसीन होना ।
१७९८	४ जुलाई	संयुक्त-राज्य अमेरिका की सेनाओं का लैफ्टीनेन्ट जनरल और प्रधान-सेनापति नियुक्त होना ।
१७९९	१४ दिसम्बर	माऊंट वर्नन में मृत्यु । परिवार के निवास वाले भाग की महराबदार छत के नीचे १८ दिसम्बर को दफनाया जाना ।
१८०२	२२ मई	मर्था वाशिंगटन की मृत्यु ।

अध्याय – १

वाशिंगटन स्मारक

'लोग सुदूर भविष्यत्काल तक वर्नन की पावन भूमि पर आदर और भय की मिश्रित भावनाओं के साथ अपने पांव रखेंगे। पोटोमैक नदी के कूल पवित्र भूमि समझी जायगी।'

चार्ल्स पिकने समनेर द्वारा —
सुप्रसिद्ध वाशिंगटन के प्रति श्रद्धांजलि —
फरवरी, १८००

लोगों का कहना है कि जार्ज वाशिंगटन का स्मारक ५५५ फुट ऊँचा है — अर्थात् यह न सिर्फ कोलोन के प्रमुख गिरजाघर तथा रोम के सेंट पीटर गिरजाघर से ही ऊँचा है, बल्कि यह मिश्र देश के पिरामिडों को भी ऊंचाई में मात करता है। जार्ज वाशिंगटन का दिसम्बर, १७९९ में देहान्त हुआ। उस से पूर्व ही उनके सम्मान में अमेरिका की राजधानी का नामकरण उनके नाम पर कर दिया गया था। बाद में उस महापुरुष का इस से भी अधिक सम्मान करने के लिये अमेरिका के प्रतिनिधि-सदन ने यह निश्चय किया कि उनका संगमरमर का 'इस ढंग का स्मारक तैयार किया जाय जो उनके सैनिक एवं राजनैतिक जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं की याद ताजा कराता रहे।' उस समय यह भी निश्चय हुआ कि

वाशिंगटन महोदय का मृत शरीर उसी पवित्र स्मारक की तह में समाधिस्थ किया जाये। किन्तु कई एक कारणों से इस संगमरमर के स्मारक का निर्माण नहीं हो सका। यह उल्लिखित ऊँचा मीनार, जिसे हम वाशिंगटन का स्मारक कहते हैं, वस्तुतः बाद की योजना थी। यह उस समय पूर्ण हुई जबकि जार्ज वाशिंगटन को विजय प्राप्त किए और देश को आजाद कराए सौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

इस स्मारक की नींव में हजारों टन कंकरीट है, किन्तु उस महापुरुष का कीर्ति-स्तम्भ होते हुए भी उनकी अस्थियाँ इस में नहीं हैं। वे उस स्थान की बजाए कई मीलों के अन्तर पर उनके माऊंट वर्नन घर के तहखाने में दबी पड़ी हैं।

इस माऊंट वर्नन वाले घर को असंख्य यात्री देखने आते हैं। पर्यटक इस बात की साक्षी देंगे कि यह एक रमणीक स्थान है। इसकी साज-सज्जा रुचिपूर्ण तरीके से की गई है और इसे स्वच्छ तथा व्यवस्थित रीति से रखा गया है। किन्तु यह मानना होगा कि इस सफाई-धुलाई में उसकी असलियत गायब हो गई है। अब यह घर नहीं, एक अजायब घर और मन्दिर जैसा लगता है। हम से यह छिपा नहीं है कि इसी मकान में जार्ज वाशिंगटन रहे। यहीं वे दिवंगत हुए। किन्तु इस स्थान में पहुंच कर हम इस बात का अनुभव नहीं कर पाते कि वे सचमुच यहाँ रहे होंगे — जिस प्रकार हम स्ट्रैटफोर्ड-ऑन-एवन में पहुंच कर इस बात को महसूस करने में असमर्थ रहते हैं कि कभी विलियम शेक्सपीयर वहां रहे थे।

हम वाशिंगटन और शेक्सपीयर — इन दोनों महानुभावों को आज तक सही रूप में नहीं समझ पाए हैं। वे दोनों विलक्षण रूप से महान् थे, किन्तु हमारे लिये दोनों का व्यक्तित्व धुंधला रहा है। एक अमरीकी लेखक ने इनके बारे में कहा है कि इंगलैंड की सबसे बड़ी देन शेक्सपीयर का साहित्य है और अमेरिका की महानतम देन वाशिंगटन का चरित्र है। लोगों ने इनकी महानता को इस मापदण्ड से नापा है, किन्तु क्या यह पैमाना किसी भी मानव को नापने के लिए उपयुक्त है?

इन दोनों महापुरुषों में एक वास्तविक अन्तर है। जबकि हमें शेक्सपीयर के विषय में प्रायः कुछ जानकारी उपलब्ध नहीं होती, वाशिंगटन के बारे में ज्ञातव्य बातों का बहुत बड़ा भण्डार मिलता है। हमें शेक्सपीयर का एक भावशून्य चित्र मिलता है, किन्तु वाशिंगटन के चित्र इतनी बड़ी संख्या में प्राप्त हैं — और इन में से कई तो उनकी आकृति से हूबहू मिलते है — कि यदि उनकी अनुसूची ही बनाई जाय तो उसके लिये तीन सम्पूर्ण ग्रन्थ चाहियें। शेक्सपीयर द्वारा हस्तलिखित कोई चीज उपलब्ध नहीं। किन्तु वाशिंगटन की अपने हाथों से लिखी चिट्ठियां और डायरियां छपने पर चालीस ग्रन्थों में आ सकी है। शेक्सपीयर का उल्लेख शायद ही किसी समकालीन लेखक ने किया हो, किन्तु जहाँ तक वाशिंगटन का सम्बन्ध है उनके बीसों मित्रों, जान-पहचानवालों और यदा-कदा के मुलाकातियों ने उनके बारे में अपने संस्मरण लेखनीवद्ध किये हैं। यह कहना गलत न होगा कि जहां शेक्सपीयर का व्यक्तित्व एक विचित्र प्रकार की अन्धकारमयी चादर में लिपटा हुआ ही लगता है, वहाँ वाशिंगटन सांसारिक ख्याति के देदीप्यमान प्रकाश में चमचमा रहे हैं। किन्तु जहाँ तक दृष्टि का सम्बन्ध है, परिणाम दोनों दिशाओं में एक सा है — अर्थात् इस अन्धकार तथा चकाचौंध करनेवाले प्रकाश ने दोनों के व्यक्तित्व को गोपनीय रखने में सहायता दी है।

इसमें सन्देह नहीं कि इन दोनों महापुरुषों के जीवनी-लेखक इस बात का प्रयत्न करते रहे कि दिनों दिन वृद्धि को प्राप्त करती हुई इन की अवैयक्तिक गाथाओं में से वास्तविक व्यक्ति को खोज निकाला जाय। किन्तु न केवल वे इस प्रयास में असफल ही रहे, बल्कि उन पर विविध रूप से इसकी प्रतिक्रिया भी हुई। जहाँ तक शेक्सपीयर का सम्बन्ध है, उनके विषय में कइयों ने यहाँ तक कह दिया कि वे उन नाटकों के लेखक ही न थे जो उनके नाम से प्रचलित हैं। उनके स्थान में उन्होंने मार्लो अथवा बैकन को उनका असली रचयिता बतलाया। वाशिंगटन के बारे में स्वाभाविक रूप

से प्रतिक्रिया इससे भिन्न रही है। कारण, कि साक्ष्य की इतनी भारी सामग्री होते हुए कोई यह कहने का साहस कैसे कर सकता था कि उनका अस्तित्व था ही नहीं, अथवा उनके स्थान पर कोई और श्रेय प्राप्त करने का अधिकारी था ? किन्तु उनकी जीवन-कहानी के काल्पनिक भाग ने मानों एक स्मारक के सदृश उन्हें अपने अन्दर समाधिस्थ कर लिया है। हमारा कहने का आशय यह है कि वाशिंगटन के इस लाक्षणिक स्मारक ने वास्तविक वाशिंगटन को अपने अन्दर इस प्रकार छुपा लिया है कि हमारी आंखें उसे देख नहीं पातीं। जैसे-जैसे साल गुजरते चले गये, नई-नई कहानियां गढ़ी जाती रहीं। परिणामतः यह स्मारक ऊंचा उठता ही चला गया—ठीक उस समाधि की तरह जिस पर राह चलते लोग पत्थर रखते चले जाते हैं। इन पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों के समान ही पुस्तिकाएं, भाषण, लेख और ग्रन्थ उस स्मारक के आकार को बढ़ाते ही रहे। परन्तु यह कितनी विचित्र बात है कि इन भिन्न-भिन्न स्तर और मूल्यों की जीवन-झांकियों, पाण्डित्यपूर्ण लेखों एवं प्रशस्तियों ने उनके जीवन के रहस्य को जितना खोजने की चेष्टा की, इस रहस्य के तार उतने ही उलझते चले गये।

वास्तव में वाशिंगटन न केवल एक गाथा नायक ही बन गये हैं, बल्कि उनमें सम्बन्ध रखने वाली किम्वदंतियां इतनी रस-हीन हो गई हैं कि दम घुटने का अनुभव होने लगता है। ऐसा लगता है कि वाशिंगटन नागरिक श्लीपद के शिकार हो गये हैं। जब हम अपने सामने वाशिंगटन के स्तुति ग्रन्थों की अल्मारियां भरी पाते हैं तो महसूस होता है कि इस मिठास को कम करने के लिये यदि थोड़ी सी खटाई रहती तो कितना अच्छा होता। और कैसे हैं ये स्तुति ग्रन्थ — सब के सब ऐसे कि उनसे सरस गांभीर्य, पुनरोक्ति-पूर्ण तथा अध श्रद्धात्मक ध्वनि सुनाई पड़ती है। ये सब ऐसे श्लाघात्मक ग्रन्थ हैं जिनको पढ़ने का प्रयत्न करते समय जंभाई आना अनिवार्य है। इसीलिये इमरसन से सहमत होने का लालच हो आता है। इमरसन ने कहा था : प्रत्येक नायक अन्त में ऊबा

देने वाला व्यक्ति बन जाता है ..... ये लोग जब कंठ फाड़-फाड़ कर जार्ज वाशिंगटन के गुण बखान करते हैं, तो जेकोबिन लोग (फ्रांस के राजतंत्र विरोधी क्रान्तिकारी) केवल एक वाक्य द्वारा इस पुराणपंथ का खण्डन कर दिया करते हैं और वह है 'वाशिंगटन जाय जहन्नुम में।' जब हम इस प्रकार की आस्थाहीनता द्वारा आराम की सांस लेते है, तब ही वाशिंगटन का एक मानव के रूप में मूल्यांकन कर सकते हैं। यद्यपि स्मारक — गाथा नायकत्व — तब भी क्षितिज पर छाया रह सकता है और ध्यान में आये विना नहीं रह सकता, फिर भी हमको इसमें सन्देह है कि वाशिंगटन सम्बन्धी किम्वदंतियों को उनके मानवीय गुण-दोषों से सर्वथा पृथक् किया जा सकता है। और वाशिंगटन के स्वभाव और सार्वजनिक जीवन में उनके उच्च स्थान को समझने के लिये इस तथ्य से मूल्यवान सूत्र मिल सकते हैं।

वाशिंगटन के स्मारक पक्ष को समझने के लिये सब से पहली बात यह याद रखनी चाहिये कि उनसे सम्बन्धित किम्वदंतियों का निर्माण-कार्य उनके जीवन काल में ही आरम्भ हो गया था। कहा जाता है कि वेस्पासियन नामक रोमन सम्राट ने मरते समय कहा था कि 'खेद है कि अब मैं देवत्व प्राप्त करने वाला हूँ।' इस प्रकार की हास्यजनक क्षुद्रता और विशालता के सम्मिश्रण की वाशिंगटन के सम्बन्ध में कल्पना नहीं की जा सकती। किन्तु फिर भी यदि जब वह माउंट वर्नन में सन् १७६६ में मृत्यु शैय्या पर पड़े थे अपने बारे में ऐसा कहते तो अनुचित न मालूम होता। उनके नाम पर सन् १७७५ से ही बच्चों के नाम रखे जाने लगे थे और जब वह राष्ट्रपति-पद पर विराजमान थे, तभी उनके देशवासियों ने उनका मोम का पुतला तैयार कर लिया था। अपने प्रशंसकों की दृष्टि में वह देव-सदृश्य वाशिंगटन थे जब कि उनके आलोचक एक दूसरे से शिकायत करते रहते थे कि वाशिंगटन को अर्ध-देवता के रूप में पेश किया जा रहा है और उनकी आलोचना करना देशद्रोह समझा जाता है। एजरा इस्टाइल्स नामक पादरी ने सन्

१७८३ में ईशोपदेश देते हुये कहा था "हे वाशिंगटन ! मुझको तेरे नाम से कितना प्रेम है ! कितनी बार मैंने तेरे भगवान को तुझ जैसे मानव, जाति के आभूषण को गढने के लिये साधुवाद कहा है। हमारे शत्रु भी जब तेरा नाम सुनते हैं तो अपने पागलपन की आग को बुझाने लगते हैं और अपने द्वारा की जाने वाली बदनामी की संयमहीनता को कम कर देते हैं, मानो उन्हें स्वयं भगवान ने धिक्कारते हुये कहा हो, 'खबरदार यदि मेरे चन्दन-वदन पुत्र को हाथ लगाया या मेरे नायक की कोई हानि की।' तेरी ख्याति अरब देशों के मसालों से अधिक सुगंधमय है। देवता इस सुगंध को ग्रहण करके स्वर्ग में पहुंचा देंगे और इस प्रकार ब्रह्मांड को सुगन्धित कर देंगे।"

निस्सन्देह इस प्रकार वाशिंगटन गाथा की शुरूआत हुई। उनके समकालीन लोगों में उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने की होड़ सी लगी हुई थी। समस्त प्रयास का अभिप्राय यह जाहिर करना था कि वाशिंगटन के सम्बन्ध में कोई मानवेतर बात है। हमको यह बताने की जरूरत नहीं कि मृत्यु के पश्चात् 'देव-सदृश्य वाशिंगटन' गाथा के नायक के रूप में और भी उच्चतर स्तर पर पहुँच गये। उनका वंशगत नाम एक अमरीकी राज्य, सात पर्वतों, आठ प्रपातों, दस झीलों, तेंतीस जिलों, नौ कालिजों, और एक सौ इक्कीस अमरीकी नगरों और गांवों के लिये प्रयुक्त किया जाने लगा। उनका जन्म-दिन तो चिरकाल से राष्ट्रीय छुट्टी का दिन रहा ही है। उनकी मुखाकृति सिक्कों, नोटों और डाक टिकटों पर पायी जाती है। उनका चित्र जिसमें उनको गिल्बर्ट स्टुअर्ट के चित्र 'एथेनेयम' के अनुरूप बनाया गया है और जिसमें उनको मुंह बन्द किये गम्भीर मुद्रा में दिखाया गया है, न जाने कितने कारीडोरों और दफ्तरों में लगा दिखाई देता है। दक्षिण डकोटा राज्य में एक पर्वत के कक्ष को काट कर उनके सिर की मूर्ति तैयार की गई है जो ठोड़ी से चोटी तक ६० फुट की है। उनकी मूर्तियां अमेरिका में यत्र-तत्र मिलती हैं — इतना

ही नहीं, दुनिया भर में मिलती हैं। उनकी मूर्ति लन्दन में है, पैरिस में है, ब्यूनस आयर्स में है, रियोडी जेनीरी में है, कराकास, बूडापैस्ट और टोकियो में है। वाशिंगटन के अलौकिक नायकत्व की सांसारिक प्रतिष्ठा के ये सब वाहरी चिन्ह हैं। किन्तु हमको इस स्मारक को तनिक गौर से देखना चाहिये। यदि स्मारक लक्षणा को थोड़ा और आगे बढ़ा दें, तो हम देखेंगे कि इसके चार पहलू हैं – ये हैं वे चार भूमिकाएं जो उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिये अपने जीवन-नाटक में पूरी कीं। ये चारों स्पष्ट रूप से एक दूसरे से भिन्न है – ऐसा नहीं है – इस दिव्य लोक में स्पष्ट तो कुछ भी नहीं है। किन्तु यदि हम उन घटनाओं के विवेचन से पहले जिनके कारण वाशिंगटन गाथाओं का सूत्रपात हुआ इनमें से प्रत्येक पर दृष्टिपात करें तो अधिक लाभ होगा। निस्सन्देह इसका यह तात्पर्य नहीं कि वाशिंगटन प्रशंसा के पात्र थे ही नहीं। उनमें वास्तविक और बहुमुखी गुण थे। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनके वास्तविक गुणों को इतना बढ़ा चढ़ा कर और इतने विकृत रूप में रखा गया है कि इनसे अवास्तविकता का आभास होने लगता है, और उनका यह अतिरंजित चित्र ही है जो उनके नाम का उल्लेख होते ही हमारे सामने आ जाता है। वाशिंगटन निम्न चार वेशों में या उनमें से किसी एक में हमारे सामने प्रस्तुत हो सकते हैं : १. पाठ्य पुस्तकों के नायक के रूप में, २. अपनी जनता के पिता के रूप में, ३. निस्वार्थ देश-भक्त के रूप में और ४. क्रान्तिकारी नेता के रूप में। ये चारों हमारे नायक के भिन्न-भिन्न वेश ही हैं। पर इनमें से प्रत्येक में वह देव-वृंद के सदस्य के रूप में हमारे सामने आते हैं और जब उनको देवत्व से परिवेष्टित किया जाता है तब दूसरों को उनके प्रतिकूल पतित नायकों के रूप में दिखाया जाता है।

पुस्तकों के नायक के रूप में

वाशिंगटन का सम्पूर्ण जीवन प्रायः १८ वीं शताब्दी में बीता, किन्तु वे प्रमुखतया १९ वीं शताब्दी के आंगल-भाषा-भाषी संसार की

सृष्टि थे – उस संसार की जिसकी विशेपता थी व्यस्तता, उपदेश एवं धार्मिकता पर जोर। इस युग में छोटी-छोटी पुस्तकें, प्रारम्भिक पाठमालायें, चेम्बर महोदय के अनेक विपयक लेखों के संग्रह, मैकगफे की पाठ्य पुस्तकें, सैम्युल स्माइल्ज तथा होरेशो एल्जर की कृतियां, यान्त्रिकी संस्थायें, अरस्तु के धर्मोपदेश, स्व-हस्तलिखित एल्बम, भेंट-स्वरूप दिये जाने वाले वार्षिक ग्रन्थ सर्वप्रिय थे। उस समय मंडियों तथा पुलों के उद्घाटन होते थे, शिलान्यास की रस्में अदा की जाती थीं, पारितोषिक एवं प्रमाण-पत्न वितरित होते थे, मद्यसेवियों का तर्जन और उद्धार किया जाता था तथा दासों को स्वतंत्न किया जाता था। डेविड रीस्मैन की सरल शब्दावलि में इसे 'अन्तर्निदिष्ट व्यक्तित्व' का युग कहना चाहिये। इसमें उन गुणों का समावेश आवश्यक समझा जाता है जो स्माईल्स महोदय द्वारा लिखित विविध पुस्तकों के नामों – स्वावलम्बन, मितव्ययता, कर्तव्यपरायणता, सच्चरित्न आदि नामक पुस्तकों से प्रकट होते हैं, अथवा जो एमर्सन की छोटी कविता 'सच्चरित्न' में उपादेय समझे गए हैं। इस कविता में एमर्सन कहते हैं :–

> तारे डूबे, किन्तु उसकी आशा नहीं डूबी।
> तारे निकले, उसकी निष्ठा उससे पूर्व आविर्भूत हुई।

तारामण्डल से भरे विस्तीर्ण आकाश पर उसने गहरी और चिरकाल तक दृष्टि गाड़ी।

उसका तप और त्याग उसकी निष्ठा के अनुरूप थे। उस समय की स्तब्धता ·····।

जार्ज वाशिंगटन के विषय में जो भी सामान्य धारणा है उसमें चरित्न का प्रमुख स्थान है, जैसा कि हमने ऊपर उनको शेक्सपीयर की तुलना में देखा है। लार्ड ब्राहम भी यही सम्मति रखते थे। वे कहते हैं :– 'मनुष्य जाति की प्रगति की कसौटी इस बात में होगी कि वह वाशिंगटन के उच्च चरित्न की कहां तक कदर करती है।'

पार्सन वीम्स एक साहसी लेखक था। विक्टोरिया युग से पहले

होते हुए भी उसकी विचारधारा विक्टोरिया कालीन थी। वह सर्वप्रथम व्यक्ति था जिसने वाशिंगटन को उन्नीसवीं शताब्दी के आदर्शो के अनुरूप प्रस्तुत किया। सन् १८०० में वीम्स ने अपने प्रकाशक को विस्तार से बताया कि वाशिंगटन महोदय की जीवनी लिखने का उसका क्या प्रयोजन है। अपने पत्र में उसने लिखा है कि उसका उद्देश्य उस महापुरुष के 'इन महान् गुणों को (संसार के सामने) लाना है – १ – उनकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, अथवा उनके धार्मिक सिद्धान्त, २ – उनकी देश भक्ति, ३ – उनकी उदारता, ४– उनका अध्यवसाय, ५– उन की मदिरादि से अरुचि तथा धीर-गम्भीर स्वभाव, ६– उनकी न्याय-प्रियता, इत्यादि।' संक्षेप में यह पाठ्य-पुस्तकों के नायक के गुणों की रूपरेखा है।

यद्यपि वीम्स स्वयं इतने उदात्त विचारों का नहीं था जितना कि उसके इस कथन से प्रकट होता है, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि वाशिंगटन के लिये उसके हृदय में उतना ही आदर और भक्ति थी जितनी कि किसी भी अमरीकी को उनके लिये हो सकती है। वीम्स ने उस प्रकाशक से यह बात भी कही कि इस तजवीज से उन्हें 'रुपया और लोकप्रियता' दोनों प्राप्त हो सकते हैं। अतः वह घटनाओं को गढ़ने से नहीं चूका। न ही उसने अपने आप को माऊंट वर्नन के अस्तित्वहीन गिरजाघर का 'पादरी' कहलाने से संकोच किया। उसकी इस छोटी सी पुस्तिका ने कपोल-कल्पित कहानियों के समावेश के कारण धीरे-धीरे एक ग्रन्थ का आकार धारण कर लिया। उदाहरणार्थ उसने एक कहानी वाशिंगटन के चेरी के पेड़ काटने के बारे में लिखी, जिसमें वाशिंगटन के मुख से कहलाया गया – 'पिता जी, मैं झूठ नहीं बोल सकता। मैंने ही इस पेड़ को अपनी कुल्हाड़ी से काटा था।' इस पर वाशिंगटन के पिता आनन्द-विभोर हो कर बोले – 'मेरे बेटे ! मेरी आंखों के तारे ! मेरी गोदी में आ जाओ।' एक और कहानी में दिखाया गया है कि वाशिंगटन अपने विद्यालय के छात्रों को परस्पर लड़ने के कारण झिड़क रहे हैं।

एक घटना ही नहीं जोड़ी गई, किन्तु अनेक अलौकिक बातें उनके समस्त जीवन के साथ जोड़ दी गईं। क्रान्ति-सम्बन्धी लड़ाई के दौरान में जो उन्होंने हिसाब-किताब रखा, उसका ठीक-ठीक प्रतिरूप मुद्रित किया गया — यह प्रमाणित करने के लिये कि वे अपने राष्ट्र के लिये कितने मितव्ययी थे और उनमें कार्य-कुशलता कितनी उच्च-कोटि की थी। वीम्स तथा अन्य लेखकों द्वारा उनके धार्मिक विचार उन्नीसवीं शताब्दी की धाराओं के सांचे में ढाले गये। एक कहानी है कि वह एंगलीकन चर्च छोड़ कर प्रैसबाई-टेरियन समुदाय में शामिल हो गये। एक और कथा के अनुसार वे गुप्त रूप से बैप्टिस्टों में शामिल हो गये। हमें इस बात पर बल देने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती कि इस प्रकार की समस्त धारणाएं, चाहे वे वीम्स के उपजाऊ मस्तिष्क से निकली हों या किसी अन्य स्रोत से, विवरण के विचार से असत्य थीं तथा अधिक व्यापक दृष्टिकोण से इतिहास के प्रतिकूल थीं। वीम्स और उसके अनुगामी लेखकों ने वाशिंगटन की जीवनी, अपना ज्ञान व पाण्डित्य प्रदर्शन करने के ख्याल से नहीं लिखी थी। उनका बिल्कुल जाना-बूझा अभिप्राय यह था कि वाशिंगटन के जीवन से लोगों को शिक्षा मिले और इसीलिए कथा को खूब सजाया जाय। यही कारण है कि लोग वीम्स की प्रशंसा में, जिसे वीम्स की पुस्तक के मुखपृष्ठ पर उद्धृत किया गया है, हैनरी ली के साथ अक्षरशः सहमत हैं। प्रशंसा करते हुए ली ने कहा है — 'उस (अर्थात् वीम्स) से अधिक कौन प्रशंसा के योग्य होगा ? उसका पुस्तक लिखने का मुख्य उद्देश्य तरुणों के अन्दर उन श्रेष्ठ गुणों के लिये गहरा अनुराग पैदा करना है, जिन्हें साकार रूप से उसने ऐसी विभूति में दिखाए हैं, जिसे सब राज्य सर्वाधिक प्यार करते हैं।' वाशिंगटन की चित्रमयी जीवनी, जो १८४५ में छपी, के लेखक होरेशो हैस्टिंग्स वैल्ड ने कहा है — "शिशु जब पहले पहल बोलना सीखे, तो पहला शब्द 'माता' होना चाहिये, दूसरा, 'पिता' और तीसरा, 'वाशिंगटन।'

हम यह महसूस करते हैं कि वीम्स तथा अन्य लेखक जिन्होंने आचार-धर्म के सम्बन्ध में शिक्षाएँ देने की बात सोची, इस बात में किसी हद तक दोषी हैं कि उन्होंने वाशिंगटन की सारी धारणा को धुंधला कर दिया है। हां, उनके बचाव में हम यह जरूर कह सकते हैं कि वे वाशिंगटन को मिट्टी के यन्त्र में परिवर्तित नहीं करना चाहते थे। वे भली भांति जानते थे कि लोग इस ओर प्रवृत्त हो सकते हैं। वीम्स ने लिखा — 'वाशिंगटन की प्रशंसा में की गई बहुत सी सुन्दर वक्तृताओं में उस महापुरुष के बारे में आप बादलों के नीचे पृथ्वी तल पर कुछ भी नहीं देखते। — केवल एक वीर पुरुष और अर्ध-ईश्वर के रूप में वे दृष्टिगोचर होते हैं। — वाशिंगटन जो सभा में सूर्य की न्यायीं चमकते थे और समर-भूमि में तूफान की तरह दिखाई देते थे।' वीम्स उन्हें मानवीय स्वरूप देना चाहता था। वह यह भी चाहता था कि उन्हें 'कापीबुक' (पाठ्य-पुस्तकीय) चरित्र के रूप में भी पेश किया जाय। निश्चय ही वीम्स की प्रवाहमयी कहानी में रसहीन कोई चीज नहीं दीखती। इस सरसता के कारण ही एक शताब्दी तक वह सारे राष्ट्र पर एक नकली वाशिंगटन लाद सका।

इसमें शक नहीं कि वीम्स इस बात का दावा कर सकता है कि यदि लोग इसे असत्य समझते, तो वह ऐसा करने में असमर्थ रहता। वाशिंगटन के कुल का आदर्श-वाक्य था —'परिणाम से कार्य के अच्छे-बुरे का अनुमान होता है।' उसे अपने लिये ठीक-ठीक जंचने के लिए तथा उसकी कल्पित कहानियों के प्रमाणीकरण के लिए वीम्स ने उसे इस प्रकार गलत तरीके से अनूदित किया— 'साध्य स्वतः साधन के औचित्य को सिद्ध करता है।' उसने वाशिंगटन का चित्रण ऐसा मानव मान कर किया, जिसके अन्दर न सिर्फ कोई दोष ही नहीं पाया जाता, बल्कि जिसमें उन्नीसवीं शताब्दी की धारणा के अनुसार — जैसे साहस से लेकर समय पर उपस्थित होने तक, विनयशीलता से लेकर मितव्ययता तक समस्त मानवोचित गुण मिलते हैं, जिनके कारण सफलता मनुष्य के चरण चूमती है।

अपने राष्ट्र के पिता के रूप में

यह ठीक है कि अनेक लोगों की नजरों में वाशिंगटन भूमितल से ऊपर बादलों में ही वास करते थे। हैनरी ली के उन शब्दों को अनेक बार दोहराया जाता है कि 'वाशिंगटन लड़ाई के समय सब से आगे दिखाई देते थे, शान्तिकाल में वे अग्रणी हुआ करते थे और अपने देशवासियों के हृदय में भी उनका स्थान सर्वप्रथम ही हुआ करता था।' वे केवल कालक्रम के अनुसार ही नहीं, वल्कि भावनाओं के विचार से भी सर्वप्रथम थे। वे अमेरिका के सर्वप्रथम प्रधान सेनापति रहे और इस देश के पहले ही राष्ट्रपति थे। वे अपने देश के प्रमुख वीर पुरुष थे, जो हर नये देश की आवश्यक सृष्टि हुआ करती है। अतः जब 'जार्ज गुइल्फ' (अर्थात् जैफसेन) के बदले जार्ज वाशिंगटन को स्थान मिला, तो ऐसा होना स्वाभाविक ही था। न्यूयार्क में भी इसी ढंग का प्रतिस्थापन हुआ था जबकि जार्ज ३ की विनष्ट पत्थर की मूर्ति के निचले भाग पर वाशिंगटन की मूर्ति खड़ी की गई। इस कारण योरूप-निवासी यात्री पाल स्विनिन ने जार्ज से इतना पहले सन् १८१५ में टिप्पणी करते हुए लिखा था—'हर अमेरिका-निवासी यह अपना पुनीत कर्तव्य समझता है कि अपने घर में वाशिंगटन का चित्र अथवा मूर्ति रखे, जिस प्रकार कि हम भगवद्भक्त सन्तों की प्रतिमूर्तियाँ बड़े उत्साह से अपने यहाँ रखते हैं। अमरीकियों की राय में वाशिंगटन जहाँ उनके राष्ट्र निर्माता थे, वहां उनकी मान-मर्यादा के भी रक्षक थे। वे देश-भक्त महात्मा तो थे ही, साथ ही साथ वे धार्मिक आदर्शों और विश्वासों के प्रतिरक्षक भी थे। इस प्रकार वे विचित्र रूप से मानों चार्लमैगने, सेंट जोन और नेपोलियन वोनापार्ट — तीनों के सम्मिश्रित प्रतिरूप थे।

वाशिंगटन के बाद केवल अब्राहम लिंकन ही ऐसे महापुरुष हुए जिन्होंने राष्ट्र में उनके सदृश यश-कीर्ति प्राप्त की। कई पहलुओं से आज लिंकन को वाशिंगटन से बढ़ कर सुयोग्य वीर-पुरुष माना जाता है। राष्ट्र के अभिलेखों में लिंकन का दूसरा उद्घाटन-

-सम्बन्धी भाषण वाशिंगटन के विदाई-भाषण की तुलना में, पुरानी 'वाईबल' के मुकाबिले में नयी 'वाईबल' लगता है. तथापि लिंकन आज भी ऐसे मानव के रूप में माने जाते हैं जो कालचक्र के परिणामों से मुक्त न थे और उन पर समय के छीटे भी पड़े। कोई भी लिंकन को ब्रूमिडी के 'वाशिंगटन गुण-कीर्तन' सरीखे रंगीन-चित्र में पाने की कल्पना नहीं कर सकता। ब्रूमिडी का यह चित्र संसद् भवन की गुंबद पर है जिसके एक ओर स्वतन्त्रता देवी विराजमान है और दूसरी ओर विजय। न ही कोई इस बात की कल्पना कर सकता है कि यदि कोई लिंकन के विषय में गल्पात्मक विवरण पेश करे, तो कोई अमरीकी समालोचक उस पर किसी किस्म की आपत्ति उठा सकता है। इस विषय में अपवाद-स्वरूप केवल रौबर्ट ई० ली को कहना चाहिये।

थैकरे ने जब अपनी पुस्तक 'दी वर्जीनियनस' में वाशिंगटन के सम्बन्ध में कुछ बातें कहीं थीं, उस पर अमेरिका में काफी नुक्ताचीनी हुई। एक आलोचक ने क्रोधावेश में लिखा —'यह सफेद झूठ है। वाशिंगटन अन्य मनुष्यों के समान नहीं थे। उनके उदार चरित्र को साधारण जीवन के अशिष्ट मनोविकारों के स्तर पर ले आना मानव-जाति के इतिहास के एक गौरवमय अध्याय को झुठलाना है।' एक दूसरे आलोचक ने थैकरे को धमकाते हुए लिखा —'वाशिंगटन का चरित्र हमें निष्कलंक रूप से परम्परा से मिला है। यदि तुम इस प्रकार की छोटी-छोटी मूर्खता की बातें; जो अन्य बड़े आदमियों में पाई जाती रही है, उनके जीवन के साथ भी जोड़ोगे, तो वाशिंगटन की वही शानदार अलौकिक छाया जिसको तुम ने याद किया है और जो वैसी ही पवित्र और निर्मल है, जैसी कि वह हौडन की बनी हुई मूर्ति में तुम्हें दीखती है, वह तुम्हारे पास पहुँचेगी और अपनी शान्त, तर्जनापूर्ण दृष्टि से तुम्हें ऐसा चुप कराएगी कि तुम्हारी सब बकबक बन्द हो जायगी।'

इसमें शक नहीं कि यह गजब की धमकी है और इससे ज्ञात होता है कि एक शताब्दी पूर्व अमेरिका में वाशिंगटन के सम्बन्ध में

कितनी गहरी श्रद्धा की भावना मौजूद थी। जैयर्ड स्पार्कस ने इसी प्रकार की ही प्रतिरक्षात्मक गहरी प्रतिष्ठा उस समय अभिव्यक्त की, जबकि उसने सन् १८३० में वाशिंगटन की चिट्ठियों का संग्रह सम्पादित किया। बाद में उस पर यह आरोप लगा कि उस संग्रह में इसलिए हेरफेर किया गया कि वाशिंगटन को अधिक गौरवपूर्ण प्रकाश में पेश किया जाय। उसके सम्पादन करने के तरीके भी आधुनिक मापदण्डों के अनुसार दोषपूर्ण नजर आते हैं। इन में इतनी लापरवाही दृष्टिगोचर होती है कि किसी के लिए भी उपयुक्त प्रणाली की कोई स्पष्ट रेखा देख पाना बहुत कठिन है। इसमें जरा भी असत्य नही कि स्पार्कस ने कुछ ऐसे अंश छोड़ दिए अथवा बदल दिए जिन्हें अशिष्ट माना जा सकता था। हम यहाँ ऐसे ही दो कुख्यात उदाहरणों का उल्लेख करते हैं। वाशिंगटन ने जिसको 'ओल्डपुट' कहा था उसको 'जनरल पुटनम' बताया गया। और जहां 'किन्तु इस समय भी थोड़ी बहुत असुविधा' कहा गया था वहां उसको 'हमारी इस समय की आवश्यकताओं के लिए सर्वथा अपर्याप्त है' कर दिया गया। जाने-अनजाने में स्पार्कस, जो वैसे कई तरह से सुयोग्य इतिहासकार था, इस अमरीकी विश्वास को प्रतिबिम्बित करता था कि 'वाशिंगटन अन्य मनुष्यों की भांति नहीं थे'। अतः उनमें किसी प्रकार की खामी को स्वीकार करना अमेरिका के मान्यताओं के ढांचे पर वार करना था। इस विषय में जे०पी० मार्गन ने भी एक धार्मिक प्रतिरक्षक के रूप में ही कार्य किया जब कि १९२० के आस-पास उसने वाशिंगटन द्वारा लिखित कुछ पत्र जो उसके हाथ लगे थे इसलिये जला डाले कि वे 'छपने के योग्य नही थे'। यही कारण था कि बेनीडिक्ट आर्नल्ड जैसे लोगों को जिन्होंने वाशिंगटन से तथा अपने देश से विश्वासघात किया था अमेरिका में सर्वत्र घृणा की दृष्टि से देखा गया। वे लोग न केवल विद्रोही ही माने गये, अपितु इसलिये दोषी भी ठहराये गये कि उन्होंने पवित्रता को नष्ट किया।

यह सब होते हुए भी अमेरिका में कुछ ऐसे लोग भी थे जो

वाशिंगटन के इस अन्धाधुन्ध पूजन से खीझ गये थे। इन लोगों में जान एडम्ज् का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे अनुभव करते थे कि खुशामद अपनी सीमा को वहुत कुछ उलांघ गई है। उदाहरण के लिए उन्होंने इस कथन की ओर संकेत किया जिसमें कहा गया था कि परमात्मा ने वाशिंगटन को इसलिये सन्तान-रहित रखा कि वे समस्त राष्ट्र के पिता वन सकें। किन्तु एडम्स भी उन लोगों में से थे जो विदेशियों के किसी भी दोषारोपण से वाशिंगटन की रक्षा करने को सर्वदा उद्यत रहते थे। कारण यह कि वे अमेरिका में जन्मे थे। उन लोगों का यह कहना था कि वाशिंगटन में विद्यमान गुण अमेरिका की मिट्टी के गुण हैं, न कि इसके उलट। उनके मन में वाशिंगटन इसलिये महान् थे, क्योंकि इस देश की मिट्टी इस प्रकार के गुणों का विकास करती है और उन्हें अन्तिम रूप देती है।

इस प्रकार वाशिंगटन के बारे में दो प्रकार की धारणाएं दृष्टिगोचर होती हैं। एक यह कि वे अमेरिका की जनता के पिता थे और इसलिये अतिश्रेष्ट अमेरिकन थे। दूसरी धारणा यह कि वे अमेरिका के प्रतिनिधि स्वरूप थे। किन्तु दोनों दशाओं में, जैसा कि रुफुस ग्रिसवोल्ड ने कहा था, उन्होंने अपने आपको अतुल्य अंश तक "अपने देश से एकात्मक कर लिया था"। 'वे अपने देश का दिल और दिमाग थे। यह देश उनकी प्रतिमूर्ति तथा निर्देशन-मात्र था।' नाम के विचार से यह नितान्त सत्य है। हमने जैसा कि पहले देखा है, वाशिंगटन का नाम सम्पूर्ण अमेरिका के कोने कोने में फैला और इसे मनुष्यों तथा स्थानों के लिये अपनाया गया। एक अमेरिकी सज्जन वाशिंगटन इर्विंग हुए। वाल्ट ह्विटमैन के एक भाई जार्ज वाशिंगटन ह्विटमैन कहलाए। भूतपूर्व दास-बालक, बुकर टेलियाफेरो ने 'वाशिंगटन' शब्द को उपनाम के रूप में अपनाया—मानो यह एक प्रकार से अमेरिका की नागरिकता को धारण करना था।

निःस्वार्थ देश-भक्त के रूप में

यह सत्य है कि राष्ट्र-पिता के रूप में वाशिंगटन का अनुपम स्थान है, यद्यपि किंचित न्यून अंश में बेंजामिन फ्रेंकलिन उनके साझीदार बनते हैं। जान एडम्स ने एक बार खीझते हुए लिखा—'ऐसा लगता है कि हमारा क्रान्ति का इतिहास एक सिरे से दूसरे सिरे तक निरन्तर झूठ पर आधारित रहेगा। लोगों के कहने का सार यह हुआ कि डाक्टर फ्रेंकलिन ने विद्युत् दण्ड जमीन पर मारा और जनरल वाशिंगटन पृथ्वी के भीतर से बाहर निकल आये और फिर फ्रेंकलिन महोदय ने अपने डण्डे से उन्हें विद्युतित किया और तदनन्तर दोनों मिलकर नीति-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार, संविधान-सम्बन्धी कार्यवाहियां तथा लड़ाई आदि का संचालन करते रहे।'

निस्स्वार्थ देश-भक्त के रूप में वाशिंगटन कुछ एक चुनी हुई विभूतियों में से थे। अमेरिका में दो सर्वाधिक शक्तिशाली पदों पर सुशोभित हुये रहने के पश्चात्, लगभग सभी ऐतिहासिक परम्परा के विरुद्ध उन्होंने उन पदों का त्याग करके दो बार वैयक्तिक जीवन में प्रवेश किया। उनकी इस प्रकार की विनम्रता से आश्चर्यचकित हो कर लोगों ने उनकी तुलना कोरिन्थ के टिमोलियन से की कि जिसने सिसली में शान्ति स्थापित करके वहीं एकान्त का जीवन बिताया था। लोग उनकी तुलना सिनासिनेटस से भी करते हैं, जिसके विषय में कहा गया है—

'इस प्रकार प्राचीन काल में रोम के आदेश पर एक विख्यात किसान, सिनसिनेटस, अपने हथियार ले कर लड़ाई के मैदान में उतरा। उसने शीघ्र ही अहंकारी वालसाई सैनिकों को मैदान में हरा कर अपने अधीन किया, अपने देश को बचाया और जब उसने महिमापूर्ण विजय पा ली, तो वह अपने खेतों को पहले की तरह जोतने लगा।'

ये पंक्तियां, जिन्हें मेरीलैण्ड के कवि चार्लस हेनरी वार्टन ने लिपिबद्ध किया था, 'कविता के रूप में लिखी गई साहित्यिक रचना'

से ली गई हैं, जो सन् १७७९ में वाशिगटन को सम्बोधित करते हुए की गई थी।

वाशिंगटन की तुलना एडीसन के नाटक के पात्र छोटे केटो से की जा सकती है। इस नाटक की इन दो पंक्तियों को—वाशिंगटन बड़े चाव से उद्धृत किया करते थे—

'सफलता मनुष्य के वश की चीज नहीं।' तथा

'अपना वैयक्तिक दर्जा ही प्रतिष्ठा का पद है।'

लोग वाशिंगटन की विरोधी तुलना उन असंख्य लोगों से कर सकते है, जिन्हें उनके मुकाबले में स्वार्थी देश-भक्त कहा जा सकता है। इनके अन्तर्गत सुला, सीजर, वेलन्स्टीन, क्रामवेल और इन सबसे अधिक बद्धहित देशभक्त उनका समकालीन नैपोलियन आ जाता है। वाशिंगटन और नैपोलियन का पारस्परिक व्यतिरेचन आश्चर्यजनक रूप से बिलकुल स्पष्ट है। बायरन, जिसने इस सम्बन्ध में वाशिंगटन को 'पश्चिम का सिनसिनेटस' कहकर पुकारा था, उन अनेक लोगों में से था जिन्होंने इस विषय में अपनी कलम उठाई थी। इसके अतिरिक्त जो इने-गिने निष्काम देशभक्त माने जाते हैं, सूक्ष्म जांच करने पर उनके कई एक कार्य अवांछनीय से प्रतीत होते हैं। प्लूटार्क के शब्दों में—

'किन्तु अन्य महान् नेताओं के यशस्वी कामों में भी हम हिंसा, पीड़ा और श्रम का सम्मिश्रण पाते हैं, यही कारण है कि उनमें कई एक तो भर्त्सना से और अन्य पश्चाताप से प्रभावित हुए हैं।'

यह प्लूटार्क के शब्द टिमोलियन की प्रशंसा में लिखे गए। किन्तु प्लूटार्क को यह स्वीकार करने में संकोच नहीं कि एक बार टिमोलियन ने भी दुष्टतापूर्वक व्यवहार किया था। इससे जाहिर है कि विशुद्ध देश-भक्तों के समुदाय में सिवाए अर्धकाल्पनिक लूसियस किंकटीयस सिनसिनेटस के कोई और जार्ज वाशिंगटन से टक्कर नहीं ले सकता। इस उच्चकोटि के समुदाय में हम कई और नाम भी जोड़ सकते हैं—जैसे, एपामीनौंडस, एजीसीलास, ब्रूटस और कई एक अन्य। वाशिंगटन ने इस समुदाय में जो स्थान प्राप्त

किया है उसके कारण हमारी उनके बारे में जो अवास्तविक कल्पना है वह पहले से भी अधिक स्वप्नवत् और कालचक्र से असम्बन्धित हो जाती है। इस बारे में जो उन्होंने कार्य किया, वह अमेरिका के उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक शास्त्रीय पुनरुन्नयन से बहुत मेल खाता है, यद्यपि यह सत्य है कि यह वीम्स के अधिक सुखद और गृह्यक विचार-धारा से कुछ-कुछ विपरीत चला जाता है। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि सन् १८४० के आस-पास वाशिंगटन के वृहदाकार संगमरमर के बुत का उपहास किया गया था। यह बुत होरेशो ग्रीनोफ ने बनाया था, और इसमें वाशिंगटन को चोगा पहने हुए दिखाया गया था। एक पर्यटक ने, जो ग्रीनोफ की कृति देखने के लिए गया था, देखा कि 'किसी श्रद्धाहीन नास्तिक ने मेहनत से ऊपर चढ़ कर एक बड़ा वनस्पति-सिगार अमरीकी जनता के पिता के होठों के बीच खिसका दिया है।—"मैं यह सोचने पर मजबूर हो गया कि यदि वाशिंगटन की मूर्ति को ओल्यम्पिक जोव के तुल्य निर्मित करने की बजाए उनके अपने अनुरूप बनाया गया होता, तो वह आवारा व्यक्ति, जिसने सिगार-सम्बन्धी अनुचित कार्य किया, स्वप्न में भी ऐसा अपवित्र काम करने का साहस न करता।"

क्रान्तिकारी नेता के रूप में

वाशिंगटन के बारे में यह धारणा मुख्य रूप से अमरीका से बाहर मौजूद थी कि वह क्रान्ति की नींव डालने वाले हैं। इस ख्याल में विशेष रूप से उनके जीवन की अन्तिम दशाब्दी में जोर पकड़ा; यद्यपि इसकी गूंज अगले सौ वर्षों में रही। इस धारणा में विशेष विचारधारा को पुट मिलती है, जिसके अनुसार वाशिंगटन प्रमुख अधिनायक, अपने राष्ट्र के बंधन-मोचक, राष्ट्रीयता के प्रतिरक्षक तथा आधुनिक समय की क्रान्ति में सबसे महान विजेता के रूप में माने गए। इस क्रान्तिकारी नेता की हैसियत में वह उस समिति के अध्यक्ष जान पड़ते है जिनके सदस्य उग्रवादी, साहसी और वीरतापूर्वक लड़ने वाले थे और जिनमें हम लिफायट, मैडियरा,

काँसी अस्को, टाऊसैण्ट लाऊवर्चर, बालीवर तथा गेरीबाल्डी को प्रायः गिना करते हैं। उस समिति में कुछ स्थान ऐसे भी हैं जो इसलिए खाली पड़े हैं क्योंकि इन स्थानों को घेरने वालों ने अपने अशोभनीय व्यवहार के कारण अपने आप को कलंकित कर लिया था। इस श्रेणी में हम आइटरबाइड तथा उसके अन्य साथियों को शामिल कर सकते हैं।

फ्रांसीसियों के लिए वाशिंगटन का विशेष महत्व था। इसका कारण यह था कि वह स्वयं अमरीका के आदर्श पर फ्रांस में क्रान्ति लाने का प्रयास कर रहे थे। फ्रांस के लोग उनके नाम का उच्चारण विविध प्रकार से करते थे—यथा, 'वासिंगटन', 'वाशिंगटन', अथवा 'वास्सिंगटन'। फ्रांसीसियों के लिए वाशिंगटन एक प्रकार से क्रान्ति के प्रतीक बने, जिनका उन्होंने अपने नाटकों में भी उल्लेख किया। इस प्रसंग में बिलाईन डी सौविगने के नाटक 'वासिंगटन ऑला लिब्रटंट डू वौविओ भोण्डे' का नाम उल्लेखनीय है। यह चार अंकों का दुखान्त नाटक है और इसे सन् १७९१ में पेरिस में पहली बार खेला गया।

जब दक्षिण अमेरिका के देशों ने स्पेन के शासन के विरुद्ध विद्रोह किया, तब भी वाशिंगटन उनके लिए एक क्रान्ति के प्रतीक बने। बाद में उन सब देशों के लिए भी वाशिंगटन प्रेरणा के स्रोत बने जिन्होंने अपने यहाँ क्रान्तिकारी संग्राम का सूत्रपात किया। इन लोगों की नज़रों में वाशिंगटन एक ऐसे नागरिक सैनिक थे, जिन्होंने क्रान्ति लाने के लिए नागरिक सेना की कमांड अपने हाथों में सम्भाली। इस नागरिक सेना (अथवा अंग्रेजों की दृष्टि में 'लुटेरे गिरोह') के सरदार की हैसियत में वाशिंगटन को भीषण परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उनका हथियारबन्द सेना द्वारा पीछा किया गया। उन्हें जगह-जगह निराशाओं का मुँह देखना पड़ा। उन्हें अकेले ही सारा कार्य-भार सम्भालना पड़ा। तथा अपने से बहुत अधिक संख्या में शत्रु सेना से लोहा लेना पड़ा। इस पर तुर्रा यह कि घोर शीत की रातों में जाग-जाग कर चौकसी

करनी पड़ी । एक तरफ तो वाशिंगटन के सैनिक थे जो भूखे पेट थे और जिनके पहनने के लिए जूते तक नहीं थे । दूसरी ओर जिस शत्रु-सेना से उन्हें जूझना पड़ा उसका व्यवसाय ही लड़ना-मरना था । और उसे पहनने को बढ़िया वर्दी और खाने-पीने को विपुल और उत्तम भोजन मिलता था । वाशिंगटन के सैनिक यद्यपि फटी-पुरानी वर्दी में थे, तथापि वे लोकहित के लिए अपने प्राणों तक को भी न्योछावर करने के लिए सदैव उद्यत रहते थे । एक कहानी है कि इन्हीं सैनिकों के नामों पर ही फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों के नामकरण हुए ।

निस्सन्देह वाशिंगटन महोदय का कार्य दुष्कर था, किन्तु लक्ष्य की महानता तथा टामपेन की ओजस्वी लेखनी ने उनके उत्साह को बंधाए रखा । उन्होंने बर्फ की पट्टियों पर मार्ग बनाते हुए, डेलावेयर नदी को पार किया और अन्त में विजय-श्री प्राप्त की । उन्होंने सहायता के लिए भगवान से प्रार्थना की और हाथ जोड़े किन्तु अपने मस्तक को ऊँचा रखा ।

इस काल में कई एक मदमस्त करने वाली विचार-धाराएँ थीं—गणतन्त्रवाद, शत्रुओं के विरुद्ध षड़यन्त्र, फ्रीमेसन संस्था की सदस्यता, इत्यादि । (लिफायट, मौजर्ट, तथा उस काल के कई अन्य उदार-हृदय यूरोप-निवासियों की तरह वाशिंगटन भी फ्रीमेसन थे) । यह एक नए युग का आरम्भ था—पहनावे में नए फैशनों का प्रचलन हो रहा था, नए राष्ट्र गान तैयार हो रहे थे और नई प्रकार के ध्वजों का निर्माण हो रहा था । (एक कल्पित कथा के अनुसार वाशिंगटन ने बैटसी रौस से मिलकर अमेरिका के नये ध्वज की रूपरेखा तैयार की थी) । उन्हीं दिनों लिफायट ने बैस्टिले की मुख्य चाबी यह कहकर वाशिंगटन को भेजी कि यह तानाशाही के गढ़ की मुख्य कुंजी है । उस समय लिफायट ने लिखा—'यह एक उपहार है जो मुझे अपने अभिस्वीकृत पिता का पुत्र होने के नाते, अपने सेनापति के 'ऐड-डे-कांग' के नाते तथा अध्यक्ष के आदेश पर चलने वाले स्वतन्त्रता के एक प्रचारक

के नाते, भेंट-स्वरूप पेश करना ही चाहिए।' (यह उल्लेखनीय है कि जुलाई, १७८९ में पैरिस के अनियन्त्रित जन-समूह ने बैस्टिले को उड़ा कर भस्मसात् कर दिया था। अतः इसकी कुंजी माऊंट-वर्नन में होते हुए भी किसी के लिए असुविधा का कारण नहीं बन रही है)।

बाद में, सन् १७८२ में स्वतन्त्रता के एक और पुजारी और प्रचारक ने अपने अध्यक्ष (वाशिंगटन) को नमस्कार किया। यह थे कवि कौलरिज। वह उन दिनों कैम्ब्रिज में अभी पूर्व-स्नातक कक्षाओं में अध्ययन कर रहे थे। उस समय उनके रहने के कमरे यथार्थ रूप में वाम-पक्ष की कोठरियां कहे जाते थे। कौलरिज, यह प्रगट करने के लिए कि वह पूर्व-स्थापित व्यवस्था के घोर विरोधी हैं तथा प्रतिक्रियावाद को समाप्त करके उससे सर्वथा मुक्त होना चाहते हैं, अपने पानी के कमरे में जाकर खुल्लमखुल्ला वाशिंगटन के स्वास्थ्य की कामना से जल पिया करते थे। इन उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि वाशिंगटन उन दिनों इतने व्यापक रूप से एक विशेष विचार-धारा के प्रतीक बन चुके थे।

विलियम ब्लैक की 'अमेरिका' शीर्षक कविता में वाशिंगटन को मूल रूप में मनुष्य न मान कर अलौकिक पैगम्बर के रूप में माना गया है। इस कवि ने लिखा है :—

'तब वाशिंगटन बोले—अमेरिका के बन्धुओ! अन्ध महासागर पर दृष्टिपात करो। एक झुकी-मुड़ी हुई कमान आकाश में ऊपर उठाई गई है और एक बोझिल लोहे की जंजीर, एक-एक कड़ी करके, एलबियन की चोटी से समुद्र-तल पर उतर रही है। इस जंजीर से अमेरिका के रहने वाले भाइयों और पुत्रों को जकड़कर बाँध दिया जायगा। हमारे पीले और कुम्हलाये हुए चेहरों, नतशीर्ष, निर्बल ध्वनियों, झुकी हुई आँखों, घोर परिश्रम से घायल हाथों, तपती रेत पर पड़े लहूलुहान पंजों पर पीढ़ियों तक चाबुक पड़ते रहेंगे—उस समय तक जब तक हम अपने उन बन्धनों को भूल न जायें।'

कुछ ही वर्ष बाद क्रान्ति के नायक, वाशिंगटन, दक्षिण अमेरिका

में भी स्वतन्त्रता की भावनाओं को जागृत करने के मूल कारण बने। वहाँ का नेता, वालीवर, उनका आलेख्यात्मक पदक उठाये स्थान-स्थान पर घूमा। उसका यह कहना था कि जहाँ वाशिंगटन और अमेरिका के संयुक्त-राज्य अपने आपको योरुपीय बन्धनों से मुक्त होने में अग्रणी बने हैं, वहाँ अन्य अमरीकी देशों के लिए उनका अनुसरण करना कैसे कठिन हो सकता है? इस प्रकार वाशिंगटन के सिद्धान्त तथा उतना ही महत्वपूर्ण उनका उदाहरण दक्षिणी अमेरिका के लिए पथ प्रदर्शक बने रहे। उनका विदाई-भाषण सम्पूर्ण दक्षिण अमेरिका में उस समय तक सुनाया और उद्धृत किया जाता रहा जब तक कि उसके अन्तर्गत आदेश संयुक्त-राज्य अमेरिका के समान ही प्रभावोत्पादक नहीं बने। वहाँ के राजनीतिज्ञ वाशिंगटन के शब्दों को स्थान स्थान पर दुहराया करते। लोगों ने भवनों के नाम वाशिंगटन् के नाम पर रखे। इस प्रकार हम वाशिंगटन के जीवन के एक और कार्य की धुंधली बाह्य रेखाओं को देखते हैं जिसे हम उनके जीवन का पाँचवा कार्य कह सकते हैं और जिसे मौका पड़ने पर वे सम्भवतः अपने हाथों में ले लेते—और वह कार्य था सर्व-अमरीकीय राज्यों के महान प्रतिभाशाली नेता के रूप में।

कहना न होगा कि वाशिंगटन उन अनेक महापुरुषों में से हैं जिनकी जीवनी को उत्तरवर्ती पीढ़ियों के प्रयोग के लिए आदर्श रूप में पेश किया जाता है। प्रत्येक युग अतीत में अपने लिए प्रेरणा अथवा सुख ढूंढ़ता है। मृत उस समय तक भूत ही रहते हैं जब तक हम उनसे प्रेरणा पाने के लिए उन्हें याद नहीं करते। वे हम में तथा हमारे माध्यम से जिन्दगी पाते हैं। हमारी उनमें रुचि आत्माभिमान की तुष्टि के लिए होती है। हम उनसे वही सीखने की इच्छा रखते हैं जो हमारी तबियत और विचारधारा के अनुरूप होता है।

वाशिंगटन महोदय को आधुनिक समय के जाँच स्तर से समझने की चेष्टा करना असंगत बात नहीं है। इतिहासकार भी न्यूनाधिक रूप से यही किया करते हैं, चाहे उनका कोई भी विशेष विषय

क्यों न हो। यह सत्य है कि इन इतिहासकारों में भी कुछ एक ऐसे भी हैं जो साक्ष्य सामग्री का प्रयोग करते समय अत्यन्त सावधानी बरतते हैं। जहाँ तक ऐतिहासिक परिशुद्धता का सम्बन्ध है, हमारे युग में बीम्ज अथवा जेअर्ड स्पार्क्स के युग से कहीं अधिक ऊँचा स्तर है। किन्तु क्या कभी ऐसा समय आयगा जब एडॉल्फ हिटलर अथवा फ्रेंकिलिन रूजवेल्ट या चर्चल की भी 'पक्षपात रहित' जीवनी लिपिबद्ध की जा सकेगी ?

वाशिंगटन ही केवल इस प्रकार के महापुरुष नहीं हैं जिन्हें दैत्याकार में बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया। रोई सो लेल सरीखी अत्यन्त कपोल-कल्पित कहानी के विस्तार के रूप में लूई १४ ने अपना निजी स्मारक बनाने के लिये अपनी समस्त शक्ति लगाई। मार्लबरो को मूल्यवान सेवाओं के कारण ड्यूक बनाया गया। उसे रहने के लिये इतना बड़ा महल मिला कि माऊंट वर्नन उसकी तुलना में एक माली की झोपड़ी दीखती है। अमरीकी-उत्तराधिकारिणी, कन्सुए लो वैण्डर बिल्ट, जिसने मार्ल बरो के एक वंशज से विवाह किया था, हमें बतलाती हैं कि ब्लैनहिम महल के रसोईघर खानेके कमरे से पांच सौ गज की दूरी पर हैं। (इतने दूर रसोई-घर होने से भोजन के स्वाद में जो अरुचि उत्पन्न होती होगी, उसे कल्पना में लाया जा सकता है।)

नैल्सन के कृतज्ञ देशवासियों ने उन्हें वाईकाऊंट बनाया और ट्रैफालगर की विजय के बाद एक चौरस स्थान का नाम उनके नाम पर रखा। उसी जगह नैल्सन के नाम पर एक वृहदाकार स्तम्भ बड़ी शान से आज भी खड़ा है। वैलिंगडन महोदय को भी मूल्यवान सेवाओं की वजह से ड्यूक की उपाधि मिली। साथ ही उन्हें इतनी अधिक संख्या में प्रतिष्ठा-स्वरूप वस्तुएँ प्राप्त हुई कि उन्हें देखकर दिमाग चकराने लगता है। (विजयोपहारों की संख्या इतनी ज्यादा है कि उन से एक अच्छा-खासा विचित्रालय भर सकता है।) नैल्सन और वैलिंगडन के नामों पर सैन्य-दलों, स्कूलों, सार्वजनिक भवनों, जंगी जहाजों के नाम पड़े। कुछ प्रतिष्ठित विदेशियों के नाम भी इन

दोनों महानुभावों के नामों पर रखे गये — जैसे नैल्सन रौकफैलर, वैलिंगडन कू इत्यादि।

नैपोलियन बोनापार्ट आज भी भावी पीढ़ियों के लिये अप्रतिम व्यक्ति हैं। इस महापुरुष के विषय में सहस्रों ग्रन्थ लिखे गये। (उनकी संख्या वाशिंगटन के सम्बन्ध में लिखे गये ग्रन्थों से अनुपातत: तीन-चार गुणा होगी।) इन के अतिरिक्त अनेक राजमार्गों का नाम उनके नाम पर होने से तथा सिक्के और नई कानून-पद्धति के प्रचलन के कारण उनका नाम अमर हो चुका है। संक्षेप में कहना चाहिये कि यदि हम अन्य योरूपीय देशों को छोड़ भी दें, तो उनका नाम इतना व्यापक है कि वह उनके अपने राष्ट्र की रग-रग में समाया हुआ है।

यह सब होते हुए भी सम्भवत: इतिहास में वाशिंगटन स्मारक की तुलना में कोई और वस्तु देखने में नहीं आती। उनके बारे में विविध धारणायें रहीं और वे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जा कर कुछ-कुछ बदलती भी रहीं। किन्तु उनके विषय में प्रमुख धारणायें, जिन्हें हमने इस स्मारक के भिन्न-भिन्न पार्श्व कहा है, एक दूसरे से न तो अधिक भिन्न ही हैं और न ही आज तक किसी ने उनको अविश्वास की दृष्टि से देखा है। क्या कोई भी व्यक्ति जिसने अपने शब्दों को विचारपूर्वक नाप-तोल कर व्यक्त किया हो, वाशिंगटन के सिवाय उनके समय के किसी अन्य महापुरुष के बारे में वह बात कह सकता है जो ग्लैडस्टन ने वाशिंगटन के बारे में कही? ग्लैडस्टन ने कहा था —

'इतिहास में वर्णित उन सब महापुरुषों में से जो अपनी असाधारण सौजन्यता एवं आत्मशुद्धि के कारण महान् है, यदि कोई भी मुझे सर्वाधिक महान् दीखता है, तो वह वाशिंगटन महोदय है। यदि मुझे गत ४५ वर्ष के दौरान में कभी एक क्षण पहले यह कहा जाता कि इनमें से किसी योग्यतम विभूति का नाम लो, तो मैं निःसंकोच अपनी इच्छा से वाशिंगटन का चुनाव करता। आज भी वे मेरे वरिष्ठ पात्र हैं।'

निश्चय ही किसी दूसरे महानुभाव ने इतने व्यापक रूप से सम्मान प्राप्त नहीं किया, जितना वाशिंगटन महोदय ने। न ही कोई इतनी पूर्णता से असंख्य काल्पनिक कथाओं का नायक ही रहा होगा। नेपोलियन का नाम लेते ही हमारी आंखों के सामने एक प्रतिभावान् सेनापति, एक निष्ठुर शासक, एक अशान्त निर्वासित व्यक्ति अथवा विश्वासघाती पति का चित्र झूल जाता है। यह चित्र चाहे कितना ही भव्य अथवा अतिरंजित क्यों न हो, विश्वसनीय अवश्य है, क्योंकि उसे देखते ही हम चित्रांकित व्यक्ति को भली भांति पहचान सकते हैं। नेलसन के नाम के बारे में भी यही बात विल्कुल सही सत्य सिद्ध होती है, क्योंकि जैसे ही हम उन्हें याद करते है, हमारे सम्मुख एक ऐसा व्यक्ति आ जाता है, जिसका सार्वजनिक जीवन अत्यन्त साहसपूर्ण था और जो अपने व्यक्तिगत जीवन में चमक-दमक से रहता था। यही बात 'लौह-ड्यूक वैलिंगटन' का नाम स्मरण होते ही पूरी उतरती है, यद्यपि कई बातों में वह जार्ज वाशिंगटन के निकट-समान थे। वैलिगटन शब्द से एक ऐसे वीर पुरुष का चित्र उपस्थित हो जाता है, जो वास्तव में श्रेष्ठ, कठोरस्वभाव और अनुपम है, किन्तु फिर भी है तो एक मनुष्य ही।

'वाशिंगटन' शब्द क्या प्रगट करता है? सम्भव है कि यह उस महापुरुष के नाम पर रखा गया किसी स्थान का नाम हो। किन्तु यदि आप का अभिप्राय 'जार्ज वाशिंगटन' से है, तो लोग इसे किसी संस्था का नाम भी समझ सकते हैं (क्योंकि उनके नाम पर अनेक संस्थाओं का नामकरण हो चुका है)। किन्तु, यदि आप आग्रह करें कि हमारा मतलब किसी संस्था से नहीं, बल्कि उस व्यक्ति से है जिसे इस नाम से पुकारा जाता था और जिसने विना अपनी मर्जी के अपना नाम राष्ट्र को वपौती के रूप में दे दिया था, तो फिर आपके पास क्या चीज शेष रह जाती है? क्या ऐसी कहानियां नहीं वच जायेंगी, जो लगभग निराधार हैं और जो उनके जीवन के विपत्र में सही रूप से कोई जानकारी नहीं देतीं? इसी प्रकार शेष वच जाते हैं श्लाघनीय व्यवहार के उदाहरण, राजनीतिज्ञों के

सदृश भाषण और उक्तियां — दूसरे शब्दों में 'वाशिंगटन स्मारक'।

क्या इसकी व्याख्या यह है कि वाशिंगटन वास्तव में अनुपम थे ? क्या यह कि उनका चरित्र निष्कलंक था, जैसा कि अनेक लेखक हमें विश्वास दिलाते हैं ? क्या यह कि वे मध्यम दर्जे के थे, किन्तु अन्तःकरणानुयायी थे और क्योंकि उनके द्वारा विजय-श्री मिली थी, इसलिए उनके हाथों शक्ति सौंप दी गई और वे स्वतः आदरणीय बने ? क्या अमरीकी इसलिए उनकी पूजा करते थे, क्योंकि परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि वे उन सब बातों का प्रतिनिधित्व करने लगे जिनसे उनके देश-वासियों को स्नेह था ? क्या अमेरिका के लोगों ने इसलिए उनका स्मारक बनाया, क्योंकि वे गणतन्त्र के आरम्भिक वर्षों में अकेले ही व्यक्ति थे जो उनकी नजरों में राष्ट्रीय प्रतीक अथवा सत्ता थे ? यदि यह ठीक है, तो कहां तक स्वयं वाशिंगटन इस सारी प्रक्रिया से परिचित थे और उन्होंने किस हद तक इस रूप में अपना प्रयोग होने दिया।

ये कुछ एक पहेलियां सी हैं, जिनका सहज में उत्तर न पाने के कारण हम खीझ उठते हैं। शायद यह हमारे लिए सम्भव हो कि इस पुस्तक के अन्तिम अध्याय में हम इनमें से कुछ प्रश्नों के सम्बन्ध में संकेत रूप से उत्तर दे सकें, किन्तु आगामी तीन अध्यायों में हम अवश्य कोशिश करें कि वाशिंगटन-स्मारक के बारे में हमें सब कुछ भूल जाय। आदर्श-रूप से, हम यह बहाना क्यों न करें कि हमारे कानों में कभी वाशिंगटन का नाम तक नहीं पड़ा अथवा यह सोचें कि अमरीकी उपनिवेशों ने ब्रिटेन के विरुद्ध विद्रोह किया और सबने आपस में मिलकर एक स्वतन्त्र राष्ट्र का निर्माण किया। यदि किसी कारण हम ऐसी कल्पना न भी कर सकें, तो हम अपने आप को स्मरण कराते रहें कि इनमें से कोई बात वाशिंगटन को मालूम नहीं थी।

वाशिंगटन के जीवन की घटनाओं पर दृष्टिपात करते हुए उनके कई स्तुति-कर्ताओं ने उनमें भगवान् का सक्रिय हाथ देखा। उनका कहना है कि यत्र-तत्र ऐसे प्रमाण मिलते हैं जो यह सिद्ध करते हैं

कि जो कुछ घटा वह सब पूर्व-निर्धारित था। वैसे भी इतने सुन्दर और गौरवपूर्ण परिणाम अवश्य पूर्व-निर्धारित घटनाओं के ही हो सकते हैं। जहाँ तक वाशिंगटन का सम्बन्ध है, वे भी अनेक बार नियति की बात कहते थे और उन्होंने अपनी जीवन-नैया को उस पर छोड़ भी दिया था, किन्तु जब-जब वे इस प्रकार कहते थे, तो नैपोलियन के भावों को लेकर नहीं कहते थे। उन्होंने कभी यह महसूस नहीं किया कि वे प्रारब्ध-कर्ता हैं, बल्कि यह कि जो होनहार है, वह होकर रहेगा। जब कभी वे भविष्यवाणी करने का साहस भी करते थे, तो वे प्रायः चेतावनी के रूप में ही ऐसा किया करते थे—जैसे, यदि अमरीकियों ने सतर्कता नहीं बरती, तो उनके अमुक दुःखदायी परिणाम हो सकते हैं। जब कभी वे विश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए प्रतीत हुए तो वे मार्ग को ध्यानपूर्वक न देख सकने के कारण अन्धेरे में ही आगे बढ़ते चले गये—वस्तुतः एक मरणशील मनुष्य की तरह जो किसी प्रतिष्ठावर्द्धक, किन्तु घबराहट की घड़ी में हो, जिसके लिए आने वाला कल भी कोई-न-कोई जटिल समस्या ला कर खड़ी करे और जिसके लिए आगामी वर्ष भी एक पहेली-सी बन जाती हो। उनके बारे में इस तथ्य को किसी कीमत पर भी भूलना नहीं चाहिए। उनकी अपनी दृष्टि में ऐतिहासिक महत्व की घटनाएँ उनके साथ घटीं, न कि उन्होंने इन्हें जन्म दिया। इस बारे में जो कुछ भी उनसे हो सका, उन्होंने किया।

अध्याय – २

श्रीमान् जार्ज वाशिंगटन

'उनका उज्ज्वल हल का फार कहाँ है, जिसे वे प्यार करते थे ? अथवा गेहूं वाले वे खेत कहां हैं, जिनकी पीतवर्ण पंक्तियां अठखेलियां करते हुए हवा के झोंकों से हिला करती थीं ? अथवा उनकी वे पहाड़ियां कहां हैं, जो भेड़-बकरियों के समूह के कारण सफेद रंग की हो जाती थीं ? अथवा उनकी गहरे रंग की घास वाली चरागाहें कहां है, जिन पर पशुओं के झुण्ड के झुण्ड चरा करते थे। अथवा स्वच्छ वस्त्र धारण किये हुए उनके नौकर कहां हैं, जो गाते-गाते और खुशी से बोझिल, कटी फसल को अपने आगे लुढ़काये लिये जाते थे ? इस प्रकार के शान्तिपूर्ण, समृद्धियुक्त और आह्लादकारी दृश्य थे, जिन्हें देखकर वाशिंगटन प्रसन्नता से खिल उठते थे।'

वाशिंगटन की जीवन-कथा (जिसमें ऐसी अलौकिक घटनायें हैं, जो उनके लिए प्रतिष्ठापूर्ण और उनके तरुण देशवासियों के लिए अनुकरणीय सुन्दर उदाहरण हैं।)

—रचयिता मेसन वीम्स

उनके पूर्वजों का वर्जीनिया में आकर बसना

अब कल्पना कीजिए कि फिल्म उलटी तरफ को चल रही है। आप इस स्मारक को लुप्त होते देखते हैं। अब इसके न्यासाधार और बुत आंखों से ओझल हो जाते हैं। माउंट वर्नन के प्रासाद के दाएं-बाएं भाग तेजी से सामने से हट रहे हैं, और फिर द्वार-मण्डप, मेंडुकी-रूप वायु-दिशा प्रदर्शक यन्त्र, साज-सज्जा और सामान और

सबसे अन्त में भवन का आन्तरिक भाग तथा उसके आधार तिरोहित होते जा रहे है—यहाँ तक कि वहाँ शेष कुछ नहीं बचा। सड़कें, खेत, पान्थगृह, गिरजाघर और न्यायालय भी साफ हो गये। पुराने पेड़ों के ठूठ फिर शाखाओं, प्रशाखाओं, तनों और पत्तों में प्ररोहित हो रहे हैं। अब वे छोटे-छोटे पेड़ों का रूप धारण करके बीज में विलीन हुए। फिर वही अमेरिका के मूल निवासी, रेड-इंडियन तथा भैसे, जिनका कि वे आखेट किया करते थे, दुबारा समुद्र-तट पर दृष्टिगोचर होने लगे। उस तट पर जहाज उसी प्रकार खिचे हुए आ रहे हैं, जैसे चुम्बक से लोहे का चूरा खिचा-खिचा आता है। ये जहाज पश्चिम से अटलांटिक महासागर को पार करके आए हैं। लदे सामान पर से रस्सियां खोल दी गई है। बसने के लिए आये हुए यात्री, नौकर-चाकर, दण्डित व्यक्ति और दास—इन सबको उतारा जा रहा है। सूर्य अंधेरे से निकल कर पश्चिम की दिशा में बढ़ता है। भरी-पूरी दोपहरी होने पर ऊपर उठता है और पूर्वीय ऊषा में खो जाता है·····।

हम सन् १६५० के आसपास पहुंच कर इस उल्टी प्रक्रिया को रोक सकते है। यह वह समय था जब कि वाशिंगटन-परिवार के लोग सर्वप्रथम वर्जीनिया में आकर बसे थे। इससे पचास वर्ष पूर्व इसी जगह जेम्ज टाऊन में ब्रिटेन के लोग पहले-पहल आकर आबाद हुए थे। बीमारी, दुर्भिक्ष, आदिवासियों के साथ संघर्षों तथा हुकूमत की तबदीली के बावजूद ये बस्तियां धीरे-धीरे समुद्री-तट के उन्नत भागों में तथा पोटोमैक, रैपाहन्नोक, पार्क एवं जेम्ज नदियों के उद्गम भागों में फैल गई। उनकी जन्म-भूमि ब्रिटेन मे स्टूअर्ट बादशाह चार्ल्स प्रथम की गृह-युद्ध में पराजय हो चुकी थी और उन्हें फांसी दे दी गई थी। शाही उपनिवेश होने के कारण वर्जीनिया ने पहले तो स्टूअर्ट वंश का पक्ष लिया, किन्तु बाद में विवश होकर उसे पार्लियामेंट के शासन के आगे सिर झुकाना पड़ा। प्रकटतः वर्जीनिया को इस परिवर्तन से कोई फर्क नही पड़ा। उस नये जंगल भरे देश में (जैसा कि एक शताब्दी बाद जार्ज वाशिंगटन ने

इस देश का वर्णन करते हुए कहा था) भोजन, मकान, सुरक्षा तथा भूमि उस समय कहीं अधिक महत्वपूर्ण समस्याएं थीं।

किन्तु जो कोई भी घटना ब्रिटेन में होती, उसका महत्व देर-सवेर, वर्जीनिया के लिए भी हुआ ही करता था। उन दिनों एक घटना हुई, जिसके प्रचुर परिणाम निकले। चार्ल्स द्वितीय ने सन् १६४९ में अपने पिता की मृत्यु के कुछ ही मास पीछे, अपने एक वफादार अनुयायी को पोटोमैक और रैपाहैन्नोक नदियों के बीच के उत्तरीय भाग का बहुत बड़ा इलाका दे दिया। यह एक कारुणिक चेष्टा थी, क्योंकि उन दिनों चार्ल्स निर्वासित था और इस बात में सन्देह था कि वह अपने आदेशों को कार्यान्वित करा भी सकेगा या नहीं। प्रकार उसने वह जागीर प्रदान की, जो उसकी नहीं थी और जिसे न तो उसने स्वयं और न ही नये 'स्वामी' ने अपनी आँखों से देखा था या उसे देखने की आशा ही की थी।

इंगलैंड के इस गृह-युद्ध में एक और छोटी सी घटना हुई, जिस में इंगलिस्तान के एक गिरजे के एक पादरी को 'प्योरीटन' लोगों ने १६४३ में अपनी आजीविका वाले स्थान से खदेड़ दिया। इसी प्रकार का व्यवहार इस गृह-युद्ध के दिनों में सहस्रों अन्य अभागे लोगों के साथ किया गया था। उस पादरी का नाम था लारेंस वाशिंगटन। इससे पूर्व वह साधारण सुख-सुविधा में अपना जीवन काट रहा था। उसके कुटुम्ब के लोगों के पास नारथैम्पटनशायर में सल्ग्रेव की जागीर थी और वह स्वयं आक्सफोर्ड के ब्रेसनोज कालेज का अधिसदस्य था। जागीर छिन जाने से जीवन-भार वहन करना कठिन हो गया। जब वह १६५३ में मरा, तो उसके दो पुत्रों ने निश्चय किया कि वे वर्जीनिया में जाकर बसेंगे और नये सिरे से जीवन शुरू करेंगे। उनमें से एक पुत्र, जिसका नाम जान था, जहाज का अफसर बनकर वर्जीनिया पहुंचा। उसने वर्जीनिया के एक जमींदार की लड़की से विवाह कर लिया और प्रायः दैवयोग से वहीं बस गया। साधारणतया उसने सुख-समृद्धि पाई। उसे भूमि मिली। वह शान्ति-न्यायाधीश बना और बाद में उसे वर्जीनिया की

साधारण विधान-सभा का सदस्य चुन लिया गया। उसका भाई भी काफी सफल रहा। इस प्रकार वर्जीनिया में वाशिंगटन वंश के पाँव जमे, यद्यपि इस समय तक इसे वंश का नाम नहीं दिया जा सकता था। दोनों भाइयों में से कोई भी धनी नहीं बना। कारण यह कि वहाँ जीवन सदैव खतरों से घिरा और अशान्त रहता था। मौत हर समय सिर पर खड़ी रहती थी। उदाहरण के रूप में जान को ही ले लें। उसने तीन शादियाँ कीं। जिस स्त्री से इसने तीसरी शादी की उसके तीन पति पहले मर चुके थे और जब जान १६७७ मे मरा, तो उसकी आयु चालीस वर्ष के आसपास ही थी।

इस प्रकार वर्ड, कार्टर, कार्विन, फिटस्हुग, हैरीसन,[1] ली, पेज, रैंडाल्फ नामों के साथ वाशिंगटन नाम भी वर्जीनिया से धीरे से जुड़ गया। जान के सबसे बड़े लड़के लारेन्स ने अपने वंश को चलाया। बड़ा लड़का होने की हैसियत से उसे वहां के उत्तराधिकार नियमों से लाभ पहुंचा। लारेन्स भी वर्जीनिया की साधारण संविधान सभा का सदस्य बना, किन्तु वह अपनी इर्द-गिर्द की परिस्थितियों पर काबू पाने के पूर्व ही सन् १६९८ में उन्तालीस वर्ष की आयु में ही परलोक को सिधार गया। तत्पश्चात् पैतृक उत्तराधिकारों, भूमि सम्बन्धी दावों, अन्तर्विवाह और मुकदमे-बाजी की भूलभुलैयों से होती हुई, जो उन दिनों वर्जीनिया उपनिवेश की जटिलताएं थीं, इस वंश की कहानी आगे बढ़ी। लारेन्स की पत्नी अपने बच्चों को लेकर इंगलैण्ड चली गई, जहां उस समय की प्रथा के अनुसार उसका शीघ्र ही पुनर्विवाह हो गया। इस परिवार के दो लड़के, वैस्ट मोरलैंड के एपलबी स्कूल में पढ़ने के लिए डाल दिये गये। सम्भव है कि उनका सौतेला बाप उन्हें इंगलैण्ड में ही रखता और इसके फलस्वरूप उनका वर्जीनिया की जागीर पर अधिकार समाप्त हो जाता। किन्तु उनकी माता का शीघ्र ही देहान्त हो गया और इसलिए वे पुनः वर्जीनिया लौट आये। उनकी भूमि से सम्बन्धित कानूनी उलझनें धीरे-धीरे सुलझ गईं। उनमें से एक लड़के आगस्टीन ने, जो उस समय लगभग २१ वर्ष का था

(जिस आयु में वर्जीनिया में पुरुष सामान्यतः विवाह कर लिया करते थे), जेन बटलर से लगभग सन् १७१५ में शादी कर ली। इस पाणिग्रहण के फलस्वरूप जो बच्चे पैदा हुए उनमें जीवित बच रहने वाले पहले लड़के का नाम अपने दादा और परदादा के नाम पर लारेन्स रखा गया।

आगस्टीन ने जहां कड़ा परिश्रम किया, वहां उसने साहसिक मनोवृत्ति का भी परिचय दिया। अपने पिता और दादा की तरह वह भी जिले का न्यायाधीश बना। अपनी और अपनी धर्मपत्नी की जागीरों को मिलाने से उसका अधिकार 'उत्तरी नैक' के भिन्न-भिन्न भागों में १७५० एकड़ भूमि पर हो गया। इसके अतिरिक्त सन् १७२६ में उसने पौटोमैक नदी पर 'लिटल हंटिंग क्रीक' नाम के भूमि-भाग पर, जो क्षेत्र में २५०० एकड़ थी, अपने स्वत्व अधिकार प्राप्त कर लिये। इस भूमि को उसके दादा, जान ने अपने नाम कर लिया था। इन जागीरों के अलावा यह लोहे के कारखाने में भी हिस्सेदार बना।

सन् १७२९ में आगस्टीन की पत्नी की मृत्यु हो गई। दो वर्ष बाद, जो समय कि उन दिनों अपेक्षाकृत लम्बी अवधि माना जाता था, उसने पुनः विवाह किया। उसकी दूसरी पत्नी का नाम मेरी बाल था। उसकी आयु २३ वर्ष की थी। माता-पिता जीवित नहीं थे, परन्तु साधारण रिश्तेदार थे। उसके पास साधारण सी सम्पत्ति थी। वह विलियम बाल की वंशज थी, जो लन्दन के वकील का लड़का था और जो सन् १६५० में वर्जीनिया में आकर बसा था। मेरीबाल अपने अभिभावक, जार्ज इस्क्रिज, से जो एक अच्छे स्वभाव का वकील था, बहुत स्नेह रखती थी। इसी वजह से मेरी ने उसके नाम पर ही अपनी सबसे पहली सन्तान का नाम जार्ज वाशिंगटन रखा। अन्यथा उसका नामकरण शायद पारिवारिक नाम 'जान' शब्द से किया जाता, क्योंकि उसके सौतेले भाइयों का नाम पूर्व ही लारेन्स और आगस्टीन रख दिया गया था। अस्तु, कोई भी कारण हो, उसे जार्ज नाम दिया गया।

शिशु जार्ज ने वेस्टमोर लैण्ड प्रदेश की एक रोप-स्थली में जन्म लिया। बाद में इसका नाम वेकफील्ड पड़ा। इस स्थान को पोटस क्रीक अथवा ब्रिज क्रीक भी कहा जाता था, क्योंकि यह उन दो नालों के बीच में पड़ता था जो हंटिंग क्रीक की जागीर से पोटोमैक नदी के निचले भाग में गिरते थे। जार्ज का जन्म १७३२ में ११ फरवरी को हुआ था। (जब १७५२ में नया कैलेण्डर बनाया गया, तो इसमें ग्यारह दिन और मिलाये गये थे। इस प्रकार यह तिथि नई पद्धति के अनुसार २२ फरवरी हो गई।) इसके बाद, जल्दी-जल्दी पांच बच्चे और पैदा हुए—एलजाबेथ, सैम्युअल, जान, आगस्टीन, चार्ल्स और मिल्डरैड, जिसका सन् १७४० में शैशवावस्था में देहान्त हो गया।

उस समय बाल जार्ज अपने तीसरे घर में रहा करता था। उसके पिता १७३५ में प्रिंस विलियम प्रदेश में जा कर बसे थे। तीन वर्ष बाद उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया और रैपहैन्नाक नदी पर स्थित फ्रैडरिकस्बर्ग की छोटी बस्ती के पास फैरीफार्म पर जाकर रहने लगे। पिता को चिन्तायें और निराशायें घेरे रखती थीं, विशेष रूप से लोहे की ढलाई का कारखाना उन्हें तंग कर रहा था, किन्तु यह सब होते हुए भी वे चोटी के न सही, पर ऊपर के दर्जे के वर्जीनिया निवासी के रूप में मजे से जीवन वहन कर रहे थे। उनके पास पचास दास थे। जितनी भूमि वे घेर सके, उन्होंने इस पर स्वत्वाधिकार प्राप्त कर लिया। उनके वसीयत नामे के अनुसार यह भूमि दस हजार एकड़ से ऊपर थी। उन्होंने अपनी पहली शादी से उत्पन्न दोनों लड़कों को उत्तरी इग्लैण्ड के एपलबी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा, जहाँ उन्होंने स्वयं शिक्षा पाई थी। उनका उद्देश्य यह था कि इस शिक्षा से जहां वे दोनों वर्जीनिया वासी भद्र पुरुषों के योग्य बौद्धिक-विस्तार और शिष्टता प्राप्त करें, वहां वे सौभाग्य बुद्धिपूर्वक नियोजन और सतर्कतापूर्ण विवाह से अपने प्रमार्जित आचारों के साथ ही साथ धनोपार्जन भी कर सकें।

किन्तु इसके बाद चित्र बदला। जब जार्ज केवल ग्यारह वर्ष का ही था, तो उसके पिता, आगस्टीन, इस संसार से चल बसे।

उनकी बहुत सी जायदाद उसके सौतेले भाइयों—लारेन्स और आगस्टीन—के हिस्से में आई। जार्ज के हिस्से में फैरीफार्म आया, किन्तु वह उसे बालिग होने पर ही मिल सकता था। इस बीच में वह इसी स्थान में अपनी माता के पास रहा। वह इस समय बाल्यावस्था को पार करके अल्पकालीन तरुणावस्था को प्राप्त कर चुका था। उन उपनिवेशीय समयों में यह अवस्था शीघ्र प्रौढ़ता में संविलीन हो जाया करती थी।

वाशिंगटन के साथ बचपन में क्या-क्या बीता, इसका हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं। अलबत्ता यह हो सकता है कि हम उसके विषय में उन रम्य और मनोहर कहानियों पर विश्वास करें, जिन्हें वीम्ज तथा अन्य लेखकों ने लिपि-बद्ध किया है। एक आम प्रचलित कहानी यह है कि 'दण्डित सेवक ने, जिन्हें उसके पिता स्कूल-अध्यापक बनाकर लाये थे' उसे लिखना और पढ़ना सिखाया। यह बात सम्भव हो सकती है। दण्डित एवं अनुबद्ध-सेवक बहुत बड़ी संख्या में वर्जीनिया में लाए जाते थे। और उनमें से कुछ दण्डित निस्सन्देह अच्छी शिक्षा पाये हुये लोग थे और उनके अपराध विशेष रूप से गर्हित नहीं थे। किन्तु इस कहानी को सत्य सिद्ध करने के लिए हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है। न ही यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि जार्ज ने रेवरेंड जेम्ज मारये के फ्रेडरिक्स बर्ग वाले स्कूल में विद्याध्ययन किया। हां, यह बात अधिक सम्भाव्य अवश्य है। हमें ज्यादा से ज्यादा इतना अवश्य मान लेना चाहिये कि जार्ज ने सात और ग्यारह वर्ष की आयु के बीच की अवधि में स्कूल में बैठ कर कुछ न कुछ शिक्षा पाई। इस विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता कि कभी उसे एपलबी भेजने की बात सोची गई हो, शायद इसलिए कि वहां भेजने से पढ़ाई पर बहुत खर्च उठता। हो सकता है कि इस का कारण यह भी था कि उसकी माता नहीं चाहती थी कि वह परदेश में इतने बरस बिताये। जो भी कारण हो, उसकी शिक्षा-दीक्षा प्रान्तीय ढंग की ही थी।

अपने पिता के देहावसान के पश्चात् जार्ज प्रकटतः किसी न किसी प्रकार की शिक्षा पाता ही रहा। उसकी किशोरावस्था की नोट-बुकों से यह प्रकट होता है कि तरुण वाशिंगटन ने लातीनी भाषा और गणित का कुछ प्राथमिक ज्ञान प्राप्त किया, सदाचरण की आधारभूत बातों को सीखा और अंग्रेजी साहित्य का कुछ-कुछ अनुशीलन किया। योरुप के स्तर के अनुसार इतनी शिक्षा एक भद्रपुरुष के लिए अधूरी थी, किन्तु जैसी कि उसकी परिस्थिति थी, उसे इतनी ही औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सका। उसे यह सौभाग्य नहीं मिल सका कि वह अपने समकालीन तरुणों के समान वर्जीनिया की राजधानी विलियम्ज-वर्ग के विलियम और मेरी कालेज में शिक्षा पा सके। हम नहीं कह सकते कि ऐसा क्यों हुआ। सम्भव है कि इस में भी उसकी माता की मितव्ययता और उसे अपने बिल्कुल निकट रखने की लालसा——यह दो कारण इसके मूल में हों। संक्षेप में——यह स्पष्ट है कि जार्ज वाशिंगटन उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ रहे और इसलिये वे बुद्धिजीवी नहीं बन सके। इस पहलू में जान एडम्ज़ सरीखे अमरीकियों से उसका अत्यधिक व्यतिरेक पाया जाता है। बाद में जान एडम्ज़ को कटुतापूर्ण शब्दों में कहना ही पड़ा—— 'यह तो निश्चित बात है ही कि वाशिंगटन विद्वान नहीं थे, पर यह बात भी इतनी ही निर्विवाद है कि उनकी उच्च स्थिति एवं सुकीर्ति को देखते हुए वे प्रायः निरक्षर, अशिक्षित और अनपढ़ थे।'

यह भी सत्य है कि बौद्धिक तय्यारी तथा क्षमता की दृष्टि से वाशिंगटन का मुकाबला थामस जैफ़र्सन और जेम्ज मैडीसन जैसे उनके वर्जीनिया के समकालीन विद्वानों से नहीं किया जा सकता। शायद कई वर्ष बाद तक वाशिंगटन स्वयं इस कमी को महसूस करते रहे। जब कभी कोई व्यवस्थित वाद-विवाद होता अथवा अमूर्त विषयों पर चर्चा होती, तो वे अकुला जाते। हाँ, उन्होंने दीर्घकालीन अभ्यास के कारण कागज़ पर लिख कर अपने मनोभावों को किसी अंश तक स्पष्ट और ओजस्वी ढंग से व्यक्त करना सीख लिया था

और उनके हिज्जों का भी अभ्यास के कारण सुधार हुआ था——
किन्तु वे कभी प्रतिभावान् लेखक नहीं बन सके। अपनी परिपक्वा-
वस्था में पहुंचने पर वाशिंगटन में जो संशोधनात्मक-प्रवृत्ति नज़र
आती है, इसका कुछ-कुछ कारण यह भी हो सकता है कि वे अपनी
बौद्धिक सीमाओं से परिचित थे। ——युवावस्था में ही उन्हें
फ्रांसीसी भाषा न जानने के कारण हानि उठानी पड़ी। बाद में भी
उन्हें फ्रांस जाने का निमन्त्रण इसलिए अस्वीकर करना पड़ा कि
उन्हें द्विभाषिये के माध्यम से बात-चीत करने के लिए विवश होना
पड़ता, जिससे कि उन्हें कुढ़न होती। अतः वे जैफ़र्सन और एडम्ज़्
की तरह कभी योरुप नहीं जा सके।

किन्तु हमें इस बात पर आवश्यकता से ज्यादा बल नहीं देना
चाहिए। वर्जीनिया में कोई भी व्यक्ति जैफ़र्सन अथवा मैडीसन के
समान बौद्धिक स्तर पा लेता तो यह अपवाद समझा जाता।
धनाढ्य से धनाढ्य बाग़ान-मालिक भी पुस्तकीय-ज्ञान के विषय
में उदासीन थे। सांस्कृतिक परिष्कार की प्राप्ति में भी उन्हें कोई
विशेष दिलचस्पी नहीं थी। वर्जीनिया की मध्यम-श्रेणी जनता में
वैस्टीवर के विलियम बर्ड को, जिसके पुस्तकालय में सम्भवतः तीन
हज़ार पुस्तकें थीं, एक अनुपम व्यक्ति माना जाता था। यहां के
लोग, इंगलैण्ड के सामन्त-वर्ग के समान ही सुख का जीवन बसर
किया करते थे। उन्हें खाने-पीने, सुन्दर आयातित वस्त्र पहनने
तथा बाहर से मंगाये गये उत्तम फर्नीचर को प्रयोग में लाने का
शौक था, किन्तु उनके जीवन में उस हद तक परिष्करण नहीं था,
जितना कि इतिहासकार बताते हैं। उनके मकान आश्चर्यजनक
रूप से छोटे थे। उनकी लम्बी-चौड़ी भूमि योरुप के लोगों को
बिखरी-बिखरी और अव्यवस्थित लगती थी——समय और स्थान
दोनों के लिहाज़ से करीब-करीब जंगल सी। जहां तक भावनाओं
और व्यापार का सम्बन्ध है, वे अपने मातृ-देश (इंगलैण्ड) के
अधिक निकट थे। उनकी बोली मैसाचुसटेस की अपेक्षा इंगलैण्ड
की भाषा के ज्यादा नज़दीक थी। (कहा जाता था कि मैसाचूसेट्स

के लोग अपने वच्चों को नीग्रो-दासों की अस्पष्ट वोली सीखने की खुली छुट्टी दे देते थे)। किन्तु अन्य वातों में अठारहवीं शताब्दी के मध्य का वर्जीनिया अपने आप में एक अलग संसार था जो योरुप अथवा शहरी संस्कृति के किसी भी नमूने से वहुत भिन्न था। एक वार मज़ाक में युवा वाशिंगटन ने विलियम्ज़वर्ग को वड़ी राजधानी कह दिया था। उन्होंने लन्दन के विषय में भी यही, शब्द प्रयुक्त किये थे, किन्तु उस वड़े नगर की तो अलग वात रही विलियम्ज़वर्ग उन दिनों वोस्टन अथवा फिलेडैलफिया के मुकावले में भी एक छोटा सा कस्वा ही था। उस समय वर्जीनिया में केवल विलियम्ज़वर्ग, यार्कटाऊन, हेम्पटन और नारफौक ही वड़ी आवादी के कस्वे थे। अन्य कस्वों मे भी आवादी धीरे-धीरे वढ़ती जा रही थी। इस प्रकार वर्जीनिया एक देहाती उपनिवेश था, जिसमें रहने वाले लोगों की रुचियां ग्रामीणों की सी थीं। यद्यपि यह वृहदाकार और वैभवयुक्त उपनिवेश था, इसके जीवन की इकाइयां—वागान, पादरी-क्षेत्र, 'काउण्टी'—उसके अपने ढंग पर ही थीं। संविधान-सभा के सदस्य जो विलियम्ज़वर्ग में सभा की वैठकों में शरीक होने के लिये आया करते थे, प्रायः इस कस्वे के सीमित और उत्तेजना-पूर्ण जीवन का आनन्द उठाया करते थे। यहां उन्हें नृत्य देखने को मिलते थे, वे शाम के खाने की दावतें उड़ाते, ताश खेलते और रंग-मंच के मजे लूटते। यहां के वहुत साधारण किसान जो आवादी का मुख्य अंश थे, उनकी वात तो दूर रही, वर्जीनिया के वागान के मालिक भी ग्रामीण ही थे। वे अपने अपने कार्यों में व्यस्त रहने वाले ज़मींदार और स्थानीय सरदार थे।

प्रत्येक वर्जीनिया-वासी भूमि में अत्यन्त रुचि रखता था। औसत दर्जे का खेतिहर कई भू-भागों का स्वामी हुआ करता था। किसी भू-खण्ड को वह यदि स्वयं जोतता और उसमें फ़सल वोता जो मुख्यतया तम्बाकू हुआ करती तो अन्य खण्डों को वह खेती के लिये लगान पर दे दिया करता था। जो उसके अन्य खण्ड पश्चिमी क्षेत्रों में होते, वह उन्हें लगान पर देने की वजाए, जंगली दशा में

ही छोड़े रखता। हां, जब कोई उन्हें अनधिकृत रूप से घेर लेता, तो और बात थी। भूमि पर ही उसकी समृद्धि निर्भर थी। उसका एवं उसके परिवार का भविष्य इस बात पर था कि यह अधिकाधिक भूमि का अविग्रहण करता चला जाय। वर्जीनिया के बड़े आदमी—नोमिनी के रावर्ट कार्टर सरीखे—अपनी सम्पति दस हज़ार एकड़ के हिसाब (पैमाने) से आंका करते थे।

उस समय से सौ वर्ष बाद लोग सोना पाने की आशा से कैलिफोर्निया की तरफ खिंचे चले गये। यह सनक बुखार की मानिंद थी जो अचानक उन के सिर पर सवार हुई, और होते-होते इसने उग्र रूप धारण कर लिया। वर्जीनिया-वासियों पर अधिकाधिक भूमि हथियाने का ज्वर यद्यपि इतना शीघ्र नहीं चढ़ा था, किन्तु इसके प्रभाव उतने ही जोरदार थे। और इसमें कोई आश्चर्य की बात भी नहीं, क्योंकि उस समय पश्चिम की ओर बहुत मात्रा में भूमि उपलब्ध थी और वर्जीनिया के (अथवा मेरीलैण्ड और पैनसिलवेनिया के) अपने प्रतिद्वन्द्वियों को छोड़ कर, इसके केवल दो ही दावेदार थे—फ्रांसीसी और आदिवासी इण्डियन लोग।

वर्जीनिया के भूमि-प्रेम में कभी-कभी अतिव्ययता और असावधानी भी देखी जाती थी। वहां के कृषक भूमि जोतते थे और इस बात का भी ज्ञान रखते थे कि इसे जोतने के क्या तरीके हैं, किन्तु उनमें योरोपीय किसानों जैसी छोटी-छोटी बातों में मितव्ययता न थी। यदि तम्बाकू से भूमि की उपजाऊ-शक्ति क्षीण होती थी, जैसी कि निश्चय से हुआ ही करती थी, तो उन्हें खेद तो होता ही था, किन्तु वे अन्यत्र नयी जमीन लेकर अपनी और जागीर बना लेते। इस प्रकार हर वर्जीनिया-वासी का यह स्वप्न हुआ करता था—ऐसा स्वप्न जिसकी खातिर उसे मुकदमे लड़ने पड़ते थे, प्रतिद्वन्द्विता बर्दाश्त करनी पड़ती थी और अशान्त, उद्विग्न जीवन व्यतीत करना पड़ता था। इसके साथ उसे चेतावनियों, विपदाओं तथा व्यवहार में अनभ्यता का मुकाबला

करना पड़ता था। यह सब होते हुए भी भूमि-प्राप्ति उसका एक प्रकार का आदर्श था। अंग्रेजी शब्द 'स्पैकूलेशन' का मूलरूप से यह अर्थ होता था—'किसी अमूर्त समस्या पर गहरे ढंग से विचार करना।' बाद में (आक्सफोर्ड कोष के अनुसार सन् १७७४ में) इसका प्रयोग एक दूसरे अर्थ को प्रकट करने के लिए होने लगा। तब से इस शब्द का यह अर्थ हुआ—'किसी व्यावसायिक कार्य अथवा साहसिक या खतरेवाले सौदे में अपनी शक्ति लगाना, जिस में बहुत बड़े लाभ की आशा हो।' इस अर्थ से वर्जीनिया के सावधान खेतिहर के सही दृष्टिकोण का उपयुक्त विवरण मिलता है। किन्तु इस प्रकार के दृष्टिकोण से यह अन्दाजा नहीं लगना चाहिये कि वे लोग रुपये-पैसे से अपेक्षतया अधिक बुनियादी समस्याओं की, समय आने और आवश्यकता पड़ने पर, कभी सोचा ही नहीं करते थे। हर वह व्यक्ति जो बड़े लाभ की लालसा रखता था, तर्क-वितर्क करना और (कोई अन्याय होने पर) विरोध प्रगट करना जानता था।

बागान के मालिकों के आमोद-प्रमोद स्वाभाविक रूप से उनके दैनिक जीवन से मेल खाते थे। उन्हें कई घण्टों तक लगातार घुड़-सवारी करनी पड़ती थी, इसलिये उन्होंने इसे अपने मनोरंजन का रूप दिया। कर्नल विलियम बर्ड के शब्दों में—'मेरे प्रिय देश-वासी घुड़-सवारी के इतने अधिक शौकीन हैं कि वे अक्सर सवारी की खातिर दो-दो मील चल कर घोड़ा पकड़ने जाते हैं।' बागान के स्वामी घुड़-दौड़ के मुकाबले देखते और उन पर बाजी लगाया करते। उन्हें लोमड़ियों और जंगली जानवरों का शिकार करने में रुचि थी। कभी कभी वे निर्दयतापूर्वक मुर्गों की लड़ाई करवाते और उन पर दांव लगाया करते थे। इस प्रकार यहां का जीवन शक्तिदायी भी था और किसी हद तक क्रूरतापूर्ण भी। इस से जहां उन में निर्दयता की भावनाएं उत्तेजित होती थीं, वहां पर्याप्त मात्रा में साहस भी पनपता था। अन्य उपनिवेशों के समान ही यहां इण्डियनों की खोपड़ियों के लिये पारितोषिक मिलते थे।

यहां की दण्ड-संहिता, यद्यपि अधिकांश में इंगलैण्ड के दण्ड-विधान
से अधिक क्रूरतापूर्ण नहीं थी, तो भी इसके मातहत मुकदमों के
निर्णय विना विलम्ब के हो सकते थे—विशेषरूप से नीग्रो-जातियों
के लिये, जिन्हें गम्भीर अपराधों के लिये फांसी पर चढ़ा दिया
जाता था अथवा यहां तक कि जिन्दा भी जला दिया जाता था।

वर्जीनिया के प्रभाव

यह तरुण वाशिंगटन का वर्जीनिया था। उसकी शिक्षा इस
उपनिवेश की आवश्यकताओं के अनुरूप हुई थी। यह अचूक
निशानावाज और उत्तम घुड़सवार था। इन दोनों वातों में उसे
अपनी उमर के युवकों में, एकदम से, सर्वश्रेष्ठ गिना गया। उसका
कद लम्बा था और शरीर दृढ़ और गठा हुआ। अपनी आदतों में
वह चुस्त और फुर्तीला था। उसने कभी अपना सन्तुलन नहीं खोया।
यह सत्य है कि हमारे पास कोई ऐसा प्रमाण नहीं जो यह जाहिर
कर सके कि उस पर अपनी माता का कोई परिष्कारात्मक संस्कार
पड़ा। यद्यपि उसकी माता के तारीफ के पुल बांधे जाते हैं, वह
एक संकीर्ण-हृदय, कुढ़ने-झकने वाली, कल्पना-शक्ति-रहित स्त्री
मालूम होती है। बाद के सालों में जार्ज महोदय उसका सन्मान
तो अवश्य करते रहे, किन्तु इस समादर के साथ वह प्रेम की अधिक
उष्णता न जोड़ सके। हम उस महिला का एक ही विधेयात्मक
कार्य मालूम पड़ता है और वह था उस सुझाव पर अमल न होने
देना कि जिस में किशोर जार्ज का समुद्र पर 'मिडशिपमेन' के रूप
में भेजने की वात सोची गई थी। सम्भवतः इसी में ही बुद्धिमता
थी।

सौभाग्य से उस परिवार में अन्य लोग भी थे, जिनका वाशिंगटन
पर प्रभाव पड़ा। इनमें हम विशेष रूप से उनके सौतेले भाई, लारेन्स,
का उल्लेख कर सकते हैं। लारेन्स जार्ज से चौदह वर्ष बड़ा था और
उसका सच्चा हितैषी बन्धु था। उसने इंगलैण्ड में शिक्षा ग्रहण की थी।
उसका रंग-रूप आकर्षक था और वह व्यवहार-कुशल था। यह जार्ज
के लिए दिवंगत पिता का अभिमत स्थानापन्न था। जब वाशिंगटन

आठ वर्ष का था, तो लारैन्स अमरीकियों के नव-निर्मित दस्ते में कप्तान होकर वैस्ट इण्डीज गया था। (जिन चार वर्जीनियों को कप्तान बनने का सम्मान मिला था, उनमें से लारैन्स भी था।) वैस्ट इण्डीज पहुँच कर उसे कार्टेजना के स्पेनियों के विरुद्ध एडमिरल वर्नन के साथ मोर्चा लेना था। दुर्भाग्य की बात कि वर्नन की इस चढ़ाई में बुरी तरह हार हुई और उसे भारी हानि उठानी पड़ी। यद्यपि इसमें उसका कोई दोष न था। अमरीकी दस्तों के बहुत से सैनिक पीले ज्वर से ग्रस्त होकर मौत की भेंट हुए। बचे-खुचे लोगों में लारैन्स भी था, परन्तु वह पहले ही घर लौट आया था। वापस आकर उसने आधे वेतन पर सरकारी सेवा से निवृत्ति हासिल की। बाद में उसने वर्जीनिया के 'एडजूटैण्ट जनरल' के पद के लिये प्रार्थना-पत्र-भेजा, जो स्वीकृत हुआ। फलतः उसे इस पद पर नियुक्त किया गया। इस प्रकार यदि हम यह जानना चाहें कि तरुण वाशिंगटन पर निर्माणकारी प्रभाव क्या-क्या पड़े, तो स्पष्ट है कि इस समय उस पर जो संस्कार पड़े, वे सैनिक-जीवन से सम्बन्धित थे। भले ही उसका सौतेला भाई यश-कीर्ति प्राप्त न कर सका हो, इस में सन्देह नहीं कि उसने उस शानदार और साहसिक चढ़ाई में अपना दायित्व बड़ी खूबी के साथ निभाया था। लारैन्स एडमिरल का अत्यधिक प्रशंसक था—यहाँ तक कि उसने अपनी हंटिंग क्रीक की जागीर का नाम ही माऊंट वर्नन रख लिया और वहाँ जो भवन उसने बनवाया, उसमें वर्नन का चित्र टाँगा।

लारैन्स के कारण वाशिंगटन पर जो दूसरा प्रभाव पड़ा, वह सामाजिक था। सन् १७४३ में अर्थात् उसी वर्ष जिसमें कि उसके पिता का देहान्त हुआ था, लारैन्स ने अपनी आकांक्षा के अनुकूल कन्या से विवाह कर लिया। दुल्हन का नाम एनी फेयरफैक्स था। यह माऊंट वर्नन के करीब ही बैलवायर जागीर के समृद्ध मालिक कर्नल वर्नन विलियम फेयरफैक्स, की लड़की थी। कर्नल फेयरफैक्स वर्जीनिया के रईस थे। इस विवाह से प्रतिष्ठित होने के कारण लारैन्स वर्जीनिया की विधान-सभा के उच्च-सदन अर्थात् कौंसिल का

सदस्य बना। इस कौंसिल में वर्जीनिया के बारह प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, जो इस उपनिवेश के अग्रणी माने जाते थे। जार्ज के विकास में लारेन्स के जरिये फेयरफेक्स परिवार का बहुत महत्वपूर्ण हाथ रहा। जब वह सोलह वर्ष का हुआ तो वह अधिकतर माऊंट वर्नन ही रहने लगा। इन लोगों की संगति से उसने विलियर्डस, ह्विस्ट और लू जैसे खेलों को खेलना सीखा। उसे नृत्य की भी शिक्षा मिली।

इस समय पहली बार उसने कुछ तो दिल्लगी में और कुछ उत्सुकता पूर्वक लड़कियों की ओर ध्यान देना आरम्भ किया। उसकी चिट्ठियां तथा वृद्ध-पत्रों में 'निम्नतल भूमि की सुन्दरी' तथा अन्य ध्यान आकर्षित करने वाली युवतियों का उत्सुकतापूर्वक एवं व्यग्य से उल्लेख मिलता है। उसकी जीवनी पर कलम उठाने वालों ने इन उल्लेखों पर पर्याप्त टीका-टिप्पणी की है। उन्होंने उन परिस्थितियों का भी वर्णन किया है, जिनके कारण वह अपनी आयु के बीसवें वर्ष में बेट्सी फांटलेरोय का, जिस पर वह जी-जान से आसक्त था, प्रेम पाने में असफल रहा। इस प्रकार के उल्लेखों में एक विचित्र आकर्षण है—अंशतः इसलिए कि इन से तरुण वाशिंगटन एक भेद्य मानव प्रतीत होता है और अंशतः इसलिये कि जिन व्यक्तियों का उनमें जिक्र है, वे छाया-मात्र ही है। यह होते हुए भी हमारे पास यह सिद्ध करने के लिये कोई पर्याप्त साक्ष्य नहीं कि जार्ज प्रेम-विषयक मामलों में असाधारण रूप से अनाड़ी था। हो सकता है कि उसे असफलताओं का मुंह इसलिये देखना पड़ा कि उसका स्वभाव गम्भीर था। वह हंसी-मजाक से कोसों दूर रहा करता था और अभी अपरिपक्व अवस्था में था। तो क्या वह अपने स्थानीय प्रतिद्वन्द्वियों से किन्हीं बातों में भिन्न था? नहीं कहा जा सकता कि सचाई क्या थी। इस विषय में हम केवल कयासी घोड़े ही दौड़ा सकते हैं।

एक प्रासंगिक, किन्तु (समझ में न आने के कारण) कष्टकर समस्या सैराह (सैली) केरी के कारण खड़ी होती है। यह कर्नल विल्सन केरी की लड़की थी, जिसकी हैम्पटन के समीप ही, जेम्ज

नदी के किनारे, अपनी जागीर थी। दिसम्बर १७४८ में अठारह बरस की आयु में उसने जार्ज विलियम के साथ, जो कर्नल फेयरफैक्स का सबसे बड़ा लड़का था, शादी की। बैल्वायर को उसने अपना निवास-स्थान बनाया। उसका पति एक उत्तम स्वभाव का युवक था। जार्ज वाशिंगटन उसे अपने मित्रों में शुमार करता था, यद्यपि कुछ मास पूर्व उसने अपनी डायरी में विनीत-भाव से 'श्री फेयरफैक्स' लिख कर उसका उल्लेख किया था। इस विवाह के उपरान्त जार्ज को अनेक वर्षों तक सैली को बहुत नजदीक से जानने के अवसर प्राप्त हुए। कभी-कभी वह उसे चिट्ठियां भी लिखा करता। यह भी सम्भव है कि वह उससे प्रेम करने लगा हो। उसने जो सैली के नाम पत्र लिखे, उनसे सिद्ध होता है कि वह निस्सन्देह उसे बहुत चाहता था और उससे मैत्री बनाए रखने को वह काफी महत्त्व देता था। उन पत्रों से यह भी जाहिर होता है कि इन बातों के बावजूद वह उससे बिल्कुल घुल-मिल नहीं सका था। सैली ने वाशिंगटन को जो थोड़े से पत्र लिखे, उनसे पता चलता है कि सैली अपनी प्रशंसा से फूले नहीं समाती थी और हल्की क्रीड़ामय बातचीत तथा चोंचलेपन में कोई बड़ा भेद नहीं मानती थी। क्या हम इससे यह अनुमान लगाएं कि वह उससे वास्तव में प्रेम करता था? हमारे पास इस सम्बन्ध में जो साक्ष्य है वह इतना अधूरा है कि हमें इस विषय में कुछ कहने का साहस नहीं होता। पर यदि यह सत्य है तो हम लगभग निश्चय से कह सकते हैं कि उनके पारस्परिक सम्बन्ध भावना तक सीमित रहे और व्यक्तिगत रूप से उन्हें आहत करते रहे।

कुछ भी हो, निस्सन्देह उस महिला ने, युवक फेयरफैक्स लारेंस और एनी फेयरफैक्स ने जार्ज को सुखद और विशेषाधिकारात्मक जीवन की झांकी दी। यदि उसके व्यवहार में कुछ भद्दापन था, तो भी वह सह्य था, क्योंकि आखिर वह छोटा पुत्र ही तो था। और वह भी सौतेला पुत्र। उसके सम्बन्ध उपयोगी थे और उसे रुपये-पैसे की कोई कमी नहीं थी। लारेंस और आगस्टीन

के साथ रहते हुए उसकी दशा सिंडरैला जैसी नहीं थी, जिसे अपनी कुरूपा बहनों के साथ समय काटना पड़ा था। किन्तु यह उसने अवश्य अनुभव किया होगा कि उसे आखिर अपने पैरों पर खड़े होना है, अथवा कम से कम उन सब अवसरों का लाभ उठाना है, जो उसके जीवन में आएं। अन्ततोगत्वा एवं दैवयोग से उसकी स्थिति इस प्रकार बनी कि उसका कदम आगे बढ़ता ही गया। उसके साथ तुलना करने पर फेयरफेक्स सन्तान कुछ कुछ बिगड़ी हुई लगती है—जिस प्रकार कि जार्ज के अपने सौतेले बेटे और उसकी सन्तान आगे चल कर हुई। यद्यपि उसे अभाव के कारण होने वाले कष्टों का वास्तविक अनुभव नहीं हो सका, तथापि वह इन से भलीभांति परिचित था। अतः उसकी महत्वाकांक्षा दबने की अपेक्षा अधिक उभरती गई। यही कारण है कि उसने सन् १७५५ में निम्न परामर्श अपने छोटे भाइयों में से एक को दिया:—

"मुझे यह जान कर खुशी होगी कि तुम बैल्वायर में परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घुल-मिल कर तथा मित्रतापूर्वक रह रहे हो, क्योंकि वे चाहें तो हमारे लिये, जो अभी तरुण और जीवन की आरम्भिक अवस्था में हैं, अनेक मौकों पर अत्यन्त उपयोगी हो सकते हैं। मैं तुम्हें यह सलाह दूंगा कि तुम इससे भी एक कदम आगे बढ़ो और उन्हें अक्सर मिलते रहा करो।"

'तरुण जार्ज पर लारेन्स और फेयरफेक्स परिवार के तीसरे प्रकार के प्रभाव भी पड़े। इन्हें हम प्रदेशीय प्रभाव कह सकते हैं। सन् १७५० में वर्जीनिया के एक नेता ने प्रदेश के व्यापार-बोर्ड को स्मरण कराया था कि इस उपनिवेश के पश्चिम की ओर के भूमि-अधिकार 'कैलीफोर्निया' को मिला कर 'दक्षिणी समुद्र' (अर्थात प्रशान्त महासागर) तक चले गये हैं। यह एक बहुत बड़ा दावा था—साथ ही साथ अनिश्चित भी। खासतौर पर यह इसलिये कि कुछ ही वर्ष पूर्व बालक जार्ज ने अपनी स्कूल की कापी में आईस-लैण्ड, ग्रीनलैण्ड, बारबेडोज और अवनिष्ट कैरिबी द्वीपों इत्यादि के साथ 'कैलीफोर्निया' को उत्तरी अमेरिका का

एक 'प्रमुख द्वीप' करके लिखा था। प्रत्येक महत्त्वाकांक्षी वर्जीनिया वासी इस बात को किंचित् स्पष्ट रूप से जानता था कि पश्चिम की ओर ब्लूरिज पर्वत हैं। उनके आगे शैननडोह् की उपजाऊ धरती थी और समानान्तर रेखा पर एलेघनीज की आड़ सी थी। शैननडोह् के निम्नतर भाग के पश्चिमोत्तर में ओहियो घाटी की विवादास्पद भूमि थी जो मिसिसिपी नदी के विस्तृत क्षेत्र तक चली जाती थी। यह समस्त भूमि हर वर्जीनिया-वासी के लिये—उसके बच्चों और बच्चों के बच्चों के लिये—भरपूर पुरस्कार के रूप में थी और इसलिए कोई भी उपनिवेश-वासी उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वह हर उपाय और हर साधन से अपने दावे को बलपूर्वक प्रस्तुत किया करता था।

सन् १७४४ में वर्जीनिया, मेरीलैण्ड तथा आइरोक्विस प्रसंधान के इण्डियनों के बीच एक समझौता हुआ। इस के अनुसार गोरे लोगों के बसने के लिये एलघनीस के क्षेत्र को पश्चिमी सीमा के रूप में स्वीकार किया गया। उससे पूर्व इण्डियन ब्लूरिज को ही गोरों की सीमा मानते थे। इस प्रकार गोरी बस्तियों के लिये शैननडोह् घाटी भी खुल गई। कुछ ही मास अनन्तर लन्दन में प्रीवी कौंसिल ने एक मामले पर ऐसा निर्णय दिया, जो चार्ल्स द्वितीय के पचनवे वर्ष पहले के कमजोर वायदे को सम्पुष्ट करता था। जब चार्ल्स राजगद्दी पर बैठा था, उस समय उसका एक भाग्यशाली अनुयायी 'नार्दरन नैक' का मालिक बना था। सन् १७४४ में यह भू-भाग थामस लार्ड फेयरफेक्स के विरसे में आया। प्रीवी कौंसिल ने भूमि-अधिकारों और सीमाओं के पुराने झगड़ों को उसके हक में तय किया। परिणामतः उसकी जागीर पुन: निर्धारित हुई। उसका नतीजा यह हुआ कि पोटोमैक नदी के ऊपर वाले भाग और रैपाहैन्नोक नदी के मध्य का बहुत बड़ा क्षेत्र उसे मिलकीयत में मिला।

कर्नल फेयरफेक्स जो लार्ड फेयरफेक्स के चचेरे भाई थे, लार्ड फेयरफेक्स के कारिंदे के रूप में कार्य कर रहे थे और इस प्रकार

पर्याप्त सत्ता इनके हाथों में आ गई थी। मालिक क्षुद्रबुद्धि एवं संदेहशील व्यक्ति था। उसने जार्ज की इतनी सहायता नहीं की जितनी कि प्रायः समझी जाती है। परन्तु उसके बारे में अनेकों काल्पनिक बातें प्रचलित थीं। इसलिये जब सन् १७४८ में वह वर्जीनिया में अपनी सम्पत्ति की देख-रेख के लिए आया तो लोगों में जो उत्तेजना और उत्साह पैदा हुआ होगा, उसका हम अनुमान कर सकते हैं।

लार्ड फेयरफेक्स आरम्भ में बेल्वायर आ कर रहा। उस समय तक लारेंन्स तथा अन्य सट्टा करनेवाले व्यक्तियों ने 'ओहियो कम्पनी' की नींव डाल ली थी। इस कम्पनी का उद्देश्य यह था कि पोटोमेक नदी के ऊपरी भाग वाले क्षेत्र में बहुत बड़े इलाके को विकसित किया जाय। यह इलाका उन्हें अनुदान में मिला था। इस प्रकार वर्जीनिया की सीमा (धीरे-धीरे) आगे बढ़ती जा रही थी। इसके अलावा उन्हीं दिनों एक और साहसिक समुदाय ने 'लायल कम्पनी' बना कर इससे भी कहीं 'अधिक महत्वाकांक्षी विकास-योजना का सूत्र-पात किया।

इन विशाल प्रदेशीय परियोजनाओं तथा तरुण वाशिंगटन के आरम्भिक जीवन-व्यवसाय का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट है। चूंकि भूमि का इतना बड़ा महत्त्व था, इस कारण वाशिंगटन का पहला व्यवसाय एक भूमापक के रूप में शुरू हुआ। शायद लारेंन्स की भी इसमें किसी हद तक जिम्मेदारी थी। वह यद्यपि जार्ज पर अपनी कृपा-दृष्टि रखता था, किन्तु उसने उसे ठाठ-बाट का जीवन बिताने की शिक्षा नहीं दी थी। सम्भव है कि लारेंन्स ने जार्ज को समुद्री-व्यवसाय अपनाने की सलाह दी हो, किन्तु उसके चाचा इस सलाह के विरुद्ध थे, क्योंकि उनके विचार में यह कोई शोभनीय पेशा नहीं था। नहीं, उनकी नजरों में, इसमें 'उन्नति' के अधिक अवसर थे। अतः उसके इस चुनाव के लिए हमें किन्हीं लम्बी-चौड़ी व्याख्याओं की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। सम्भवतः वर्जीनिया उपनिवेश में प्रत्येक बागान-स्वामी भूमिति के बारे में जानकारी उपलब्ध करता

था और जार्ज की तरह उसे भी छोटी उम्र में ही भूमि की बिक्री के बिल, न्यायवादी-नियुक्ति-पत्र एवं वचन-पत्र का प्रारूप लिखना सिखाया जाता था।

जब जार्ज सोलह वर्ष का हुआ, तो उसे भूमिति का इतना ज्ञान हो गया कि वह रेखांकण कार्य में सहायता कर सके। चुनांचे सन् १७४८ में उसने फेयरफैक्स दल के साथ शैननडोह प्रदेश में जाकर भूमिति कार्य में सहायता की। वह 'ब्यूरिज' के पार की उसकी पहली यात्रा थी। अगले वर्ष उसे उप-भूमापक के पद पर नियुक्त कर दिया गया। उसका काम यह था कि माऊंट वर्नन के उत्तर में कुछ ही मील दूर पोटोमैक नदी पर बैलहैवन (जिसे बाद में अलैक्जैण्डरिया का नाम दिया गया) नगर के नक्शे तैयार करे। लारैन्स अलैक्जैण्डरिया के न्यासियों में से था। इस प्रकार जार्ज को पहले पहल पारिवारिक संरक्षण में ही कार्य करना पड़ा। तुरन्त बाद वह 'कलपैपर' काउंटी का भूमापक नियुक्त हो गया। जैसे-जैसे वह उत्तरीय वर्जीनिया के इलाकों में भूमिति-कार्य करता चला गया, वैसे ही उसका व्यवसाय छोटे पैमाने पर जोरों से बढ़ता गया। सन् १७५० के अन्त तक इस अठारह वर्षीय भूमापक ने शैननडोह नदी के निचले भाग के क्षेत्र में तीन खण्डों पर अपने अध्यवसाय से मालिक के अधिकार प्राप्त कर लिये। यह तीनों खण्ड मिला कर १४५० एकड़ भूमि बनती थी। चूंकि फेरी-फार्म उसे कुछ ही दिनों में उत्तराधिकार में मिलने वाला था, अतः वह अपने भावी जीवन के विषय में किंचित् संतोष की सांस ले सकता था। चाहे वह बौद्धिक दृष्टि से प्रतिभावान नहीं भी था और चाहे कोई बड़ी सम्पत्ति उसे विरसे में मिली नहीं थी, यह स्पष्ट है कि वह उद्योगी, विश्वसनीय और किफयातशार था।

सन् १७५१ के अन्त में उसके स्थायी रूप से चलने वाले दैनिक कार्यक्रम में बाधा उपस्थित हुई। लारैन्स वाशिंगटन के प्रथम तीन बच्चे मौत की गोदी में सो चुके थे और वह स्वयं खांसी से बहुत तंग था। खांसी का जोर दिनों दिन बढ़ता जा रहा था। निराश

होकर उसने वारबडोस जाने का निश्चय किया। उसे यह आशा थी कि अतीव्र जलवायु से उसे शीघ्र स्वास्थ्य-प्राप्ति होगी। लारेन्स की पत्नी को विवश हो कर अपने चौथे बच्चे के साथ घर पर ही रुकना पड़ा। अतः जार्ज लारेन्स के साथ गया। यह उसकी महाद्वीप अमेरिका से बाहर की पहली यात्रा थी। लारेन्स का यह परीक्षण असफल रहा। उसके स्वास्थ्य में तिल भर भी सुधार न हुआ, बल्कि दुर्भाग्य से जार्ज चेचक रोग से ग्रस्त हो गया। जब उसका बीमारी से पीछा छूटा, तो वह अकेला वर्जीनिया लौट आया। उसने आ कर शोकप्रद सूचना दी कि लारेन्स की तबियत पहले से अधिक बिगड़ गई है और इलाज की तलाश में शायद वह आगे बरमूडा जाय। इस बीच में उसने फिर अपने भूमिति-कार्य को शुरू कर दिया। कुछ समय बाद उसने शैननडोह क्षेत्र में एक और टुकड़ा मोल लिया, जिससे कि कुल मिला कर उसके पास दो हजार एकड़ भूमि हो गई।

किन्तु कुछ एक अन्य कारणों से सन् १७५२ का वर्ष, वाशिंगटन परिवार के लिये क्लेशपूर्ण रहा। जार्ज को प्लूरिसी हो गयी। कुमारी फांटलेराय से उसका विवाह तय नहीं हो सका। ग्रीष्म ऋतु में लारेन्स बरमूडा से वापस लौटा और कुछ ही समय बाद तपेदिक से उसकी मृत्यु हो गई। ऐसा लगता था कि मानों मृत्यु मानुषी दावों पर हंस रही है।

इन दैवी विपदाओं के बीच एक दो बातें ऐसी भी थी जिनसे परिवार के लोगों को अप्रत्याशित रूप से सान्त्वना मिली। एक तो लारेन्स के वसीयत-नामे से और दूसरे उसके द्वारा निर्दिष्ट मार्गों पर चलने के अवसर। भाई के वसीयत-नामे की शर्तों के मुताबिक श्रीमती लारेन्स को जीवन-पर्यन्त प्रयोग के लिये, माऊंट वर्नन की जायदाद मिली। यह इसलिये कि वह लारेन्स के अवशिष्ट बालक की मां होने से उसकी न्यासधारिणी थी। दूसरी शर्त यह थी कि यदि बालक निःसन्तान संसार से चल बसे, तो माऊंट वर्नन जार्ज की सम्पत्ति समझा जाय। विधवा के मरने पर जार्ज को

लारेन्स की फेयरफैक्स काउंटी वाली जायदाद भी हस्तान्तरित हो जाय। इस वसीयत-नामे की शर्तें, जहाँ तक जार्ज का सम्बन्ध था, निस्सन्देह काफी उदार थीं।

एनी फेयरफेक्स का अवशिष्ट बालक ज्यादा देर जिन्दा नहीं रह सका। वह भी अपने अन्य भाइयों की तरह शीघ्र मृत्यु का ग्रास बना और दफनाया गया।

लारेन्स की मृत्यु से वर्जीनिया के मिलिशिया एडजूटेंट का स्थान रिक्त हो गया। जार्ज ने इस स्थान के लिये प्रार्थना-पत्र भेजा, जो मन्जूर हो गया। सन् १७५३ में वाशिंगटन बालिग हो गया। उस समय उसकी आर्थिक दशा अच्छी और मजबूत थी। उसने फ्रैडरिक्सबर्ग के नये 'फ्रीमैसन' भवन में अपना नाम सदस्यों में दर्ज कराया। काऊंटी का भूमापक होने की हैसियत में उसे वर्ष-भर में पच्चास पौण्ड की वृत्ति मिलती थी। उसे अपने व्यवसाय से अच्छी-खासी आमदनी हो रही थी। शैननडोह की दो हजार एकड़ की जायदाद के अतिरिक्त उसे उत्तराधिकार में जो भूमि मिली वह सब मिलाकर चार हजार एकड़ थी। एडजूटेंट होने के नाते उसे सौ पौंड वेतन के रूप में और प्राप्त हो जाते थे। इसके साथ ही उसे 'मिलिशिया' में मेजर के पद से प्रतिष्ठित किया गया। थोड़े ही समय बाद उसने अपनी बड़ी भौजाई से माऊंट वर्नन किराये पर ले लिया और फेरीफैक्स की बजाए उसे अपना निवास-स्थान बनाया। तब से लेकर मृत्युपर्यन्त वह इसी घर में रहा। कुछ काल के अनन्तर उसने इसे खरीद लिया। लगभग चालीस वर्ष तक यही स्थान उसका केन्द्र-बिन्दु बना रहा। उसकी गृह-सम्बन्धी सुरक्षा की सम्पूर्णता के लिए अब उसकी एक ही आवश्यकता थी—केवल एक धर्म-पत्नी।

तरुण-सैनिक

किन्तु कुछ समय के लिए उसे पत्नी की तलाश को स्थगित करना पड़ा। यह बागान का युवा स्वामी एक और स्वप्न में खो गया। वह स्वप्न था एक सैनिक योद्धा के रूप में नाम पैदा करना।

वाशिंगटन के जीवन की यह धारा इस ओर पांच वर्षों तक वहती रही। यह उचित लगता है कि इसे कुछ विस्तार से कहा जाय।

सर्वप्रथम हम वाशिंगटन के शुरू के सैनिक जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाएं संक्षेप से रखेंगे। यह एक प्रकार से उसकी आशातीत सफलता की कहानी है। उसके बाद हम किंचित् गहराई में जायेंगे और यह देखना चाहेंगे कि उन वातों का उसके चरित्र और आकांक्षाओं पर प्रकाश डालने में क्या महत्व है।

सन् १७५३ में ब्रिटेन का उत्तर-अमरीकी-उपनिवेशीय साम्राज्य समुद्र के पूर्वी तट से लेकर एलघनीज की पर्वतमालाओं तक फैला हुआ था। इन पर्वतमालाओं के दूसरी ओर फ्रांस था, जिसके साथ ब्रिटेन अर्ध-शताब्दी से लगातार लड़ता आ रहा था। फ्रांस का अमरीकी साम्राज्य ब्रिटिश साम्राज्य के उत्तर और पश्चिम में घेरती हुई विशाल चाप के आकार में था। यह चाप सेंट लारेंन्स नदी के ऊपरी भाग से होती हुई 'ग्रेट लेक्स' में से गुजरती थी और मिसिसिपी नदी के निचले भाग को छूती हुई 'न्यू ओरलियन्ज' तक चली जाती थी। यह एक हल्की-पतली चाप थी; पर स्थिति यह थी कि यदि फ्रांस अपने कब्जे में आये क्षेत्र को सुदृढ़ वना लेता है, तो वर्जीनिया तथा अन्य उपनिवेश सिमट कर समुद्र-तट तक ही रह जाते हैं। दूसरी तरफ, यदि ब्रिटेन ओहियो घाटी पर कब्जा कर लेता है, तो चाप टुकड़े-टुकड़े हो जाती है। उस अवस्था में मिसिसिपी भी फ्रांसीसियों के कब्जे से छीनी जा सकती थी। इस प्रकार कि वर्जीनिया और विशेषकर ओहियो कम्पनी दोनों ही इस संघर्ष में उलझे हुए थे। कहने के लिए तो फ्रांस और ब्रिटेन में सन् १७४८ से सन्धि थी, लेकिन वास्तव में उनमें लड़ाई की आग कभी भी भड़क सकती थी, क्योंकि यह शान्ति नहीं थी, वल्कि युद्ध-विश्रान्ति थी। हालात को देखते हुए ओहियो कम्पनी ने यह दृढ़ निश्चय किया कि ओहियो के संगम पर, जहां मोननगहेला और एलघनी नदियां मिलती है, एक दुर्ग वनाया जाय। उसके जासूसों ने खवर दी कि फ्रांसीसी झील एरी के दक्षिण से ओहियो नदी तक मुकावले में किलों की एक

शृंखला सी बना रहे हैं और ये किले प्रैस्क आईल, लेबाफ और सम्भवतः वैननगो और लौग्सटाऊन पर होंगे। (इस खबर से चौंक कर) वर्जीनिया के लैफ्टीनैण्ट गवर्नर, रौबर्ट डिनविड्डी ने फ्रांसीसियों को चेतावनी के रूप में एक अन्तिम प्रस्ताव भेजा और उसको लेकर गये मेजर वाशिंगटन।

डिनविड्डी के इस शिष्टतापूर्ण किन्तु दृढ़ शब्दों में लिखे हुए पत्र को लेकर, फ्रांसीसी सेनापति को देने के लिए, वाशिंगटन ने १७५३ में अक्तूबर मास में प्रस्थान किया। उन्होंने अपने साथ क्रिस्टोफर नाम के एक सुयोग्य, सीमान्त प्रदेश के निवासी को लिया। इसके अलावा उन्होंने हालैण्ड के द्विभाषिये वानब्राम और अन्य चार आदमियों को भी लिया। वाशिंगटन को आने-जाने में ढाई महीने लगे। विलियम्जबर्ग लौटने पर जो वह लेवाफ किले से उत्तर में पत्र लाये, वह मूल-पत्र के समान ही शिष्टतापूर्ण, किन्तु दृढ़ भाषा में लिखा हुआ था।

रास्ते का सफर जोखम का था। मौसम भी खराब था। जाती बार वे नाव में और घोड़े पर सवार होकर गये। शुरू में वे लोग ओहियो कम्पनी की इस पगडण्डी से गये जिसे जिस्ट साफ कर रहा था। इससे होते हुए वे बीहड़ जंगल में घुसे। पोटोमैक नदी को पार करके वे घाटी में आये। वहां से वे उस स्थान पर पहुंचे जहां यौधियोधैनी नदी मौननगहेला नदी में विलीन हो जाती है। तत्पश्चात् वे ओहियो संगम के बिल्कुल ही पास इण्डियनों की बस्ती, शन्नोपिन, में पहुंचे। उसके बाद वे लौग्सटाऊन और वैननगो गए और वहां से लेवाफ पहुंच गये जो झील एरी के किनारे पर स्थित था। वाशिंगटन के लिए हर वस्तु नई-नई थी—वनाच्छादित तथा टूटा-फूटा भू-भाग; इण्डियनों के भिन्न-भिन्न रहन-सहन के ढंग और आदतें; विनीत, किन्तु जिद्दी फ्रांसीसी, उन्होंने 'उन्हें बताया कि उनकी यह निश्चित योजना है कि ओहियो पर पूरी तरह कब्जा जमाया जाय और भगवान ने चाहा तो वे इसे लेकर छोड़ेंगे।'

जिस्ट को साथ लेकर वाशिंगटन शीघ्रता से लौटे। उन्हें इस

लिये बहुत जल्दी थी, क्योंकि वह आकुलता-पूर्ण सूचना शीघ्राति-शीघ्र देना चाहते थे। आती बार मार्ग में उन्हें अत्यधिक कठिनाइयों और भीषण स्थितियों का सामना करना पड़ा। एक इण्डियन ने उन पर बिल्कुल सामने से गोली चलाई। सौभाग्य की बात कि वह निशाना चूक गया। इसलिये कि उसे उनके मार्ग का पता न चले, वे रात-भर सफर करते रहे। दिखावा यह किया कि वे वहां खेमे गाड़ रहे हैं। दूसरे दिन भी वे पैदल सफर करते रहे। एलघैनी नदी आधी जमी हुई थी। उसे पार करने के लिये उन्हें विशेष प्रकार का बेड़ा बनाना पड़ा। वे लोग नदी पार कर ही रहे थे कि वाशिंगटन उसके तख्ते पर से नदी में जा गिरे। वह डूबने वाले ही थे कि उन्हें पानी से निकाल लिया गया। नदी में गिरने के कारण उनके कपड़े पानी में तर-बतर हो गये। इन्हीं गीले कपड़ों में ही उन्हें कड़ाके की सर्दी में रात गुजारनी पड़ी। विचित्र बात यह हुई कि जार्ज वाशिंगटन की बजाय जिस्ट तुषार-ग्रस्त हुआ।

अन्त में जब वाशिंगटन विलियम्जबर्ग वापस लौटे, तो डिनविड्डी के कहने पर उन्होंने शीघ्रता-पूर्वक उस यात्रा का विवरण लिखा। डिनविड्डी ने उस विवरण को छपवा लिया। इससे उसका निस्सन्देह अभिप्राय यह था कि संविधान सभा के सदस्यों पर स्थिति की गम्भीरता हृदयांकित की जाय। लन्दन में इसे तीन विभिन्न प्रकाशनों द्वारा पुनः मुद्रित किया गया, जिनमें वाशिंगटन को (उनके साहसपूर्ण कार्य के लिए) यथोचित श्रेय दिया गया। संविधान-सभा पर इसका काफी प्रभाव पड़ा और उसने वाशिंगटन को देने के लिये पचास पौंड की रकम स्वीकार की। डिनविड्डी उनका नया पृष्ट-पोषक बना। कहानी है कि वाशिंगटन की प्रशंसा करते हुए उसने उन्हें 'बहादुर बेटा' कहा था। मेजर वाशिंगटन का सितारा बुलन्दी पर था।

जो घटनाएं बाद में हुईं, उनसे यह सिद्ध होता है कि नियति ने उनके लिए उच्च स्थान निश्चित कर रखा था। डिनविड्डी ने ओहियो देश को कब्जे में रखने के लिए आक्रमण की योजना बनाई।

वाशिंगटन को वर्जीनिया की मिलिशिया में लेफ्टीनैण्ट कर्नल के रूप में कमीशन देकर उप-सेनापति के लिए चुन लिया गया। जिन दिनों वाशिंगटन अपनी सेना की भर्ती में मसरूफ थे, जिस्ट और ओहियो कम्पनी के दूसरे कारिंदे, विलियम ट्रैण्ट, सीमा पर मोननगेहला नदी के किनारे कम्पनी का गोदाम और संगम पर कम्पनी का एक किला बना रहे थे। ट्रैण्ट को कैप्टन का कमीशन मिला और उसे आदेश मिला कि वह सीमा-प्रान्त निवासियों का एक दस्ता भर्ती करे। लैफ्टीनैण्ट कर्नल वाशिंगटन से कहा गया कि वह दो और दस्ते भर्ती करके ट्रैण्ट की सेना को कुमक पहुँचाएं।

वाशिंगटन, अप्रैल, १७५४ में, अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अलैक्जैण्डरिया से रवाना हो गये। उनके साथ उनके आठ अधीन अफसर थे। (जिनमें वामब्राम भी था, जिसे वाशिंगटन ने कैप्टन की कमीशन दिला दी थी।) (इनके अलावा उन्होंने एक सर्जन, एक स्वीडन देश का 'भद्र स्वयं-सेवक' तथा एक सौ पचास आदमी और लिए। तीन सप्ताह के अभिनिर्माण के बाद वे लोग पौटोमैक नदी के ऊपरी भाग में विल्सक्रीक पर पहुँच गए। (इसी स्थान पर बाद में कम्बरलैण्ड का दुर्ग बना।) यहाँ आकर यह भयप्रद किंवदन्ती सम्पुष्ट हुई कि ट्रैण्ट को ओहियो संगम पर अधिक शक्तिशाली फ्रांसीसी सेना ने खदेड़ दिया है और अब वह पीछे हटता हुआ विल्जक्रीक की तरफ ही लौट रहा है। किन्तु जब पड़ौसी इण्डियनों ने दुबारा अपनी वफादारी की घोषणा की, तो इससे प्रोत्साहन पाकर और अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए वाशिंगटन ने अपने अफसरों की बात मान ली कि उन्हें मोननगहेला के गोदाम तक आगे बढ़ना ही चाहिए। यदि वे ऐसा करते तो वे ऐसे स्थान पर पहुँच जाते जो ओहियो संगम से कुल चालीस मील दूर है। यह जगह इसलिए सैनिक महत्व की थी, क्योंकि फ्रांसीसी वहाँ अपना एक किला बना रहे थे, जिसका नाम उन्होंने बाद में ड्यूक्वेन रखा।

अपने निश्चय के अनुसार वे मोननगहेला की ओर धीरे-धीरे बढ़े। रास्ते में इस कदर बीहड़ जंगल थे और भूमि-तल इतना

टूटा-फूटा था कि सैनिक-सामग्री को आगे खींचना दुष्कर हो गया। पन्द्रह दिन की अवधि में वह केवल बीस मील आगे बढ़ सके। किन्तु उन्होंने, हिम्मत न हारी और वह ग्रेट मीडोज में से होते हुए लारल माऊंटेन तक आगे बढ़ते गये। यहाँ उन्हें जिस्ट मिला जो अपने अभीक्षण से यह सूचना लेकर आया कि फ्रांसीसियों का एक सैन्यदल निकट ही लुका-छिपा हुआ है। दूसरे दिन प्रातः ही वाशिंगटन की उनसे भिड़न्त हुई। किस पक्ष ने सबसे पहले गोली चलाई—यह नही कहा जा सकता। असल बात तो यह है कि दोनों देशों में से किसी को भी गोली चलानी नहीं चाहिये थी, क्योंकि औपचारिक रूप से उन में अब तक युद्ध की स्थिति नहीं थी। किन्तु वे युद्ध के इतने निकट थे कि इस प्रश्न पर बहस करना अप्रासंगिक सा जान पड़ता है। तथ्य यह है कि वाशिंगटन के आदमियों ने फ्रांसीसियों पर अकस्मात् धावा बोल दिया और इस अल्पकालीन लड़ाई में उन्होंने फ्रांसीसियों के छक्के छुड़ा दिये। परिणामतः फ्रांसीसियों के दस सैनिक मारे गये और बीस आदमी बन्दी बना लिये गये। इन मरने वालों में फ्रांसीसी नेता एम० डी० जुमनविल भी था। वाशिंगटन के इण्डियन सैनिकों ने इन मृतक-सैनिकों में से कइयों की खोपड़ियाँ काट डालीं। वाशिंगटन की निजी क्षति अधिक नहीं थी—केवल एक ही आदमी मरा था और दो या तीन आहत हुए थे।

यह घटना मई के अन्त की है। वाशिंगटन ने इन बन्दियों को वर्जीनिया भेज दिया। उन्होंने जो कार्य किए थे, उनके लिए उन्हें 'वाह'—'वाह' मिली। चूंकि सेना-पति की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिए उन्हें अब सम्पूर्ण कर्नल का पद देकर वर्जीनिया के सारे दस्ते का सेना-पति बना दिया गया। जो दस्ते अन्य उपनिवेशों से आकर शामिल होने थे, वे उनके अधीन नहीं थे। किन्तु एक ही दस्ता अन्य उपनिवेशों से पहुँचा, जिससे कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। सन् १७५४ के जून मास के अन्त तक वाशिंगटन को और बड़ा दायित्व सौंप दिया गया। अब वर्जीनिया की मिलिशिया के अतिरिक्त नार्थ कैरोलिना की नियमित स्थायी सेना तथा इण्डियनों के कबीले भी उनके अधीन थे।

वाशिंगटन को सूचना मिली कि फ्रांसीसियों ने ड्यूक्वैने के दुर्ग पर भारी संख्या में सेना एकत्न कर ली है और वे शीघ्र ही आक्रमण करने वाले हैं। रसद की कमी के कारण, इण्डियन सैनिकों के धीरे-धीरे साथ छोड़ जाने के कारण तथा अन्य समस्याओं से खीझ कर उन्होंने शीघ्रतापूर्वक अपनी सेना 'ग्रेट मीडोज' के भण्डारागार पर पीछे हटा ली। यह आगार जल्दी-जल्दी बनाया गया था, अतः इसे 'नैसेसिटी' (आवश्यकता) दुर्ग का नाम दिया गया। ३ जुलाई को फ्रांसीसियों ने उस किले को घेर लिया। उस समय तक सब इण्डियन सैनिक वाशिंगटन को छोड़ कर जा चुके थे। जुमनविल के साथ जो युद्ध हुआ था, उसके विपरीत यह लड़ाई लगभग सारा दिन चलती रही और जब तक संघर्ष रहा, जोरों की वर्षा होती रही। फ्रांसीसी निरन्तर गोली चलाते रहे और वाशिंगटन की सेना के अधिकाधिक पास आते गये। 'नैसेसिटी' का किला सेना की रक्षा नहीं कर सका। वाशिंगटन के आदमियों की गम्भीर क्षति हुई। उनके मवेशी और घोड़े शत्रु की गोलियों के शिकार हुए। उपनिवेशों की सेना की स्थिति सचमुच संकटमय थी। उसके पास खुराक और बारूद दोनों नहीं बचे थे और इस पर तुर्रा यह कि शत्रु भारी संख्या में चारों तरफ से उन्हें घेरे हुए था। परिणामतः वाशिंगटन को विवश होकर आत्म-समर्पण करना पड़ा। फ्रांसीसियों ने उन्हें सैनिक प्रबन्ध में बाहर जाने की आज्ञा इस शर्त पर दे दी कि वह अपनी सेना को वर्जीनिया वापस ले जाएं। उनके दो अफसर बन्धक के रूप में वहीं रख लिए गए। इनमें से एक वानग्राम था जो अब भी द्विभाषिये के तौर पर काम कर रहा था। इसी ने ही समर्पण-पत्न का अनुवाद किया था, जिस पर हस्ताक्षर करने के लिये वाशिंगटन को विवश होना पड़ा था।

इस तरुण अफसर के लिये यह हार एक कड़वा घूंट थी। कइयों का विचार था कि उन्होंने इस युद्ध में दोष-पूर्ण निर्णय-शक्ति का परिचय दिया है। वह जो कुछ भी कर सकते थे, उन्होंने किया। लंदन और विलियम्बर्ग, दोनों स्थानों में प्रतिक्रिया अच्छी हुई और

उनके कामों की साधारणतः सराहना की गई। उम्र में अपेक्षतया छोटा होते हुए भी उनकी ख्याति चारों तरफ फैल गई। उनका एक निजी पत्र जिसमें उन्होंने जुमनविल के साथ की गई लड़ाई का वर्णन किया था 'लन्दन मैगजीन' में छपा। इस पत्र में, जो वाशिंगटन द्वारा अपने भाई को लिखा गया था, उन्होंने लिखा था—'हमने उस युद्ध में शानदार विजय प्राप्त की।' साथ ही उन्होंने युवकोचित उत्साह से यह शब्द भी उसमें जोड़ दिये थे—'मैंने गोलियों को साँए-साँएं करते सुना। मेरा विश्वास कीजिए कि उस ध्वनि में कोई मनोहारी बात अवश्य है।' होरेस वालपोल कहता है कि उसने इस बारे में उस समय के ब्रिटिश सम्राट् जार्ज द्वितीय से भी जिक्र किया। उसके कथनानुसार बादशाह जार्ज ने इस पर यह टिप्पणी की—'यदि वाशिंगटन इतनी गोलियों की आवाज सुन लेता, तो यह न कह पाता।' इस टिप्पणी की जानकारी उस समय वाशिंगटन अथवा उसके वर्जीनिया के समकालीन लोगों को न थी। परन्तु उन्हें यह अवश्य मालूम था कि जो कोई भी घटना वर्जीनिया में होती है, उसे पेरिस और लन्दन में गौर से देखा-जाँचा जाता है। वाशिंगटन जैसे प्रदेश के एक सैनिक को यह विचार सचमुच मादकता लाने वाला था कि एक स्थानीय घटना, जिसके होने में उनका अपना हाथ था, विश्वव्यापी महत्व ग्रहण कर चुकी है।

वाशिंगटन थोड़े समय के लिए अवश्य बदनाम हुए, जब कि फ्रांसीसियों ने उनकी निजी डायरी का, जो दैवयोग से नैसेसिटी दुर्ग में छूट गई थी, मुद्रण करवाया। उन्होंने अपने पक्ष में प्रचार करने के लिए इसका उपयोग किया—यह सिद्ध करने के लिए कि इन सीमा-प्रान्त की लड़ाइयों में अंग्रेजों ने पहले-पहल आक्रमण किया था। उनका यह कहना था कि कुछ मास पूर्व वाशिंगटन की तरह ही जुमनविल भी *शान्तिमय उद्देश्य के लिए उन क्षेत्रों में गया था*, किन्तु फिर भी उसकी निर्दयतापूर्वक 'हत्या कर दी गई'। चूंकि वानब्राम समर्पण-पत्र में उस बेहूदा शब्द को नहीं देख पाया था—जो अनेक बार उसमें प्रयुक्त हुआ था—फ्रांसीसियों ने दलील दी कि

वाशिंगटन ने उस हस्ताक्षरित पत्र में अपना अपराध स्वीकार किया है। चूंकि फ्रांसीसी वाशिंगटन को बहुत बड़ा धूर्त कह कर पुकारते थे और उन्होंने एक लम्बी कविता में, जो इसी अवसर के लिए लिखी गई थी, उन्हें इसी प्रकार का घृणास्पद व्यक्ति चित्रित किया था, अंग्रेज इस कारण उनका पक्ष अधिक उत्साह से लेने लगे। अंग्रेजों का कहना था कि वाशिंगटन ने जल्दी में और दबाव में आकर समर्पण-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। फिर, यदि वर्जीनिया के अधिकारियों ने, 'नैसेसिटी' दुर्ग के समझौते में वाशिंगटन द्वारा दिए गये इस वचन को कि जुमनविल-संघर्ष के कैदियों को छोड़ दिया जायगा, पूरा नहीं किया, तो इसमें उनका क्या दोष ?

धीरे-धीरे यह हल्ला-गुल्ला समाप्त हुआ। कई महीने बीत जाने पर वाशिंगटन फिर उलझनों में फँस गये। उन्होंने सन् १७५४ में अपने कमीशन से त्याग-पत्र दे दिया। कारण यह था कि वह उन योजनाओं में होने वाली गड़बड़ी से निराश हो उठे थे जो सीमा-प्रान्त की चढ़ाइयों में बनाई जाती रहीं। किन्तु १७५५ की वसन्त ऋतु में उन्होंने फिर ओहियो संगम की ओर जाने वाला परिचित मार्ग पकड़ा। इस बार वह बिना किसी सरकारी पदस्थिति के, एक स्वयं-सेवक के रूप में थे—ठीक उसी तरह जिस तरह कि एक वर्ष पूर्व स्वीडन देश का भद्र पुरुष उनकी सेना के साथ गया था। उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि सफलता उनके कदम चूमेगी। जनरल एडवर्ड ब्रैडॉक भी अपने दो ब्रिटिश बटैलियनों के साथ वर्जीनिया पहुंच गये। यह एक श्रेष्ठ, अनुभवी योद्धा थे, जो अपने विचारों में निर्भ्रम और दृढ़ थे। इनका लक्ष्य ब्रिटेन-अधीन अमेरिका के ओहियो भाग से फ्रांसीसियों को खदेड़ना था। वाशिंगटन को ब्रेडाक के परिसहाय 'परिवार' का अवैतनिक सदस्य बनने का निमन्त्रण मिला।

पहले की तरह देर ही पर देर हो रही थी जो कष्टकारक थी। आखिर सन् १७५५ के मई मास के अन्त में ब्रैडॉक की सेना (जिसमें दो हजार से अधिक नियमित सैनिक, स्वयं-सेवक और मिलिशिया के आदमी थे) ड्यूक्विने दुर्ग तक एक सौ पचास मील की यात्रा

तय करने के लिए कैम्बरलैण्ड के दुर्ग से चल पड़ी। बोझल सामान और तोपों के कारण सेना इतनी धीमी गति से जा रही थी कि—जैसा कि वाशिंगटन ने स्वयं लिखा है कि उनके सुझाव पर—कम गति वाली वस्तुएं सेना के पिछले भाग में अलग ही चल रही थीं। वह इनके साथ थे। मार्ग में उन्हें पेचिश हो गई। छः सप्ताह अनन्तर जो गोलियों की ध्वनि उनके कानों में पड़ी, वह पहले की तरह आकर्षक नहीं थी।

अभी ब्रैडॉक की सेना का अगला भाग ड्यूक्विने से कुछ ही मील की दूरी पर था और वन में सावधानी से आगे बढ़ रहा था जब कि फ्रांसीसियों और इण्डियनों की एक टुकड़ी ने अचानक उन पर हमला बोल दिया। वे इण्डियनों के वस्त्र धारण किये हुए थे और उनका नेतृत्व एक निर्भीक फ्रांसीसी अफसर कर रहा था। वे पेड़ों के झुरमुट में से अकस्मात् निकले और उसके आदेश पर इधर-उधर बिखर कर गोलियों की वर्षा करने लगे। कुछ क्षण स्थिति ब्रिटिश सेना के काबू में रही और फ्रांसीसियों के कदम उखड़ने लगे, किन्तु तुरन्त बाद पांसा पलटा और ब्रैडॉक के प्रतिकूल पड़ा। इसके अनेक कारण थे। ब्रिटिश सैनिक लाल-वर्दी में थे और एक जगह इकट्ठे होने और विशेष वस्त्र धारण करने के कारण स्पष्टरूप से पहचाने जाते थे। इसके अलावा शत्रु-सैनिक बिना निशाना चूके गोलियां दाग रहे थे—जिससे ब्रिटिश सैनिक घबरा उठे। इनके अतिरिक्त उनका प्रशिक्षण जिस ढंग से हुआ था, वे उस प्रकार से यहां पंक्तिबद्ध होकर लड़ भी न सकते थे। परिणामतः वे असहाय और उन्मत्त लोगों की तरह बीसों की संख्या में धराशायी होते चले गये। अफसरों का यह हाल था कि वे सैनिकों को इकट्ठा करके लड़ाने की जो कोशिश कर रहे थे उसके कारण उनमें से तीन चौथाई हताहत हुए। मृतकों में से ब्रैडॉक भी था। वह क्रोधावेश में, घोड़े पर सवार, इधर से उधर, साहस के साथ भागता रहा था, किन्तु इस कदर जख्मी हुआ कि जिंदा बच न सका। वाशिंगटन भी लड़ाई में शरीक होने के लिए तेज रफ्तार से आगे बढ़े। उनके

कथनानुसार वर्जीनिया की फौज अधिक जम कर और धैर्य-पूर्वक लड़ी। किन्तु उनकी अपनी और दूसरों की सब कोशिशें बेकार गईं। वास्तव में उनका भाग्य ही अच्छा था कि वह स्वयं जिन्दा बच निकले। उनके दोनों घोड़े मारे गए और उनके वस्त्र गोलियों से चीथड़े-चीथड़े हो गए। उनके पक्ष के अनेक सैनिक थे जो इतने खुशकिस्मत नहीं थे। यह जंगल का भाग मानों एक कत्लेआम की जगह बन गया। ब्रैडॉक के करीब नौ सौ आदमी या तो मारे गये और या आहत हुए। इतनी अधिक मौतों के कारण, खुशी से नारे लगाते हुए इण्डियनों को, बहुत बड़ी संख्या में खोपड़ियाँ उतारने का अवसर मिला। (बाद में एक ब्रिटिश अफसर ने, जबकि निराश बचे-खुचे सैनिक पीछे हट रहे थे, यह कहा—'खोपड़ियां उतारते हुए इन इण्डियनों की भयंकर चिल्लाहट मुझे मृत्युकाल के समय तक व्याकुल करती रहेगी।')

यदि ब्रैडॉक का उप-सेनापति बचे-खुचे सैनिकों को इकट्ठा करके ड्यूक्विने पर धावा बोल देता, तो सम्भव है कि इस विध्वंस का परिशोधन हो जाता। वास्तव में तब युद्ध का सहज में पांसा पलट सकता था। किन्तु ब्रैडॉक इतना मूर्ख नहीं था जितना कि उसे समझा जाता है। उसके सैनिकों पर भी अचानक हमला नहीं हुआ था, इसके अलावा उसकी सेना फ्रांसीसी सेना से कहीं अधिक थी। और यदि ड्यूक्विने का हमला इतना साहसपूर्ण न होता, तो फ्रांसीसियों को हार का मुंह देखना पड़ता। लेकिन इस प्रकार सोचने से हार की लज्जाजनक वास्तविकता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। ड्यूक्विने पर फ्रांसीसियों का कब्जा था और इसलिए वर्जीनिया का सम्पूर्ण सीमान्त क्षेत्र लूट-पाट में अभ्यासी और विजय से उल्लसित इण्डियनों के लिए सर्वथा खुला मैदान बन गया।

वाशिंगटन के लिए किंचित् संतोष की बात अवश्य थी। उस करारी हार की वजह से कितनी ही घनी उदासी क्यों न आई हो और कितने ही आरोप-प्रत्यारोप एक दूसरे पर क्यों न लगाये गये हों, उनके निर्मल यश पर आंच नहीं आई। उनके विषय में मशहूर

था कि बीमार होने के बावजूद वह बहादुरी के साथ लड़े। नार्थ कैरोलीना के गवर्नर ने उन्हें लिखा—'श्रीमन् ! मुझे आज्ञा दें कि कि मैं आपको गत युद्ध में आपके प्राणों की रक्षा के कारण बधाई दूं। आपने ओहियो नदी के तट पर अमर कीर्ति प्राप्त की है।' इसके अतिरिक्त ऐसे ही प्रशंसा के और भी पत्र उन्हें मिले। वह दुवारा वर्जीनिया सरकार में कर्नल के पद पर नियुक्त किये गये, किन्तु अब उन्हें वर्जीनिया की सेना का प्रधान सेनापति बनाया गया। यह सन् १७५५ के अगस्त मास की बात है, जबकि वह अभी केवल तेईस वर्ष के थे।

पदवी तो बड़ी थी, किन्तु कार्य इतना दुष्कर था कि कोई भी उससे ऊब सकता था। उनके पास कुछ ही सौ सैनिक थे, किन्तु उनसे अपेक्षा यह की जाती थी कि वह साढ़े तीन सौ मील की सीमा-पंक्ति की रक्षा करेंगे। वर्जीनिया में बसने वाले तथा सट्टा करने वाले दोनों श्रेणियों के लोगों की जो बड़ी बड़ी आशाएं थीं, वे मिट्टी में मिलती नजर आईं। ब्रिटेन और फ्रांस के बीच में मई, १७५६ तक सरकारी तौर पर युद्ध घोषित नहीं हुआ था और जो जो मुख्य अभियान थे, वे उत्तर अमेरिका में अन्य स्थानों में हुए थे। वाशिंगटन और उनके साथी जो पश्चिम की चौकियों पर तैनात थे, यह महसूस करने लगे थे कि उनकी स्थिति विस्मृत सीमा पर विस्मृत मनुष्यों सरीखी है। सन् १७५७ के अन्तिम भाग में वाशिंगटन पुनः पेचिश के रोग से ग्रस्त हो गये। अन्त में उन्हें अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी, क्योंकि उनकी तबीयत बहुत बिगड़ चुकी थी। अतः विवश ही कर उन्हें माऊंट वर्नन लौटना पड़ा। उनके बिगड़े स्वास्थ्य को देख कर यह शंका उत्पन्न होती थी कि कहीं वह भी अपने पिता तथा सौतेले भाई का अनुसरण करते हुए मृत्यु का ग्रास न बन जाएं। अभी तक उन्होंने विवाह नहीं किया था। इसलिए उनकी पीढ़ी को चलाने के लिए उनका कोई उत्तराधिकारी पैदा नहीं हुआ था। उनकी लम्बी अनुपस्थिति के कारण माऊंट वर्नन की ओर ध्यान नहीं दिया गया था। इसी प्रकार उनके

अन्य मामले ज्यों के त्यों पड़े थे। उन्होने दो बार नगरपालिका के चुनाव लड़े थे और दोनों ही बार उन्हें चुनावों में मुंह की खानी पड़ी थी।

परन्तु सन् १७५८ की बसन्त ऋतु में यह फिर स्वस्थ हो गये और इस योग्य हो गये कि किसी दूसरे अभियान में शामिल हो सकें। ब्रिगेडियर जनरल फोर्ब्स के अधीन ब्रिटिश सेना ने, जो उत्तर अमेरिका की अंग्रेजी सेनाओं में से थी, पुनः ड्यूक्वैने पर चढ़ाई की योजना बनाई। तदनुसार वाशिंगटन के लिए उस ओर प्रस्थान करने का चौथा अवसर बन गया। किन्तु उन्हें यह जान कर अचम्भा हुआ और इस बात पर गुस्सा भी आया कि फोर्ब्स बजाए पुराने, सुपरिचित मार्ग के एक नई सड़क का निर्माण करने लगे हैं जो पैनासिलवेनिया के रेसटाऊन से आरम्भ होकर पश्चिम की ओर जायगी। वाशिंगटन ने उस पुराने मार्ग के गुण और लाभ जताते हुए फोर्ब्स के इरादे को बदलने का यत्न किया, किन्तु सब बेकार गया। फोर्ब्स अन्त तक अपने निर्णय पर अड़ा रहा। इसके परिणाम-स्वरूप जैसा कि वाशिंगटन अफसोस से देख रहे थे—सप्ताह धीरे-धीरे महीने बने और गर्मी का मौसम भी समाप्ति पर आ गया। अभी तक फोर्ब्स की सेना ओहियो संगम की ओर मार्ग-निर्माण में जुटी हुई थी। इस विलम्ब के कारण ब्रिटिश सेना लगभग इस निश्चय पर पहुँची ही थी कि उस वर्ष शरद ऋतु में आगे बढ़ने के प्रयास छोड़ दिये जायं, जब कि सन् १७५८ के नवम्बर मास के अन्त में फ्रांसीसियों ने ओहियो घाटी में लड़ाई जारी रखने का विचार ही अन्तिम रूप से त्याग दिया। उन्होंने अंग्रेजी फौज द्वारा घेरा डालने की प्रतीक्षा नहीं की, बल्कि उससे पूर्व ही ड्यूक्वैने दुर्ग को आग लगा दी। इस सफलता में, जिसके पाने में एक बूंद भी रक्त नहीं बहा था, रुचिहीनता का तत्व अवश्य था, इसे प्राप्त करने के लिये किसी प्रकार के संघर्ष की जरूरत नहीं पड़ी थी। तो भी, यथेष्ट उद्देश्य की पूर्ति तो हो ही चुकी थी। बाद में उसी ड्यूक्वैने की राख पर ब्रिटेन का सुदृढ़ किला बना। इसे 'पिट' दुर्ग का नाम दिया गया। इस विजय

का फल यह हुआ कि वर्जीनिया उपनिवेश की पश्चिमी सीमा पर काफी हद तक शान्ति की व्यवस्था हो गई।

वाशिंगटन सैनिक-जीवन से विदाई लेने को तैयार थे, यद्यपि अन्य स्थानों पर फ्रांसीसियों से लड़ाई चल रही थी। इस अभियान के अन्त में उनकी पद-स्थिति अवैतनिक ब्रोगेडियर की थी। सन् १७५८ में वह आखिरकार फ्रेड्रिक काऊंटी के निर्वाचन-क्षेत्र से नगरपालिका के लिए चुन लिये गये और उनकी सगाई भी हो गई। वर्जीनिया के सैनिक-अफसरों ने जब यह सुना कि वाशिंगटन अपने पद से त्याग-पत्र दे रहे हैं, तो उन्होंने अपने 'विनयपूर्वक आवेदन' में उन्हें एक वर्ष और अपने पद पर रहने के लिए आग्रह करते हुए कहा—

'श्रीमन् ! इस बात को सोचिये कि इतने उत्कृष्ट सेनापति, सच्चे मित्र और मधुर और मिलनसार साथी का वियोग हमारे लिए कितना दुःखकर होगा।'

'जब हम इस बात को और अधिक सोचते है, तो हमें यह सोच कर और भी दुःख होता है कि आपकी विदाई से, हमारी ही तरह इस अभागे देश को जो क्षति होगी उसकी पूर्ति करना नामुमकिन होगा। हमारे देश को आपके समान सेना-सम्बन्धी मामलों में अनुभवी कहाँ मिलेगा ? इसे ऐसा व्यक्ति भला कहां प्राप्त होगा जो अपने देश-प्रेम, साहस और आचार-व्यवहार के कारण इतना कीर्तिमान हो ? आप में हमारा अक्षुण्ण विश्वास है। हम आपको भलीभांति जानते-पहचानते हैं और आपसे हमारा सच्चा प्यार है। उस समय जबकि आप हमारा नेतृत्व कर रहे होते हैं, तो आपकी मौजूदगी हमारे सभी के अन्दर दृढ़ता और शक्ति का संचार करती है, हमें भयंकर से भयंकर खतरों का सामना करने की हिम्मत बंधाती है, और हमें इस योग्य बनाती है कि हम भारी परिश्रम और कठिनाइयों की परवाह तक न करें।'

इस प्रकार के प्रशंसा-युक्त शब्दों की सचाई में कोई सन्देह नहीं कर सकता। न ही हम उनके उस पत्र में सन्निहित सारभूत सचाई

की उपेक्षा ही कर सकते हैं जो उन्होंने सन् १७५७ के सितम्बर मास में डिनविड्डी को लिख कर भेजा था--

"मेरे अन्दर कमजोरियां हैं और सम्भवतः बहुत सी हैं—मैं इससे इनकार नहीं कर सकता। यदि मैं पूर्णता का मिथ्या अभिमान करूं, तो यह मेरे लिए अपने मुंह मिया मिट्ठू बनने वाली बात होगी और यह मेरा खोखलापन होगा। संसार भी मुझे इन्हीं नजरों से देखेगा। किन्तु मैं यह जानता हूं—और मुझे इससे अत्यधिक सान्त्वना मिलती है कि आज तक किसी सार्वजनिक कर्तव्य पर नियुक्त व्यक्ति ने मेरे से ज्यादा दयानतदारी से और देश-हित के लिए मेरे से अधिक उत्साह के साथ अपने कर्तव्य को नहीं निभाया होगा।"

किन्तु यह घोषणा हमें कुछ विचित्र सी लगती है। सेवा-निवृत्त कर्नल वाशिंगटन की कहानी को आगे चलाने से पहले हमें जरूरत महसूस होती है कि हम इसकी और भी जांच करें। वाशिंगटन ने इन पांच सालों में जो चिट्ठियाँ लिखीं उनसे पता चलता है कि उन्हें इन वर्षों में मुख्यरूप से निराशाओं और दीनता का मुंह देखना पड़ा। इस कारण हम उन्हें बार-बार खीझ उठने की वजह से दोषी नहीं ठहरा सकते। उनके अफसरों ने जैसा कि विश्वासपूर्वक कहा था, उन्होंने सीमान्त-प्रदेश-सम्बन्धी लड़ाइयों के स्वरूप एवं सम्भावनाओं की जानकारी इतनी ही पूर्ण रीति से उपलब्ध कर ली थी, जितनी कि किसी भी वर्जीनिया-वासी के लिए सम्भव थी और यह जानकारी निश्चय से उन संसद-सदस्यों से काफी अधिक थी जो सुदूर विलियम्जबर्ग में थे। यह उनकी तीव्र इच्छा थी कि फ्रांसीसियों का अधिक शक्तिशाली होने से पूर्व ही खदेड़ दिया जाय तथा वहाँ के इण्डियनों को अपने पक्ष में कर लिया जाय। उनके मार्ग में जो रुकावटें आईं वे किसी को भी पागल बना सकती थीं। उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि विधान-सभा भी देश के हितों की 'अवहेलना' कर रही है। एक सदस्य ने तो यहां तक कह दिया कि ओहियो प्रदेश पर फ्रांसीसियों का हक है। डिनविड्डी (तथा ओहियो कम्पनी, जिसके साथ कि गवर्नर का सम्बन्ध था) की नीयत पर सन्देह हो

जाने के कारण विधान-सभा सेना के लिए रुपया स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी। यद्यपि डिनविड्डी इन मामलों में उदासीन नहीं था, तो भी कम से कम जार्ज को ऐसा लगा कि उसकी कृपणता की ओर प्रवृत्ति है। अपनी योजनाओं में लगे रहने के कारण वह अन्य बातों में सहायता नहीं दे सका। अतः युवा वाशिंगटन के साथ उसके मित्रता के सम्बन्ध बिगड़ते चले गए।

सैनिक शासक के रूप में वाशिंगटन का कार्य इस ढंग का था कि उनको श्रेय मिलने की कोई आशा नहीं थी। रसद तथा सब प्रकार की साधन-वस्तुओं की कमी थी। सेना की भरती का कार्य चींटी की रफ्तार से आगे बढ़ रहा था। जिन लोगों को खुशामद करके भर्ती किया जाता था, उनमें से बहुत से लोग ऐसे थे जिनका चरित्र-बल निम्नकोटि का था। वे साथ छोड़ कर भाग जाने की कला में दक्ष थे। परिणामतः उनके हृदय में अल्पकालीन मिलिशिया के लिए हमेशा के लिए घृणा उत्पन्न हो गई। वास्तव में वाशिंगटन जैसे वर्जीनिया के भद्र-पुरुषों की नजरों में इस प्रकार से भर्ती हुए व्यक्ति सामाजिक दृष्टिकोण से निम्न श्रेणी के थे। वह उनकी देख-रेख हर तरह से करते थे, किन्तु जब वे नियमों को भंग करते, तो उन्हें कड़ी सजा भी दिया करते थे। उन्होंने सन् १७५७ के अगस्त मास में डिनविड्डी को लिखा था—

'श्रीमान की सेवा में मैं एक सामान्य सेना-न्यायालय की कार्यवाही की प्रतिलिपि भेज रहा हूं। दण्डित व्यक्तियों में से दो को अर्थात् इगनेशस एडवर्डस और बम स्मिथ को गत बृहस्पतिवार को फांसी पर चढ़ा दिया गया।'

'......मुझे आशा है कि श्रीमान् मुझे इस बात के लिए क्षमा करेंगे कि मैंने उन्हें गोली से उड़ाने की बजाए फांसी पर चढ़ाया। इससे अन्य लोगों में अधिक आतंक उत्पन्न हुआ और असल में उदाहरण पेश करने के लिए ही हमने इस उपाय का आश्रय लिया। वे इस प्रकार के दण्ड के योग्य ही थे। एडवर्डस दो बार भाग चुका था और स्मिथ इस महाद्वीप में सबसे बड़ा धूर्त माना जाता

था। जिन्हें बेंतों की सजा मिलनी थी, उनको बेंत लगाये गये। शेष लोगों के साथ आप किस प्रकार का व्यवहार पसन्द करेंगे, इस विषय में श्रीमान् के विचार जान कर मुझे खुशी होगी।'

'शेष लोगों को क्षमा कर दिया गया। जब तक क्षमा का आदेश नहीं मिला, वाशिंगटन ने उन लोगों को अन्धेरी कोठड़ी में, मजबूत बेड़ियों में जकड़ कर रखा।'

कभी कभी ऐसा भी होता था कि जो आदेश उन्हें दिये जाते, वे स्पष्ट नहीं होते थे। उन्होंने दिसम्बर १७५६ में यह शिकायत की कि उन्हें जो आदेश भेजे जाते हैं, वे अस्पष्ट, सन्देहजनक और अनिश्चित होते हैं। आज जिस बात की स्वीकृति मिलती है कल उसी के लिये इन्कार होता है। उनकी सारी स्थिति ही अस्पष्ट और विचित्र थी। जाहिर में तो उनके हाथ में सत्ता सौंप दी गई थी, पर वास्तव में उनके पास थोड़े ही अधिकार थे। सन् १७५४ में उन्हें और उनकी सेना को दूसरे उपनिवेशों की सेनाओं की तुलना में कम वेतन मिलता था। यद्यपि वह कर्नल थे, तो भी मिलिशिया की बजाए राजकीय अथवा नियमित, स्थायी कमीशन वाला कैप्टन उनसे अधिक प्रतिष्ठा रखता था। मैंके ने, जो एक कैप्टन था, कर्नल वाशिंगटन को अपना सरदार मानने से इन्कार कर दिया। कुछ महीने बाद, कैप्टन डैगवर्दी ने भी वैसे ही व्यवहार किया। इस व्यक्ति ने बहुत काल पहले राजकीय कमीशन लिया था और सेवा से निवृत्त हो कर उसने अपनी पेन्शन के अधिकार भी बेच डाले थे। हमें लगता है कि वाशिंगटन को यह अवश्य मालूम होगा कि नियमित रूप से नियुक्त किए गए ब्रिटिश अधिकारी, समष्टिगत रूप से, अमेरिका-उपनिवेशों के सेना-अधिकारियों को घृणा की दृष्टि से देखा करते थे। उन में से एक ने वर्जीनिया के मिलिशिया अफसरों को 'घुड़दौड़ के सवार' कह कर उनका उल्लेख किया था। एक और ने वैयक्तिक रूप से कहा, 'किसी खेतिहर को हल से हटा कर एक दिन में अफसर बना देना कहां तक उचित है?'

वाशिंगटन का इन सब बातों से खीझ उठना स्वाभाविक ही था। इसे समझने में दिक्कत नहीं होती। परन्तु उल्लेखनीय बात तो यह है कि वाशिंगटन पर इनका प्रभाव औरों से अधिक गहरा पड़ा। इनके मन में इतनी कड़वाहट पैदा हो गई कि वह गुस्से में आपे से बाहर हो गये। हम यह मानते हैं कि वह ईमानदार और सुयोग्य थे, किन्तु हम यह भी महसूस करते हैं कि उन्होंने डिनविड्डी तथा अन्य लोगों को जो पत्र लिखे, उनमें उन्होंने अपने गुणों पर जितना जोर दिया, उसकी जरूरत नहीं थी।

इस सम्बन्ध में एक संकेत सन् १७५३ की घटना से मिलता है, जब कि उन्होंने डिनविड्डी के अन्तिम पत्र को फ्रांसीसियों तक पहुंचाने के लिए अपनी सेवाएं अर्पित की थीं। निस्संदेह इस कार्य को कोई वर्जीनिया का साहसी देशभक्त ही कर सकता था। इस विषय में यह भी कहा जा सकता है कि यह एक ऐसे अत्यन्त महत्वाकांक्षी युवक का कार्य था जो अपनी महत्वाकांक्षा को क्रियान्वित करना चाहता था। उनके बाद के काम एवं पत्र-व्यवहार यह जाहिर करते हैं कि वह केवल एक प्रमत्त, निरा उमंगों के वशीभूत होकर कार्य करने वाला व्यक्ति नहीं था। उस युवक के लिए कीर्ति जिसे वह तोप के मुंह में भी पहुंच कर प्राप्त करने की कामना रखता था, कोई बुद-बुदे की तरह की वस्तु नहीं थी, बल्कि ऐसी ठोस चीज कि जिसके जरिये उसे प्रतिष्ठा और पारितोषिक दोनों को प्राप्त करने की कामना थी। हम कह सकते हैं कि उसने अधिक लाभ की आशा में 'सैनिक कला' को अपनाया। बागान का स्वामी होना किसी हद तक महत्व की चीज अवश्य थी, किन्तु उसने अधिक शानदार और चकाचौंध करने वाली सम्भावना पर अपनी आंखें गाड़ी हुई थीं—'प्रतिष्ठा' तथा 'अधिमान-पद' जो सम्राट् द्वारा प्रदान किए जाते थे।

जहां तक वाशिंगटन के अपने जीवन की उन्नति का सम्बन्ध है, 'अधिमान पद' शब्द का प्रयोग इस काल के उनके अपने पत्रों में अनेक बार आता है। वर्जीनिया में भी सही आदमियों को जानना

महत्व की बात मानी जाती थी। इससे इतर वड़ी दुनिया में गुण सम्पन्नता के साथ-साथ हर चीज की महत्ता सम्राट् के प्रश्रय पर निर्भर होती थी। जव सन् १७०४ में वर्जीनिया के सुसम्बन्धित डेनियल पार्क ने, जिसने मालवीरो के ड्यूक के साथ स्वयं-सेवक के रूप में काम किया था, ब्लैनहैम की विजय का सुसंवाद रानी ऐन को सुनाया था, तो उसने उसे इनाम के तौर पर एक हजार गिन्नी और हीरों में जड़ी अपनी छोटी सी तस्वीर प्रदान की थी। उस समय यह अत्यन्त सौभाग्य की बात समझी गई, खासतौर पर उस समय जव वाद में पार्क को लीवर्ड द्वीपों का शासक नियुक्त किया गया। वह भी कभी इतने ऊँचे पद पर नियुक्त किये जा सकेंगे-- इसकी वाशिंगटन को आशा नहीं थी। किन्तु यह वह जानते थे कि एक क्षेत्रीय मिलिशिया अधिकारी के रूप में वह 'अधिमान-पद' से काफी नीचे थे। शायद अभी तक उस सीढ़ी पर उनका पांव भी नहीं पड़ा था।

अतः वाशिंगटन की प्रवल इच्छा थी कि उन्हें नियमित रूप से कमीशन मिले, ताकि कोई उन्हें जाने और माने और कोई चीज उनका अवलम्वन तो वने! (आखिर उनके वड़े भाई लारेन्स को भी तो नियमानुसार कमीशन मिला ही था।) सन् १७५४ में वह ससार की आँखों में चढ़े थे, पर थोड़े ही समय के लिए। उस समय वह ब्रिटेन और फ्रांस के वीच साम्राज्य-लिप्सा सम्बन्धी बहुत वड़े नाटक में प्रतीक मात्र थे। सन् १७५५ में उन्होंने ब्रैडाक के आन्तरिक वर्ग के विशेपाधिकार प्राप्त युवक के रूप में आगे का स्थान ग्रहण किया था। तत्पश्चात् उन्होंने विशिष्टतापूर्वक सेवाएं कीं। जव हम उनके समूचे गत जीवन पर दृष्टिपात करते हैं, तो देखते हैं कि वर्जीनिया का यह युवक कीर्ति-पथ पर, विना किसी वाधा के अग्रसर होता चला गया। हम भी, उनकी जीवनी के वहुत से लेखकों की तरह, पादरी के उन शब्दों को वल-पूर्वक कह सकते हैं, जो उन्होंने मौननगहेला की दुर्घटना का उल्लेख करते हुए अपने १७५५ के व्याख्यान में कहे थे कि अमेरिका के वीरपुरुप कर्नल

वाशिंगटन को भगवान् ने महान् कार्यों के लिए चुना है। किन्तु उनकी अपनी, कम से कम निराशा की घड़ियों में, यह राय थी कि उनके ये साल हर दृष्टि से बेकार गए हैं—अर्थात् इन सालों का उन्हें कोई लाभ नहीं पहुंचा। उनकी सेवाओं की कोई कदर नहीं हुई। उनका भाग्य उखड़ा-उखड़ा रहा। ब्रैडाक मारा गया था। उसका उत्तराधिकारी वाशिंगटन की योग्यता और गुणों से अप्रभावित प्रतीत हुआ। तब वह किस प्रकार अपना अभीष्ट सिद्ध करें? यदि उन्हें सफलता न भी मिले, तो भी कोई बात नहीं, किन्तु परिश्रम न करने के कारण तो ऐसा नहीं होना चाहिए। अतः जब लौडून उत्तर अमेरिका के प्रधान सेनापति नियुक्त हुए, तो वाशिंगटन ने उन्हें जनवरी, १७५७ में लिखा—

'यद्यपि मुझे ऐसा गौरव प्राप्त नहीं हुआ कि श्रीमान् मुझे जान सकें, तो भी मैं श्रीमान् के नाम से परिचित रहा हूं। क्योंकि आपने संसार के अन्य भागों में सम्राट् की महत्वपूर्ण सेवाएं की हैं। श्रीमान्, आप यह ख्याल न करें कि मैं आपकी खुशामद कर रहा हूं। आपके चरित्र के लिए उच्चभावनाएं रखते हुए भी और आपकी पद-स्थिति का सम्मान करते हुए भी मेरा इरादा किसी तरह की चापलूसी करने का नहीं। मैं स्वभाव से स्पष्ट, ईमानदार और छल-कपट रहित हूं।.......'

अपने सम्बन्ध में इतना कहे बगैर नहीं रह सकता कि यदि जनरल ब्रैडाक अपनी हार के दौरान में जिन्दा बच जाते, तो मुझे अभीष्ट अधिमान-पद प्राप्त होता। इसके लिए उन्होंने मुझे वचन भी दिया था। मेरा यह विश्वास है कि वह इतने शुद्ध-हृदय और उदार-स्वभाव थे कि वे कभी निरर्थक प्रस्ताव नहीं रखते थे।'

सन् १७५८ की वसन्त ऋतु में उन्होंने ये शब्द कहे, 'मैंने सैनिक-जीवन में किसी अधिमान-पद की आशा छोड़ दी है।' इसके बावजूद उन्होंने परिचित ब्रिटिश अफसरों को दो पत्र भेजे, जिनमें कुछ-कुछ चिकनी-चुपड़ी बातें भी थीं और जिनमें उनसे अनुरोध किया गया था कि वे जनरल फोर्ब्स से यह कह कर सिफारिश करें

कि वह ऐसा व्यक्ति है जो उपनिवेश के सामान्य अधिकारियों से विशिष्टता रखता है। और १७५८ के जून मास में उन्होंने डिनविड्डी के उत्तराधिकारी, लैफ्टीनैण्ट गवर्नर फाकियर का इसी प्रकार स्वागत करते हुए जरूरत से ज्यादा खुशामद और विनयशीलता प्रदर्शित की।

दूसरे शब्दों में उन्होंने अधिमान-पद प्राप्त करने के लिए हर साध्य कदम उठाया अर्थात् हर वह कदम जिसमें अप्रतिष्ठा की बू न थी। उन्होंने सन् १७५६ में बोस्टन तक का सारा मार्ग घोड़े पर चढ़कर इसलिए तय किया कि वह अपने प्रधान सेनापति के सामने यह सिद्ध कर सकें कि सेना में कैप्टन डैगवर्दी से उनका दर्जा ऊँचा है।

सन् १७५८ तक के वाशिंगटन में कई बातें ऐसी पायी जाती हैं, जिन्हें शायद पसन्द न किया जा सके। उनमें कुछ-कुछ कच्चापन लगता है। बात-चीत में वह कर्कश जान पड़ते हैं। उचित सीमा को लांघ कर भी अपनी शान रखना चाहते हैं। शिकायत के लिए हर समय और हर तरह से उद्यत रहते हैं और पदोन्नति के लिए अत्यन्त खुले रूप से चिंतित। यह ठीक है कि उनकी शिकायतें फर्जी नहीं थीं। वह अपने कामों में कुशल और दृढ़संकल्प थे। किन्तु उनका दोष एक तो यह था कि वह अपने गुणों तथा शिकायतों को दूसरों से बार-बार कहा करते थे। दूसरे, अपने आशावान, बल्कि करीब-करीब सनसनीखज, जीवन के बाद, भावी उन्नति के बारे में जैसे-जैसे उनकी उम्मीदें मुर्झाती चली गईं, उनमें लगभग संपीड़न-भावना का विकास होता चला गया। सन् १७५७ के अक्तूबर मास में उन्होंने डिनविड्डी को लिखा कि, 'मैं चिरकाल से यह विश्वास करने लगा हूं कि मेरे कामों और उनके हेतुओं पर द्वेष भाव से छींटाकशी की जाती है।' अभी उन्हें यह सीखने की जरूरत थी कि धैर्य से काम लेना अक्लमन्दी की बात है। या यों कहें कि वह कष्टदायक परिस्थितियों में यह पाठ सीख रहे थे।

वाशिंगटन की दुर्बलताएं उनके गुणों की तुलना में बहुत कम

थीं। यह सच है कि उनका इस समय का दृष्टिकोण वर्जीनिया-वासियों सरीखा संकीर्ण था। उन्होंने लड़ाई के बारे में सम्पूर्ण रूप से नहीं सोचा था। जब १७५८ में फोर्ब्स ने रेजटाऊन वाला मार्ग चुना तो वाशिंगटन का विरोध लगभग अवज्ञा की सीमा तक पहुँच गया था। उन्हें यह विश्वास हो चुका था कि फोर्ब्स पैनसिलवेनिया की उस "कपटपूर्ण नीति" का शिकार हो गया है, जिसके अनुसार ओहियो के पिछड़े देश तक पहुँचने का मार्ग बन जाने से वहाँ का सारा व्यापार इस प्रतिद्वन्द्वी उपनिवेश के हाथों चला जायगा। किन्तु उन्हें यह न सूझा कि दूसरे लोग भी उनके अपने रवैये से यही अर्थ निकाल सकते है—अर्थात् वर्जीनिया से ओहियो तक सड़क निकालना वर्जीनिया के लोगों की 'कूटनीति' हो सकती है। कुछ भी हो, वह वर्जीनिया के प्रति पूरी तरह वफादार थे। आदर्श रूप में वह यह चाहते थे कि उन्हें वर्जीनिया की रक्षा करने के लिए कमीशन मिल जाय। यदि वह अन्य उपायों से कमीशन लेना चाहते, तो निश्चय ही वह तरुण ब्रायन फेयरफैक्स की तरह ही रुपया देकर इसे खरीद सकते थे।

अधिमान-पद की लालसा के साथ ही साथ 'प्रतिष्ठा' की प्यास भी उन्हें सताए हुए थी। वाशिंगटन कभी-कभी इसकी परिभाषा इस प्रकार करते थे जैसे कि यह शब्द अधिमान-पद का पर्यायवाची हो। उनके विचार में इस शब्द ('प्रतिष्ठा') का यह भी अभिप्राय था—'मेरे परिचितों की मेरे प्रति मित्र जैसी सम्मान-भावना का होना।' (सम्भवतः इन परिचितों की सूची में सैली फेयरफैक्स का उच्च स्थान था।) ऐसा लगता है कि अपनी प्रौढ़ावस्था में वाशिंगटन को अधिक चिन्ता अपनी कीर्ति की रही। वह इस बात का ध्यान रखते थे कि जो कोई कार्य भी वह करें या कोई दूसरा उनके प्रति कुछ करे, तो उसका लिखित रिकार्ड रख लिया जाय। इससे अंशतः उनकी व्यवहार-कुशलता प्रकट होती थी। इससे आगे वाशिंगटन अपनी तसल्ली के लिए केवल सार्वजनिक अनुमोदन चाहते थे। उन्होंने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि वे वही करेंगे जो उचित होगा

और उन्हें आशा थी कि उनकी व्यवहार-शुद्धता को स्वीकार किया जायगा, चाहे उनके कामों का परिणाम खराब क्यों न हो। अन्ततः उनके लिए 'प्रतिष्ठा' (और अपने उपनिवेश में प्रतिष्ठा पाने) का 'अधिमान-पद' से कहीं अधिक महत्व था। यह सच है कि कर्नल वाशिंगटन के व्यक्तित्व का अभी विकास हो रहा था, किन्तु बुनियादी तौर पर वह एक शिष्ट मानव थे। यद्यपि उनकी सैनिक महत्वाकांक्षाएं काफी थीं, किन्तु वे मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती थीं; इसलिये वह उन्हें अपने मन के एक कोने में छुपाये लिए फिरते थे। वे आकांक्षायें कितनी गहरी दबी हुई थीं—हमारे लिए यह बतलाना कठिन है। हम इतना जानते हैं कि सन् १७५९ में जब वह माऊंट वर्नन को सजा रहे थे, उन्होंने लन्दन से छः अर्धप्रतिमाएं मंगवाए जाने का आदेश दिया। ये सिकन्दर महान्, जूलियस सीजर, स्वेडन के चार्ल्स १, प्रशिया के फ्रैडरिक द्वितीय, यूजीन राजकुमार और मार्लबोरो के ड्यूक की थीं। ये सब सैनिक वीर-पुरुष हुए हैं। उनका एजेण्ट इन्हें खरीद कर भेज नहीं सका, किन्तु वाशिंगटन ने उनके स्थान में प्रस्तावित कवियों और दार्शनिकों की अर्ध-प्रतिमाओं को लेने से इन्कार कर दिया।

एक बार जब वाशिंगटन का मन उदास हो गया, तो कर्नल फेयरफेक्स ने इन शब्दों में उन्हें सान्त्वना दी—'सीजर सम्बन्धी टीका टिप्पणियों और सम्भवतः क्विंटस कर्टियस (जो अलैक्जैण्डर के जीवन-चरित्र का लेखक था) की कृति को पढ़ने से आप को यह ज्ञात हुआ होगा कि आपकी तुलना में इन महापुरुषों की जिन्दगियों में अत्यधिक परेशानियाँ आईं,—इनके विरुद्ध लोगों में असन्तोष की भावनाएं रहीं और जनता ने विद्रोह किये तथा साथियों ने साथ छोड़े। यदि आपके जीवन में इस प्रकार की कोई परेशानी की बात आपकी शान्ति को भंग करे, तो मुझे तनिक भी सन्देह नहीं कि आप इन महापुरुषों के ही समान महानुभावता से उन बातों को बर्दाश्त कर सकोगे।'

सेवा-निवृत्त होने के बाद भी यदि वाशिंगटन को सान्त्वना की

जरूरत थी, तो उन्हें यह सोचकर मिल जानी चाहिये थी कि सीजर को जान से मार दिया गया और अलैक्जैण्डर, जो उन्नीस वर्ष की आयु में राजगद्दी पर बैठा, बत्तीस साल की आयु में ही परलोक सिधारा। उनके समकालीन जनरल वुल्फ ने अपने जीवन में शानदार काम किये, किन्तु क्यूबैक के परिग्रहण के समय बत्तीस वर्ष की आयु में ही मृत्यु का ग्रास बना। वाशिंगटन के जितने भी संगी-साथी थे, उनमें से कोई भी उनसे आगे नहीं बढ़ा, बल्कि कुछ ने तो अपने आप को कलंकित कर लिया। अन्य साथी मर चुके थे। उदाहरण के लिए उनका पुराना साथी, क्रिस्टोफर जिस्ट, चेचक के कारण संसार से चल बसा था। वाशिंगटन कम से कम इस विशेष भयंकर रोग से इस समय परिमुक्त थे, क्योंकि इससे पूर्व वह बारबेडीस में इसका शिकार हो चुके थे।

सेवा-निवृत्त बागान का स्वामी

अनेकों ठोस कारण थे जिनकी वजह से उन्हें सन्तोष मिलना ही चाहिए था। फेयरफेक्स परिवार के लोग अब भी उनके हितैषी मित्र थे। इस समय वह मूल्यवान जागीरों के स्वामी थे। उन्हें यह भी आशा थी कि फ्रांसीसियों के साथ जो झगड़े चल रहे हैं, उनकी समाप्ति पर वह अपनी भूमि बढ़ा सकेंगे। इन सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह अपने अविवाहित जीवन से छुट्टी ले रहे थे। उन्होंने एक विधवा से विवाह कर लिया, जिसका नाम मर्था डैंडरिज कस्टिस था। वह मधुर स्वभाव की तथा समृद्ध युवती थी। उसका पहला पति डैनियल पार्क का वंशज था, जिसने साम्राज्ञी ऐने को ब्लैनहम युद्ध-विषयक सरकारी पत्र ला कर दिये गये थे। मर्था जार्ज से उम्र में कुछ मास बड़ी थी। उसके पहले विवाह से दो बच्चे हुए थे। वाशिंगटन उससे कब सर्वप्रथम मिले और उनका किस प्रकार पारस्परिक प्रेम बढ़ा, इसके बारे में निश्चय से नहीं कहा जा सकता। एक प्रेम-पत्र, जो उनके द्वारा मर्था के नाम १७५८ की ग्रीष्म ऋतु में लिखा हुआ माना जाता है, हमें नकली जान पड़ता है। कुछ साक्ष्य-सामग्री ऐसी है जिससे यह प्रकट होता है कि सगाई

के समय के आस-पास भी जार्ज के हृदय में सैली फेयरफेक्स के लिए तड़पन थी। उनके एक पत्र में, जो उन्होंने उस समय सैली को लिखा, इस प्रकार के उद्धरण थे कि जिनसे प्रायः यह अर्थ लिया जा सकता है कि वह उससे प्रेम करते थे। यह संदिग्ध है कि जार्ज और मर्था में परस्पर प्रेम होने के कारण विवाह-बंधन हुआ। यह वैसा प्रेम नहीं था, जैसा कि प्रायः रोमान्स के उपन्यासकार इस शब्द से अर्थ लेते हैं। किन्तु यह बन्धन दोनों की बुद्धि और विवेक का परिचायक है। अन्य लाभों में मर्था को एक यह भी लाभ हुआ कि उसे अपनी भू-सम्पत्ति के लिए एक प्रवन्धक मिल गया। जार्ज को यह लाभ हुआ कि उन्होंने एक धनाढ्य युवती से शादी की, किन्तु यह मानने की हमारे पास कोई दलील नही कि यह विवाह सुविधा की खातिर हुआ था अथवा जार्ज हताश हो जाने के कारण सैली का स्थानापन्न चाहते थे। जिन लेखकों की सम्मतियाँ इस समय उपलब्ध है उनमें से किसी एक ने भी यह नहीं कहा 'कि जार्ज और मर्था का विवाह अननुरूप अथवा अनुपयुक्त था। यह सम्भव है कि यदि उनके दीर्घकालीन सम्बन्ध में किसी भी अवसर पर किसी प्रकार का तनाव होता, तो उस पर काफी टीका-टिप्पणी होती।

जार्ज का विवाह १७५९ के जनवरी मास में हुआ। सितम्बर मास में उन्होंने अपने एक सम्बन्धी को, जो लन्दन में था, लिखाः—

'मेरा विश्वास है कि अब मैं अपने ही अनुरूप जीवन-संगी के साथ अपने निवास-स्थान से बँध गया हूं। मुझे आशा है कि मैंने जितना इस विस्तृत और शोरगुल की दुनिया में कभी आनन्द उठाया है उससे कहीं अधिक आनन्द मुझे सेवा-निवृत्ति के बाद मिलेगा।'

उसी पत्र में वह खेद प्रकट करते हैं कि 'इस बात के बावजूद कि उनकी चिरकाल से लन्दन जाने की अभिलाषा रही है, वह इस लिये नहीं जा सकेंगे, क्योंकि अब वह अपने ही स्थान से दृढ़ता से बंध गये हैं। इस कारण उन्हें अपनी उत्सुकता को टालना ही पड़ेगा।' किन्तु कोई ऐसी बात नहीं दीखती जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि मर्था के साथ उनका जीवन किसी प्रकार क्लेशमय था।

विलक्षण बात यह लगती है कि उन्होंने फोर्ट कम्बरलैण्ड सरीखे स्थानों में बिताये जीवन से सर्वथा भिन्न रहन-सहन के लिए भी अपने आपको इतना शीघ्र ढाल लिया।

इसकी एक व्याख्या यह हो सकती है कि, जैसा कि उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा था, वह सैनिक-जीवन से ऊब उठे थे और उन्हें अब सैनिक अधिमान-पद की कोई आशा नहीं रही थी। उनके लिए वैशिष्ट्य-प्राप्ति का एक दूसरा मार्ग भी था, जो यद्यपि इतना रोमांचकारी तो नहीं था, किन्तु था अधिक स्थिर। यह वर्जीनिया के भू-स्वामी का जीवन बिताने का मार्ग था। दूसरी व्याख्या यह हो सकती है कि वह बहुत व्यस्त थे। उन्हें माऊंट वर्नन के फार्मों पर बहुत कुछ काम करना बाकी था क्योंकि उनकी अनुपस्थिति के कारण वे दुरवस्था में थे। इसके अतिरिक्त मकान को भी पर्याप्त पैमाने पर सजाना था। लन्दन को संकुल बीजक भेजे गये, जिन में अनेक प्रकार की चीजें थी—जैसे '७॥ फुट लम्वाई के टैस्टर पलंगों' से 'बिल्कुल आधुनिक और प्रामाणिक वनस्पति-शास्त्र पर पुस्तकें', 'नीग्रो-सेवकों के गर्मी के फ्राकों के लिए ४० गज मोटी जीन' या 'मोटे सूती कपड़े से 'पढ़ना आरम्भ करने वाले बच्चों के लिए छः छोटी पुस्तकों' तक थीं। बच्चे जो अभी पढ़ना प्रारम्भ कर रहे थे, वे थे जार्ज के सौतेले बच्चे—ग्रीनपार्क (जैकी) और मर्थापार्क (पैट्सी) कस्टिस। उन्होंने खिलौने और वेशभूषा की छोटी-छोटी वस्तुएं आभूषणादि भी उनके लिए मँगवाए। वस्तुतः में उन्होंने उन बच्चों का अत्यधिक ध्यान रखा और उन सब बच्चों का भी जो उनके अपने दायरे में आए। दोषान्वेषी सम्भवतः कहेंगे कि जैकी और पैट्सी के कारण जो बोझ वाशिंगटन पर पड़ा, वह उनके लिए प्रसन्नतापूर्वक वहन करने योग्य था, क्योंकि उनकी तथा उनकी स्त्री की जागीर से उन्हें काफी सम्पत्ति प्राप्त हुई थी। किन्तु जहां तक हमें वाशिंगटन के बारे में मालूम है, हमें यह सम्मति सरल प्रतीत होती है।

एक क्रियाशील सत्ताईस वर्षीय युवक के बारे में 'कुलपति' शब्द

का प्रयोग हास्यास्पद जान पड़ता है। किन्तु यह कहना पड़ेगा कि वाशिंगटन का रहन-सहन का ढंग कुलपतियों जैसा था। वह राज्य के किसी शासक के समान ही माऊंट वर्नन के अध्यक्ष थे। माऊंट दरअसल एक छोटे से गाँव की न्याई था, जो धीरे-धीरे वाशिंगटन गोत्र का प्रमुख-बन गया। अपने सब भाइयों और बहनों में जार्ज ही सबसे अधिक सफल हुए और इस कारण वे परामर्श और सहायता के लिए उनका मुंह ताका करते थे। जब वह अपने पारिवारिक मामलों में व्यस्त नहीं होते थे अथवा जब वह संकट-ग्रस्त परिचितों की प्रार्थनाओं पर विचार नहीं कर रहे होते थे, तब वह कस्टिस परिवार की जायदादों के प्रबन्ध को देखा करते। वर्गेस के रूप में उन्हें विलियम्जबर्ग की बैठकों में उपस्थित होना पड़ता था और अपने मत-दाताओं को संतुष्ट रखना होता था।

विवाह के थोड़े ही समय बाद उन्हें काऊंटी-मजिस्ट्रेट बनाया गया। तत्पश्चात् वह अपने पिता के कदमों पर चलते हुए टूरो गिरजे के क्षेत्राधिकार की प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य और (बाद में उसके प्रतिनिधि) बने। सन् १७६६ में जब अलैक्जैण्डरिया के न्यासी का स्थान रिक्त हुआ तो उन्हें उस पद पर आसीन किया गया। इसके अतिरिक्त अब भी उनमें पूर्ववत् अधिक लाभ की उत्सुकता रही और वह जहां-तहां मौका पड़ने पर जमीन खरीदते रहे। सन् १७५४ में स्वयं-सेवकों को उपहार रूप में जमीनें देने के वायदे हुए थे। उन्होंने उस वचन के आधार पर पन्द्रह हजार एकड़ जमीन का दावा किया।' इसमें उन्हें अन्ततोगत्वा सफलता मिली। भूमि सम्बन्धी साहसिक उपक्रमों में भी वह शामिल हुए, जैसे (दक्षिण वर्जीनिया में स्थापित) डिस्मल एवैम्प कम्पनी तथा मिसिसिपी कम्पनी—जो मिसीसिपी नदी के तट पर भूमि का विकास करने के लिए बनाई गई थी। आयु में तरुण होते हुए भी वह अपनी जिम्मेदारियों के कारण अपेक्षतया बड़े थे।

जब कर्नल वाशिंगटन ४० वर्ष के हुए, उस समय तक वर्जीनिया में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान बन चुका था, यद्यपि वह

अभी तक अत्यधिक शक्ति-सम्पन्न व्यक्तियों के छोटे दायरे में प्रवेश नहीं पा सके थे। सम्भवतः उस वक्त वह अपने सैनिक-जीवन के समय को किंचित् पश्चाताप और निराशा से याद करते होंगे। शायद इस तथ्य में कुछ महत्व हो कि १७७२ में जब चार्ल्स विल्सन पील के सामने वह तस्वीर खिचवाने के लिए बैठे, तो उन्होंने वर्जीनिया मिलिशिया के कर्नल की विशेष वेशभूषा धारण की हुई थी। किन्तु अधिक सम्भाव्य यह प्रतीत होता है कि उन्होंने सैनिक-वेशभूषा इसलिए चुनी, क्योंकि उन्हें सुन्दर वस्त्र पहनने का शौक था और वह इस बात को जानते थे कि सैनिक-वर्दी में वह विशेष रूप से प्रतिष्ठित जान पड़ते हैं। उस चित्र में एक ऐसे युवा-पुरुष का चेहरा सामने आता है जो संसार में सबके साथ शान्ति से रह रहा हो। वह चेहरा उस आदमी का लगता है जो सम्पूर्ण और क्रिया-शील जीवन बिताने के कारण अपनी जिन्दगी से न तो ऊबता हो और न ही केवल अपने हाल में मस्त रहता हो, जिसे न तो ईर्ष्या ने और न ही हिंसात्मक महत्वाकांक्षा ने कभी तड़पाया हो, जो कर्ज के बोझ के कारण रातें जाग कर नहीं काट रहा हो, जिसे धोखे की आशंका न हो तथा जिसकी अन्तरात्मा उसके किन्हीं कामों के लिए उसे धिक्कारती न हो। वह चेहरा उस आदमी का है जो समाज में विशेष स्थान रखता हो, जो सब में लगभग प्रमुख हो। अन्त में वह एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा लगता है जो सुख से गार्हस्थ्य-जीवन बसर कर रहा हो।

चूंकि चेहरे से प्रकट होने वाली ये सब बातें वास्तविक रूप में वाशिंगटन में पाई जाती थी, अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह चित्र बिल्कुल सही था।

वाशिंगटन के अपने बच्चे नहीं थे, किन्तु जहां तक मर्था के बच्चों का सम्बन्ध है, वाशिंगटन को कुटुम्ब-का-जिम्मेदार माना ही जाना चाहिए। यद्यपि पैट्सी की मृत्यु १७७३ में ही हो गई थी, जैकी का विवाह कुछ महीनों पीछे सम्पादित हुआ। थोड़े ही अर्से में जैकी के दो बच्चे हुए, जिन्होंने अपने दादा, कर्नल वाशिंगटन, के

वात्सल्य का आनन्द उठाया। घर के अन्य सम्पूर्ण बालक-समूह के या तो वह चाचा थे या संरक्षक।

यह मधुर कामना होती है कि काश कोई और भी इससे पहले का चित्र प्राप्त होता, जिसे पील्ज के चित्र के पार्श्व में रख दिया जाता। मान लो कि हम वाशिंगटन को जैसा कि वह सन् १७५७ में थे चित्र के द्वारा देख लेते, तो हमें उस व्यक्ति की झांकी मिलती, जो इतना परिपक्व नहीं था। सन् १७७२ में आकर एक प्रौढ़-बुद्धि महानुभाव के दर्शन होते हैं। यही कारण है कि उस समय उनके लिए 'बुद्धिमान' जैसे विशेषण प्रयुक्त हुआ करते थे। इस आयु में वह संतुलित, सहृदय तथा अपने आपको एवं वातावरण को अपने वश में रखने वाले नजर आते हैं। मुकाबले में वह सन् १७५७ में सुयोग्य अवश्य लगते होंगे, किन्तु कुछ अशान्त और उद्विग्न। हम उनके बारे में लगभग कल्पना कर सकते है कि उन दिनों वह किस प्रकार किंचित् भौंएं चढ़ाए हुए, लड़ने-मरने की दशा में खड़े होते होंगे—ठीक उन गुमनाम, दयनीय और युवा नेताओं की तरह जो एक शताब्दी बाद अमेरिका के गृह-युद्ध में शामिल हुए।

इन बीच के सालों में जैसा कि हम उनकी चिट्ठियों से स्पष्टतया जान सकते है, उनका नैतिक उन्नयन हुआ। इसका यह अभिप्राय बिल्कुल नहीं कि उनमें कोई अकस्मात् परिवर्तन हुआ। माऊंट वर्नन का मार्ग उनके लिए कोई दमश्क का मार्ग नहीं था। इगनेशस लायल उस समय योद्धा का जीवन व्यतीत करता रहा, जब तक कि पैम्पलोना में पुनः स्वास्थ्य लाभ करते हुए उसका मन खून-खराबे से ऊब नहीं गया। (अपने आरम्भिक जीवन में) फ्रांसिस्को बरनार्डर भी उसी प्रकार एक योद्धा था। एक सैनिक अभियान के दौरान में ही वह वापिस लौट गया और उसने असीसी के फ्रांसिस के रूप में अपनी जिन्दगी नये सिरे से शुरू की। जार्ज वाशिंगटन में इस प्रकार कोई अकस्मात् परिवर्तन नहीं आया। उन्हें किसी क्षण कोई दैनिक सन्देश भी प्राप्त नहीं हुआ। यह सत्य है कि वह पक्के एपिस्कोपोलियन (अर्थात् पादरियों द्वारा शासित

धार्मिक-विधि-विधान के अनुयायी) थे, किन्तु अपने धर्म में सच्ची निष्ठा रखते हुए भी वह इसे एक सामाजिक अनुष्ठान की हैसियत में मानते थे, जिसमें फरिश्तों अथवा काल्पनिक चित्रों का, सिवाए उनके जिनका आविष्कार पार्सन वीम्ज ने किया, कोई स्थान नहीं था। वह ईसाई-धर्मावलम्बी थे—ठीक उन्हीं अर्थों में कि जिनमें वर्जीनिया के वागान के स्वामी इस 'ईसाई' शब्द को लेते थे। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उन्होंने कभी ईसामसीह के स्मरणार्थ भोज में भाग लिया हो। घुटनों के वल झुकने की वजाए वह सीधे खड़े होकर प्रार्थना किया करते थे। वह रविवार को नित्य-प्रति गिरिजा-घर जाते हों—सो वात भी नहीं थी। सम्भव है कि इसका कारण उनकी रुग्णता हो, जैसा कि लायला और सेंट फ्रांसिस के विषय में वात थी। १७५७–५८ की सर्दियों में वह भयंकर रूप से रोग-ग्रस्त हो गये थे। १७६१ में भी ऐसा ही हुआ, जवकि उन्होंने लिखा—'एक वार मुझे लगा कि क्रूर यमदेव मेरी जीवित रहने की अत्यधिक चेष्टाओं पर कावू पा लेगा और सज्जनोचित संघर्ष के वावजूद मुझे उसका ग्रास वनना होगा।' मृत्यु की सम्भावना मनुष्य के मन को अवश्य एकाग्र कर लेती है।

किन्तु एक योद्धा-संत के रूप में वाशिंगटन की कल्पना करने का प्रयास करना कोई अधिक लाभप्रद प्रतीत नहीं होगा। अधिक से अधिक हम यह कह सकते हैं (और यह वात भी बहुत वड़ी है) कि लायला अथवा सेंट फ्रांसिस के सदृश उन्होंने दिखा दिया कि उनमें वढ़ने, ऊंचा उठने की समुचित क्षमता है। उनका चरित्र उभरा, यद्यपि वह देवत्व की सीमा तक नहीं पहुंचा। इस प्रकार वाशिंगटन का कोई भी जीवनी-लेखक, जिसने कि उनके सन् १७५९ तक के जीवन-कार्यों की खोज की है, यह निर्विवाद रूप से कह सकता है कि उस समय वाशिंगटन, रुपये-पैसे को मुट्ठी में कस कर रखने वाले, यहां तक कि कंजूस थे। उदाहरण के रूप में, जव विवश होकर उन्हें वानग्राम को 'नैसेसिटी' के किले पर शरीर-वन्धक के तौर पर, फ्रांसीसियों के हवाले करना पड़ा, तव उन्होंने वानग्राम को अपनी

एक सैनिक-वर्दी (देने की बजाय) बेची थी–जबकि उसे अपने साथ उठा कर ले आना उनके लिए कष्टदायक भी सिद्ध होता। यह ठीक है कि यह कोई लज्जाजनक सौदा नहीं था, बल्कि यह एक प्रकार से शीघ्रतापूर्वक सम्पादित हुई बिक्री थी। सेवा-निवृत्ति के बाद वाशिंगटन उदारतापूर्वक, यहाँ तक कि बेतहाशा, रुपया उधार पर दिया करते थे, बावजूद इसके कि उन्हें उसकी वापिसी की कोई उम्मीद नहीं होती थी। कभी-कभी वह चुपचाप और बिना प्रार्थना के रुपये-पैसे से मदद दिया करते थे। सांसारिक सफलता बहुत लोगों को बिगाड़ देती है, किन्तु यह वाशिंगटन के हक में साबित हुई।

इस प्रकार जैसा कि हम देखते हैं, १७७० के आरम्भिक सालों में वाशिंगटन सन्तुष्ट, सच्चे और ईमानदार आदमी थे। जब वह अपने खेत-बगीचों के निरीक्षण में अथवा किन्हीं और कामों में व्यस्त नहीं होते थे, उस समय वह नृत्यों, ताश के खेलों और शिकार आदि में अपना मन लगाया करते थे। सन् १७७५ तक के सात वर्षों में दो हजार के लगभग अतिथि माऊंट वर्नन आ कर ठहरे। इनमें से बहुत से तो रात्रि के भोजन के समय भी रुके, जिनमें से बहुत से रात्रि को भी वहाँ रहे। विलियम्जबर्ग की सभाओं में उपस्थित होने के अलावा वह अन्नापोलिस, फ्रैड्रिक्सबर्ग, डिस्मल स्वैम्प तथा अन्य स्थानों में भी काम अथवा मनोरंजन के लिए आया-जाया करते थे। सन् १७७० में उन्होंने सीमान्त पर एक लम्बी यात्रा की, जिसमें वह फोर्ट पिट से आगे जा कर नौका में ओहियो नदी के निचले भाग की ओर गये, ताकि सम्भव भूमि-सम्बन्धी दावों की जांच कर सकें। उन्होंने एक और पश्चिमीय यात्रा की योजना बनाई, जिसे उन्होंने सन् १७७५ में पूरा करने का इरादा किया।

किन्तु १७७५ की ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में, पश्चिमीय यात्रा की योजना बनाने की बजाय, वह उत्तर में बोस्टन की ओर बढ़े। उस समय श्री जार्ज वाशिंगटन, जनरल वाशिंगटन बन चुके थे। वर्जीनिया का राज-भक्त भद्र पुरुष अब विद्रोही हो चुका था। इस समय वह

केवल वर्जीनिया के ही नहीं, बल्कि जार्जिया से मैसाचूसैट्स तक समूचे तेरह अमरीकी उपनिवेशों के सेना-नायक थे।

अहंकार-रहित देश-भक्त

यहाँ हमारे पास इतना स्थान नहीं कि हम विस्तार से इस डांवा-डोल स्थिति का विश्लेषण कर सकें। संक्षेप में, उपनिवेशों के अपनी बात पर अड़े रहने के तीन प्रधान कारण हमें नजर आते हैं। *पहला कारण यह था कि १७५६-६३ की लड़ाई में विजय-*प्राप्ति के फलस्वरूप फ्रांस के प्रभुत्व का खतरा सिर से टल चुका था। फ्रांस ने सन् १७६३ की संधि के द्वारा अपने उत्तर अमेरिका के सम्पूर्ण अधिकारों को तिलांजलि दे दी थी। जैसे ही उसकी सत्ता का अन्त हुआ, ये उपनिवेश अपने 'मातृ-देश' (इंगलैण्ड) पर अधिकाधिक निर्भर रहने लगे।

इस हठधर्मी का दूसरा कारण युक्तिसंगत रूप से प्रथम कारण का ही परिणाम-मात्र था। इस विजय के बाद ब्रिटेन ने अपने उपनिवेशीय साम्राज्य को नये सिरे से गठित करने का प्रयास किया। इस प्रकार का पुनर्गठन वैसे भी किसी न किसी अंश में आवश्यक था, क्योंकि ब्रिटेन ने उन्हीं दिनों कैनेडा के प्रान्तों को जीत कर अपने अधिकार में ले लिया था। किन्तु जब ब्रिटेन ने एलीघनीज और मिसिसिपी के बीच के पिछड़े प्रदेश को अमेरिका के मूल-निवासियों और रोवेंदार खाल के व्यापारियों के लिये सुरक्षित कर दिया, तो उपनिवेश-वासियों को लगा कि ब्रिटेन ने फ्रांस के साम्राज्य-सम्बन्धी विचारों को विरासत के तौर पर अपना लिया है। सन् १७६३ की सरकारी घोषणा से भी उन्हें इस प्रकार के उद्देश्य की बू आई। इस घोषणा के अनुसार एलीघनी जल-रेखा के उस पार गोरों का बसना वर्जित कर दिया गया, जबकि दूसरी ओर सन् १७७४ के क्यूबेक क़ानून के आधीन ओहियो नदी के उत्तरीय इलाके को कैनेडा के क्षेत्राधिकार में शामिल कर लिया गया। इन बीच के वर्षों में (१७६३ से १७७४ तक) ब्रिटेन ने अधिक योजना-बद्ध तरीके से अपने साम्राज्य के ढांचे को बनाने की कोशिश की। इसके अन्तर्गत

उसने पुराने तथा नये जीते गये अधिराज्यों को शामिल कर लिया। यह हो जाने पर राज-कर लगा कर समुद्र तट के उपनिवेशों को मंजबूर किया कि वे साम्राज्य के खर्चे का अपना-अपना भाग दें। इन करों से उस वाणिज्य-सम्बन्धी रूप-रेखा का स्पष्ट पता चलता था, जिसके अनुसार ये उपनिवेश ब्रिटेन को कच्चा माल मुहय्या करते थे और स्वयं वहाँ के उत्पादकों के लिये एक मण्डी का काम देते थे। इस प्रकार के प्रस्तावित कर अपने आप में किसी प्रकार वोझिल नहीं थे, क्योंकि सामान्य रूप से ये उपनिवेश समृद्ध थे और ब्रिटेन के मुकाबले में उन पर राजकर-सम्बन्धी वोझ अधिक हल्के थे।

अमेरिका के उपनिवेश-वासियों को यह वात चुभती थी कि ब्रिटेन उन्हें अपना अंग न मान कर सम्पत्ति के रूप में मानता है। यह उनकी हठधर्मी का तीसरा कारण था। वास्तव में ये उपनिवेश जीवन के रहन-सहन के तरीकों में तथा स्वशासन के संचालन में प्रौढ़ अथवा लगभग प्रौढ़ थे। किन्तु ब्रिटेन उन्हें शिशुओं की भांति मान कर चलता था। शिशुओं के समान ही उनके साथ आज्ञा मानने पर दुलार-प्यार का सलूक किया करता और 'शरारत' करने पर थप्पड़ों से उनकी मरम्मत की जाती। वास्तव में यह किसी प्रकार के निष्ठुर व्यवहार का प्रश्न नहीं था—चाहे तत्कालीन देश-भक्त वक्ता इस बारे में जो भी कहते हों, वल्कि कई एक छोटी-मोटी शिकायतें थीं, जिन्होंने बड़ी-बड़ी शिकायतों का रूप धारण कर लिया था। इसलिये कि 'पिता' हतबुद्धि, जिद्दी और आश्रय प्रदान करने का इच्छुक था, जबकि सन्तान आयु की उस अवस्था में पहुँच चुकी थी, जहाँ हर व्यक्ति अपनी मर्जी से काम करना चाहता है। सन् १७७६ में टाम पेन ने अपनी 'कामन-सैन्स' नामक पुस्तिका में प्रश्न किया था—'क्या सारी आयु लड़का बना रहना मानव के हित में है?' और दस वर्षों से अधिक समय से भिन्न-भिन्न उत्तरों के साथ यही प्रश्न अन्य लोग भी पूछते आये थे।

इन उपनिवेश-वासियों में अथवा उनके अन्तर्गत एक ही प्रकार

के समुदायों में कुछ एक मोटी-मोटी बातें समान रूप से पायी जाती थीं। बोस्टन का व्यापारी फिलेडैल्फिया के व्यापारी को भली भांति समझ सकता था। दक्षिण में बागान का मालिक अपने आपको न्यूयार्क के किसी भी प्रतिष्ठित जायदाद वाले व्यक्ति के समकक्ष मानता था। सम्भव है कि सन् १७५६ में न्यूयार्क से गुजरते हुए जार्ज वाशिंगटन ने एक ऐसे ही किसी व्यक्ति की लड़की से विवाह-सम्बन्ध स्थापित करने की बात सोची हो। वकील लोग हर जगह समान भाषा बोलते थे। इसी प्रकार उपनिवेशों की विस्तृत सीमाओं पर बसे अन्य लोग भी एक ही भाषा का प्रयोग करते थे, यद्यपि वे उतने सुस्पष्ट ढंग से नहीं बोल पाते थे। इन बातों के अलावा प्रत्येक उपनिवेश के भीतर अपने-अपने विशेष कारणों से असन्तोष था। टाईडवाटर वर्जीनिया अपनी भीषण डावांडोल अर्थ-नीति में डूबा हुआ था। इस बात के बावजूद कि वाशिंगटन ने आटे की चक्की लगाकर और पोटोमैक में मनों मछलियाँ पकड़वा कर और उनके निर्यात का प्रबन्ध करके अपने 'फार्म' की आमदनी में वृद्धि कर ली थी, तो भी माऊंट वर्नन वाले खेत बगीचे उन्हें हर प्रकार की सावधानी बर्तते हुए भी, बहुत कम लाभ दे रहे थे। तम्बाकू के दाम कम थे और इसकी खेती से भूमि ऊसर होती जा रही थी। मुद्रा की कमी थी। चूंकि वर्जीनिया उपनिवेश बेचने की अपेक्षा अधिक वस्तुएं खरीदता था, इसलिये यहां के बागान के स्वामी जिनमें वाशिंगटन भी एक था, ब्रिटेन-व्यापारियों के ऋणी हो चुके थे। कहा जाता है कि ये व्यापारी अपने बेबस देनदारों को अकसर ठग लिया करते थे। स्वयं वाशिंगटन ने अपनी भूमि और साधनों के ह्रास की रोक-थाम के लिए माऊंट वर्नन पर तम्बाकू की बजाय गेहूं बोना आरम्भ कर दिया था। यद्यपि जागरूक सट्टेबाज अब भी पश्चिम से लाभ पाने की आशा कर सकते थे, परन्तु ब्रिटेन की सरकारी घोषणायें उसके मार्ग में रोड़ा बनने की आशंका पैदा कर रही थीं, क्योंकि वालपोल निधि नामक कोष से सहायता मिलने के कारण ब्रिटेन के सट्टेबाज इनसे प्रतियोगिता करने लग पड़े थे।

ब्रिटेन ने ओहियो कम्पनी के दावे रद्द करके पैन्सिलवेनिया के सट्टेबाजों के दावे स्वीकार कर लिये थे।

यह उचित प्रतीत नहीं होता कि इस तस्वीर को अधिक काली रंगत दी जाये। पहली बात यह थी कि वर्जीनिया की इस डांवा-डोल आर्थिक स्थिति के लिए 'ब्रिटेन' को सब प्रकार से दोषी नहीं ठहराया जा सकता था और संघर्ष से कुछ पूर्व समय तक उसे इस के लिए सर्वथा उत्तरदायी समझा भी नहीं गया था। दूसरी बात यह थी कि यद्यपि ब्रिटेन की भूमि-नीति से लोगों में क्रोधाग्नि भड़क उठी थो, तो भी इससे वर्जीनिया के व्यवसायों का गला नहीं घुटा था। अकेले वाशिंगटन ने बस्तियों में अपनी बारह हजार एकड़ भूमि को विशेष अधिकार-पत्र द्वारा प्राप्त कर लिया था। इन बातों के अलावा हमें इस मान्यता को कोई महत्व नहीं देना चाहिए कि ब्रैडाक की हार के परिणाम-स्वरूप ब्रिटेन की प्रतिष्ठा को कोई ठेस पहुंची थी। वाशिंगटन और उसके वर्जीनिया के साथी यद्यपि अपना सारा ध्यान अपने उपनिवेश के अन्दर बीती घटनाओं पर ही केन्द्रित करते थे, फिर भी वे लूईसवर्ग और क्यूबैक में हुई लड़ाइयों में ब्रिटेन के शस्त्रास्त्रों के अद्भुत कारनामों से अवश्य ही सुपरिचित थे। वे जानते थे कि सन् १७६३ की विजय के बाद सम्राट् जार्ज-३ की प्रजा का कोई भी आदमी संसार के सुदृढ़तम राष्ट्र का एक सदस्य है। जब वर्जीनिया का निवासी 'मेरा देश' शब्दों का प्रयोग करता था, तो उसका अभिप्राय शक्तिशाली ब्रिटेन से होता था और वह वर्जीनिया को उसका पांचवां भाग मानता था। यदि मदिरा, सुरुचिपूर्ण वस्त्रों, अथवा घर-गृहस्थी की वस्तुओं के कारण किसी वर्जीनिया निवासी के सिर पर किसी व्यापारी का ऋण आ पड़ा था, तो वही हालत कितने ही अंग्रेजों की भी थी जो लन्दन के निकटतर रहते थे।

लेकिन गर्व दुधारी तलवार थी। विलियम्जबर्ड ने कहा था कि हमारी सरकार इतने अच्छे ढंग से बनी है कि गवर्नर हम पर तभी अत्याचार कर सकता है जब वह हमको धोखे में डाल दे और

हमसे तभी पैसा ऐंठ सकता है जब पहले सिद्ध करदे कि वह उसका अधिकारी है। तीस वर्ष पश्चात् जब ब्रिटेन ने स्टाम्प कानून पास किया, तो अमेरिका-वासियों को यह यकीन नहीं हुआ कि प्रस्तावित कर न्यायोचित हैं। इसका विरोध करते समय वे अपने आपको ब्रिटेन के स्वाधीनता-प्रेमी नागरिक ही समझते थे। उनकी वक्तृत्व-शक्ति उनकी विरासत और परिस्थितियों की स्वाभाविक देन थी। उनमें कुछ लोग अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली ढंग से लिख-बोल सकते थे। वर्जीनिया में युवा विद्वान् टामस जैफसर्नन, ओजस्वी पेट्रिक हेनरी अथवा अधिक मंजे हुए जार्ज मेसन के पास ऐसे शब्द थे, जिनका तुरन्त प्रभाव होता था, किन्तु यह वाद-विवाद जो विचित्र ढंग से कभी उच्च स्तर का होता और कभी बिल्कुल व्यावहारिक, बढ़ते-बढ़ते सभी उपनिवेशों में फैल गया। 'कल्पना-शीलता' एक ऐसा शब्द था जिसको कर्नल वाशिंगटन जैसे व्यवहार कुशल बागान-स्वामी भी उसके पुराने अर्थ में ही समझते थे। १७६५ ई० में उन्होंने लिखा था कि स्टाम्प कानून 'उपनिवेश वासियों के कल्पनाशील भाग की बातचीत का विषय बना हुआ है।' (शब्द को रेखांकित मैंने दिया है)

उस वर्ष न तो वाशिंगटन और न किसी अन्य उपनिवेश-वासी के मन में ही पृथक्करण का विचार आया था। अमेरिका-वासियों के दावे को इंगलैण्ड में भी समर्थन मिला, स्टाम्प कानून रद्द कर दिया गया, और वाशिंगटन ने अपने व्यापारियों को उस समय जो पत्र लिखे, वे ऐसे थे मानो कोई अंग्रेज दूसरे अंग्रेज को लिख रहा हो। उन्होंने लिखा कि 'स्टाम्प कानून को रद्द करवाने में जो लोग सहायक रहे हैं, वे ब्रिटिश प्रजा के प्रत्येक सदस्य के धन्यवाद के पात्र हैं और हार्दिक रूप में मेरे भी।' फिर भी उसी पत्र में उन्होंने उन दुष्परिणामों की ओर भी संकेत किया जो कानून रद्द न किये जाने के कारण पैदा हो सकते थे। उनके विचारों की यह कठोर धार अगले तीन-चार वर्षों में फिर दृष्टिगोचर हुई।

स्टाम्प कानून के रद्द होने के बाद इंगलैण्ड में टाउनशैंड-कानूनों

के रूप में कुछ और कर-कानून बना दिये गये। वाशिंगटन अब इतने रोष में आ चुके थे कि १७६९-७० में वह इन वर्जीनिया-वासियों में अगुवा हो गये थे, जो ब्रिटेन से कर लगने वाला माल मँगाने के विरुद्ध थे। उन्होंने अपने पड़ोसी मित्र, गुनस्टन हाल के जार्ज मेसन से कहा—'यह कहा जाता है कि सम्राट् को एवं पार्लियामेन्ट को भेजी गई प्रार्थनाएं सिद्ध करती हैं कि हमारे वे प्रयत्न विफल हुए हैं जो हमने ब्रिटेन वालों को अपने साधारण और विशेष अधिकारों के प्रति उद्बोधित करने के लिए अथवा उनके व्यापार और उद्योगों को क्षति पहुंचाने के लिए किये थे। यह बात सही नहीं है। अभी तो इन दोनों उपायों का परीक्षण करना बाकी है।" उन्होंने उग्र शब्दों में मेसन को यह भी एक बार लिखा कि जरूरत पड़ने पर अमेरिका वालों को 'आखिरी उपाय के रूप में ब्रिटेन के शासक-स्वामियों के आक्रमणों से' अपनी पैतृक स्वतन्त्रता को बचाने के लिए हथियार तक उठा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए।

बहुत कम लोग आशा रखते थे कि इस झगड़े में खुले आम हिंसात्मक कार्यवाहियां होंगी। ब्रिटेन ने इस दबाव के आगे एक बार फिर घुटने टेक दिये। समस्त टाऊनशैंड-करों को रद्द कर दिया गया, सिवाय उस कर के जो उपनिवेशों में आने वाली चाय पर लगा था। इस कदम के फलस्वरूप यह आशा थी कि सारी गड़-बड़ समाप्त हो जायगी। आखिर वाशिंगटन जैसे प्रख्यात व्यक्तियों को अपने निजी काम भी तो रहते थे। साथ ही साथ बार-बार दोहराये जाने के कारण उन युक्तियों में अब कोई रोचकता नहीं रही थी।

किन्तु सन् १७७३ के अन्त में उग्रवादियों के एक अच्छे प्रकार से अभ्यस्त दल ने बोस्टन में प्रसिद्ध चाय-पार्टी का ड्रामा किया। विदेश से लाई गई चाय पर कर-शुल्क अदा करने की बजाय उसे बन्दरगाह में ही फिकवा दिया गया। इस कार्य को करते समय उन बोस्टन-निवासियों ने 'इण्डियन' लोगों का, जो कि अमेरिका के

मूल-निवासी थे, भेस बनाया था। यह नहीं कहा जा सकता कि वे इस कार्य के लाक्षणिक अर्थ समझते भी थे या नहीं। परन्तु उनके इस कार्य का और जिस प्रकार मर्यादा-रहित ढंग से उनके द्वारा विनाश हुआ, उसका समर्थन सभी उपनिवेशों में नहीं हुआ। किन्तु जब संसद ने मेसाचूसैट्स के विरुद्ध यह मान कर कि यह उपनिवेशों का सरगना है, ऐसे कानून पास किये, जिनका प्रयोजन बदला लेना और वहां के लोगों को बलपूर्वक अपने अधीन बनाये रखना था, तो शेष उपनिवेश भी उसके पक्ष में हो गये।

संकटोन्मुख वर्जीनिया में वाशिंगटन ने दुबारा एक प्रमुख कार्य-कर्त्ता के रूप में भाग लिया। वह न तो उग्रवादी थे और न ही उन लोगों में से थे जो किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोध करते हैं। सन् १७७४ में उनके विषय में यह राय थी कि वह एक अहंकार-रहित व्यक्ति हैं और यद्यपि कम बोलते हैं, वह हर बात में समझ से काम लेते हैं; अपने कार्यों में 'उस पादरी की तरह शान्तचित रहते हैं जो अपनी प्रार्थना में मग्न हो।' इस प्रकार की प्रकृति रखने के कारण वाशिंगटन ने पेट्रिक हेनरी जैसे तीक्ष्ण उग्रवादी और सर-कार के प्रमुख कानूनी सलाहकार जान रैंडाल्फ जैसे चिन्ताग्रस्त परिवर्तन-विरोधियों के बीच का मार्ग अपनाया। इस प्रकार यद्यपि उन्होंने कर वाले माल के आयात के विरुद्ध किये जा रहे प्रयोग का समर्थन किया, उन्होंने इस बात का विरोध किया कि अपने माल का निर्यात भी बंद कर दिया जाय। कारण कि यदि वर्जीनिया के लोग अपने माल का निर्यात नहीं कर पायेंगे, तो वे ब्रिटेन के ऋणदाताओं का ऋण कैसे चुका सकेंगे?

वाशिंगटन जब एक बार किसी निश्चय पर पहुँच जाते, तो वह अपने विचारों को दूसरों से छिपाते नहीं थे। यद्यपि वह स्वयं सुस्पष्ट ढंग से वाद-विवाद करने में दक्ष नहीं थे, तो भी उनमें यह गुण था कि वह तार्किक लोगों की युक्तियों को सावधानी से आत्म-सात् कर लिया करते थे। उदाहरण के लिये हम जार्ज मेसन का उल्लेख कर सकते हैं। वाशिंगटन ने उनकी सुस्पष्ट बातों को जुलाई १७७४

की फेयर-फेक्स क्षेत्रीय सभा में 'प्रस्तावों' के रूप में प्रस्तुत किया था। एक चिरानुभवी जिला-पालिका के सदस्य के नाते वह वर्जीनिया की विधान-सभा में अपने साथियों के साथ खुले विद्रोह की स्थिति तक, कदम-ब-कदम आगे बढ़ते ही चले गये।

कुछ साथी अवज्ञा के वातावरण से भयभीत हो कर पीछे हट गये। वर्जीनिया-वासी धनी रैंडाल्फ ही केवल ऐसा व्यक्ति न था, जिसका चित्त संदेहों से आकीर्ण हो। तो फिर, वाशिंगटन को यह क्यों नहीं सूझा कि वह भी आगे कदम बढ़ाने से ठिठक जायें ? क्या एक धनी-मानी वर्जीनियावासी के नाते उन्हें रैंडाल्फ की तरह ही राजभक्त बन कर अपने उपनिवेश को छोड़ कर चले नहीं जाना चाहिये था ? आखिरकार, वाशिंगटन के पिता और दो सौतेले भाई—इन सब ने इंगलैण्ड में शिक्षा ग्रहण की थी। उनके निकटवर्ती पड़ोसी और पक्के मित्र, फेयरफेक्स परिवार के सदस्य, भावना में पूरे अंग्रेज थे। सैली के पति, कर्नल जार्ज विलियम फेयरफेक्स के भाई, ब्राइअन फेयरफेक्स ने वाशिंगटन को लिखा था कि उन्हें ब्रिटेन के साथ सन्धि कराने के लिये जोर लगाना चाहिये। ब्राइअन की युक्तियां किस कारण उन्हें प्रभावित न कर सकीं ?

इन प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट प्रतीत होता है। वाशिंगटन के लिये इनका उत्तर सुस्पष्ट था। न केवल उनकी प्रकृति ही उन्हें प्रतिरोध के लिये आगे धकेले जा रही थी, बल्कि उनके कथनानुसार 'मनुष्य-मात्र की आवाज भी उनके साथ थी।' मनुष्य-मात्र से उनका अभिप्राय निस्सन्देह वर्जीनिया निवासियों से था। वह जन्म से, लालन-पालन से, सहज प्रकृति और प्रवृत्ति से—यहां तक कि जायदाद के कारण भी (जो किसी और वस्तु से कम महत्व की चीज नहीं है) वर्जीनिया के ही थे। इसी उपनिवेश में ही उनकी भूमि अपनी थी और वह यहीं के ही थे। एक सच्चे और ईमानदार मनुष्य के नाते वह केवल इतना ही आश्वासन चाहते थे कि उनके देशवासी उनके तरह ही महसूस करते हैं।

इस कहानी में मृगतृष्णा तुल्य अनेक सम्भावनायें हैं। उदाहर-

मूल-निवासी थे, भेस बनाया था। यह नहीं कहा जा सकता कि वे इस कार्य के लाक्षणिक अर्थ समझते भी थे या नहीं। परन्तु उनके इस कार्य का और जिस प्रकार मर्यादा-रहित ढंग से उनके द्वारा विनाश हुआ, उसका समर्थन सभी उपनिवेशों में नहीं हुआ। किन्तु जब संसद ने मेसाचूसेट्स के विरुद्ध यह मान कर कि यह उपनिवेशों का सरगना है, ऐसे कानून पास किये, जिनका प्रयोजन बदला लेना और वहां के लोगों को बलपूर्वक अपने अधीन बनाये रखना था, तो शेष उपनिवेश भी उसके पक्ष में हो गये।

संकटोन्मुख वर्जीनिया में वाशिंगटन ने दुबारा एक प्रमुख कार्यकर्त्ता के रूप में भाग लिया। वह न तो उग्रवादी थे और न ही उन लोगों में से थे जो किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोध करते हैं। सन् १७७४ में उनके विषय में यह राय थी कि वह एक अहंकार-रहित व्यक्ति हैं और यद्यपि कम बोलते हैं, वह हर बात में समझ से काम लेते हैं; अपने कार्यों में 'उस पादरी की तरह शान्तचित रहते हैं जो अपनी प्रार्थना में मग्न हो।' इस प्रकार की प्रकृति रखने के कारण वाशिंगटन ने पेट्रिक हेनरी जैसे तीक्ष्ण उग्रवादी और सरकार के प्रमुख कानूनी सलाहकार जान रैंडाल्फ जैसे चिन्ताग्रस्त परिवर्तन-विरोधियों के बीच का मार्ग अपनाया। इस प्रकार यद्यपि उन्होंने कर वाले माल के आयात के विरुद्ध किये जा रहे प्रयोग का समर्थन किया, उन्होंने इस बात का विरोध किया कि अपने माल का निर्यात भी बंद कर दिया जाय। कारण कि यदि वर्जीनिया के लोग अपने माल का निर्यात नहीं कर पायेंगे, तो वे ब्रिटेन के ऋणदाताओं का ऋण कैसे चुका सकेंगे?

वाशिंगटन जब एक बार किसी निश्चय पर पहुँच जाते, तो वह अपने विचारों को दूसरों से छिपाते नहीं थे। यद्यपि वह स्वयं सुस्पष्ट ढंग से वाद-विवाद करने में दक्ष नहीं थे, तो भी उनमें यह गुण था कि वह तार्किक लोगों की युक्तियों को सावधानी से आत्मसात् कर लिया करते थे। उदाहरण के लिये हम जार्ज मेसन का उल्लेख कर सकते हैं। वाशिंगटन ने उनकी सुस्पष्ट बातों को जुलाई १७७४

की फेयर-फेक्स क्षेत्रीय सभा में 'प्रस्तावों' के रूप में प्रस्तुत किया था। एक चिरानुभवी जिला-पालिका के सदस्य के नाते वह वर्जीनिया की विधान-सभा में अपने साथियों के साथ खुले विद्रोह की स्थिति तक, कदम-ब-कदम आगे बढ़ते ही चले गये।

कुछ साथी अवज्ञा के वातावरण से भयभीत हो कर पीछे हट गये। वर्जीनिया-वासी धनी रैंडाल्फ ही केवल ऐसा व्यक्ति न था, जिसका चित्त संदेहों से आकीर्ण हो। तो फिर, वाशिंगटन को यह क्यों नहीं सूझा कि वह भी आगे कदम बढ़ाने से ठिठक जायें ? क्या एक धनी-मानी वर्जीनियावासी के नाते उन्हें रैंडाल्फ की तरह ही राजभक्त बन कर अपने उपनिवेश को छोड़ कर चले नहीं जाना चाहिये था ? आखिरकार, वाशिंगटन के पिता और दो सौतेले भाई—इन सब ने इंगलैण्ड में शिक्षा ग्रहण की थी। उनके निकटवर्ती पड़ोसी और पक्के मित्र, फेयरफेक्स परिवार के सदस्य, भावना में पूरे अंग्रेज थे। सैली के पति, कर्नल जार्ज विलियम फेयरफेक्स के भाई, ब्राइअन फेयरफेक्स ने वाशिंगटन को लिखा था कि उन्हें ब्रिटेन के साथ सन्धि कराने के लिये जोर लगाना चाहिये। ब्राइअन की युक्तियां किस कारण उन्हें प्रभावित न कर सकीं ?

इन प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट प्रतीत होता है। वाशिंगटन के लिये इनका उत्तर सुस्पष्ट था। न केवल उनकी प्रकृति ही उन्हें प्रतिरोध के लिये आगे धकेले जा रही थी, बल्कि उनके कथनानुसार 'मनुष्य-मात्र की आवाज भी उनके साथ थी।' मनुष्य-मात्र से उनका अभिप्राय निस्सन्देह वर्जीनिया निवासियों से था। वह जन्म से, लालन-पालन से, सहज प्रकृति और प्रवृत्ति से—यहां तक कि जायदाद के कारण भी (जो किसी और वस्तु से कम महत्व की चीज नहीं है) वर्जीनिया के ही थे। इसी उपनिवेश में ही उनकी भूमि अपनी थी और वह यहीं के ही थे। एक सच्चे और ईमानदार मनुष्य के नाते वह केवल इतना ही आश्वासन चाहते थे कि उनके देशवासी उनके तरह ही महसूस करते हैं।

इस कहानी में मृगतृष्णा तुल्य अनेक सम्भावनायें हैं। उदाहर-

णार्थ यदि डिनविड्डी के साथ उनके सम्बन्ध मृदुतर होते—तो क्या हुआ होता ? या ड्यूक्वैने के निकट मरुस्थल की लड़ाई में ब्रैडाक मारे न गये होते, उन्होंने फ्रांस को हरा दिया होता और विजयोपरान्त सम्राट् से अपने वर्जीनिया सहकारी को मान दिये जाने के लिये सिफारिश की होती, तो क्या होता ? संक्षेप में यदि वाशिंगटन को उनका वांछनीय कमीशन मिल गया होता, तो क्या होता ? फ्रांसीसियों के विरुद्ध युद्ध अनेक वर्ष चलता रहा था। यह समय इतना लम्बा था कि उनको वर्जीनिया के बाहर अनेक युद्ध-क्षेत्रों में लड़ने का मौका मिला। उन्हें इस प्रकार के अवसर भी प्राप्त हुए कि उनके अनेक नए सम्बन्ध-सम्पर्क बन सकें और पुराने कमजोर हो सकें। इस विषय में जितना ही सोचें, उतनी ही कौतूहलता बढ़ती है।

किन्तु छोटी-छोटी इतिहास की दुर्घटनायें मिल कर और ही कोई प्रसंग तैयार कर रही थीं। माऊंट वर्नन के कर्नल वाशिंगटन को सन् १७७४ के अगस्त मास में विलियम्जबर्ग प्रान्तीय सम्मेलन में सम्मिलित होने के पश्चात् भावी संघर्ष में उलझना पड़ा। उनका मत ऐसे शब्दों का रूप धारण कर चुका था, जिसे दूसरों की शब्दावलि कहना चाहिये। ('नैसर्गिक अधिकार', 'नियम और संविधान' आदि वाक्यांशों को वह बातचीत के दौरान में अनेक बार सुन चुके थे), किन्तु इससे भी अधिक महत्व की बात यह थी कि ये वाक्यांश उस समय स्थान-स्थान में प्रचलित थे। उस हेमन्त ऋतु में फिलेडेल्फिया में हुई अमरीकी सार्वदेशिक कांग्रेस के लिये वर्जीनिया से जो सात प्रतिनिधि चुने गये, उनमें वे भी थे।

टामस जैफर्सन इतने बीमार थे कि उनको मनोनीत न किया जा सका। जार्ज मैसन को इसलिये शामिल नहीं किया गया, क्योंकि उस समय की परम्परा के अनुसार उनको इसका अधिकारी नहीं माना जा सकता था। फिर भी वाशिंगटन का निर्वाचन—जो प्रकटतः बहुमत से हुआ—इस बात का द्योतक था कि अपने समकक्षी महानुभावों की दृष्टि में वह अब उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से थे जो उपनिवेशवासियों के साथ थे, सम्राट् के साथ नहीं। यदि वह शाही

गवर्नर के साथ भोजन भी करते, तो भी उन पर यह सन्देह न होता था कि उनकी देशभक्ति में कोई कमी है। उनका उत्थान बिना शोर-गुल के, लेकिन निश्चित रूप से हुआ। वर्जीनिया के सात प्रतिनिधियों में से एक पेट्रिक हैनरी भी थे। उनके बारे में समझा जाता था कि वह किसी बात को शानदार ढंग से कहना जानते हैं। वाशिंगटन के विषय में यह विश्वास था कि वह सही बात को शिष्टता और सहज बुद्धि के साथ कह सकते हैं।

वाशिंगटन ने फिलेडेल्फिया में पैट्रिक हेनरी को हृदयस्पर्शी शब्दों में यह कहते हुए सुना—'मैं केवल वर्जीनिया का नागरिक नहीं, सारे अमेरिका का नागरिक हूँ।' उस समय यह एक विचित्र धारणा थी, जो वास्तविक होने की बजाये अधिकांश में आलंकारिक थी। इसी जगह सम्मेलन में उन्हें यह सूचना मिली कि ब्रिटेन की सेना के दस्तों ने बोस्टन पर कब्जा कर लिया है और वे उसकी किलेबंदी कर रहे हैं। उन सबने इस कार्य को बर्बरतापूर्ण माना। स्थिति के अन्य तत्वों पर विचार-विमर्श हुआ, किन्तु एक मत होने में बड़ी कठिनाई पैदा हुई। सब लोगों में गुस्से की आग सुलग रही थी, किन्तु यह क्रोध ठीक-ठीक रूप क्या धारण करे—यह समझ में नहीं आ रहा था। जान एडम्स ने अपनी पत्नी को घर पर लिखा—'सम्मेलन के पचासों प्रतिनिधि आपस में अजनबी से हैं, जो न तो एक दूसरे की भाषा ही जानते हैं और न ही वे एक दूसरे के विचारों, दृष्टिकोणों एवं परिकल्पनाओं को समझते हैं। इसलिये वे एक दूसरे से ईर्ष्या रखते है। उनमें भय, संकोच और अस्थिरता है।' उस सम्मेलन मे वक्तृत्व-शक्ति के कौशल का खूब प्रदर्शन हुआ। शाब्दिक दांव-घात भी खूब हुये। प्रत्येक प्रतिनिधि अपनी भावनाओं और दूसरे प्रतिनिधियों के उत्साह और जोश से प्रभावित हो कर बोला। वाशिंगटन दूसरों के मुकाबले में मौन रहे, यद्यपि वह अमिलनसार नहीं थे। ऐसी परिस्थिति में जबकि हर एक जरूरत से ज्यादा बोलने की इच्छा रखता था, उनका मौन रहना मूल्यवान सिद्ध आ।

अनेक बातों को दृष्टि में रखते हुए यह नहीं कहा जा सकता

कि यह अवसर यों ही बेकार गया। कई एक शान्तिपूर्ण उपायों से की जाने वाली विरोधात्मक कार्यवाहियों के बारे मे एक मत बना और कांग्रेस अधिवेशन सन् १७७५ के वसन्त तक स्थगित हो गया।

वाशिंगटन को इस सम्मेलन के लिए दूसरी बार वर्जीनिया का प्रतिनिधि निर्वाचित किया गया। जब वह मई १७७५ में माऊंट वर्नन से दूसरी सार्वदेशिक कांग्रेस के अधिवेशन में शरीक होने के लिए दुबारा फिलेडैल्फिया पहुंचे, तो दैवयोग से वह सैनिक वर्दी पहने हुए थे। उस सम्मेलन में अकेले उन्हीं की सैनिक वर्दी थी। रास्ते में उन्होंने स्वयंसेवकों के अनेक दस्तों का निरीक्षण किया था और उनके फिलेडैल्फिया के साथियों ने भी उन जिलों में जिनमें से होकर उन्होंने सफर किया था, जन-आन्दोलन के इसी प्रकार के चिन्ह देखे थे। वास्तव में हर स्थान में लोगों में जोश बढ़ता जा रहा था। अप्रैल मास में, लैक्सिंगटन और कनकार्ड में मैसाचूसैट्स की मिलिशिया और बोस्टन के नियमित सैनिकों में लम्बी भिड़न्त हुई थी, जिसमें ब्रिटेन के सैनिकों के साथ कड़ा व्यवहार हुआ था। वाशिंगटन के फिलेडैल्फिया पहुंचने के तुरन्त बाद, मई मास में, उपनिवेश-वासियों की एक टुकड़ी ने टिकॉन्डेरोगा के किले पर कब्जा कर लिया। यह किला जार्ज झील के उत्तरी छोर पर था और कैनेडा को यहीं से मुख्य रास्ता जाता था। लगभग उन्हीं दिनों में उनके अपने उपनिवेश, वर्जीनिया में, पैट्रिक हेनरी के हैनोवर काऊंटी में लोग खुले तौर पर गवर्नर के अधिकारों को चुनौती दे रहे थे।

इतनी घोर अशान्ति के क्या परिणाम होंगे—इसके बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकता था। किन्तु उपनिवेशों ने परस्पर गठ-जोड़ कर लिया था। कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल होने वाले अपेक्षतया निर्भीक प्रतिनिधि इस बात के लिए तैयार थे कि सैनिक बल का उत्तर सैनिक बल से ही दिया जाय। उन्हें एक सेना चाहिए थी और सेना के लिए सेनानी चाहिए था। अतः सन् १७७६ में, १५ जून के दिन, यह प्रस्ताव पास हुआ कि 'एक सेना-

पति नियुक्त किया जाय, जो अमेरिका की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये भर्ती की गई समस्त महाद्वीप की सेना को निर्देश दे सके।' इससे एक दिन पूर्व, कांग्रेस के अधिवेशन में, मैसाचूसैट्स के प्रभावशाली व्यक्ति, जान एडम्स, ने कर्नल वाशिंगटन का नाम इस पद के लिए पेश किया था, जिसका समर्थन उनके हमनाम सहकारी, सैमूअल ऐडम्ज, ने किया था। यह सैमूअल ऐडम्ज अपनी बात मनवाने की कला में होशियार थे।

इस अचानक घटना ने सम्भवतः वर्जीनिया के वाशिंगटन को हैरानी में डाल दिया। अपनी अचानक प्रशंसा से वह निश्चय से इतने घबरा गये कि बैठक के कमरे से बाहर निकल गये। वह पन्द्रहवीं तारीख को भी अनुपस्थित रहे, जिस रोज कि उनका नाम मेरीलैण्ड के प्रतिनिधि ने औपचारिक रूप से पेश किया। इस प्रस्ताव के फल-स्वरूप जार्ज वाशिंगटन सर्वसम्मति से सेना-पति चुने गये।

अध्याय—३

जनरल वाशिंगटन

हमें अपने कामों में न तो उतावलापन दिखलाना चाहिए और न ही आत्मसंदेह।

ऐसी बहादुरी, जो सीमा को उल्लांघ जाए,

दोष में परिणत हो जाती है,

और सार्वजनिक सभाओं में भय प्रदर्शित करना विद्रोह के समान धोखा देता है। हम दोनों से बचें।

(एडीसन के नाटक केटो से—अंक २, दृश्य १)

सेना की अध्यक्षता तथा संकट : सन् १७७५ से १७७६ तक

जार्ज वाशिंगटन के बाद की पीढ़ियां इस बात को स्वीकार करती हैं कि केवल वही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें प्रधान सेना-पति

के पद के लिए सोचा और चुना जा सकता था। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि फिलेडेल्फिया के प्रतिनिधियों ने उन्हीं का चुनाव क्यों किया ? उत्तर हो सकता है कि अंशतः अनुभवों की वजह से। किन्तु उपनिवेशों में अनेक दूसरे लोग भी थे, जो सेना में उतने ही काल तक नौकरी करते रहे थे जितने काल तक वाशिंगटन ने की, और जिनका सेवा-कार्य उतना ही संतोषजनक था। एक-दो तो, विशेष कर चार्ल्स ली और होरेशो गेट्स, ऐसे लोग थे, जिनका सैनिक अनुभव उन से भी अधिक था। ये दोनों योद्धा, जो इस समय अमेरिका के पक्ष का समर्थन कर रहे थे, इससे पूर्व नियमित अंग्रेजी-सेना के अफसर रह चुके थे। इनके अलावा मैसाचूसेट्स का आर्टेमस वार्ड तो उन दिनों रण-क्षेत्र में ही लड़ रहा था और बोस्टन के गिर्द न्यू इंगलैण्ड की मिलिशिया का संचालन कर रहा था।

इन सब बातों के बावजूद, वाशिंगटन को एकमत से प्रधान-सेनापति चुना गया। सम्भव है कि उनकी अपेक्षा की जाती, यदि वह स्वयं प्रतिनिधि के नाते सम्मेलन में उपस्थित न हुए होते, लोग उन्हें जान न गए होते और उनमें उनका विश्वास पैदा न हुआ होता। परिस्थिति जैसी भी थी, उन्होंने चर्चा में बहुत कम भाग लिया। किन्तु समिति की बैठकों में तथा खाने की मेजों पर अपनी सूझ-बूझ और सचाई की धाक जमा दी। सैमूअल कर्वेन, जो वाशिंगटन को १७७५ के मई मास में फिलेडेल्फिया मिला था, यद्यपि वह बड़ा कट्टर राजभक्त था और उस समय के तुरन्त बाद इंगलैण्ड के लिए प्रस्थान भी कर गया था, उसने यह स्वीकार किया कि वर्जीनिया का यह कर्नल 'शिष्ट व्यक्ति है और अपनी बात-चीत और आदतों में मृदु और मधुर है।' कांग्रेस के सदस्यों ने कर्वेन की इस सम्मति की सम्पुष्टि की। उनमें से एक ने कहा—'यह मृदु स्वभाव और रूप में योद्धा के समान हैं।' साथ ही उसने यह भी जोड़ दिया कि वाशिंगटन 'शकल-सूरत में बहुत तरुण लगते हैं।' असल बात तो यह है कि उनकी तितालीस वर्ष की अवस्था

उम्र का वह हिस्सा थी जबकि शक्ति और 'ठोस जानकारी'—दोनों का मेल उन में हुआ था।

इसके अतिरिक्त वाशिंगटन सम्पन्न व्यक्ति थे, यद्यपि वह उतने धनाढ्य नहीं थे, जैसा कि उनके विषय में कहा जाता है (अथवा वह स्वयं मानते थे)। न्यूयार्क के प्रतिनिधियों को पूर्व ही निर्देश किया गया था कि 'उसी व्यक्ति को जनरल बनाया जाय, जिसके पास प्रचुर धन-सम्पत्ति हो, ताकि उसके कारण वह अपने उच्चपद की शोभा को चार चांद लगा सके। ऐसा न हो कि उसकी शोभा महज पद के कारण हो। इसके अलावा देश इस बात पर एतबार कर सके कि उसकी जायदाद, उसके रिश्तेदार तथा उससे सम्बन्ध रखने वाले लोग इस उच्चपद के कर्तव्यों को वफादारी से निभाने में कोई अड़चन पैदा न करें। वह इस ढंग का आदमी हो कि जनता के हित में अपने हाथों में आई सत्ता का परित्याग कर सके।'

हमें आशा नहीं कि उस समय कोई और व्यक्ति इस विवरण के अनुरूप उपलब्ध हो सकता। वाशिंगटन उच्च वर्ग के ऐसे व्यक्ति थे जिनका झुकाव उन्मूलनवाद (रैडिकल) विचार धारा की तरफ था। कुछ भी हो, वह फिलेडैल्फिया के सम्मेलन में उपस्थित कुछ प्रमुख नागरिकों के विपरीत उपनिवेशों की खातिर अपने आपको और अपनी जागीर को भी समर्पित करने को उद्यत थे। उनकी सैनिक वर्दी इस तथ्य को घोषित करती थी। उनका आचरण तथा उनकी प्रसिद्ध चमक-दमक के आरोप से उनकी रक्षा कर रही थी। उस समय उनके सम्बन्ध में कतिपय कहानियों के गढ़े जाने की प्रक्रिया का सूत्रपात भी हुआ। सन् १७७५ में एक किंवदन्ती फैली कि गत वर्ष कर्नल वाशिंगटन ने यह प्रस्ताव रखा था कि वह एक हजार वर्जीनिया-सैनिकों की रेजमैण्ट बनायेंगे और उन्हें बोस्टन की ओर ले जायेंगे। इस पर जो खर्चा आएगा, वह अपनी जेब से देंगे। यह किंवदन्ती सर्वथा निराधार प्रतीत होती है, यद्यपि उनकी जीवनी लिखने वालों ने इस घटना को सच समझ कर अक्सर दुहराया है। यह प्रकट करता है कि फिलेडैल्फिया के लोग इस बात के लिए

कितने उत्सुक थे कि वाशिंगटन की महानता के साक्ष्य पेश करके उन्हें एक अलौकिक पुरुष जाहिर किया जाय। कांग्रेस के पास सैम एडम्ज सरीखे आदमी तथा अन्य देशभक्त भी थे जो विद्रोही जनता को उत्तेजित कर सकते थे, किन्तु इस समय अनिवार्य रूप से ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी जो उस विद्रोही समुदाय को अनुशासन-बद्ध करके उसका नेतृत्व कर सके। ऐसे महानुभाव की आवश्यकता थी जो देखने और कार्य के संचालन में सेनापति के सदृश लगे तथा जो हो तो अमेरिका-निवासी, परन्तु अपना कार्य का सम्पादन योरुपीय नमूने पर करने की योग्यता रखता हो।

इस सिलसिले में एक और भी महत्वपूर्ण विचारणीय बात थी। अब तक न्यू इंगलैण्ड मुठ-भेड़ का क्षेत्र था। अब यदि प्रस्तावित सार्वदेशिक सेना में सब उपनिवेशों को पूर्णतया मिलाने की योजना बनती है, तो—जैसा कि जान और सैम्युअल-एडम्ज ने महसूस किया—इसकी कमान ऐसे योद्धा को सौंपी जानी चाहिए, जो न्यू इंगलैण्ड का न हो। मैसाचूसैट्स और वर्जीनिया दोनों मिलकर उपनिवेशों की शक्ति के प्रधान आधार थे। इसलिए वर्जीनिया-वासी होने के कारण जार्ज वाशिंगटन विशेष रूप से चुने जाने योग्य थे। आधुनिकतम अमेरिका के इतिहास में प्रयुक्त शब्दावली में वह 'प्रयोजन सिद्ध करने वाले' उम्मीदवार थे। उनके अधीन नियुक्त किये गए मेजर व जनरल, राजनैतिक तथा अन्य प्रासंगिक बातों को दृष्टि में रख कर नियुक्त किए गए—जैसे, मैसाचूसैट्स को खुश करने के लिए आर्टेमस वार्ड को नियुक्त किया गया; चार्ल्स ली को उसके सैनिक तर्क-वितर्कों के कारण, फिलिप स्कूयलर को (जो एक और प्रतिनिधि था तथा धनाढ्य होने के अतिरिक्त एक मंजा हुआ सैनिक अफसर भी था) न्यूयार्क की तुष्टि के लिए लगाया गया और इस्राईल पुटनम को इसलिए नियुक्त किया कि वह कनेक्टीकट का मन-चाहता 'पुत्र' और जन-अधिनायक था। होरेशो गेट्स को, जो ब्रिटेन में पैदा हुआ था और जिसने वर्जीनिया को अपनी मातृ-भूमि बना लिया था, एडजूटैण्ट जनरल मुकर्रिर किया गया। उनके

अधीन, उसी प्रकार विविध उद्देश्यों को सामने रख कर कई एक ब्रिगेडियर जनरल चुने गये।

सम्भवतः वाशिंगटन के बारे में शब्द 'उम्मीदवार' का प्रयोग गलत अर्थ देता है। उन्होंने अपने आपको कभी आगे नहीं धकेला। जब उन्होंने कांग्रेस को यह विश्वास दिलाते हुए कहा कि 'मैं अपने आपको इस कमान के योग्य नहीं समझता,' तो उन्होंने अपने दिल की बात कही। एक कहानी भी है कि वाशिंगटन ने आंखों में आंसू लाते हुये पैट्रिक हैनरी को गुप्त रूप में कहा कि 'जिस दिन से मुझे अमेरिका की सेनाओं की कमान सौंपी जायगी, उसी रोज से मेरा पतन होगा और मैं अपनी सुकीर्ति को नष्ट कर बैठूंगा।' चाहे यह कहानी सच्ची न भी हो, तो भी इसमें सन्देह नहीं कि उस समय भी वाशिंगटन को अपने अच्छे नाम का बहुत ही ध्यान था। यद्यपि उन्होंने अपने कई पत्रों में अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए यह कहा कि वह आलोचना की परवाह नहीं करते, और यद्यपि उन्हें नुक्ता-चीनी प्रचुर मात्रा में सहनी पड़ी, तथापि उन्होंने अपने जीवन के अन्त तक कभी इस बात को स्वीकार नहीं किया कि आलोचना का कष्ट अनिवार्य रूप से प्रत्येक सार्वजनिक पदाधिकारी को भुगतना ही पड़ता है। उन्होंने सदा अपने क्रोध को उचित सीमा के अन्दर रखा। अपने समकालीन अधिकारियों के विपरीत उन्होंने अपनी सैनिक मान-मर्यादा की नियमावलि में से द्वन्द्व-युद्ध को निकाल दिया।

जनरल वाशिंगटन हर चीज का बहुत अच्छी तरह ख्याल रखते थे। यह इस लिए नहीं कि उनमें घमण्ड की मात्रा थी, बल्कि इस लिए कि उनमें आत्माभिमान था। वह दूसरे लोगों में अशिष्ट व्यवहार को घृणा से देखते थे और इस बात को सहन नहीं कर सकते थे कि दूसरे लोग उन्हें नीच प्रवृत्तियों वाला समझें। इससे पूर्व एक बार उन्होंने ब्रैडाक के अधीन स्वयं-सेवक भद्रपुरुष के रूप में बिना वेतन और औपचारिक पद-स्थिति के कार्य किया था। यह सिद्ध करने के लिए काफी है कि उनमें कितनी अधिक निस्स्वार्थ भावना थी। अब प्रधान सेनापति का पद ग्रहण करने पर

उन्होंने उस अपने विचार को अधिक शानदार पैमाने पर पुनः कार्यान्वित करना चाहा। अतः उन्होंने कांग्रेस पर अपनी यह इच्छा प्रगट की कि वह इस पद के लिए कोई वेतन नहीं चाहते, केवल अपना खर्च लेंगे। (कांग्रेस ने पूर्व ही यह निश्चय कर लिया था कि प्रधान सेना-पति को वेतन तथा खर्चे के लिए पांच सौ डालर प्रतिमास दिए जायें।)

यद्यपि वह अपने दायित्वों के बोझ से दब गए थे, तथापि मनुष्य होने के नाते वह उस समादर पर, जो उन्हें इन जिम्मेदारियों के कारण मिला, अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने अपने गत सैनिक-जीवन की निराशाओं को अपने मन से किसी प्रकार की कड़वाहट पैदा नहीं करने दी, बल्कि इन निराशाओं के कारण जो कोई भी संताप कभी उनके हृदय में पनपे थे, उन्होंने उनको एक ही वार में खत्म कर दिया। चिरकाल पहले तरुण वाशिंगटन ने सैली फेयरफेक्स को लिखा था कि मैं उत्सुकता-पूर्वक चाहूंगा कि एडीसन के नाटक कैटो में मसिया के संग जूबा का अभिनय करूँ। मसिया कैटो की लड़की थी और जूबा नूमीडिया का छोटा राजकुमार, जो कैटो के समर्थकों में से एक था। नाटक-सम्बन्धी वह स्वप्न विस्मृत भूतकाल का था। सैली फेयरफेक्स सन् १७७३ में अपने पति के साथ सदा के लिए इंगलैण्ड को प्रस्थान कर गई थी। उसी नाटक को मई, १७७८ में वाशिंगटन के सदर-मुकाम, 'वैली फोर्ज' में खेला गया। यद्यपि वाशिंगटन को इस प्रकार की कल्पनाएं करने की आदत नहीं थी, हो सकता है कि उन्हें यह विचार आया हो कि उनके अपने आकार में तरुण अर्ध विदेशी जूबा, पूर्णतया रोम के नागरिक और अभिस्वीकृति नेता, कैटो, के रूप में पुनः ढाला गया है।

जब वाशिंगटन ने बोस्टन के बाहर देश-भक्त सेना की कमान अपने हाथों में ली, तो जुलाई, १७७५ का दिन उन्हें उस फासले की याद दिला रहा होगा जो उन्होंने अपने जीवन में इस वक्त तक तय कर लिया था। यह वह दिन था जिस दिन कि इक्कीस वर्ष पूर्व अपनी हार के परिणाम-स्वरूप उन्होंने 'नेसेसिटी' दुर्ग फ्रांसीसियों

को समर्पित किया था।। उस समय तरुण कर्नल वाशिंगटन अपने से बड़ी सेना के घेरे में फंस गया था, इस समय प्रौढ़ वाशिंगटन स्वयं बोस्टन का घेरा डाले हुए थे और उनके अधीन करीब-करीब पन्द्रह हजार मिलिसिया थी। बोस्टन के भीतर इससे आधी संख्या में ब्रिटिश सेना थी, जो दो सप्ताह पूर्व लड़ाई में एक सहस्त्र सैनिक खो चुकी थी। इन लोगों को ब्रीड्स हिल में विजय तो मिली थी, पर उन्हें यह जीत महंगी पड़ी। ब्रिटिश सेनापति, जनरल गेज, ने बीस वर्ष पूर्व ब्रैडाक की अभावी 'एडवान्स गार्ड' का नेतृत्व किया था। उस समय वाशिंगटन सेनापति का छोटा अंग-रक्षक था।।

ये कुछ एक बातें थीं जो वाशिंगटन को सान्त्वना दे रही थीं, किन्तु उस समय इतनी अधिक समस्याएं थीं कि उनके मुकाबले में ये सान्त्वनाएं शायद ही कोई हैसियत रखती हों। मर्था और वर्जीनिया की मनभाती जागीरों को छोड़ना उनके लिये हृदय-विदारक था। फिर कमान की समस्त चिंताएं थीं। न्यू इंगलैण्ड के कई अफसर एवं सैनिक वाशिंगटन को सन्देह की दृष्टि से देखते थे और जैसा कि उनके अविवेकपूर्ण पत्र-व्यवहार से प्रकट होता है, वह भी उन्हें शक की नजरों से देखते थे। उन्होंने शिकायत की कि 'व्यवस्था, नियमितता तथा अनुशासन' का अभाव है। उनका मत था कि अमेरिकियों की अव्यवस्था और असत्य व्यवहार के दुष्परिणाम तम्बुओं, कम्बलों, वर्दियों, दवाइयों, आहार-सामग्री, इत्यादि की रसद पर पड़ रहे हैं। स्टाफ, तोपखाने की सैनिक टुकड़ी आदि नहीं के बराबर थे। कांग्रेस के प्रबन्ध किए बिना, वेतन का रुपया-पैसा सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त पेटी कहां से आ सकती थी? कांग्रेस ने निश्चय किया था कि सब राज्यों की सम्मिलित सेना बनाई जाए। क्या इस निश्चय के अनुसार सब राज्य अपने-अपने हिस्से की सेना देंगे? इस प्रश्न का उत्तर 'हां' की अपेक्षा 'न' में अधिक था और जितने वर्ष लड़ाई चलती रही, स्थिति बराबर ऐसी ही बनी रही।।

प्रश्न यह था कि जो भी सेना उपलब्ध थी, उससे सक्रिय रूप में क्या काम लिया जाय? न तो कांग्रेस और न ही वाशिंगटन उस

उन्होंने उस अपने विचार को अधिक शानदार पैमाने पर पुनः कार्यान्वित करना चाहा। अतः उन्होंने कांग्रेस पर अपनी यह इच्छा प्रगट की कि वह इस पद के लिए कोई वेतन नहीं चाहते, केवल अपना खर्च लेंगे। (कांग्रेस ने पूर्व ही यह निश्चय कर लिया था कि प्रधान सेना-पति को वेतन तथा खर्चे के लिए पांच सौ डालर प्रतिमास दिए जायें।)

यद्यपि वह अपने दायित्वों के बोझ से दब गए थे; तथापि मनुष्य होने के नाते वह उस समादर पर, जो उन्हें इन जिम्मेदारियों के कारण मिला, अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने अपने गत सैनिक-जीवन की निराशाओं को अपने मन से किसी प्रकार की कड़वाहट पैदा नहीं करने दी, बल्कि इन निराशाओं के कारण जो कोई भी संताप कभी उनके हृदय में पनपे थे, उन्होंने उनको एक ही वार में खत्म कर दिया। चिरकाल पहले तरुण वाशिंगटन ने सैली फेयरफेक्स को लिखा था कि मैं उत्सुकता-पूर्वक चाहूंगा कि एडीसन के नाटक कैटो में मसिया के संग जूबा का अभिनय करूँ। मसिया कैटो की लड़की थी और जूबा नूमीडिया का छोटा राजकुमार, जो कैटो के समर्थकों में से एक था। नाटक-सम्बन्धी वह स्वप्न विस्मृत भूतकाल का था। सैली फेयरफेक्स सन् १७७३ में अपने पति के साथ सदा के लिए इंगलैण्ड को प्रस्थान कर गई थी। उसी नाटक को मई, १७७८ में वाशिंगटन के सदर-मुकाम, 'वैली फोर्ज' में खेला गया। यद्यपि वाशिंगटन को इस प्रकार की कल्पनाएं करने की आदत नहीं थी, हो सकता है कि उन्हें यह विचार आया हो कि उनके अपने आकार में तरुण अर्ध विदेशी जूबा, पूर्णतया रोम के नागरिक और अभिस्वीकृति नेता, कैटो, के रूप में पुनः ढाला गया है।

जब वाशिंगटन ने बोस्टन के बाहर देश-भक्त सेना की कमान अपने हाथों में ली, तो जुलाई, १७७५ का दिन उन्हें उस फासले की याद दिला रहा होगा जो उन्होंने अपने जीवन में इस वक्त तक तय कर लिया था। यह वह दिन था जिस दिन कि इक्कीस वर्ष पूर्व अपनी हार के परिणाम-स्वरूप उन्होंने 'नेसैसिटी' दुर्ग फ्रांसीसियों

को समर्पित किया था। उस समय तरुण कर्नल वाशिगटन अपने से बड़ी सेना के घेरे में फंस गया था, इस समय प्रौढ़ वाशिगटन स्वयं बोस्टन का घेरा डाले हुए थे और उनके अधीन करीब-करीब पन्द्रह हजार मिलिसिया थी। बोस्टन के भीतर इससे आधी संख्या में ब्रिटिश सेना थी, जो दो सप्ताह पूर्व लड़ाई में एक सहस्र सैनिक खो चुकी थी। इन लोगों को ब्रीड्स हिल में विजय तो मिली थी, पर उन्हें यह जीत महंगी पड़ी। ब्रिटिश सेनापति, जनरल गेज, ने बीस वर्ष पूर्व ब्रैडाक की अभावी 'एडवान्स गार्ड' का नेतृत्व किया था। उस समय वाशिगटन सेनापति का छोटा अंग-रक्षक था।

ये कुछ एक बातें थीं जो वाशिगटन को सान्त्वना दे रही थीं, किन्तु उस ससय इतनी अधिक समस्याएं थीं कि उनके मुकाबले में ये सान्त्वनाएं शायद ही कोई हैसियत रखती हों। मर्था और वर्जीनिया की मनभाती जागीरों को छोड़ना उनके लिये हृदय-विदारक था। फिर कमान की समस्त चिंताएं थीं। न्यू इंगलैण्ड के कई अफसर एवं सैनिक वाशिंगटन को सन्देह की दृष्टि से देखते थे और जैसा कि उनके अविवेकपूर्ण पत्र-व्यवहार से प्रकट होता है, वह भी उन्हें शक की नजरों से देखते थे। उन्होंने शिकायत की कि 'व्यवस्था, नियमितता तथा अनुशासन' का अभाव है। उनका मत था कि अमेरिकियों की अव्यवस्था और असत्य व्यवहार के दुष्परिणाम तम्बुओं, कम्बलों, वर्दियों, दवाइयों, आहार-सामग्री, इत्यादि की रसद पर पड़ रहे हैं। स्टाफ, तोपखाने की सैनिक टुकड़ी आदि नहीं के बराबर थे। कांग्रेस के प्रबन्ध किए बिना, वेतन का रुपया-पैसा सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त पेटी कहां से आ सकती थी? कांग्रेस ने निश्चय किया था कि सब राज्यों की सम्मिलित सेना बनाई जाए। क्या इस निश्चय के अनुसार सब राज्य अपने-अपने हिस्से की सेना देंगे? इस प्रश्न का उत्तर 'हां' की अपेक्षा 'न' में अधिक था और जितने वर्ष लड़ाई चलती रही, स्थिति बराबर ऐसी ही बनी रही।

प्रश्न यह था कि जो भी सेना उपलब्ध थी, उससे सक्रिय रूप में क्या काम लिया जाय? न तो कांग्रेस और न ही वाशिगटन उस

परिस्थिति में दूर तक चलने वाली योजनाएं बना सकते थे। इस समय भी फ़ोर्ट 'नैसेसिटी' के सदृश, शत्रु-सेनाएं औपचारिक-रूप से युद्ध की स्थिति में नहीं थीं। अमेरिका के लोग जनरल गेज की अंग्रेजी फौज को, जो बोस्टन में थी 'मन्त्रालयिक सेना' कह कर पुकारते थे। उनकी युक्ति यह थी कि अमेरिका के भिन्न-भिन्न उपनिवेश ब्रिटिश सम्राट् के राज-भक्त होने के कारण एवं उसकी स्वतन्त्र प्रजा के रूप में अपने अधिकारों के लिये संघर्ष कर रहे हैं। सन् १७७५ के अन्तिम मासों में यह अवस्था थी कि अमेरिका में अतिमार्गी लोग, जो पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते थे, संख्या में बहुत कम थे। बहुसंख्यक अमरीकी आशा लगा कर बैठे थे कि ब्रिटेन के साथ किसी न किसी प्रकार का समझौता हो जायगा, यद्यपि इस समझौते के स्वरूप की कल्पना दुःसाध्य थी। इस बीच में, साहसपूर्ण प्रतिरोध आवश्यक था। परन्तु इसके लिये क्या हो सकता था? कांग्रेस ने कैनेडा के प्रान्तों को बात-चीत के लिए अस्थायी प्रस्ताव किये थे (किन्तु इनका कुछ परिणाम नहीं निकला था)। वाशिंगटन ने क्यूबैक लेने के लिए बैनीडिक्ट आरनल्ड के अधीन एक सैनिक अभियान भेजा, ताकि मामला वहीं ठण्डा हो जाए। उन्होंने कई बार यह भी सुझाव दिया कि उसी साहस के साथ बोस्टन पर धावा बोल दिया जाये। परन्तु आरनल्ड का आक्रमण वीरता-पूर्ण होते हुए भी असफल रहा और इसके लिए वाशिंगटन के सदरे-मुकाम की युद्ध-समिति ने बोस्टन के हमले के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

यह कहा जाता है कि वाशिंगटन अपने अधीन अफसरों के मत को बहुत जल्दी स्वीकार कर लेते थे। यदि यह सत्य है, तो उनका अपने आप कोई कदम उठाने में संकोच करना समझ में आ सकता है, कारण कि सैनिक मामलों में 'हम सबकी जानकारी सीमित और अल्प हुआ करती है।' चार्ल्स ली को भी इसके बावजूद कि वह प्रवाह-रूप में बातचीत कर सकता था, युद्ध सम्बन्धी रचनाओं का क्रियात्मक अनुभव नहीं था। जहाँ तक वाशिंगटन का सम्बन्ध है, उन्होंने आज तक सीमान्त क्षेत्रों की लड़ाइयों में छोटे अधिकारी

के रूप में भाग लिया था। मिली-जुली विशाल सेना का प्रबन्ध तो दूर की बात रही, उन्हें अश्वारोहियों की सेना के व्यूह-कौशल अथवा बहुत बड़े पैमाने पर तोपखाने के प्रयोग से सीधा कोई परिचय नहीं था। अतः उस समय तक जब तक उन्हें सैनिक मामलों में कम वाकफियत थी, उनकी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि वह केवल अपनी निर्णायक बुद्धि पर भरोसा करें। इसके अतिरिक्त वह युद्ध-समिति की बैठकें बुलाने में वास्तव में उस कार्य-विधि की पालना कर रहे थे जो उस समय अन्य सब सेनाओं और सेनापतियों में प्रचलित थी। दूसरी बात यह थी कि उन्हें अपने से अधिक अनुभव रखने वालों के साथ यथासम्भव चतुरता-पूर्वक व्यवहार करना लाज़मी था। ये लोग थे जिन्हें इस बात पर रोष-सा था कि वाशिंगटन उनके ऊपर लादा गया है। आर्टीमस वार्ड के साथ विशेष रूप से यह बात थी। वह वाशिंगटन से न केवल पांच वर्ष बड़ा ही था, बल्कि उसने कर्नल की हैसियत में फ्रांसीसियों के विरुद्ध लड़ाइयों में मिलिशिया में सेवाएं भी की थीं। वह (वार्ड) यह महसूस करता था कि वह बोस्टन में गेज का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकता है। इराइल पुटनम, जिसने बंकर हिल की लड़ाई में वह नाम पैदा किया था कि उसकी सफलता सम्बन्धी कहानियां हर एक की जबान पर थीं, वाशिंगटन से चौदह साल आयु में बड़ा था और उसने अपना जीवन विलक्षण रूप से विविधता-पूर्वक और साहसिक कामों में बिताया था। इन कारणों से वाशिंगटन महोदय के लिए वांछनीय था कि सावधानी से उन लोगों के साथ व्यवहार करें। चूंकि उनके घर में गुलाम नौकर चाकर थे, इसलिए न्यू इंगलैण्ड वालों के लिए (जो दास-प्रथा के कट्टर विरोधी थे) वह दोहरी तरह से सन्देह के पात्र थे।

कई अन्य पहलुओं से भी यह उत्तम बात थी कि वाशिंगटन अपने अधीन सेनापतियों से मशविरा ले लिया करते थे। उन की इस बात के लिए आलोचना होती थी कि वह आवश्यकता से अधिक सतर्क रहते हैं, किन्तु वास्तव में वह अपनी तरुणावस्था के दिनों की तरह ही अत्यधिक उग्र-गति से काम करने वाले थे। वह

अकर्मण्यता से नफरत करते थे। उन्हें अपनी इच्छा के विरुद्ध ही सन् १७७५-१७७६ की शरद् ऋतु में, युद्ध की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

सन् १७७६ की वसन्त ऋतु में, इतने गड़बड़झाले के बीच, कम से कम एक विषय धीरे-धीरे पहले से अधिक स्पष्ट होता चला गया—वह था अमेरिका की स्वतन्त्रता का विषय। स्वतन्त्रता की इच्छा द्रुतगति से तीव्र होती जा रही थी। लोगों को ऐसे प्रमाण भी मिले, जिनसे यह प्रकट होता था कि जार्ज तृतीय तथा उसका मन्त्रिमण्डल (लार्ड नार्थ, लार्ड जार्ज जर्मन, सैण्डविच के अर्ल तथा अन्य) विद्रोह को कुचलने पर तुले हुए हैं। इन प्रमाणों ने जलती पर तेल का काम किया। "हथियार ही अन्त में संघर्ष का फैसला किया करते है। प्रार्थना को मानना न मानना, बादशाह के अख्तियार में था और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने चुनौती को स्वीकार कर लिया है।" यह घोषणा थी जो टाम पेन ने अपनी 'कामन सैंस' नाम की पुस्तिका में की। इस कृति की भावनाओं को उपनिवेश-वासियों द्वारा, जिनमें जनरल वाशिंगटन भी शामिल थे, उत्साह-पूर्वक समर्थन मिला। पेन यदि कुछ वर्ष पूर्व इन विचारों को अमेरिकी-जनता के सम्मुख रखते, तो उन्हें विद्रोह-पूर्ण और धर्म की निन्दा समझा जाता। सन् १७७६ के आरम्भिक मासों में यह सुनकर लोगों के दिल को ठेस पहुंची कि जार्ज तृतीय, श्रेष्ठतम बादशाह होना तो दूर की बात रही, ग्रेट ब्रिटेन का केवल एक अत्याचारी 'शाही बनैला पशु' है। किन्तु यह सदमा बादशाह के प्रति वफादार लोगों को छोड़, जो इस विवरण से घबरा उठे थे, अन्य अमरीकियों को मधुर लगा, क्योंकि इससे वे सुखद परिणामों की आशा रखते थे। इन वफादार लोगों का उल्लेख निकोलस क्रैसवेल ने भी अपने पत्र में किया था। यह अभागा अंग्रेज युवक था जो उपनिवेशों में सन् १७७४ में आया था। उसके उल्लिखित शब्द—सम्निक एडनेफं—बादशाह के हितैषियों के लिए स्पष्ट संकेत थे। जिन लोगों का वर्णन क्रैसवेल ने क्रोधावेश में 'स्लैवर' अर्थात् 'विद्रोही' कह कर किया था, उन्होंने जान लिया कि जिन विश्वासों को वे ऊपरी ढंग

से मानते आए हैं, उन्हें पेन महोदय ने निश्चयपूर्वक उलटा दिया है।

पेन ने कहा—"सही अथवा तर्क-संगत बात पृथक्करण के पक्ष में है। कत्ल किए गए लोगों का खून, प्रकृति की रोती हुई आवाज पुकार-पुकार कर कह रही है, 'यह अलग होने का समय है।' यहां तक कि जिस अन्तर पर भगवान् ने इंगलैण्ड और अमेरिका को रखा है, वह इस बात का प्रबल और प्राकृतिक प्रमाण है कि वह दिव्य सत्ता कभी इन में से किसी देश का दूसरे पर अधिकार नहीं चाहती थी।"

घटनाओं के चक्र के कारण पेन की प्रभावशाली वाणी पहले से भी अधिक हृदय-ग्राही बन गई। अमरीकी सेनाओं को जो क्यूबैक की चढ़ाई में असफलता मिली थी और जिसके कारण उन्हें कैनेडा से हटना पड़ा था, उसकी कसर ब्रिटिश धावे की असफलता से पूरी हो गई। समुद्र के रास्ते से चार्ल्सटन के विरुद्ध जनरल हैनरी क्लिटन द्वारा यह चढ़ाई की गई थी। सबसे अधिक खुशी की बात यह हुई कि मार्च १७७६ में बोस्टन को अंग्रेजों के पंजे से छुड़ा लिया गया। इससे पूर्व तोप-गोलों के अभाव में वाशिंगटन कुछ कर नहीं सके थे। इस कमी की पूर्ति एक सुयोग्य और सक्रिय युवक ने की, जिसका नाम जनरल हैनरी नौक्स था, जो व्यवसाय से बोस्टन का पुस्तक-विक्रेता था। वह सरदी के मौसम में थकावट से चकनाचूर करने वाली यात्रा करके तितालीस तोपों और सोलह शतघ्निकाओं को ले आया। नौक्स उन्हें फोर्ट टिकनडेरोगा से, जहां यह कई मास पूर्व पकड़ी गई थीं, खेंच कर लाया था। वाशिंगटन के सैनिकों ने, अन्धेरे की आड़ में द्रुतगति से कार्य करते हुए, उन्हें डौरचैस्टर हाईट्स पर मिट्टी के पुश्ते के पीछे लगा दिया। इस स्थान से बोस्टन तथा बन्दरगाह के बहुत से भाग पर प्रभावशाली ढंग से गोला बारी की जा सकती थी।

जनरल विलियम हो ने (जो उस समय गेज के स्थान पर ब्रिटिश प्रधान सेना-पति नियुक्त हुआ था) पहले-पहल डौरचैस्टर

हाईट्स पर धावा बोलने का विचार किया था। किन्तु बाद में उस ने यह कदम उठाना उचित नहीं समझा। सम्भव है कि मूसलाधार वर्षा के कारण उसने यह निश्चय किया हो, क्योंकि वर्षा में बन्दूकों के बेकार होने का डर था। यह भी सम्भव है कि उसे बंकर हिल की घटना स्मरण हो आई हो, जहां का संहार का दृश्य उसने बिल्कुल पास से देखा था। अमरीकी सेना के साहसिक कार्य का यह परिणाम हुआ कि बोस्टन अंग्रेजों के लिए किसी प्रकार सुरक्षित अड्डा न रहा। इसलिए यथार्थतः न हारते हुए भी, हो अमरीकी सेना के चातुर्य से परास्त हो गया। इस प्रकार हार खाकर उसने अपनी सेना वहां से निकाल कर जहाजों में उतार दी। उसने अपने साथ एक हजार हताश राजभक्त भी लिए। जो भी सामान उससे विनष्ट हो सका, उसने उसका विध्वंस किया और कुछ दिन और बन्दरगाह में रुक कर, पूर्व दिशा की ओर नोवास्कोटिया स्थित हैलीफैक्स के लिए रवाना हो गया।

इस खबर के मिलते ही वाशिंगटन को विस्मय हुआ। कांग्रेस के अध्यक्ष, जान हैनकाक को उन्होंने लिखा—'श्रीमन्! मुझे यह सूचना देते हुए बड़ी प्रसन्नता होती है कि गत रविवार दिनांक १७ को, प्रातः ९ बजे ब्रिटेन की सरकारी सेना ने, बोस्टन नगर खाली कर दिया था। इस समय संयुक्त राष्ट्र की सेनाएं इसे अपने अधिकार में किए हुए हैं। श्रीमन्! मैं इस सुखद घटना पर आप को तथा कांग्रेस को बधाई देता हूं। विशेष रूप से इसलिए भी कि यह सारा कार्य इस ढंग से सम्पादित हुआ कि बचे-खुचे बोस्टन-निवासियों की जानें भी बचीं और उनका माल-सामान खतरे में नहीं पड़ा।' कांग्रेस ने धन्यवाद का प्रस्ताव पास किया और उन्हें उपहार के रूप में सोने का पदक मिला। समस्त संयुक्त राज्य में वाशिंगटन की प्रशंसा के गीत गाए जाने लगे।

ग्रीष्म काल के बीच में सिवाए सर गाई कार्लटन की सेना के कोई भी नियमित ब्रिटिश सेना अमेरिका के तेरह उपनिवेशों में नहीं थी। उस समय कार्लटन कैनेडा से न्यूयार्क के उत्तरीय भाग

की ओर बढ़ रहा था। कांग्रेस खुश थी। उसे और खुशी होती, यदि उसे यह मालूम हो जाता कि फ्रांसीसी प्रगट रूप से तटस्थ रहते हुए भी, उपनिवेशों को गोला-बारूद की सहायता देकर अपने पुराने शत्रु, ब्रिटेन, को क्षति पहुंचाने की योजना बना रहे हैं। दूसरी तरफ बादशाह के प्रति वफादार लोग कुछ एक क्षेत्रों में, विशेष रूप से दक्षिण में, क्रियाशील थे। इससे प्रगट होता था कि अमरीकी काफी अनुपात में अब भी अनुदार दल के हैं। यदि कट्टर रूप से अनुदार न भी हों, तो वाशिंगटन के शब्दों में, 'वे लोग अभी तक समझौते के सुस्वादु आहार का उपभोग कर रहे थे।' इन परिस्थितियों में यह अधिक उचित था कि सच्चे देश-भक्तों को प्रोत्साहित किया जाये और सशंकित लोगों पर दबाव डाला जाये।

मई १७७६ में वाशिंगटन ने निश्चय कर लिया कि उन्हें क्या करना है। कांग्रेस में बहुसंख्यक लोग उनसे सहमत थे। विनीत वाक्य-छल की आवश्यकता नहीं रही थी। 'सरकारी सेना' बादशाह की सेना थी। जार्ज तृतीय पर प्रमुख धूर्त होने का आरोप लगाया गया। भाड़े की जर्मन सेना को, जिसका उल्लेख गलती से प्रायः हेसियन समझ कर किया जाता रहा, वहां भेजने का दोष भी उसी पर लगा। करीब-करीब अन्य सब अपराधों के लिये, जिसकी कल्पना अमरीकी दिमाग ही कर सकते थे, बादशाह को दोषी ठहराया गया। थामस जैफर्सन जैसे उपजाऊ मस्तिष्क वाले लोग कई और अपराधों का नाम ले सकते थे, जैसा कि उसने स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र की शानदार भूमिका से आगे तथा अन्य धाराओं में किया, जिसका प्रारूप उसने कुछ सहायता लेकर कांग्रेस के लिए बनाया था।

४ जुलाई, १७७६ को उस घोषणा-पत्र को अन्तिम रूप से स्वीकार किया गया। न्यूयार्क का प्रतिनिधि इस बैठक में शामिल नहीं था। इस वक्त के बाद से अमेरिका के नेताओं के लिए किसी हालत में भी कदम पीछे हटाना असम्भव था। उनका उद्देश्य पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। यदि उन्हें असफलता मिली, तो उनका

सर्वनाश समझिये। सम्भवतः फांसी के तख्ते पर लटका दिए जावें।
पेन की प्रभावशाली लेखनी' उनमें प्राण फूंकती रही थी और अब
जैफर्सन के लेख उनमें स्वतन्त्रता की भावना को भड़का रहे थे।
वाशिगटन सरीखे नीरस सम्वाददाता भी वायुमण्डल से प्रेरणा पा
रहे थे। उनके शब्दों में, जब वे स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष का जिक्र
करते, एक प्रकार की भव्यता हुआ करती थी। वाशिगटन ने इसके
बारे में लिखते हुए अनेक बार इसे 'उदात्त हेतु' 'न्यायपूर्ण हेतु' कहा
और यह भी कि 'मैं धार्मिक-रूप से इसे ऐसा मानता हूं।' और
'इस कार्य में भगवान् निश्चय से ही वीर और सतर्क पुरुषों की
सहायता करेगा।'

किन्तु पांच मासों के अन्दर उनकी शब्दावलि में अन्तर आ
गया। उन्होंने हिम्मत तो नहीं हारी, किन्तु अन्य अमरीकियों की
तरह उनकी स्वतन्त्रता प्राप्ति की आशायें करीब-करीब जाती रहीं।
उनकी सेना तितर-बितर होने लग रही थी। अपमान और विनाश
मुंह बाए खड़े थे। १० दिसम्बर को अपने भाई लुंड वाशिगटन को
पत्र लिखते हुए उन्होंने यह स्वीकार किया—'अब हमारा एक ही
सहारा है और वह है शीघ्र नई सेना की भर्ती। यदि यह न हो
सका, तो मेरा विचार है कि सब खेल खत्म हो जायेगा।'

'खेल खत्म हो जायेगा—' उनका इतना प्रिय वाक्यांश था कि
उसे बार-बार उन्होंने अपनी अन्य चिट्ठियों में प्रयुक्त किया। इसी प्रकार
ही वह 'कठिनाइयों का चुनाव' वाक्यांश का प्रयोग अनेक बार
करते थे। उन्होंने १८ दिसम्बर को अपने भाई जान आगस्टीन को
पत्र में लिखा—'तुम सोच नहीं सकते कि मेरी स्थिति कितने गोरख-
धन्धे में फंसी है। मेरा विश्वास है कि किसी भी मनुष्य ने जिसके
पास उलझनों से निकलने के लिए कम साधन हैं, कभी इतनी अधिक
कठिनाइयों का चुनाव नहीं किया होगा।'

जुलाई और दिसम्बर के बीच में जो घटनायें घटीं, उन्हें
सरलतापूर्वक वर्णन किया जा सकता है। हो बोस्टन में तो वाशिगटन
की चातुर्यपूर्ण गतिविधियों का शिकार हुआ था, किन्तु वह हर

हालत में बोस्टन छोड़ना चाहता था और लड़ाई के अधिक केन्द्रीय अड्डे पर अपना मुख्यालय ले जाना चाहता था। यदि उसमें आक्रमण करने की सामर्थ्य होती, तो वह जल-पोतों द्वारा बोस्टन से सीधा प्रस्थान करके न्यूयार्क अथवा फिलेडेलफिया पर हमला कर लेता। परिस्थिति ऐसी न होने से वह कुमक की प्रतीक्षा करने के लिए हैलीफैक्स की तरफ जा पहुँचा। यह वायदा हुआ था कि कुमक शीघ्र पहुँच जायगी। यह कुमक सर्व प्रथम १२ जुलाई को न्यूयार्क पहुँची। कुमक में एक समुद्री बेड़ा था, जिसका नेतृत्व उसके बड़े भाई एडमिरल लार्ड हो के हाथ में था। जनरल हो बिल्कुल उसी दिन—अर्थात् २ जुलाई को—स्ट्रेट द्वीप के तट पर पहुँचा, जिस रोज कि कांग्रेस ने स्वतन्त्रता सम्बन्धी अन्तिम निश्चय किया।

इसके बाद में आने वाले सप्ताहों में ब्रिटिश, जर्मन और वफादार सैनिकों की टुकड़ियों के (जिनमें चार्लसटन से लौटे हुए क्लिटन अभियान के सैनिक भी थे) जहाजों के जहाज स्टेटेन द्वीप पर उतरते रहे। यह क्रम तब तक जारी रहा, जब तक कि हो के पास मुठ-भेड़ के लिए अगस्त के मध्य तक तीस हजार सैनिक नहीं हो गए। ये सैनिक जहां अच्छी वर्दियां पहने थे, वहाँ शस्त्रास्त्रों से भी सुसज्जित थे।

वाशिंगटन अप्रैल के महीने से ही न्यूयार्क में थे। वह शत्रु की आक्रमण-योजना के अमल में आने से पूर्व ही वहाँ पहुँच गए थे। (उन्होंने ३१ मई को अपने भाई जान आगस्टीन को पत्र द्वारा सूचित किया—'हम न्यूयार्क में गर्मी की ऋतु में रक्तपात की आशा रख रहे हैं।')' यह सब सोचते हुए भी उनमें इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह जहाजों से उतर रही फौजों को रोक सकें। इस (आक्रमण) की प्रक्रिया बिल्कुल निश्चित और पक्की थी। ब्रिटिश लोगों की सामुद्री-सत्ता सर्वोच्च थी और अब वे भूमि पर भी सत्ता कायम करना चाहते थे। उनकी तुलना में अमरीकी जल-सेना तुच्छ थी—केवल न होने के बराबर—लूट-मार करने वाली सेना। इस के अलावा ब्रिटिश सेना वाशिंगटन की सेना से कई हजार ज्यादा थी। फिर,

वाशिंगटन की सेना का एक भाग मिलिशिया का था, जिसे अल्पकाल के लिए भर्ती किया गया था और जिस पर वह बहुत कम भरोसा रखते थे। शेष सेना को, जो संयुक्त-राज्य अमेरिका की नाभि-बिन्दु थी, दिसम्बर के अन्त तक ही भर्ती किया जा सका था।

ऐसी परिस्थितियों के होते हुए भी वाशिंगटन के आदेश यह प्रगट करते हैं कि उन्हें अपनी सफलता पर यथार्थ रूप से विश्वास था। सम्भव है कि वह जरूरत से ज्यादा अपने ऊपर विश्वास रख रहे हों। यह भी हो सकता है कि वह युद्ध करने के लिए अत्यन्त समुत्सुक हों। कारण यह कि उन्हें सेना का नेतृत्व करते हुए एक वर्ष बीत चुका था। इस सारे वर्ष में केवल एक ही अवसर युद्ध-सम्बन्धी सम्मान प्राप्त करने का निकला था, जब कि डौर चेस्टर हाईट्स पर दिखावे की लड़ाई हुई थी। जो भी कारण हो, यह सच है कि उन्हें कोई प्रशंसनीय कार्य दिखाने का मौका नहीं मिला था। उनका प्रथम प्रगतिरोध अगस्त के अन्तिम भाग में हुआ, जवकि हो ने आखिरकार लौंग द्वीप के सिरे पर अपनी बीस हजार सर्वश्रेष्ठ सेना उतारी और खामोशी को तोड़ा। उसका स्पष्ट उद्देश्य यह था कि वह उत्तर की ओर बढ़ कर 'ईस्ट' नदी के साथ-साथ मनहट्टन को पार कर जाये। ब्रुकलिन हाईट्स पर अमरीकी दृढ़-किलेबन्दी के कारण रास्ता बन्द था। किन्तु लौंग द्वीप में ठहरे हुए अमरीकी सैनिक (जो जनरल पुटनम के अधीन थे) किलेबन्दियों के बाहर ऊंचे भूमितल पर एकत्रित किए गए थे। गम्भीर भूल के कारण, जिसे हो ने मालूम कर लिया, अमरीकी सेना की बायीं तरफ अरक्षित रह गई थी। इसलिए अमरीकी सेना के बाएं और बीच वाले भाग में लड़ने के लिए दो फौजी दस्ते भेजने के बाद, हो ने बायीं तरफ स्वयं ब्रिटिश मुख्य दस्ते के द्वारा हमला कर दिया। उसके दो अन्य दस्तों को यद्यपि, कड़ा युद्ध करना पड़ा, पर उन्हें थोड़ी-बहुत सफलता जरूर मिली। हमला करते हुए हो अधिक दर्शनीय ढंग से आगे बढ़ा, जिसके परिणाम-स्वरूप दो हजार अमरीकी सैनिक हताहत हुए (इनमें से आधे बन्दी बनाए गए, जिनमें न्यू हैम्पशायर के मेजर

जनरल जान सुलीवन भी थे) । शेष सेना ईस्ट नदी के तट पर घिर जाने से उसकी दया पर निर्भर थी । अमरीकी सेना की इस त्रुटि-पूर्ण स्थिति के लिए वाशिंगटन को भी कुछ हद तक दोषी ठहराया जा सकता है । उन्होंने दूसरी बार फिर भूल की । इन बचे-खुचे सैनिकों को पीछे हटाने की बजाए उन्होंने आगे बढ़ाया ताकि ब्रुकलिन पर लड़ती हुई अमरीकी सेना को मजबूत किया जाय ।

उनका भाग्य अच्छा था कि जनरल हो ने और गहरी चोट नहीं की। फलतः वाशिंगटन अपने आपको शीघ्रतापूर्वक सम्भालने के काबिल हो गये । उन्होंने ब्रुकलिन पंक्तियों को खाली करके अन्धेरे की आड़ में और तूफान से लाभ उठाते हुए अपने आपको बदनामी से बचा लिया । उनकी सेना अब मैनहटन पर थी। वहाँ भी इसके घिर जाने का खतरा था । कुछ-कुछ संकोच के बाद वाशिंगटन ने न्यूयार्क नगर को खाली कर देने का निश्चय कर लिया ।

सितम्बर के मध्य में उनकी फटे-हाल सैनिक टुकड़ियां हरलैम हाईट्स पर मैनहैटन के पार ऊपरी भाग की पंक्ति की रक्षा कर रही थीं । हो आराम से न्यूयार्क में पड़ाव डाले हुए था । यह बिल्ली और चूहे का खेल था । यदि वाशिंगटन घबराए हुए चूहे की मानिन्द थे, तो हो नीद में मस्त बिल्ली साबित हुआ । जब-जब बिल्ली हिलती-डुलती थी, चूहा धीरे-धीरे अपना स्थान छोड़ कर दूर चला जाता था—मैनहट्टन के उत्तर में वाईट प्लेन्ज की तरफ और फिर नार्थ कैसल की ओर । बाद की उलझी हुई मुठ-भेड़ों में वाशिंगटन ने अपनी सेना का एक भाग चार्ल्स ली की कमान में छोड़ दिया । शेष सेना को साथ लेकर वह न्यूजर्सी की ओर बढ़े । यहाँ आकर उन्होंने निराशा और बेबसी की हालत में देखा कि अंग्रेजों ने तीन हजार अमरीकी देश-भक्तों को बन्दी बना लिया है। ये वे सैनिक थे, जिन्हें वाशिंगटन ने फोर्ट वाशिंगटन की रक्षा के लिए मैनहट्टन के उत्तरी सिरे पर छोड़ा था । इस समय अन्धकार-पूर्ण नवम्बर के मध्य में सिवाए अपमान-जनक निवर्तन के उनके लिए और कोई चारा न था । हो के सामरिक सेनापति, लार्ड कार्नवालिस ने न्यूजरसी में से होकर वाशिंगटन का दक्षिण में पीछा

किया । इस समय भी वह चार्ल्स ली से अलग थे । केवल एक ही उज्ज्वल पहलू यह था कि स्कूलर, होरेशो गेट्स और बेनी डिक्ट आर्नल्ड की सेनाएं यथापूर्व कायम थीं और इनके कारण कार्लेटन को हौसला नहीं हुआ कि वह न्यूयार्क को जाने वाले चैम्पलेन-हड्सन मार्ग पर आक्रमण करने की चेष्टा करे ।

अन्य स्थानों में निरुत्साहित करने वाले हालात थे । चार्ल्स ली किसी न किसी तरह अपनी फौजों को वापस न्यूजरसी में बचा कर ले आया । इससे वाशिंगटन इस योग्य हो गये कि वह एलबैनी की उत्तरीय सेना में से बारह सौ आदमी बुला सकें । अन्यथा हालात ऐसे थे कि दिसम्बर के आरम्भ में ही खेल लगभग समाप्त था । वाशिंगटन डैलावेयर की दूसरी ओर वापिस पहुँचे । ब्रिटिश सेना, जो काफी संख्या में फिलेडैल्फिया पर चढ़ाई करने का इरादा कर रही थी, यदि किसी चीज ने आगे बढ़ने से रोका तो वह था किश्तियों का अभाव । वाशिंगटन ने अपनी दूरदर्शिता से उन्हें नदी में से निकलवा कर पहले से ही इकट्ठा कर लिया था। बीच के उपनिवेशों में नैतिक स्तर स्पष्टतया नीचा था और उस समय भी उसमें किसी तरह सुधार नहीं हुआ था । यही कारण था कि जनरल इसराइल पुटनम और थामिस मिफलिन के परामर्श पर अमल करते हुए कांग्रेस ने फिलेडैल्फिया से हट कर बाल्टीमोर को अपना अधिवेशन-स्थान बनाया । चार्ल्स ली को जबकि वह लापरवाही से अभीक्षण कर रहा था, एक ब्रिटिश परिरक्षी दल ने बन्दी बना लिया । उस समय मिलिशिया के सैनिक खासी तादाद में छोड़ कर भाग रहे थे और संयुक्त-राज्य की सेना में भर्ती हुए सैनिकों की अवधि समाप्त होने के निकट थी ।

किन्तु किसी न किसी तरह संकट टल ही गया । हो ने शरत् काल तक के लिए बड़े पैमाने पर होने वाली मुठभेड़ें रोकीं और रोडद्वीप स्थित न्यूपोर्ट पर कब्जा करने के लिए क्लिंटन के आधीन छः हजार सैनिक भेजे । कुछ सेना-टुकड़ियों को उपहार का लालच देकर दुबारा भर्ती होने के लिए प्रेरित किया गया । । दो

हजार मिलिशिया के सैनिकों को फिलेडैल्फिया से आगे पहुंचाया गया।

इन से भी अधिक एक और महत्व की वात हुई। क्रिसमस की रात को वाशिंगटन ने बड़े चातुर्य से ट्रैंटन में पड़ी शत्रु-सेना पर अचानक हमला कर दिया। यह कार्य परिस्थिति के अनुकूल था। उनकी योजना यह थी कि वह अपनी सेना की तीन टुकड़ियां लेकर, वर्फ से आधी जमी हुई डेलावेयर नदी को पार करें और इस तरह अगले किनारे पर पहुंच कर ब्रिटिश चौकियों पर अचानक धावा वोल दें। १७५४ में भी एक वार उन्होंने इस प्रकार (फ्रांसीसियों) के जुमनविले-कैम्प पर उषा-काल में अचानक हमला किया था। यह उसी प्रकार का, किन्तु उससे अधिक व्यापक हमला था, जो पहले हमले की याद ताजा कर रहा था। योजना प्रशंसनीय ढंग से सोची गई थी और यद्यपि तीन टुकड़ियों में से दो नदी को पार नहीं कर सकीं, वाशिंगटन के नेतृत्व में मुख्य-सेना-टुकड़ी नदी के दूसरे किनारे पहुंच गई। थोड़ी देर के संघर्ष के वाद पन्द्रह सौ हेसियन सैनिकों ने, जो ट्रैन्टन में थे, हथियार डाल दिये। इनमें से पांच सौ किसी न किसी तरह चुपचाप निकल भागे। हेसियनों का युद्ध निस्सन्देह निम्नस्तर का था। कारण यह कि क्रिसमस समारोह की खुशी में वे खूब शराव पीकर मद-मस्त हो चुके थे। तो भी, इस मौके पर वाशिंगटन ने अचानक आक्रमण करके उच्च कोटि की साहसिकता प्रदर्शित की। इससे एक सप्ताह बाद के हमले में भी दिखाई गई उनकी हिम्मत प्रशंसा के योग्य थी। दुवारा डैलावेयर को पार करने के वाद कार्नवालिस के जाल में वह फंसने को ही थे कि उन्होंने अपने आप को त्वरित गति से छुड़ा लिया। हटते हुए उन्हें जो लड़ाई मार्ग में लड़नी पड़ी, उस में सफलता ने उनके कदम चूमे।

इन साहसिक कामों से जो प्रभाव देश-भक्त अमरीकियों के नैतिक-स्तर पर अथवा वाशिंगटन की अपनी कीर्ति पर पड़ा, उसका महत्व वहुत वड़ा है। १७ जनवरी, १७७७ को निकोलस क्रैसवेल

वर्जीनिया में लीजबर्ग में था। एक परिचित व्यक्ति से बात करने के बाद क्रैसवेल ने अपने पाक्षिक पत्र में लिखा:—

'छः सप्ताह पूर्व यह आदमी अमरीकियों की दुःखपूर्ण स्थिति पर आंसू बहा रहा था और उनके अतिशय प्रेम के पात्र, जनरल (वाशिंगटन) की दुर्दशा पर यह मानते हुए दयार्द्र हो रहा था कि उसकी सैनिक मामलों में निपुणता और अनुभव के अभाव के कारण ही अमेरिका-वासी विनाश के द्वार पर पहुंचे हैं। संक्षेप में (उसके मत में) सब कुछ लुट गया था, सब कुछ नष्ट हो चुका था। किन्तु अब पांसा पलट गया है और वाशिंगटन का नाम आकाश तक ऊंचा उठ चुका है। यह मनहूस हेसियन सैनिकों की वजह से है। उस धूर्त का बुरा हो जिस ने उन्हें यहां भेजने की बात पहले पहल सोची।'

प्रिंस्टन की घटना के बाद वाशिंगटन शरद् में अपने मौरिस टाऊन के मुख्यालय में ही चुपचाप जमे रहे। हो ने डेलावेयर की चौकियों से अपनी सेनाओं को वापस बुला लिया और उन्हें न्यू ब्रून्सविक में केन्द्रित कर दिया। दोनों पक्षों के लिए यह समय अपनी-अपनी शक्ति को जांचने का था। क्यों न हम भी इन्हें जांचने की चेष्टा करें और सबसे प्रथम अमेरिकी स्थिति को देखें।

समस्याएं और सम्भावनाएं

वाशिंगटन के बहुत से जीवनी-लेखकों ने कुछ-कुछ प्रतिबन्ध के साथ अथवा बिना किसी प्रतिबन्ध के, उनकी प्रधान-सेनापति के नाते प्रशंसा की है। वस्तुतः उन्होंने न्यूयार्क के आस-पास के अभियानों में निर्णय-सम्बन्धी भयंकर भूलें कीं। युद्ध के बाद की स्थिति के दिनों में ब्रिटिश टिप्पणी यह थी कि "जनरल हो के अलावा दुनिया का कोई और जनरल होता, तो यह वाशिंगटन को अवश्य परास्त कर लेता, और यदि जनरल वाशिंगटन के अलावा कोई और जनरल होता, तो वह हो को हरा देता।" यह ठीक है कि १७७६ में जो सेना वाशिंगटन के अधीन थी, उससे ब्रिटिश सेना को शिकस्त देने की कोई सम्भावना नहीं थी, किन्तु उनसे

भयंकर भूलें हुईं। ब्रुकलिन हाईट्स पर उन्होंने यह गलती की कि और कुमक भेज कर हार को पक्का कर लिया। यदि कोई उग्रगति शत्रु होता, तो उन्हें कुछ और सोचने का मौका ही न देता (बल्कि एक दम हमला कर देता)। उनकी बाद की गतिविधियां, यद्यपि आतंक प्रगट नहीं करती थीं, किन्तु वे अनिश्चित और अकुशल थीं। वाशिंगटन-दुर्ग का हाथों से निकल जाना अथवा इसके अन्दर की बहुत सी सेना तथा मूल्यवान गोला-बारूद और रसद का शत्रु के कब्जे में पहुंच जाना, किसी अंश तक उनके अपने दोष के कारण ही था।

इसके अतिरिक्त वह अपनी भूलों को स्वीकार करने से हिचकिचाते थे। 'न्यायोचित' और 'मेरी राय में न्यायोचित' दोनों को विभाजित करने वाली रेखा सदा बहुत पतली हुआ करती है। यद्यपि वाशिंगटन ने वर्जीनिया के कर्नल होने के काल से अब तक काफी प्रौढ़ता प्राप्त कर ली थी, उनमें इस समय भी इन दोनों को गलती से एक चीज समझने की प्रवृत्ति थी। जब कोई उन्हें आलोचना का विषय बनाता या उनके ऐसा बनने की सम्भावना होती, तो उन्हें बहुत ही दुःख होता था। सन् १७७६ और १७७७ में जो उन्होंने पत्र लिखे, उनमें उन्होंने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि उन्हें न्यायोचित आलोचना पर कभी आपत्ति नहीं हुई, किन्तु, चूंकि केवल वही और उनके नजदीकी सहयोगी ही उनकी, 'कठिनाइयों के चुनाव' से पूर्णतया परिचित थे, अतः कोई भी आलोचना कैसे न्यायोचित हो सकती थी? अपनी प्रतीक 'प्रतिष्ठा' की तीव्र चिन्ता के कारण वह अब भी इस बात के लिए तैयार रहते थे कि आलोचना का भार दूसरों के सिर पर डाला जाय। इस प्रकार उन्होंने फोर्ट वाशिंगटन के समर्पण का विवरण देते हुए अपने वफादार, जनरल नेथानील ग्रीन, के साथ अन्याय किया। एक बात और। कांग्रेस के कारण जो उन्हें कष्ट होते थे, उन पर अत्यधिक बल देने की प्रवृत्ति उनमें थी।

सैनिक दृष्टि से वाशिंगटन के लिए अभी बहुत कुछ सीखना

बाकी था। स्वभाव के कारण भी उनमें खामियां थीं। किन्तु उनमें सीखने की योग्यता थी और सारा हिसाब-किताब करने पर (इस परिणाम पर हम पहुँचते हैं कि) उनका स्वभाव उन्हें सौंपे गये कार्य के अत्यन्त अनुरूप था। उनकी आरम्भिक भूलों में ही हम उनकी अन्तिम जीतों के बीज देख सकते हैं। क्योंकि वह योद्धा थे, इसलिए उनकी भूलें कायरता के कारण नहीं थीं। यदि यह बात न होती, तो अन्त में जाकर परिणाम घातक निकलते। उन्होंने वास्तव में भूलें इसलिये कीं कि उन्हें युद्ध से प्रेम था। अमेरिका की न्यूनताओं के कारण उस समय युद्ध-सम्बन्धी जो आवश्यकता थी, उसे मानकर चलना उनके लिए कड़वा घूंट था। यह आवश्यकता थी बड़े पैमाने पर मुठभेड़ न होने देना। किन्तु उन्होंने धीरे-धीरे इस सच्चाई को अनुभव किया। उन्होंने सितम्बर, १७७६ में कांग्रेस को लिखा कि 'हमारे पक्ष की ओर से युद्ध रक्षात्मक ही होना चाहिए।' इससे ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने आपको यथार्थ परिस्थितियों के अनुरूप बना लिया। इसके बाद से उनका कार्य असुविधा-जनक, यहां तक कि गौरव-हीन भी रहा, किन्तु जो भी हो, उन पर यह भी स्पष्ट होता जा रहा था कि उन्हें जीवित रहना ही चाहिए और इसके साथ सेना को भी उस समय तक बनाए रखना चाहिए जब तक कि शत्रु संघर्ष से तंग नहीं आ जाता। जो व्यक्ति वर्जीनिया में अपनी भूमि के दावों के सिलसिले में पन्द्रह साल दृढ़ता-पूर्वक अड़ा रहा, उससे भला यह आशा कब हो सकती थी कि वह कार्य को बीच में छोड़ देगा, जब कि उससे बहुत बड़ा भू-भाग खतरे में था। यही कारण था कि उन्होंने ट्रेन्टन में क्यों अचानक सब बाधाओं की अवज्ञा की। वस्तुतः वह इससे भी अधिक कड़ी चोट की लालसा रखते थे। और प्रिंस्टन आक्रमण के कारण उन्होंने विनाश हो तो निकट ला दिया था! किन्तु जिस तरकीब से वह प्रिंस्टन में कार्नवालिस की सेना के पंजे से छूट कर निकले थे, उस से प्रकट होता है कि वाशिंगटन ने किस प्रकार गोरिल्ला जनरल की कार्य-प्रणाली को समझना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने

'कैम्प-फायर' जलाई और तब उसे जलता हुआ छोड़ कर अंधेरे में सेना के साथ चुपचाप खिसक गये।

हम पहले कह आये हैं कि वह कभी-कभी कांग्रेस के व्यवहार की शिकायत किया करते थे। किन्तु इसके भी कारण थे। कांग्रेस की कार्यविधियां प्राय: दीर्घ समय ले लेती थीं, और न सिर्फ अपर्याप्त ही होती थीं, बल्कि यहां तक कि मूर्खता-पूर्ण भी होती थीं। कुछ एक प्रतिनिधि साधारण कोटि के लोग थे और जैसे-जैसे युद्ध आगे बढ़ा, गुण-सम्बन्धी स्तर और नीचे चला गया। कांग्रेस चाहती, तो बजाए भांति-भांति की अलग-अलग राज्यों की सेना तथा मिलिशिया के, जिन्हें मिला कर देश-भक्त सेना का निर्माण हुआ था, एक स्थायी सेना बना सकती थी और उसे बनानी भी चाहिए थी। किन्तु उसकी अपनी कठिनाइयां ऐसी थीं, जिन्हें दूर करना बहुत मुश्किल था और वाशिंगटन को उसका अहसास नहीं हो सकता था। युद्ध बड़े खर्चे की चीज थी। संयुक्त राज्य-सिक्के का दर इतना नीचे गिर गया था कि न्यूयार्क के एक बादशाह के प्रति वफादार पत्र ने हँसी-मजाक से कुछ मात्रा में कागज की मुद्रा के लिए विज्ञापन निकाला। यह विज्ञापन एक अंग्रेज सज्जन की ओर से था, जो इसे दीवार ढकने के लिए प्रयोग में लाना चाहता था। जिस प्रकार वाशिंगटन के लिए यह जिम्मेदारियां नई थीं, उसी प्रकार कांग्रेस के लिए भी तो थीं? इनके अलावा कांग्रेस की निजी व्यस्तताएं भी थीं—उदाहरण के लिए विदेशों से पत्र-व्यवहार करना, इत्यादि। वाशिंगटन का इससे कोई सम्बन्ध नहीं था।

असल बात यह है कि कांग्रेस वाशिंगटन के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करती थी—कम से कम उस व्यवहार से कहीं बढ़कर जितना कि उसके कुछ जीवनी-लेखकों ने मानने की अपेक्षा की है। वाशिंगटन के साथ कांग्रेस के सम्बन्ध ईमानदारी और शिष्टता पर आधारित थे और इसके बहुत से सदस्य उनके व्यक्तिगत रूप से मित्र थे। हां, उन मामलों में जहां उनके और कांग्रेस के अधिकारों में निश्चित रूप से भेद नहीं हो सकता था, वहां आपसी संघर्ष होना

अनिवार्य ही था। यदि वाशिंगटन कहीं अधिक अभिमानी प्रधान-सेनापति होते, तो सम्भवतः भीषण मत-भेद हो जाते। किन्तु सामान्यतया वह कांग्रेस का विश्वास और सम्मान करते थे और कांग्रेस भी— हमें इस पर बल देने की आवश्यकता है—उनका एतबार और इज़्ज़त करती थी। यदि ऐसी बात न होती, तो हम, उस क्षण की घबराहट की गुंजाइश छोड़ते हुए भी, कांग्रेस की दिसम्बर १७७६ की असाधारण चेष्टा का समाधान किस प्रकार कर सकते हैं? कांग्रेस ने उस समय अनिश्चित काल के लिये, जो बाद में छः महीने तक रहा, जार्ज वाशिंगटन को, जहां तक सेना की भर्ती और संधारण का प्रश्न है, एक-शास्तृक सत्ता प्रदान की।

वास्तव में उस समय सर्वसाधारण रूप से उनका वर्णन 'एक-शास्ता' के रूप में किया जाता था, जो विरोध-प्रदर्शक अर्थों में नहीं था। कई लोग उन्हें औलीवर क्रौमवेल के उदाहरण को मन में रखते हुए अथवा न रखते हुए भी 'श्रीपति-रक्षक' कहकर पुकारते थे।

अतः कांग्रेस और वाशिंगटन की अपनी-अपनी समस्याएं थीं। इसी प्रकार ब्रिटिन लोगों की भी निजी समस्याएं थीं। अपने देश में उनकी वफ़ादारियां बटी हुई थीं। और इस कारण नीतियों में मत-भेद था। संसद् में तथा अन्य स्थानों में जार्ज तृतीय तथा उसके 'टोरी' सलाहकारों के प्रति निश्चित विरोध-भावना थी। बादशाह की असंदिग्ध धारणा थी कि उपनिवेश उसके साम्राज्य में पुनः शामिल किये जायें। यदि युक्तियुक्त बातचीत से यह सम्भव न हो, तो बलात् ही उन्हें मिलाया जाए, अर्थात् मख़मल के दस्ताने में लोहे का हाथ हो। किन्तु जैसे-जैसे धीमी चाल से लड़ाई चलती रही, उन्हें ऐसा लगने लगा कि उसका बाहरी रूप बदलना चाहिये। अब ब्रिटिश लोगों ने जो चीज देनी चाही, वह था कवच से ढका हुआ मुक्का और उसके अन्दर कोमल हाथ। वे सैनिक शक्ति और समुद्री फौजों में सर्वोच्च थे, किन्तु लगता था कि या तो वे इसे निश्चय-बुद्धि से प्रयोग में लाने के अयोग्य हैं और या अनिच्छुक। जनरल गेज और उसके उत्तराधिकारियों को जहां कोमल-हृदय हिते-

पियों के रूप में चित्रित करना गलत है, वहाँ यह भी सही नहीं कि वे लोग (अथवा बिचारा, विषादयुक्त, अन्तःकरणानुयायी जार्ज द्वितीय) अति उद्धत राक्षस थे, जैसा कि अमरीकी देशभक्तों के प्रचार में उन्हें वर्णित किया जाता था। उनकी मूलभूत भूल यह थी कि वे अमेरिका उपनिवेश-वासियों की गुप्त रूप से प्रशंसा करने की बजाय उन्हें घृणा से देखते थे। लार्ड सैण्डविच ने एक बार उन पर व्यंग्य कसते हुए घोषणा की थी कि अमेरिका-निवासी "अपक्व, अननुशासित और कायर' हैं। इस घोषणा का खूब प्रचार किया गया। गेज का बंकर हिल के स्थान पर आमने-सामने होकर आक्रमण करना यह प्रगट करता था कि वह भी सैण्डविच से सहमत है। हो सकता है कि बाद में लड़ाई की समाप्ति पर उसने अपना पहला मत बदल लिया हो। यद्यपि सर विलियम हो (जिसे लौंग द्वीप की समाप्ति पर 'सर' की उपाधि मिली थी) पर इतना गहरा रंग नहीं चढ़ा था, किन्तु १७७६ में विविध संकार्यों के संचालन के समय उसके मन में अमरीकियों के प्रति किसी हद तक घृणा की भावना जरूर थी।

परन्तु सिद्धान्तों को सामने रखते हुए उसकी हिचकिचाहटों का अर्थ किसी हद तक समझ में आ सकता है। सम्भव है कि हम इन तथ्यों की उपेक्षा न करें कि गेज की पत्नी अमेरिका की रहने वाली थी, क्लिंटन का पिता न्यूयार्क का गवर्नर रह चुका था और हो का बड़ा भाई (जो फ्रांसीसियों के साथ लड़ता हुआ १७५८ में टिकिनडरोगा में मारा गया था) उपनिवेशों में वीर पुरुष माना जाता रहा था।

किन्तु हम अंग्रेजों के प्रयासों में घातक अनिश्चितता पाने के कारण उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। यह अनिश्चितता, संक्षेप में, इन दो भाइयों की स्थिति में स्पष्ट पाई जाती है। ये दोनों भाई जहाँ राजविद्रोहियों के साथ युद्ध करने के लिए सब प्रकार के विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों के साथ न्यूयार्क में आए थे, वहाँ उन्हें आते हुए सन्धि-आयुक्तों का दायित्व भी सौंपा गया था। जार्ज तृतीय ने

उनको सरकारी तौर पर यह अधिकार दिया था कि वे झगड़े के निपटारे के बारे में भी चर्चा करें। चुनांचे जब जनरल हो ने लौंग द्वीप पर कब्जा कर लिया, तो उसने आगे के संकार्यों में इसलिए विलम्ब कर दिया, ताकि शत्रु के साथ सन्धि की बातचीत की जाय। वह और एडमिरल हो दुबारा १७७८ में सन्धि-आयुक्त के रूप में नियुक्त किए जाने थे, जबकि युद्ध के संचालन का भार भी उन्हीं पर था। किन्तु उनकी जीतें बहुत हल्की थीं और सन्धि की शर्तें अत्यधिक सख्त।

इस खराबी का किसी अंश तक यह भी कारण था कि सैनिक दृष्टि-कोण से उनमें से कोई प्रतिभावान नहीं था। उस समय ब्रिटेन के पास ब्लैक जैसा जल-सेनापति तो था, किन्तु नैलसन अभी पैदा होना था। मार्लबोरो तो था, किन्तु अभी इंगलैण्ड ने विलिंगटन को जन्म देना था। लार्ड हो, ग्रेव्ज, रौडने भी नैलसन नहीं हो सकते थे। न ही गैज, न 'बिल्ली' हो, न क्लिंटन और न ही 'जंटलमैन जौली' बरगोयने कभी विलिंगटन हो सकते थे। इसका यह अर्थ नहीं कि वे सर्वथा अयोग्य थे। हम लार्ड जार्ज जर्मेन को भी, जो उपनिवेशों का राज्य-मन्त्री था और लन्दन से युद्ध का संचालन कर रहा था, धूर्त और मूर्ख नहीं कह सकते हैं—जैसा कि कुछ एक टीका-टिप्पणी करने वालों ने उसके बारे में बलपूर्वक कहा है। ब्रिटेन के समस्त रण-क्षेत्र में लड़ने वाले सेना-पति सीमित रूप से उत्तम योद्धा थे। वे साहसी ढंग से काम करने वाले और योरुपीय युद्ध-कला में कुशल थे। कार्नवालिस ने, जो इनमें सर्वश्रेष्ठ था, बाद में संसार के दूसरे भागों में जाकर महान् सफलता प्राप्त की। इन योद्धाओं का दुर्भाग्य यह था कि वे महान योद्धा नहीं थे। उनमें ग्राह्यता का अभाव नहीं था; वस्तुतः वे सबके सब अपनी समस्याओं को स्पष्ट रूप से समझते थे। किसी प्राचीन परियों की कहानी के सदृश ही उन्हें लड़ाई को एक ही बार में समाप्त करने के लिए तीन अवसरों की प्रत्याभूति दी गई थी। पहला अवसर सुनहला या और अन्य दोनों उत्तरोत्तर अधिक मटमैले। यह पहला अवसर जून १७७५ में चार्ल्स टाऊन, प्रायद्वीप

में गेज को मिला था। यदि वह ब्रीड्स हिल पर बुद्धिपूर्वक आक्रमण करता और दूसरा मार्ग पकड़ने की जगह अपने इस अवसर का लाभ उठाते हुए शत्रु की सेना का पीछा करता, तो वाशिंगटन के वहां पहुँचने से पूर्व ही वह अर्टेमस वार्ड की नई-नई भर्ती की गई सेना को नष्टभ्रष्ट कर देता। हो को लौंग द्वीप का और उसके बाद भी दूसरा अवसर प्राप्त हुआ। यदि वह ब्रुकलिन हाइट्स पर वाशिंगटन की प्रतिरक्षा-सेना के बीच में झपाटे से और एक कदम आगे घुस जाता अथवा बाद के अनुसरणों में अधिक तेजी से बढ़ता, तो सम्भव था, कि वह संयुक्त-राज्य की सेना का इस कदर विध्वंस करता कि फिर उसका दुबारा गठन ही असम्भव हो जाता। उसे एक और अन्तिम अवसर १७७७ में फिर मिला।

हर अवसर पर कठिनाइयाँ बढ़ती ही गईं। जाहिरा तौर पर ऐसा लगता था कि अंग्रेज सब प्रकार से लाभ की स्थिति में हैं। किन्तु नजदीक से देखने पर उनके लाभ घटते हुए मालूम होते थे। (पहली बात यह कि) युद्ध बहुत महंगा पड़ रहा था और अपने देश इंगलैण्ड में लोकप्रिय नहीं था। नौ-सेना में अपर्याप्त सैनिक थे और इसे दुनिया भर के दायित्व दे दिए गए थे, जिनका बोझ उठाना नौ-सेना के लिये सम्भव नहीं था। इसी प्रकार भू-सेना में भी सैनिकों की कमी थी और वह सारे भू-तल पर बिखरी हुई थी। यही कारण था कि इंगलैण्ड को योरुप के राजाओं से भाड़े पर सेनाएं लेने की आवश्यकता पड़ा करती थी। फिर सेना-संचालन तीन हजार मील की दूरी पर इंगलैण्ड से संचालन करने पड़ते थे। इसके फलस्वरूप यातायात में अत्यधिक देर लगती थी। साथ ही इसमें अस्थिरता और अनिश्चितता भी थी। इनके अलावा जल और थल के सैनिकों को एक दूसरे को सहयोग देने की शिक्षा नहीं मिली थी। जहां तक हो और उसके साथियों का सम्बन्ध है, उन्हें एक ऐसे विशाल भू-भाग पर गोरिल्ला-युद्ध जैसी लड़ाई लड़नी पड़ी, जहां पसीना हो टपकता रहता था और जिसकी जल-वायु अमेरिका के आदिवासियों को भी दिक करती थी। इस भू-भाग में

सड़कें बहुत कम थीं और बस्तियों के चारों ओर घने जंगल ही जंगल थे। यदि हम स्मरण करें, तो हमें याद आ जायगा कि सन् १७५४ में वाशिंगटन ने एलघनी-वन के बीस मील के टुकड़े को पार करने में पन्द्रह दिन लगाये थे। उनकी नजरों में यह निर्दयी देश था, जैसा कि आज भी योरुप के यात्रियों को प्रतीत होती है।

वाशिंगटन के लिए अपनी 'कठिनाइयों का चुनाव' था। किन्तु १७७६ की शरद् आने पर उनके दायित्व, यद्यपि वे अब भी काफी समय और शक्ति खपाने वाले थे, कुछ एक सरल, आवश्यक कर्तव्यों में घट कर रह गये। अब उन्हें कष्टों को सहन कर, शत्रु से परे-परे रहना और सैनिकों में नया जीवन फूंकना इत्यादि कार्य करने थे। वाशिंगटन की तुलना में हो के लिए अतिशय विकल्प थे। जल-सेना की सहायता से वह अमेरिका के तट के किसी भी भाग पर अपनी फौजें उतार सकता था। यद्यपि ऐसा नहीं लगता था कि उस समय सामरिक महत्व की योजनाओं में रहस्यों को गुप्त रखा जाता हो, तो भी यह कोई परमावश्यक चीज नहीं थी, क्योंकि अमेरिका के सब मुख्य-मुख्य नगर उसकी दया पर निर्भर थे। इस समय न्यूपोर्ट हो के कब्जे में था और वह वहीं से न्यू इंगलैण्ड की सुरक्षा को खतरे में डाल सकता था। न्यूयार्क को हथिया लेने से जहां वह इस में रहने वाले बादशाह के प्रति वफादार लोगों की रक्षा कर सकता था, वहाँ इसके कारण वह कनेडा और ग्रेटलेक्स के मार्गों पर भी नियन्त्रण रख सकता था। यदि वह फिलेडेल्फिया को, जो अमेरिका का सबसे बड़ा नगर और कांग्रेस का अधिवेशन-स्थान था, अपने अधीन कर सकता, तो उसके लिए बीच के उपनिवेशों पर अपना प्रभुत्व जमाना मुश्किल नहीं था। यदि वह चार्लस्टन को कब्जे में कर लेता, तो उसके लिए दक्षिण का द्वार खुल सकता था।

फिर क्या होता? प्रथम तो यह सम्भव नहीं था कि वह एक ही समय में अमेरिका की बन्दरगाहों पर कब्जा जमा ले। पर यदि वह यह कर भी सकता, तो इससे क्या राजविद्रोह दब जाता?

फिर भी असहनीय विस्तार वाले घने जंगल, लम्बे सेना-प्रयाण, निष्फल जाने वाले अनुसरण तथा घास में बैठे और छिपकर हमला करने वाले शत्रुओं का खतरा इत्यादि चीजें भी शेष रह जातीं। ये शत्रु भी ऐसे थे कि जो परम्परा से चले आए समर-नियमों का न तो पालन ही करते थे और न ही उन्हें मालूम था कि कोई ऐसे नियम भी हुआ करते हैं।

इन सब कठिनाइयों के अतिरिक्त असंख्य ऐसी बस्तियां भी थीं, जिनमें से बहुतों को नक्शों में चित्रित भी नहीं किया गया था। वाशिंगटन स्वयं देहात के रहने वाले थे। वह पैदा तो एक बड़े राज्य में हुए, किन्तु वहां एक भी नगर नहीं था। शायद यही कारण था कि उनके लिए अपने असली कार्य-भाग की कल्पना करना सरल था। हो सार्वोपनिवेशिक सेना को सताने या विनष्ट करने की अपेक्षा सेना-प्रयाण और नगरों की रक्षा को ज्यादा पसन्द करता था। उसके ऐसा करने के अपने कारण थे, जिनमें सुख-पूर्वक रहन-सहन अर्थात् आराम पहुंचाने वाले मकान और आकर्षक पत्नियों का संग भी एक कारण था। इसके लिए कोई महत्वपूर्ण वजह नहीं थी। वह न तो भारी हानियां सहने के काबिल था और न ही क्षुद्र बातों के लिए सेना को जोखम में डालना चाहता था। अमेरिका वालों को यह लाभ था कि चाहे उनकी सेनाएं बिखरी हुई भी हों, तो भी वे दुबारा इकट्ठी हो सकती थीं और भर्ती के लिए यत्र-तत्र आदमी मिल सकते थे। किन्तु दूसरी ओर हो की सेना मूल्यवान वस्तुओं की तरह थी, जिन्हें व्यवस्थित और सुरक्षित रखना पड़ता था। ये युक्तियां थीं, जिन्हें हो पेश किया करता था, किन्तु उसकी युक्तियां गलत थीं। उसका आधरिक सर हैनरी क्लिटन (जिसने उसकी तरह 'सर' की उपाधि प्राप्त की थी), चाहे सिद्धान्त में ही, उससे अधिक बुद्धिमान् साबित हुआ, क्योंकि उसने हो को यह सलाह दी थी कि वाशिंगटन पर धावा बोल दिया जाए। किन्तु व्यवहार में क्लिटन आक्रमणकारी योद्धा नहीं था। इसके अतिरिक्त वह और हो सहज स्वभाव से परस्पर

विरोधी थे। परिणामतः उनमें से प्रत्येक दूसरे की योजनाओं को असफल बनाना चाहता था। क्लिंटन ने जुलाई १७७७ में यह स्वीकार किया कि 'किसी मनहूस भाग्य-चक्र के कारण मालूम नहीं क्यों, हम आपस में कभी मिलकर काम नहीं कर सकते'।

उनकी पारस्परिक जलन-कुढ़न ऐसा आभास देती थी कि मानों वे गृह-युद्ध में कुछ-कुछ व्यस्त हैं—ऐसा गृह-युद्ध जिसके परिणाम स्वरूप दुःखपूर्ण और अरोचक फूट पड़ा करती है। वे यह निश्चय नहीं कर सके कि उन्हें (नीति के रूप में) नृशंस होना चाहिये और फलतः लोगों के दिलों में अपने लिए घृणा पैदा करनी चाहिये अथवा उन्हें उदारता से सलूक करना चाहिये और लोगों को उनके परिश्रमों पर फब्ती उड़ाने का मौका देना चाहिये। इस खास विषय में उन लोगों ने धीरे-धीरे यह महसूस करना शुरू किया कि वे कभी भी पूर्ण रूप से सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। सम्भवतः वाशिंगटन को ठिकाने लगाने के सिवाए उनका कोई दूसरा लक्ष्य दृष्टिगोचर नहीं होता था। अतः इसमें आश्चर्य नहीं कि अक्सर यह अफवाह फैलाई जाती थी कि वाशिंगटन को बन्दी बना लिया गया है। यह अफवाह केवल मनोकामना की पूर्ति के लिए ही थी। सन् १७७६ में वाशिंगटन की हत्या करने का षड़यन्त्र भी रचा गया था। ब्रिटिश दृष्टिकोण से यह अत्युत्तम सूझ थी। (चार्ल्स ली को जो सन् १७७६ में अमेरिका में दूसरा अति सम्मानित सेनापति था, वस्तुतः उसी वर्ष दिसम्बर के मास में बन्दी बना लिया गया था, किन्तु इसका कोई स्पष्ट परिणाम नहीं निकला। दोनों पक्षों में से सिवाए वाशिंगटन के कोई ऐसा सेनापति नहीं था जिसे बहुत से लोग अनिवार्य समझते हों। जब बाद में क्लिंटन के अपहरण के सम्बन्ध में छापा मारने का प्रस्ताव हुआ तो (अमरीकी क्षेत्रों में) इस आधार पर इसकी नुक्ताचीनी हुई कि ऐसा करने पर कहीं उससे बढ़िया जनरल इंगलैण्ड से न भेज दिया जाय)।

यदि वाशिंगटन को कभी खराब स्वप्न आया हो—इस बारे में यद्यपि उन्होंने कोई अभिलेख अपना नहीं छोड़ा—तो हम कल्पना

कर सकते हैं कि उन्हें यह स्वप्न आया होगा कि वह समुद्र में एक छोटे से पोत में हैं, जिसका बादवान कागज का बना हुआ है। (हमारा अभिप्राय: उनकी सेना से है जो भिन्न-भिन्न उपनिवेशों के सैनिकों का भयपूर्ण मेल सी थी और जिसे किसी शासन-पद्धति के अधीन भर्ती नहीं किया गया था, क्योंकि संयुक्त-राज्य अमेरिका का निर्माण बाद में सन् १७८१ में हुआ था जब कि प्रसंधान की धाराएं अन्तिम रूप मे सम्पुष्ट हुईं)। तब वर्षा आई और बादबान गल कर नष्ट हो गया। यदि कभी हो को खराब स्वप्न आया हो—जिसकी कल्पना की जा सकती है कि आया होगा—वह भी सम्भवतः पूर्ववत् होगा, सिवाए इसके कि इसमें जहाज बड़े आकार का है और उसका बादबान दृढ़ कैनवास का बना हुआ है। तब एक तूफान आया; बादवान खुल गया और उड़ चला। हो के पास इतने आदमी नहीं थे, जो उसे दुबारा जहाज से बांध देते। संक्षेप में, वाशिंगटन की शोचनीय अवस्था इसलिए थी कि उन्हें बिना ठोस और पर्याप्त साधनों के सारे महाद्वीप की रक्षा करनी पड़ी, हो के भाग्य में यह बदा था कि उस पर उस समय आक्रमण करे जब कि एक बार विद्रोह भड़क उठने से कोई भी प्राप्त साधन पर्याप्त नहीं हो सकते थे। ब्रिटिश सत्ता ने और बाद में दूसरों ने यह संसार को दिखा दिया कि किसी भी बड़े देश में जनता के विद्रोह को कुचलना उस समय कितना कठिन होता है जब उस देश के नागरिकों में आत्माभिमान की भावना जाग उठती है। बाद में नैपोलियन ने स्पेन के प्रायद्वीप में और फिर भारी क्षति उठाकर रूस में उस तथ्य को मालूम किया। बोर की लोक-तन्त्रीय संस्थाएं ब्रिटेन के विरुद्ध तीन वर्षों तक जमकर लड़ती रहीं। जर्मन लोगों ने भी कब्जे में आये हुए योरूप के सम्बन्ध में यही पाठ सीखा।

संकटमय स्थिति और षड्यन्त्र (१७७७ से १७७८ तक)

परन्तु इस बीच में सन् १७७७ का वर्ष हो के लिये अच्छा-खासा आशा-पूर्ण था। बसन्त के आरम्भ में जब कि वाशिंगटन अपने शरद् के पड़ाव से सेना को निकाल कर आगे बढ़ा रहे थे, हो

विविध प्रकार की योजनाएं बना रहा था। उसके मन में सर्वप्रथम यह विचार पैदा हुआ कि वाशिंगटन की साधारण चुनौती के जवाब में उससे युद्ध छेड़ने की बजाए उसे एलबैनी पर उस ब्रिटिश सेना के साथ शामिल हो जाना चाहिए जो कैनेडा से दक्षिण की ओर सैनिक अभियान के लिये बुलाई जा रही है। हो ने इस योजना को, जिसमें रोड द्वीप की ओर से बोस्टन पर आक्रमण की तजवीज भी शामिल थी, ब्रिटेन के उपनिवेश मन्त्री 'जर्मेन' के पास भेज दिया। किन्तु बाद में उसने अपना इरादा बदल लिया। उसने नई तजवीज यह पेश की कि फिलेडैल्फिया पर चढ़ाई की जाय और इसके साथ ही साथ अल्पसंख्यक फौज लेकर छोटे पैमाने पर न्यूयार्क के उत्तर की ओर आक्रमण किया जाए। जर्मेन ने मितव्ययता के आधार पर दूसरी योजना को अधिमान्यता दी, क्योंकि कोई कुमक भी दुष्प्राप्य थी और हो ने कहा था कि उसे अपनी पूर्व योजना कार्यान्वित करने के लिये पन्द्रह हजार और सैनिकों की आवश्यकता होगी। जर्मेन के ऊपर बर्गोयने की बात-चीत का भी असर हुआ। वह शरद काल के लिये छुट्टी लेकर इंगलैण्ड को लौटा था। स्वतन्त्र कमान को लक्ष्य में रखते हुए उसने जर्मेन को यकीन दिलाया कि उसका प्रस्ताव अति कौशल्यपूर्ण है। वह प्रस्ताव यह था कि तीन सेनाएं उत्तर में मौंटरीयल से आकर एल्बैनी के केन्द्रीय विन्दु पर मिलें और बर्गोयने स्वयं उसका नेतृत्व करे। जर्मेन ने इस योजना पर भी अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी।

यहाँ आकर ब्रिटिश-कमान-पद्धति की न्यूनताएं निश्चित रूप से सामने आईं। किसी प्रेमानुशीली नाटककार के समान ही बर्गोयने की योजना में एक प्रकार की नाटकीय समिति तो थी, किन्तु इसके लेखक को साहित्यिक रचना के सदृश्य, कल्पना-भव्य होते हुए भी विस्तार में कमजोर थी। इस योजना में उन समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया, जो तीन अलग-अलग आक्रमणों के समन्वय से अथवा अलबैनी और मौंटरीयल के मध्य में जंगली और असम भूखण्ड में सेना की गति-विधि और रसद से सम्बन्ध रखती थीं।

इसमें यह मान लिया गया कि एलबैनी पर पहुंचना मात्र ही बहुत बड़ी विजय को प्राप्त करना है, अर्थात् उसके अनुसार न्यू इंगलैण्ड अलग हो जायगा और उपनिवेश इस प्रकार खण्ड-खण्ड हो जायेंगे— जैसे कोई रसदार टर्की का पक्षी कटता है। किन्तु क्या ऐसा अनिवार्य रूप से होना सम्भव था ? क्या ब्रिटिश सेनाएं अपने यातायात के मार्ग खुले रख सकती थीं ? क्या उन सेनाओं से यह आशा की जा सकती थी कि वे अमरीकी दलों को आगे बढ़ने से यथासम्भव रोक सकेंगी ?

हो की संशोधित योजना, यदि इसका उद्देश्य वाशिंगटन की सेना का मुकाबला करना था, तो उपर्युक्त योजना से कहीं अधिक उत्तम थी। यदि कहीं भी और कोई भी राजविद्रोह का केन्द्र था, तो वह वाशिंगटन की सेना थी। बसन्त में तथा गर्मी के आरम्भ में कार्नवालिस ने बेगार टालने की तरह, वाशिंगटन से गुत्थम-गुत्था होने की चेष्टा की। किन्तु वाशिंगटन को इतनी अधिक कठिनाइयां सहनी पड़ी थीं कि उन्होंने चुनौती को मन्जूर नहीं किया और लड़ाई से पीछा छुड़ाया।

इस बीच में हो ने फिर अपना इरादा बदल लिया। उसका नया विचार यह था कि वह समुद्र मार्ग से फिलेडैल्फिया पर कब्जा जमा ले। इस बड़े संकार्य के लिए उसने अपनी पन्द्रह हजार उत्तम सेना अलग रख ली। इसका यह अर्थ था कि न्यूयार्क नगर से उत्तर की ओर बढ़ने के लिए नियमित सैनिक नहीं दिये जा सकते थे। केवल कुछ वफादार दस्ते थे. जिन्हें सक्रिय रखने के लिए अस्पष्ट आदेश दिये गये। इस प्रकार तीन सेनाओं में से केवल दो ही सेनाएं एलबैनी पर इकट्ठी हुईं। बर्गोयने ने अमेरिका की उत्तरीय सेना को उसी जगह सीमित रखने की बजाए, स्वयं उनके जाल में फंसने का खतरा मोल लिया। परन्तु हो फिलेडैल्फिया पर चढ़ाई करने की धुन में था और वह उस साहसपूर्ण कार्य की जटिलताओं में इतना व्यस्त था कि उसने क्लिंटन के विरोधों को भी अनसुना कर दिया। क्लिंटन को न्यूयार्क छोड़ जाना था। हो ने अपने इरादों में जो

परिवर्तन किए थे उनका ज्ञान उस समय न तो बर्गॉयने को और न ही जर्मेन को हुआ। उन्हें इनका पता इतनी देर बाद चला कि तब उन्हें बदला नहीं जा सकता था। तब भी जर्मेन ने उसकी अत्यधिक चिन्ता नहीं की। उसने इसी बात में सन्तोष माना कि हो को आदेश दे दिया जाय कि ज्यों ही वह फिलेडेल्फिया ले ले, त्यों ही सेना और सामान से बर्गॉयने की सहायता करे।

इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि ब्रिटिश लोगों की इन गतिविधियों से वाशिंगटन घबरा गये। इन गतिविधियों का अभिप्राय क्या है, यह उनकी समझ में नहीं आया। किन्तु शनैः-शनैः उन्हें यह स्पष्ट दिखने लगा कि शत्रु के दो मुख्य लक्ष्य हैं:—कैनेडा की ओर से हमला करना और मध्य के अथवा दक्षिण के उपनिवेशों पर समुद्र के मार्ग से धावा बोलना। वाशिंगटन आक्रमणकारी सेनाओं की संख्याओं का भी लगभग ठीक-ठीक अनुमान लगाने में सफल हुए। उनकी राय में बर्गॉयने से, जिसके पास आठ हजार सैनिक थे, अमेरिका की उत्तरीय सेना लोहा ले सकती थी। विलटन की सेना सात हजार थी (जिसमें आधे ही नियमित सैनिक थे)। उनकी सम्मति में वह इस थोड़ी सी सेना के साथ कर ही क्या सकता था, सिवाए इसके कि अपने न्यूयार्क के पड़ाव से कोई छोटी-मोटी भिड़न्त आरम्भ कर दे। वह किसी अनभ्यस्त और अनूठी क्रियाशीलता का परिचय दे, तो वह दूसरी बात है। हो के आक्रमण को रोकने के लिए वह स्वतन्त्र थे। यह ठीक है कि हो की तुलना में उनकी सेना अल्प-संख्यक थी। किन्तु इसमें उन्हें निराश होने की कोई बात नहीं दीखती थी, क्योंकि गर्मी की ऋतु के मध्य में उनके पास नौ हजार तो स्थानीय अमरीकी सेना थी और उसके अतिरिक्त अनन्त नागरिक सेना।

वाशिंगटन ने सन् १७७७ के फरवरी मास में बेनिडिक्ट आर्नल्ड को लिखा, "यदि शत्रु ने हमें इतना समय दिया कि हम युद्ध के लिए सेना इकट्ठी कर सकें, तो मुझे आशा है कि हम अपनी पिछली सब भूलों को सही कर सकेंगे।" किन्तु जिस कदर सेना

वह चाहते थे, उसका एक अंश भी उन्हें न मिल सका। यद्यपि कांग्रेस ने उन आदमियों को, जो संयुक्त-राज्य-सेना में तीन साल की अवधि के लिए अथवा लड़ाई के अन्त तक नौकरी करना चाहें, धन और भूमि भेंट के रूप में देने के प्रस्ताव किये थे, किन्तु भेंट-सम्बन्धी ये शर्तें इतनी आकर्षक नहीं थीं, जितनी कि उस मिलिशिया के लिए थीं, जिसे भिन्न-भिन्न राज्य व्यक्तिगत रूप से अपने क्षेत्रों में अपेक्षतया थोड़ी अवधि के लिए भर्ती किया करते थे। परिणामतः संयुक्त-राज्य-सेना संख्या में निराशाजनक रूप से कम रही, परन्तु इससे वाशिंगटन को पुराने युद्ध-कुशल सैनिकों की ठोस स्थिति प्राप्त थी। इन सेनाओं में तथा मिलिशिया के सैनिकों में चमक-दमक मालूम नहीं पड़ती थी, अतः देखने वालों को बाहरी रंग-रूप से धोखा होता था। फ्रांस तथा स्पेन देशों से गुप्त सहायता मिलने, ब्रिटिश-माल को लूट-मार से प्राप्त सामान तथा संयुक्त-राज्य में बने हुए देसी हथियारों के उपलब्ध होने के कारण अमरीकी सैनिक वर्दियों और शस्त्रास्त्रों से गुजारे लायक सजे-सजाये अच्छे खासे लगने लगे थे।

शत्रु ने भी वाशिंगटन को तैयारी का पर्याप्त समय दिया। हो का समुद्री बेड़ा जुलाई के अन्तिम भाग से पहले न्यूयार्क से नहीं चला। इसके बाद भी स्थल पर उतरते-उतरते उसे एक महीना लग गया। हो चेसापीक अन्तरीप में हैड-आफ-एल्क के तट पर उतरा। यह स्थान फिलेडैल्फिया से उस जगह से भी दूर था, जहां कि उसे उतरना चाहिए था। फिर भी, एक बार उलट कर उसने आत्मविश्वास के साथ हमला किया और क्रमशः जमकर लड़ता-लड़ता नगर की ओर बढ़ा। हो की प्राथमिक गतिविधियों से वाशिंगटन चकरा से गए। वह यह समझ नहीं सके कि उक्त जनरल जो कुछ काल पहले न्यू ब्रानस्विक में फिलेडैल्फिया से कुल साठ मील के अन्तर पर था, अब क्यों उसने इस नगर से सत्तर मील पर पड़ाव डालने के लिए चार सौ मील का समुद्री सफर तय किया है? उन्हें विश्वास हो गया कि हो का उद्देश्य चार्लस्टन पर

कब्जा करना है। पर बाद में उन्हें मालूम हुआ कि फिलेडैल्फिया ही उसका लक्ष्य था। हो की यात्रा ने इतना लम्बा समय ले लिया कि वाशिंगटन इस योग्य हो गए कि वह उसकी भावी गति-विधियों के बारे में जान सकें तथा फिलेडैल्फिया और उसकी सेना के बीच अमरीकी सेना लाकर खड़ी कर दें।

अब तक भाग्य वाशिंगटन के साथ था। अगले कुछ सप्ताहों में पांसा उन के उलट हो गया और जैसा कि गत अभियानों में हुआ था, इसमें कुछ अंश तक दोष उनका अपना था। उन्होंने महसूस किया कि जब तक वह स्थिरता से डटे नहीं रहेंगे और जम कर नहीं लड़ेंगे, फिलेडैल्फिया जरूर उनके हाथों से निकल जायगा। यद्यपि इससे बिल्कुल हार तो नहीं होगी, परन्तु जैसा कि उन्होंने लिखा, 'इसका यह असर होगा कि अमेरिका के (स्वतन्त्रता-प्राप्ति के) प्रयत्न ठण्डे पड़ जाएंगे।' अतः उनका यह कर्तव्य था कि वह हो का मुकाबला करें और इन अर्थों में, हम कह सकते हैं, कि उन की योजना बेकार नहीं गई। वाशिंगटन की सेना कम थी—पन्द्रह हजार की तुलना में ग्यारह हजार, किन्तु यह उनके ऊपर निर्भर था कि लड़ने के लिए कौन सा स्थान चुनें। उन्होंने युद्ध के लिए विलमिंगटन से कुछ मील दूरी पर एक स्थान चुना। वहां ब्रांडीवाइन नदी उसके मोर्चे के आगे से बहती थी। यह १० सितम्बर की घटना है। वाशिंगटन ने अपना दाहिना पार्श्व सुलीवान को (जिसकी लौंग द्वीप की मुठ-भेड़ में पकड़े जाने के बाद अदली-बदली हुई थी), बीच का भाग नेथानील ग्रीन को और बायां पार्श्व पेनसिलवेनिया की मिलिशिया को सौंपा। ब्रांडीवाइन नदी को भिन्न-भिन्न स्थानों में पैदल पार किया जा सकता था, किन्तु अन्य कारणों से यह, विशेषतया अमेरिकी सेना की बाईं ओर, एक उपयोगी प्राकृतिक रुकावट थी।

हो की चढ़ाई की योजना ब्रुकलिन की योजना के समान ही थी, अर्थात् दिखाया तो यह गया कि हमला बीच वाले भाग पर होगा, किन्तु वास्तव में मुख्य हमला पार्श्व की ओर किया गया।

इस बार दायां पार्श्व चुना गया। यह उसकी स्थायी कार्य-विधि थी। वाशिंगटन इस चाल को पहले भांप नहीं सके। न ही वह जासूसों की व्यवस्था कर सके, जो उन्हें समाचार गुप्त रूप से पहुंचाते रहें। परिणाम यह हुआ कि जब लड़ाई ११ सितम्बर को छिड़ गई, तो उसमें बीच वाले भाग में तो छुट-पुट संघर्ष चले, जिन का कोई नतीजा न निकला। कि तु दाएं भाग को कार्नवालिस की दस हजार सेना ने लम्बे वक्राकार में घेर लिया और सुलीवान पर अचानक धावा बोल दिया। सुलीवान इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। इसका परिणाम यह हुआ कि अमेरिकन सेना के दायें पार्श्व के पैर उखड़ गए। वाशिंगटन ने स्थिति सम्भालने के लिए पूरा जोर लगाया। उन्होंने ग्रीन के अधीन अपनी बची-खुची सेना का बहुत सा हिस्सा उस पार्श्व की ओर भेजा, ताकि वे लोग सुलीवान की पीछे हटती हुई फौज के पिछले भाग में दूसरी पंक्ति कायम कर सकें। बड़ी दृढ़तापूर्वक और अड़कर लड़ती हुई ग्रीन की सेना सायंकाल तक शत्रु को रोके रही।

इस बीच में हो के दबाव के कारण, मध्य भाग विनष्ट हो गया, क्योंकि यहां से बहुत सी फौज पार्श्व की सहायतार्थ चली गई थी और अब यह पार्श्व सेना-विरहित हो चुका था। युद्ध की शकल सूरत ही विगड़ गई। सन्ध्या के समय, जैसे ही बन्दूकों-तोपों की धाएं-धाएं बन्द हुई, थके-मांदे अमरीकी सैनिक अस्त-व्यस्त हालत में पीछे को हटे। वे अपने लगभग एक हजार साथी रण-क्षेत्र में हताहत छोड़ गये।

यह करारी हार थी—जरूरत से भी ज्यादा महंगी हार। किन्तु यह किसी तरह भी निर्णायक हार नहीं थी। कोई एक छिद्रान्वेषी अवलोकक सम्भवतः इस पर यह टिप्पणी कर सकता है कि अमरीकी सैनिक इस लिए कैदी नहीं बनाए गए, क्योंकि वे रणक्षेत्र से इतने तेज दौड़े कि पकड़े ही नहीं जा सकते थे। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि वे वहीं तक भागे, जहां तक कि आवश्यक था, क्योंकि दूसरे ही रोज प्रातः के समय वे अपनी-अपनी पूर्व

टुकड़ियों में दुबारा जाकर शामिल हो गये। और जो सैनिक ग्रीन के साथ दृढ़ता-पूर्वक डटे रहे, उन्होंने अपने कर्त्तव्य का अत्युत्तम ढंग से पालन किया, क्योंकि उनके हाथों ब्रिटिश-सेना के पांच सौ से अधिक सैनिक हताहत हुए। दूसरे शब्दों में, यदि अमेरिकन सैनिक अभी तक इस योग्य नहीं हुए थे कि औपचारिक युद्ध में ब्रिटिश सेना के छक्के छुड़ा सकें, उन्होंने यह दिखा दिया कि वे नियमित सैनिकों की स्थिरता के साथ गोरिल्लाओं के फुर्तीलेपन को (चाहे यह पीछे हटने के लिये ही क्यों न हो) मिला सकते हैं। यह मेल चाहे आदर्श रूप से न भी हुआ हो, किन्तु उनके इस मेल में नाश को रोकने के लिए पर्याप्त साधन-सम्पन्नता पाई जाती थी।

बाद में जो कुछ हुआ, वह पुराने नमूने के अनुसार था। इसमें अधिक बात यह थी कि वाशिंगटन ने सदा की भांति इस नाजुक मौके पर, जबकि वह महसूस करते थे कि अमेरिका का भविष्य और उसकी अपनी ख्याति खतरे में है, युद्धकरण के अपने विशेष गुण को प्रगट किया। हो धीरे-धीरे फिलेडेल्फिया की ओर बढ़ा। कांग्रेस अपना स्थान छोड़ कर शीघ्रता से लेंकेस्टर गई। फिर उसने वहां से पैनसिलवेनिया के नगर यार्क में अपना अड्डा बनाया। वाशिंगटन ने एक और युद्ध लड़ने का प्रयत्न किया, किन्तु मूसलाधार वर्षा के कारण उन्हें अपना इरादा छोड़ना पड़ा। हो नगर में घुसा। वाशिंगटन ने उसे फिलेडेल्फिया से दस मील के अन्तर पर ललकारा। इस बार फिर दोनों फौजों में जोर की टक्कर हुई। गड़बड़ी मची, जिस में वाशिंगटन को अपने दुःसाहस का कुपरिणाम यह भुगतना पड़ा कि उनके एक हजार सैनिक काम आये। शत्रु की क्षति इससे आधी हुई। इसकी प्रतिक्रिया वाशिंगटन पर यह हुई कि फिर लड़ा जाय, किन्तु हो ने उससे लोहा लेना कबूल नहीं किया। दिसम्बर के आते ही कड़ाके की सरदी शुरू हुई। इस सरदी में जहां ब्रिटिश सैनिकों को कुछ-कुछ बेचैनी हुई, वहां देशभक्त सैनिकों में सक्रिय असन्तोष की लहर फैली। हो और उसके सैनिक फिलेडेल्फिया में उष्णता का आनन्द उठा रहे थे, किन्तु वाशिंगटन

के आदमी वहां से बीस मील की दूरी पर स्कूइलकिल नदी के किनारे अपने फौजें घाटी के डेरों की चौकसी कर रहे थे।

यह सब कुछ होते हुए भी १७७७-१७७८ के शरद् में देशभक्त सेना का आस्ति-दायित्व-लेखा देखने में बुरा नहीं था। विकलन-पार्श्व में मुख्यतया हो का फिलेडैल्फिया को कब्जे में करना शामिल था। इसके साथ ही निश्चित रूप से ब्रांडीवाईन और जर्मन टाऊन की हारें थीं। आकलन-पार्श्व में, वाशिंगटन की सेना अभी तक सेना के रूप में मौजूद थी, यद्यपि पहले से दुर्बल हो चुकी थी और शरद् ऋतु, कृपणतापूर्वक दी गई रसद और अवशिष्ट वेतन की कठिनाइयों के कारण असन्तुष्ट थी। वाशिंगटन की सेना जहां हर सरदी में 'नहीं' के बराबर रह जाती थी, वहां इसके बदले में ब्रिटिश सेना आराम से एक जगह पड़ी रहती थी। यार्क की सर्दी के कष्टों के कारण कांग्रेस में, उनकी सेना के समान, उपस्थित सदस्यों की संख्या बहुत कम रह जाती थी—यहां तक कि कभी-कभी तो बीस से भी कम लोग बैठकों में हाजिर होते थे। फिर भी यह कम से कम अब तक सांस ले रही थी—मानो पेड़ में फिर से रस प्रवाहित होने लगा था और इसलिये वह मरा नहीं। जहां तक हो का सम्बन्ध है, उसका अभियान इसलिए असफल रहा, क्योंकि उसे विजय नहीं मिली थी। उसे आशा थी कि राजभक्त उसके झण्डे के नीचे इकट्ठे हो जायेंगे। किन्तु जहां पैनसिलवेनिया के लोग उसे खाद्य-वस्तुएं बेचने को उद्यत थे, क्योंकि इस प्रकार उन्हें संयुक्त-राज्य की कागज की मुद्रा की बजाय सोना मिलता था, वहां वे सेना में भर्ती होने को तैयार नहीं थे। परिणामतः इने-गिने लोग ही उसकी फौज में शामिल हुए। निराश होकर हो ने अपना त्यागपत्र दे दिया।

दक्षिणी सेनाओं की अपेक्षा 'उत्तरीय भाग' ने बर्गोयने पर अधिक विधेयात्मक ढंग से विजय प्राप्त की, जिसकी गूंज चारों ओर हुई। बर्गोयने के आक्रमण का आरम्भ अमेरिका वालों के लिए अशुभ लक्षणों वाला था, क्योंकि उनका टिकनडेरोगा का किला जुलाई के शुरू में ही शत्रु के कब्जे में आ गया था। किन्तु उसके बाद बर्गोयने

की आगे बढ़ने की रफ्तार मध्यम हो गई और उसे अधिक यातनाएं सहनी पड़ीं । इसके पश्चात् उसने जो गौण हमला किया, उसके आरम्भ में तो उसे कामयाबी हुई, किन्तु अन्त में जा कर वह बिल्कुल असफल रहा । अगस्त के मध्य में एक और महत्वपूर्ण घटना हुई । वर्गोयने की सेना का एक भाग जबकि वह रसद की तलाश में था, दक्षिण वरमौंट के वैनिंगटन स्थान पर देशभक्त मिलिशिया द्वारा विनष्ट कर दिया गया । अतः दक्षिण में अलवैनी की ओर बढ़ने के सिवाय अब उसके लिए कोई चारा नहीं रहा था, यद्यपि उसे यह मालूम हो गया था कि कोई अन्य सेना उसकी मदद के लिए न्यूयार्क से नहीं आ रही है । सराटोगा के दक्षिण में कुछ मीलों के अन्तर पर उत्तरीय सेना ने उसे आगे बढ़ने से रोक दिया । (इस सेना के पूर्व सेना-पति स्कूयलर थे और अब वह होरेशो गेट्स के अधीन थी) । सितम्बर में और फिर दुबारा अक्तूबर के आरम्भ में उसने शत्रु से बच कर आगे बढ़ने की चेष्टाएं कीं, किन्तु असफल रहा । भावी आपत्ति से चिंतित होकर आखिरकार क्लिंटन उसकी सहायता को चल पड़ा। वह जितने सैनिक ला सकता था, उन्हें लेकर हडसन नदी के ऊपरी भाग द्वारा आगे बढ़ा । अक्तूबर के मध्य तक वह सारे प्रतिरोध को हटाता हुआ, ऐसोपस (किंगस्टन) पहुँचा । बर्गोयने इस स्थान से केवल अस्सी मील की दूरी पर पड़ाव डाले हुए था । किन्तु क्लिंटन उतना ही सावधान था, जितना कि वर्गोयने उतावला और अधीर । उसे जहाँ आने में अत्यधिक देर लगी, वहाँ वह अपने साथ बहुत कम सैनिक ला सका, क्योंकि हो फिलेडैल्फिया में बहुत ज्यादा उलझा हुआ था । अतः जब क्लिंटन के आगे के दस्ते इसोपस पहुँचे, तो उससे एक दिन बाद वर्गोयने ने अपनी बची-खुची सेना के साथ, जिसकी संख्या सत्तावन सौ थी, आत्म-समर्पण कर दिया । यह ब्रिटिश सेनाओं के लिए सनसनी पैदा करने वाली पराजय थी । परिणामतः क्लिंटन आगे बढ़ने की बजाए न्यूयार्क वापस लौट गया और उसने सारी सरदी चुपचाप वहाँ गुजारी । हो जागरूक था । वह फिलेडैल्फिया में तब तक इंतजार करता रहा, जब तक कि उसका

त्याग-पत्र स्वीकृत नहीं हुआ। तत्पश्चात् मई, १७७८ में, उसने अपना पद क्लिंटन को सम्भाल दिया और स्वयं इंगलैण्ड लौट गया। गेज जा चुका था। अब बर्गोयने और हो भी गए। वाशिंगटन उनके पीछे अब तक जमा हुआ था।

इन घटनाओं से योरूप के लोगों ने शिक्षा ग्रहण न की हो—सो बात नहीं थी। लंदन में लार्ड नार्थ ने एक और सन्धि-आयोग की व्यवस्था शुरू की, यद्यपि ब्रिटेन अभी तक इस बात के लिए तैयार नहीं था कि उपनिवेशों की स्वतन्त्रता को माना जाए। पैरिस में अत्यधिक क्रियाशीलता थी। अमेरिका के अभिकर्ताओं, सीलास डीन और बेंजामिन फ्रेंकलिन, के साथ मिल कर फ्रांसीसी सरकार कुछ समय से उपनिवेशों को सहायता दे रही थी। उनकी सहायता का एक अंश यह था कि विदेश (अमेरिका) में ऐसे अफसर भेजे जाएं, जो वाशिंटगन के साथ मिल कर कार्य करें। इनके अलावा, उनके कई-सेना-अधिकारी अपनी इच्छा से भी आये। उनमें बहुसंख्यक ऐसे लोग थे, जिनके लाभ-प्रद होने में सन्देह होता था। कारण यह कि उनकी वजह से वाशिंगटन की परेशानियों में बढ़ोतरी हुई, क्योंकि इन में से हर एक ऊंचा पद चाहता था। किन्तु उनमें से कुछ विशेष रूप से थेडियस कौसियस्को, उत्सुक तरुण मार्क्विस डी लेफायेट, बैरन डी काल्ब और 'बैरन' वोनस्टडूबेन (जो बनावटी तौर पर कुलीन वर्ग का था, किन्तु था सच्चा सैनिक) अमेरिका की लक्ष्य-प्राप्ति में महान् सहायक सिद्ध हुए। जब फ्रांसीसियों ने साराटोगा का समाचार सुना, तो उन्होंने निश्चय कर लिया कि उन्हें अधिक सहायता देनी चाहिए। उनका यह निश्चय केवल भावना पर आधारित नहीं था, यद्यपि वे उपनिवेशों के साहस और प्रधान सेना-पति वाशिंगटन की दृढ़ता के प्रशंसक थे। इस निश्चय के दो आधार थे। एक था ठोस अनुमान, जो उन्होंने अमेरिका के जीतने के अवसरों के बारे में लगाया था। उनका दूसरा आधार यह था कि उन्हें आशा थी कि इससे ब्रिटिश-शक्ति को निर्बल बनाया जा सकेगा। यह वजह थी कि फ्रांस, जिसमें एक निरंकुश राजतन्त्र था, एक संघर्ष

करती हुई प्रजातंत्रीय-सत्ता को उत्सुकतापूर्वक सहायता दे रहा था। फ्रांस के संमित्र स्पेन ने इस पर दुःख प्रकट किया। एक पत्र में, जो फ्रैंकलिन ने फरवरी, १७७८ में भेजा, उसने सूचित किया कि 'सर्वाधिक' ईसाई धर्मावलम्बी (फ्रांस के) बादशाह ने यह मान लिया है कि वह संयुक्त राज्य को अपनी लक्ष्य-प्राप्ति में पूरी-पूरी सहायता देगा—(और) वह अमेरिका को स्वाधीनता, प्रभुता और पूर्ण एवं असीम स्वतन्त्रता की प्रत्याभूति देता है।' गर्मी के मध्य में फ्रांस सरकारी तौर पर इंगलैण्ड के साथ युद्ध की स्थिति में हो गया। एक साल बाद स्पेन ने भी इसका अनुकरण किया, यद्यपि उसने इतना आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया कि संयुक्त-राज्य को एक पृथक् राज्य माना जाये।

अप्रैल के मास में वाशिंगटन ने इस सन्धि के बारे में सुना। उन्होंने कांग्रेस को लिखा—'मेरा विश्वास है कि कोई भी पहले की घटना इतनी हार्दिक उल्लास के साथ नहीं सुनी गई।' इस समाचार से वाशिंगटन से अधिक किसी के मन का बोझ हल्का नहीं हुआ होगा। यह अजीब बात लगती है कि वे सप्ताह जिनमें यह संमित्रता सम्पन्न हो रही थी, वाशिंगटन के समस्त जीवन में सर्वाधिक खराब थे। फौर्ज की घाटी में शहतीर से बनी झोंपड़ियों में रहने के कारण उन्हें भौतिक रूप से तो कष्ट हो ही रहा था, इस के साथ बहुत सी मानसिक व्यथा भी जुड़ गई, क्योंकि यह वह समय था जिसे 'कानवे कबल' काल कहा जाता है, जिसमें होरेशो गेट्स के पक्ष में वाशिंगटन को प्रधान-सेनापति के पद से उखाड़ने का षड़यन्त्र रचा गया था।

शायद हम कभी भी यह नहीं जान सकेंगे कि इस मामले में कहाँ तक सचाई थी। जैसा कि वाशिंगटन ने भांपा, सेना के कुछ असन्तुष्ट व्यक्तियों ने कुछ कांग्रेस सदस्यों के साथ मिलकर उसे बदनाम करने का कार्य-क्रम बनाया। ऐसा मालूम होता है कि इस दल के सैनिक अभिनेता गेट्स, मिफलिन और थामस कौनवे (जो आयरलैण्ड का स्वयं-सेवक था और इससे पूर्व फ्रांस की सेवा-वृत्ति

में कर्नल था) थे। परिचित कहानी के अनुसार उनके षड़यन्त्र का भांडा वाशिंगटन के वफादार समर्थकों ने (जिनमें लिफायेट भी था, जो उनका उत्साही प्रशंसक और मित्र बन गया था) फोड़ डाला। बाद में वाशिंगटन ने गेट्स के सामने षड़यन्त्र के साक्ष्य रखे और षडयन्त्रकारियों को इतना लज्जित किया कि उन्होंने अपनी काली परियोजना को त्याग दिया। किन्तु बर्नहार्ड नौलिनबर्ग और अन्य आधुनिक विद्वानों ने इस परम्परा-गत वर्णन के बारे में सन्देह प्रगट किए हैं। उनका कहना है कि उस समय यह स्वाभाविक था कि गेट्स की प्रशंसा होती, क्योंकि उसने बर्गोयने को रण-क्षेत्र में हराया था और यह भी स्वाभाविक था कि वाशिंगटन के बारे में तुलनात्मक-रूप से कम उत्साह हो, क्योंकि वह हो से पिट चुके थे। शायद गेट्स इस कदर प्रशंसा के योग्य नहीं था और न ही वाशिंगटन को इतना दोषी ठहराया जाना उचित था। किन्तु लोक-सन्मान की यही रीति है, विशेष-रूप से जब युद्ध का समय हो। भाग्यशाली सेना-पति प्रायः पदोन्नति पाते है और अभागों का बिस्तरा गोल कर दिया जाता है।

वाशिंगटन को बुरा-भला कहना शायद कृतघ्नता समझा जाता हो, पर क्या कुछ एक साथियों द्वारा एक दूसरे को लिखे गए व्यक्तिगत पत्रों में उनकी खामियों की चर्चा करना सचमुच राजद्रोह था ? कौनवे स्वार्थपूर्ण व्यक्ति था और सम्भवतः वह उस समय सद्भावी भी नहीं था, जब उसने गेट्स को यह लिख भेजा कि वह उसे वाशिंगटन पर तरजीह देता है। क्या इससे उसने किसी राक्षसी प्रवृत्ति का परिचय दिया था ? ऐसा प्रगट होता है कि वाशिंगटन ऐसा ही समझते थे और उनके बहुत से जीवनी-लेखक भी इनमें सहमत हैं। इन लोगों ने उनकी जीवनी लिखते हुए न सिर्फ अपने आप को उनकी जगह रखा (जैसा कि हर जीवनी-लेखक को करना ही चाहिए), बल्कि वे उनकी जेब में भी पड़ गये (अर्थात उसके प्रति उन लोगों ने अन्धश्रद्धा की अभिव्यक्ति की)। परिणामतः उन्होंने इस प्रकार की धारणाओं को आधार-सामग्री के रूप

में स्वीकार किया कि गेट्स तथा अन्य लोगों ने विद्रोह किया, गेट्स न केवल अयोग्य था, बल्कि बागी भी था और कांग्रेस के लगभग सब सदस्य धूर्त और मूर्ख थे।

वाशिंगटन के साथ न्याय करते हुये हमें यह मान लेना चाहिए कि उनके मित्रों ने इस ढंग से चर्चा की जिससे कि यह बोध होता था कि वास्तव में षड्यन्त्र रचा गया है। कर्नल अलैक्जैण्डर हैमिल्टन ने लिखा—'मुझे इसकी वास्तविकता में रत्ती भर भी सन्देह नहीं है।' यह सत्य है कि कुछ कांग्रेस के सदस्य विद्वेष-युक्त और अनुत्तरदायी थे। जान जे ने शिकायत की कि 'इस संसद् में उतने ही षड्यन्त्र रचे जाते हैं, जितने कि पोप के महल में।' (यह सत्य है कि) वाशिंगटन के ऊंचे पद वाले अधिकारियों में चुगली खाने की बहुत आदत थी। किन्तु यह बात उन स्थानों में सदा पाई जाती है, जहां आदमी प्रतिष्ठा और उन्नति के लिए प्रतिद्वन्द्वी होते हैं। देखिये, विलटन, हो और वर्गोयने में कितना मन-मुटाव था। यदि वाशिंगटन प्रधान सेना-पति के उच्चतम पद पर आरूढ़ होने की बजाए अनेक मेजर-जनरलों में से एक होते, तो क्या उन्हें ईर्ष्या-विद्वेष की यन्त्रणाएं न सतातीं ? यद्यपि उनका कवल के साथ प्रतिष्ठायुक्त व्यवहार था और निश्चयपूर्वक प्रभावशाली था, किन्तु यह भी सत्य है कि वह स्थित्यनुसार इस सूचना से अत्यन्त क्रोधावेश में आ गये थे। अनेक महीनों तक उन्हें गेट्स पर गुस्सा रहा। कांग्रेस ने समझदारी से काम लिया। उसने इस बात का निश्चित रूप से खयाल रखा कि वे दोनों एक दूसरे से काफी अलग-अलग रहें।

मन्माऊथ से यार्क टाउन तक : सन् १७७८-१७८१

षड्यन्त्र था या नहीं, उस समय जो भी परेशानी थी वह तात्कालिक आवश्यक विचारणीय बातों के कारण शीघ्र दब गई। यह देखकर वाशिंगटन को अचम्भा हुआ कि जून १७७८ में विलटन ने अपने लाल-कोट वाले सैनिकों को फिलेडैल्फिया से निकाल दिया है—लड़ने के लिए नहीं, बल्कि न्यू जरसी के उत्तर-पूर्वीय दिशा में

आगे बढ़ने के लिए। क्लिटन पागल नहीं था। हो की योजना उसे फूटी आंखों नहीं भाई थी। कुछ कुमक इंगलैण्ड से उसे भेजे जाने का वायदा हुआ था। खबर थी कि फ्रांसीसियों का एक समुद्री-बेड़ा रास्ते में है। अतः उसने इस बात को अधिक पसन्द किया कि उसकी सेना न्यूयार्क नगर में ही जमी रहे। इस प्रकार दो साल पूर्व बोस्टन के समान, फिलेडैल्फिया भी अमेरिका वालों के हवाले कर दिया गया। उस नगर का महज खाली होना ही संयुक्त-राज्य की नैतिक विजय थी। वाशिंगटन ने फौर्ज की घाटी से पड़ाव हटाने के बाद, क्लिटन का पीछा किया। उन्होने दृढ़ संकल्प किया कि वे क्लिटन को सबक सिखायेंगे।

२८ जून को प्रातः के समय उन्हें ऐसा मौका हाथ लगा। उस समय क्लिटन की पीछे की रक्षा-सेना मन्माऊथ कोर्ट-हाउस से प्रस्थान कर रही थी। रविवार का दिन था, जो भट्टी के समान तप रहा था। वाशिंगटन ने अमेरिकी सेना के आगे चलने वाले रक्षा-दल को आज्ञा दी कि वह ब्रिटिश-सेना को लड़ाई के लिए ललकारे। यह कार्य उन्होंने चार्ल्स ली को सौंपा। यह वही जनरल था, जिसे दिसम्बर, १७७६ में शत्रुओं ने पकड़ कर कैद कर लिया था और अभी-अभी बदले में छुटा था। दोनों सेनाएं लगभग बराबर संख्या में थीं। वाशिंगटन को सैनिक दृष्टि से यह लाभ था कि उन्होंने स्थान बदलती हुई शत्रु की सेना को मुकाबले के लिए तैयार किया था, किन्तु विचित्र-प्रकृति ली ने प्रगट रूप से इस योजना का विरोध किया।

ली आगे बढ़ा, किन्तु बिना अधिक आत्म-विश्वास के, और जब क्लिटन शीघ्रतापूर्वक कुमक लेकर आया, तो वह पीछे को हटा—फूहड़ ढंग से। वाशिंगटन यह देखकर भयभीत हुए। उन्हें खीझ भी आई। मौके पर पहुंच कर उन्होंने ली की सेना की भगदड़ रोक दी और उसके मोर्चे को जहां-तहां मजबूत किया। किन्तु पूरे जोर-शोर से लड़ाई नहीं हुई और उस रात जबकि प्रत्येक पक्ष के लगभग तीन सौ पचास सैनिक हताहत हुए, क्लिटन के लाल-कोट

फौजी विधिवत् न्यूयार्क की ओर बढ़ते चले गए। वे सैंडीहुक पर पहुंच कर जहाजों में बैठे और इस प्रकार समुद्री-मार्ग से उन्होंने अपनी यात्रा पूरी की। वाशिंगटन के हाथ से एक उत्तम अवसर जाता रहा। बाद में ली का (जिसे गम्भीर अवज्ञा का अपराधी पाया गया और अवशिष्ट युद्ध-काल के लिए सक्रिय कमान से हटा दिया गया) कोर्ट-मार्शल हुआ। परन्तु इससे शत्रुओं द्वारा पहुंचाये गये आघात की मरहम-पट्टी कैसे हो सकती थी? इस मन्माऊथ की मुठभेड़ के बारे में जो भी कुछ और कहा जाए, इससे इस बात का एक और प्रमाण मिल गया कि वाशिंगटन में अभ्याक्रामी प्रवृत्ति थी। इस घटना से केवल इतना ही प्रकट नहीं होता कि वह ट्रैन्टन या जर्मनटाउन के समान ही गोलियों की वारिश में भी साहस प्रदर्शित कर सकते हैं, बल्कि यह भी जाहिर होता है कि उन्होंने युद्ध-समिति की सलाह के विरुद्ध बहुत बड़े पैमाने पर युद्ध को लाने की कोशिश भी की थी। सम्भव है कि उनका प्रयोजन व्यावहारिक हो, क्योंकि उन्हें आशंका थी कि न्यू जरसी की मिलिशिया अपनी-अपनी फसलें काटने के लिए बीच में छोड़कर चली जायगी (जैसा कि बाद में उन्होंने अविलम्ब किया)। अथवा उन्होंने शायद यह महसूस किया हो कि अमेरिका के नैतिक स्तर को 'किसी सहारे की जरूरत है, (ताकि) हमें भी उभारे रखे।' (उन्होंने इस वाक्यांश को कुछ समय बाद प्रयुक्त किया)। उनके इस प्रकार के व्यवहार के जो भी कारण रहे हों, इसमें दिलचस्प बात यह है कि वह इस औपचारिक युद्ध में अपनी सेना को झोंकने के लिए उत्सुक थे।

भूतगत घटनाओं पर विचार करते हुए हम देखते हैं कि फ्रांसीसियों की संमिलता ने लड़ाई का पांसा पलट दिया। एक बार जब ब्रिटिश सेनाएं अपने पुराने शत्रु और स्पेन से जूझ गईं, तो उनके समुद्र के एकाधिकार को चुनौती मिली। इस प्रकार १७७८ में वे अमेरिका के लिए आते हुए फ्रांसीसियों के समुद्री बेड़े को, जो काम्टे डी एस्टेईंग के संचालन में था, रोक नहीं सके। संसार के शेष भागों

से उनकी सख्त मांग थी—भू-मध्य सागर में, जहाँ कि जबराल्टर घेरे में घिरा हुआ था, वैस्ट इण्डीज में और यहाँ तक कि हिन्द महासागर की तरफ भी। उन्हें फ्रांस-स्पेन के इकट्ठे आक्रमण की सम्भावना का भी मुकाबला करना था (यद्यपि इसने व्यावहारिक रूप धारण नहीं किया)। दिसम्बर, १७८० में हालैण्ड भी ब्रिटेन के शत्रुओं से जा मिला और उसी वर्ष ही, रूस के नेतृत्व में, योरूप के कई देशों ने सायुध तटस्थता-संघ बना कर ब्रिटेन के प्रति अपनी शत्रुता प्रदर्शित की।

बीती हुई घटनाओं पर पुनः विचार करते हुए हम देखते हैं कि फोर्ज की घाटी अमेरिका-वासियों के प्रयासों के लिए अधोविन्दु सिद्ध हुई। उसके बाद से वाशिंगटन ने एक सैनिक नेता के रूप में, बिना किसी आपत्ति के, प्रथम स्थान पाया। हो से यह आशा थी कि वह वाशिंगटन को जर्मन टाउन और ब्रांडीवाइन के स्थानों पर तीसरी और अन्तिम बार हरायेगा, अथवा फोर्ज घाटी पर सरदी के मध्य में अकस्मात् चढ़ाई करके सम्भवतः उसे परास्त करेगा। किन्तु जब उसने छुट-पुट सफलताओं को ही अपना साध्य बना लिया, तो उसके लिए कभी ऐसा समय नहीं आ सकता था कि वह वाशिंगटन को एक बार में खत्म कर दे अथवा उनकी हेतु-पूर्ति में किसी प्रकार की बाधा डाले। अब यदि फ्रांसीसी अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहते हैं, तो संयुक्त-राज्य को विजय तथा स्वतन्त्रता की प्राप्ति में सफलता मिलना कोई दूर की बात नहीं थी।

यदि फोर्ज घाटी की घटना के बाद सब बातें ठीक प्रकार से घटी होतीं, तो एक सुन्दरतर कहानी बनी होती। किन्तु हम जो इतनी आशावादिता से बोल रहे हैं, उसका कारण यह है कि हम घटनाओं को पीछे से देख रहे हैं। जब वाशिंगटन की सेना मन्माऊथ से प्रयाण किए जा रही थी और न्यूयार्क को गोलाकार में घेरती हुई व्हाईट प्लेन्ज में युद्ध की स्थिति में खड़ी हो रही थी, तो भौगोलिक दृष्टि से वह वहीं थी, जहाँ कि दो साल पूर्व। सप्ताह, मास और साल बीतते जा रहे थे। क्षितिज की बातें अधिक सन्तोष नहीं

दे सकती थी, जबकि आगे का रास्ता ही खत्म होने का नाम नहीं लेता था। उसकी पत्नी, मर्था, प्रत्येक शरद् में कुछ काल उनके पास आकर रहती थी। किन्तु, माऊंटवर्नन, जहाँ अब उसका चचेरा भाई, लुंड वाशिंगटन, कार्यभार सम्भाले हुए था, अवश्य ही उन्हें अत्यधिक दूरी पर लगा होगा। माऊंटवर्नन प्रायः उनके मन में बसता था— यहाँ तक कि असम्भव क्षणों में भी हम उन्हें थोड़ी देर के लिए अपने सरकारी मामलों को एक तरफ रख कर कृषि-सम्बन्धी परीक्षणों के विषय में अथवा गृह-भवन के विस्तार के लिए निर्देश देते हुए पाते हैं। (जैसे, 'इस वसन्त में तुम्हारे यहाँ कितने मेमने हुए ?' 'क्या तुम्हें आशा है कि रंग-रोगन और तेल मिल जायेगा ?' 'क्या तुम प्याजा के पत्थर के फर्श की मरम्मत कराने लगे हो ?' 'क्या तुमने चरागाहों के लिए और भूमि को लेने के प्रयास किए हैं ?' इत्यादि।) वह बार-बार अपनी चिट्ठियों में 'अपने ही अंगूरों की लताओं और अंजीरों के पेड़ों' की छाया के नीचे आराम करने के स्वप्नों का उत्साहपूर्वक उल्लेख करते हैं, मानो बाइबल के ये वाक्यांश संक्षेप में उनके जीवन में सन्तोष की भावना लाने के लिए सब कुछ हों।

मुकाबले में, उनके बिल्कुल इर्द-गिर्द शान्ति का नामो-निशान न था। फ्रांसीसियों की संमिलता के समाचार प्रोत्साहन देने वाले थे, किन्तु अमेरिका में इनका पहला असर निराशा-जनक था। डी एस्टेंग का समुद्री-बेड़ा जुलाई, १७७८ में ठीक समय पर पहुँच गया। चूंकि न्यूयार्क नगर को लेना दुष्कर कार्य था, अतः वाशिंगटन ने यह इंतजाम किया कि फ्रांसीसी उस अमरीकी फौज के साथ मिल जाएं, जिसका नेतृत्व सुलीवान कर रहा था। फिर यह मिश्रित सेना रोड-द्वीप स्थित ब्रिटिश सेना पर आक्रमण करे। डी-एस्टेंग को ब्रिटिश बेड़े के साथ उलझना पड़ा। परिणामतः फ्रांसीसी बेड़ा वैस्ट इण्डीज की तरफ लौट गया। इधर सुलीवान समुद्री-सेना का सहारा न मिलने के कारण ब्रिटिश सेना पर विजय पाने में असफल रहा। इस प्रकार संमिलता का आरम्भ अच्छे शकुनों के साथ नहीं हुआ। स्पष्टतः संयुक्त-संग्राम में सम्पूर्ण-रूप से नई समस्याएं उठती-उभरती

रहीं, जिन्हें सुलझाने के लिए वाशिंगटन को अपनी सारी प्रतिभा और होशियारी का प्रयोग करना पड़ा। फ्रांसीसी बेड़ा केवल उधार पर ही मिल सकता था, अतः यह कठिन था कि बहुत पहले तत्सम्बन्धी योजना बनाई जाए। इस प्रकार सैनिक महत्व के निर्णय न केवल कांग्रेस को ध्यान में रख कर करने पड़ते थे, बल्कि फ्रांस के दरबार तथा अमेरिका-स्थित फ्रांसीसी सेनापतियों के दृष्टिकोणों को भी ध्यान में रखना पड़ता था।

वास्तव में, वाशिंगटन को यह भय था कि फ्राँस के बीच में पड़ने से कहीं ऐसा न हो कि उसके अपने देशवासी अपने प्रयासों में भयंकर-रूप से शिथिल हो जायें। जहाँ तक शत्रुता (क्षति-पहुँचाने) का प्रश्न है, अमेरिका के लोगों की अपनी उदासीनता और कार्यों में अकुशलता इतनी ही खतरनाक थी, जितनी कि क्लिंटन को समस्त लाल-कोट सेना। हो सकता है कि वाशिंगटन को ही ऐसा प्रतीत होता हो, क्योंकि हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि उन्हें अपना अधिकतर समय युद्ध करने में नहीं, बल्कि अनन्त प्रशासनिक संकटों के समाधान में गुजारना पड़ता था। उन्हें इतना ज्यादा पत्र-व्यवहार करना पड़ता था कि कभी-कभी उन्हें एक ही समय बहुत से सचिव रखने पड़ते थे और जो भी चिट्ठियां वे लिखते थे, उनका सम्बन्ध खुराक, शस्त्रास्त्र, बारूद, वस्त्र, कम्बलों, घोड़ों, वेतन (जो निरन्तर अवशिष्ट रहा करता था), अर्थनाओं, भर्ती-कार्यो, उन्नतियों (और उन्नतियों के लिए इन्कारों), दण्डों, उपहारों, मिलिशिया के अभ्यांशों इत्यादि से था। वह महसूस करते थे कि इस प्रकार के श्रम बहुत हद तक घटाए जा सकते हैं, यदि कांग्रेस, मित्र-राज्य तथा व्यक्तिगत रूप से अमेरिकावासी अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तरह निभाएं। यह सम्भव है कि वह आवश्यकता से अधिक शिकायत करते थे और अपनी सेना की न्यूनताओं को बताने में कुछ हद तक अत्युक्ति से भी काम लिया करते थे। किन्तु उनका यह रवैया ठीक उस बुद्धिमान ग्राहक की तरह था, जो इसलिए अपनी आवश्यकता से बढ़-चढ़ कर मांगता है, क्योंकि वह जानता है कि इसकी मांग को पूर्ण

रूप से पूरा नहीं किया जायगा । फिर भी, सच तो यह है कि वह
अत्युक्ति नहीं कर रहे थे, जबकि उन्होंने १७८१ के अप्रैल में घोषणा
की कि 'हम अपनी सीमाओं के अन्त में पहुँच गए हैं ।' उनके ख्याल
में उस वर्ष फोर्ज घाटी की शरद् कुछ अवस्थाओं में १७७८-१७७९
तथा १७७९-१७८० की शरद जैसी सख्त नहीं थी, क्योंकि इनमें से
प्रत्येक वर्ष संयुक्त-राज्य की सेना में छुटपुट विद्रोह हुए थे । नैथा-
नील ग्रीन ने दक्षिण से लिखते हुए इसी प्रकार के अशुभ लक्षणों
का सत्यापन किया । उसने लिखा—"जब तक इस सेना को
आशाओं से अधिक पोषण और सहारा नहीं मिलता, यह देश (अर्थात्-
दक्षिण-भाग) हाथों से ऐसा निकल जाएगा कि दुबारा जीत कर
वापस लेना असम्भव हो जाएगा ।"

यह समझ में आता है कि वाशिंगटन का रोष ब्रिटिश लोगों
और उनके अमेरिका के अनुदार दल के 'टोरी' समर्थकों के खिलाफ
(दिनों-दिन) क्यों बढ़ता जा रहा था । वफादार कौन है ? इस बारे
में क्लिंटन और वाशिंगटन में से प्रत्येक का उत्तर एक दूसरे से
विरुद्ध था । यह ठीक है कि उनमें से हर एक अपने उस उत्तर के
औचित्य को अपने दृष्टिकोण से सिद्ध करने की कोशिश करता ।
एक की नजरों में 'टोरी' देश-भक्त थे, किन्तु दूसरे की राय में वे
सम्भाव्यतः देश-विद्रोही थे । वाशिंगटन अपने सुविकसित गुप्तचर-
विभाग को एक यथार्थ सहायक अंग के रूप में मानते थे, किन्तु
तादृशी क्लिंटन की क्रियाओं को वह अनुचित और निंद्य समझते थे ।
इससे ठीक उल्टा क्लिंटन का दृष्टिकोण था । क्लिंटन को 'टोरी' लोगों के
उत्साह-हीन रवैये से निराशा हुई, यद्यपि सिमकोज रेंगर्स तथा अन्य
राजभक्त संस्थाओं ने उसकी मूल्यवान सेवाएं कीं । दूसरी ओर
'टोरी' लोगों की इंगलैण्ड के प्रति गुप्त सहानुभूति से वाशिंगटन का
दिल खट्टा हो गया था । यहाँ-तहाँ देश-विद्रोही लुके-छिपे मौजूद थे ।
कोई यह निश्चयपूर्वक नहीं जानता था कि आया चार्ल्स ली अपने
कारागार के दिनों में शत्रुओं द्वारा 'भ्रष्ट' कर दिया गया था या
नहीं । क्या यह ठीक नहीं था कि उसे १६ वें लाईट ड्रैगून के तथा

हो के प्रहरियों द्वारा ले जाया गया था ? सोलहवीं लाईट ड्रैगून उसकी पुरानी रैजमैण्ट हुआ करती थी, जबकि वह ब्रिटिश अफसर था। सन् १७७८ के जून मास में पैट्रिक हैनरी वर्जीनियावासियों की मानसिक स्थिति से इतना उद्विग्न हो उठा था कि उसने अपने राज्य के एक कांग्रेस सदस्य को लिखा—"परमात्मा के लिए अपने देश की सभाओं को उस समय तक मत छोड़िये जब तक कि आप हमें 'ग्रेट ब्रिटेन' से सदा के लिए पृथक् होते हुए न देख लें। पुराने विस्तृत प्रभाव भी आज अपना रंग दिखा रहे हैं। मिश्र के मांस के वर्तन आज भी अपने स्वाद के कारण लोगों की जीभों को कलुषित कर रहे हैं।' उसके शब्द दो साल बाद किसी सिद्ध की वाणी के समान ही सच्चे साबित हुए, जबकि बैनीडिक्ट आरनाल्ड, जो अमेरिका की सेना में सर्वाधिक त्वरित गति से काम करने वाला अफसर माना जाता था, वैस्ट पौआइंट की रक्षा-पंक्ति के रहस्योद्घाटन करने पर उद्यत देखा गया। आरनाल्ड न सिर्फ बच कर भाग गया, बल्कि इससे भी खराब बात यह हुई कि उसे मुक्तहस्त इनाम मिला—वह अंग्रेजी सेना में ब्रिगेडियर-जनरल बना दिया गया। इस उच्च पद पर आकर उसने कनैक्टीकट और वर्जीनिया में विनाशकारी छापे मारे। इस षड़यन्त्र का पता उस समय चला जबकि मेजर एण्ड्रे, जो एक आकर्षक युवक और ब्रिटिश सेनाधिकारी था, पकड़ा गया। वह उस वक्त क्लिंटन के हुक्म के मातहत आरनाल्ड के पास आ-जा रहा था। वाशिंगटन ने तब उस कठोरता से, जिसकी गंध भी उनमें नहीं पाई जाती थी, उस गुप्तचर को फांसी के तख्ते पर चढ़वा दिया।

ये दिन ही कड़े थे। मन्माऊथ में ग्रीष्म-काल के मध्य के बाद, लम्बे मध्यान्तर में, इस प्रकार के शब्द जैसे 'मान-हानि', 'व्यग्रता', तथा 'दुर्भाग्य' निस्संकोच रूप से वाशिंगटन की लेखनी से प्राय: निकला करते। यह बात न केवल अभियानों के सम्बन्ध में, बल्कि पड़ाव के दौरान में भी सार्थक थी। अमेरिका की सेना ने भूमि पर कुछ छुट-पुट सफलताएं अवश्य प्राप्त कीं, परन्तु जान पाल जोन्स और अन्य कई लोग भी, जो नव नौसेना में कैप्टन के पद पर थे,

जल पर अपनी भिन्न-भिन्न छोटी-मोटी लड़ाइयों में बड़ी कामयाबियां हासिल करते रहे। किन्तु इन सबसे युद्ध की दशा में कोई अन्तर नहीं पड़ा। ब्रिटिश लोगों ने अपना मुख्य ध्यान दक्षिण के क्षेत्र पर केन्द्रित किया। उन्होंने न्यूपोर्ट को १७८० के अन्त में खाली कर दिया, ताकि अपनी सेनाओं का अधिक लाभ के साथ दूसरे स्थानों में प्रयोग कर सकें। उन्होने एक साल पूर्व जार्जिया में सवन्नाह को अपने कब्जे में कर लिया था और अब १७८० के शरत्काल में क्लिंटन ने समुद्री मार्ग से सेना लाकर चार्ल्सटन पर घेरा डाल दिया। उसके संकार्यों में अनेक विघ्न-बाधाएं थीं, किन्तु फिर भी उसे यथेष्ट लक्ष्य की प्राप्ति हो रही थी। चार्ल्सटन अमेरिका वालों के कब्जे से निकल गया। उनके साथ पांच हज़ार से अधिक अमेरिका रक्षादल के सैनिक भी शत्रु के हाथ लगे। यह इस लड़ाई की सर्वाधिक मूल्यवान क्षति थी। क्लिंटन तो न्यूयार्क लौट गया, परन्तु वह अपने पीछे आठ हजार सैनिक कार्नवालिस के अधीन छोड़ गया, ताकि जार्जिया और दक्षिणी कैरोलीना को राजभक्तों की रक्षा के रूप में अपने कब्जे में रखा जासके। वाशिंगटन मजबूर हो कर हड्सन पर ही रहे, क्योंकि उन्हें क्लिंटन पर नजर रखनी थी। दक्षिणी रण-क्षेत्र के लिए जो कुछ उनके बस में था, उन्होंने किया। जितने सैनिक वह बचा कर भेज सकते थे, उन्होंने वहां भेजे। कांग्रेस ने होरेशो गेट्स को कमान सम्भालने के लिए दक्षिण की ओर भेजा।

आखिरकार संघर्ष नाटकीय ढंग से त्वरित गति से आगे बढ़ा। इसके मुख्य-मुख्य अभिनेता, अनजाने में, हजारों मीलों की विस्तृत भूमि पर सैनिक हलचलों में जुट गये ताकि मिल कर अन्तिम निर्णयात्मक लड़ाई लड़ें। छोटे दर्जे के अभिनेताओं को, चाहे वे इस योग्य थे या नहीं, असम्बन्धित समझ कर एक तरफ हटा दिया गया। इनमें कई एक इन क्षेत्रों में प्रसिद्धि पा चुके थे, जैसे कि गेट्स। किन्तु उसने अगस्त १७८० में दक्षिण कैरोलीना के कैमडन स्थान पर कार्नवालिस से जबरदस्त शिकस्त खाई थी, जिसके फलस्वरूप वह तीन मास के अन्दर-अन्दर अधिक्रमित हो गया। सम्मानित

बैरन डी काल्ब, कैमडन के स्थान पर, घातक रूप से आहत हो गए, जिसके कारण इस लड़ाई में सम्मिलित नहीं हो सके। चार्ल्स ली का पहले ही बहिष्कार हो चुका था। क्लिंटन न्यूयार्क में बन्द हो जाने से और हिलजुल न सकने के कारण दांत पीस रहा था। अपना निदान करते हुए उसका मत था कि वह एक 'लज्जाशील कुतिया' की तरह रह गया है, वह इतिहास के सौभाग्यवान् सेनानायकों में से नहीं है।

इस नाटक के शेष पात्रों में पांच प्रमुख थे और अन्य (ग्रीन, सट्यूबेन, आदि) उनके सहायक। इन पांचों के नाम थे कार्नवालिस, लिफायट, वाशिंगटन और दो बाद में हुए कोम्टे दी रोचम्बियू और एडमिरल डी ग्रास।

कार्नवालिस का १७८०-८१ का शरद् अभियान निर्णायक रहा। यह उसका दुर्भाग्य था, क्योंकि यह एक योग्यतापूर्ण अभियान था। उसका हमला वेगपूर्ण था, उसके पास सब साधन थे और उसने अमेरिका की परिस्थितियों के अनुसार अपने सैनिक व्यूह-कौशल को ढाला था। वह और उसकी घुड़सवार सेना के नेता, बनैस्टर टार्लेटन ने गेट्स को कैमडन पर परास्त किया था। और (मार्च १७८१ में गिल्फोर्ड के कोर्ट हाउस के पास) ग्रीन पर जोर की चोट की थी। इसके बावजूद, कार्नवालिस मानो पानी पर लिख रहा था। जैसे ही वह शीघ्रता से उत्तर की ओर जाता, फिर दक्षिण में आता, बाद में फिर उत्तर की ओर लौटता, उसके पीछे प्रतिरोध नए सिरे से उठ खड़े होते। मई के मास में वह वर्जीनिया में था, जहां टार्लेटन ने गवर्नर थामस जैफर्सन को तथा घबराए हुए राज्य-संविधान-सदस्यों को लगभग पकड़ ही लिया। कार्नवालिस साहसी था और प्रतिभावान भी। किन्तु दुर्भाग्य ने उसे आ घेरा। जब वह लैफाएट और स्ट्यूबन के नेतृत्व में फुर्तीली अमरीकी सेना को खतम करने में असफल रहा, तो उसने समुद्री तट पर पहुंचकर क्लिंटन से सम्पर्क जोड़ने का निश्चय किया। उसने समुद्री-तट पर यार्क टाऊन को चुना। गत अभियानों में इसलिए ही सफल नहीं

हुआ, क्योंकि वह अतिशय सतर्कता से काम लेता था और बर्गोयने को इस वास्ते सफलता नहीं मिली, क्योंकि वह सतर्कता जानता ही नहीं था। यद्यपि क्लिटन और हो इस पहलू में मिलते जुलते थे, कार्नवालिस ने (जैसा कि एक समकालीन ने टीका-टिप्पणी की) 'पूर्णतया वर्गोयने के सदृश व्यवहार किया।' यार्कटाउन की रक्षा आसानी से नहीं हो सकती थी और कार्नवालिस के पास आठ हजार से कम आदमी थे।

वाशिंगटन ने पहले तीन सालों में जो यातनाएं भोगीं वे किसी के भी प्राण खुश्क कर सकती थीं। बाद के तीन साल इस प्रकार के थे कि कोई मनुष्य भी अपना धैर्य खोए बिना नहीं रह सकता था। अब वह समय आ गया था जबकि उसकी परीक्षा होनी थी कि वह कहां तक भगवान् द्वारा दिए गए अवसर का लाभ उठाने की क्षमता रखते हैं। इस समय उनकी आजमाइश थी कि वह कहां तक पहले की तरह अत्यन्त अल्प शक्ति से संमिलित सेनाओं के साथ मिल कर सैनिक कार्यवाहियों द्वारा सदा के लिए संमित्रता के महान् उद्देश्यों को पूर्ण कर सकते हैं। यह अवसर रोचमब्रू और डी-ग्रास के द्वारा पैदा हुआ। इन में से पहला व्यक्ति सुयोग्य सैनिक और सुशील स्वभाव का था। वह न्यूपोर्ट में पांच साल से फ्रांसीसी सैनिकों के साथ पड़ाव डाले हुए था। डी-ग्रास फ्रांस के वैस्ट इण्डीज बेड़े का सेनापति था। उसने यह खबर भेजी कि उसके जहाज तथा तीन हजार और फ्रांसीसी सैनिक कुछ समय के लिए अमेरिका वालों को मिल सकेंगे। उसने यह भी बतला दिया कि वह चैसापीक खाड़ी की तरफ बेड़े के साथ प्रस्थान कर रहा है।

वाशिंगटन इस बात पर विचार कर रहे थे कि वह रोचमब्रू के साथ मिल कर न्यूयार्क पर हमला करें। जब उन्हें डी-ग्रास का पत्र मिला, तो उन्होंने अपना इरादा बदल दिया और वर्जीनिया की ओर सेना लेकर बढ़े। डार्चेस्टर हाइट्स के बाद यह पहला अवसर था कि उनकी हर बात बिना किसी विघ्न-बाधा के सम्पादित हुई, मानो इस काण्ड में भाग लेने वाले पात्रों द्वारा पूर्वाभिनय हो चुका

हो। डी-ग्रास चैसापीक खाड़ी के मुख्य द्वार पर ब्रिटिश संगुल्भ से पूर्व ही पहुंच गया। वहाँ पहुंच कर इसने कार्नवालिस का समुद्र की ओर का बाहरी मार्ग बन्द कर दिया। कुछ ही दिनों के अन्दर-अन्दर वाशिंगटन, रोचम्ब्यू, लिफायट और डी-ग्रास का एक स्थान में अभिसरण हुआ और वे आपस में मिले। १७ हजार संमिलित सेनाओं ने (जिनमें से आठ हजार फ्रांसीसी थे) न्यूयार्क को घेर लिया। उस समय फ्रांसीसियों की नौ-सेना-शक्ति सर्वोच्च थी। यह आक्रमण एक चमत्कार था जो कार्यान्वित हुआ। ऐसा मालूम हो रहा था कि यह नाटक मानो वाशिंगटन के अपने ही व्यवस्थापन में खेला जा रहा हो। कुछ ही मीलों की दूरी पर विलियम्सवर्ग था, जहां अठाईस वर्ष पूर्व उन्होंने ओहियो प्रदेश से लौट कर डिनविड्डी को (फ्रांस देश के राज-चिन्ह वाले) फ्रांसीसियों की अतिक्रमण-सम्बन्धी चेतावनी दी थी। किन्तु अब सन् १७८१ के सितम्बर और अक्तूबर के महीनों में वाशिंगटन इस बात से सम्यगतया सन्तुष्ट थे कि वह फ्रांस-देश के राज-चिन्ह (झण्डे) को अमेरिका के झण्डे के साथ (जिसमें एकांतरिक लाल और सफेद तेरह धारियां होती हैं और नीली पृष्ठभूमि पर तेरह सफेद सितारे) एक पंक्ति में लगा दें।

वाशिंगटन की संयुक्त-राज्य की सेना यह कोशिश करती थी कि वह भी व्यावसायिक योग्यता रखने वाली फ्रांस की सेना के पद-चिन्हों पर चले। यह वह युग था जबकि सेना-शिष्टाचार का बोलबाला था और अमरीकी सेना में पुरानी फटे-हाल रहने की अवस्था बीत चुकी थी। संमित्र सेनाओं ने तोप-गोलों से नगर पर जबरदस्त मार की। यह देखकर कार्नवालिस का दिल बैठ गया कि उसकी अपनी सेना शत्रु की सेना से आधी है और तूफान के कारण यार्क नदी को पार करके ग्लाऊसैस्टर पाइंट पर पहुँचने के उसके सारे प्रयत्न विफल हुए हैं। १७ अक्तूबर को, जिस दिन कि साराटोगा की विजय का तीसरा वार्षिकोत्सव था, कार्नवालिस ने वाशिंगटन को एक संक्षिप्त और दर्द-भरा पत्र भेजा। यह हृदय-

वेदना ऐसी थी जिसे केवल कल्पना में ही लाया जा सकता है। उसने लिखा:—

श्रीमान्,

मैं यह प्रस्ताव करता हूं कि २४ घण्टों के लिए विरोधी कार्यवाहियों को बन्द कर दिया जाए और प्रत्येक पक्ष में से दो अधिकारी नियुक्त किए जाएं जो यार्क और ग्लाऊसेस्टर की चौकियों के आत्म-समर्पण की शर्तें तय करें।

मेरा गौरव है—आदि-आदि

कार्नवालिस

शब्द 'गौरव' के स्थान में यदि कार्नवालिस वाशिंगटन के अशुभ दिनों का वर्णन करनेवाले शब्दों में से कोई शब्द, जैसे—'मान-हानि' 'व्यग्रता', 'दुर्भाग्य' का प्रयोग करता, तो उसकी मानसिक अवस्था का ठीक चित्रण होता। उस समय जनरल वाशिंगटन के लिए यह ड्रामा अपनी गौरवशाली पराकाष्ठा के क्षणों में था, जबकि ब्रिटिश और हैमियन सेनाएं अपने-अपने झण्डे फहराती हुई, पंक्तिबद्ध होकर, एक एक बटेलियन करके, हथियार समर्पण करने के लिए चली जा रही थीं। इस चमत्कार के लिए संसार के कोने-कोने में वाशिंगटन की (जिसमें कि ब्रिटेन भी शामिल था) सराहना हुई। अब हम इस योग्य हो गए हैं कि इस कहानी को यहीं समाप्त कर दें।

किन्तु—कोई कहानी 'किन्तुओं' से इतनी भरी हुई नहीं है जितनी कि यह। अभी संघर्ष का अन्त नहीं हुआ था। इस खुशी की चरमसीमा के प्रभाव को कम करने के रूप में, आगामी दो वर्ष ऐसे बीते जो उकताने वाले नाटक के उपसंहार के सदृश थे। लड़ाई की स्थिति उल्लास, सन्देह और परस्पर दोषारोपण के मिश्रित वायुमण्डल में धीरे-धीरे विलीन हो गई। यार्क टाऊन में जो प्रसन्नता की लहर दौड़ी थी, वह वाशिंगटन के सौतेले बेटे जैक कस्टिस की असामयिक मृत्यु के कारण अधिच्छादित हो गई। अंगरक्षक के रूप में काम करते हुए जैक को 'कैम्प-ज्वर' हुआ था। इस दुर्घटना के अतिरिक्त, वाशिंगटन को जो खुशी संयुक्त-राज्य सेना के अन्तिम

मुहासिरे में अत्यन्त श्रेष्ठ कार्य करने पर हुई थी, वह अगले कुछ महीनों में जाती रही। कारण यह कि उनकी सेना में दोषारोपण और शिकायतों का सिलसिला शुरू हो गया। उनके सैनिकों ने यह युक्ति दी कि जहां अन्य देशों के सैनिकों ने लड़ाई के कारण खूब मजे किये हैं, वहां उन्होंने भुखमरी काटी है। उनका यह कहना था कि जब उन्होंने संयुक्त-राज्य अमेरिका के लिए स्वतन्त्रता हासिल की है, तो उन्हें अवशिष्ट वेतन के लिए दलीलें देने की जरूरत ही क्या है ? उस समय वाशिंगटन को जो कांग्रेस और अपने सैनिकों के प्रति उत्तरदायी थे और जिन्हें उन से हार्दिक सहानुभूति थी, क्रुद्ध अफसरों को सान्त्वना देने के लिए अपने पूरे चातुर्य से काम लेना पड़ा। वह सोचते होंगे कि क्या उन्होंने इसलिए ब्रिटेन वालों को हराया था कि एक-दूसरे के सिर फोड़ें ?

किन्तु लड़ाई तो जीती ही गई। याकंटाऊन की विजय के बाद कहीं भयंकर युद्ध नहीं हुआ। ब्रिटेन का वेड़ा जो कार्नवालिस के लिए कुमक लाया था, बिना किसी उपयोग में आए न्यूयार्क वापस चला गया। साराटोगा के बाद भी क्लिटन अपने वेड़े को न्यूयार्क वापिस ले आया था। कुछ अर्से के बाद हो का अनुसरण करते हुए उसने त्याग-पत्र दे दिया और इंगलैण्ड के लिए रवाना हो गया। शेष कहानी, जहां तक ब्रिटिश सेना का सम्बन्ध है, अरोचक थी। थोड़ा-थोड़ा करके इन लोगों ने अपने बोरिये-बिस्तरे बांधे, किले और बन्दरगाहें खाली कीं और अमेरिका छोड़ कर समुद्री-मार्ग से चल पड़े।

पैरिस अब दिलचस्पी का केन्द्र बन चुका था। यहां अमेरिका के आयुक्त, जान एडम्ज, फ्रैंकलिन, जे और लारेन्स—अपनी आशाओं से अधिक लाभप्रद सौदा तय कर सके थे। संयुक्त-राज्य की स्वाधीनता को मान लिया गया और उसका विस्तार समुद्र-तट से मिससिपी तक और ग्रेट लेक्स से स्पेनिश फ्लोरीडा तक समझा गया। यह समझौता सन् १७८३ के सितम्बर मास में कांग्रेस द्वारा सम्पुष्ट हो गया।

इस प्रकार जहां युद्ध में सफलता मिली, वहां शान्ति भी प्राप्त हुई। जब वाशिंगटन ने जून, १७७५ में सेना की कमान हाथ में ली थी, तब उन्होंने मर्था को सान्त्वना देते हुए लिखा था कि वह 'आशा करता है कि उसके पास शरद् में सुरक्षित लौटेगा।' हो सकता है कि उसके मन में यह आशंका हुई हो कि सम्भवतः कर्तव्य सम्पादन में उन्हें इससे बहुत अधिक समय लग जाएगा। किन्तु उन्होंने कभी यह अनुमान नहीं लगाया था कि यह युद्ध-कार्य साढ़े आठ वर्ष तक चलता जाएगा। जब वह वापस घर लौटने लगे, तो उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुई। किन्तु इस सारे काल में स्थिति में जो परिवर्तन हुआ था, उसके कारण उन्होंने गहरी भावना के साथ 'अपने सार्वजनिक जीवन को तिलांजलि दी।' इस अन्तरिम काल में अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाएं हुई थीं। सन् १७८३ के मई मास में न्यूयार्क नगर के फ्रांसिस टेवर्न में अपने अफसरों से विदाई लेते समय वह और उसके अधिकारी आंसू बहा रहे थे। और जब कुछ दिन पीछे वाशिंगटन ने कांग्रेस को एनापोलिस में अपनी प्रधान सेनापति की कमीशन वापिस की, तो उस मौके के महत्व एवं बोझ ने दर्शकों को भावना-व्यग्र कर दिया। इतनी अधिक बातें कहने को थीं कि उन्हें जबान से कहना मुश्किल था। बेशुमार घटनाओं ने मिलकर इतिहास का निर्माण किया था और अब भी कर रही थीं। यह विचार अमेरिका-वासियों में एवं वाशिंगटन में उस समय भी समाया हुआ था जब वह क्रिसमस से एक रात पहले माऊंट वर्नन पहुंचने के लिए घोड़े पर सवार त्वरित-गति से जा रहे थे।

प्रधान-सेनापति के वीरतापूर्ण कार्य

प्रश्न यह उठता है कि सेना-नायक के रूप में वाशिंगटन का क्या स्थान है? हम किस प्रकार विद्वेष-भावना तथा खुशामद त्याग कर उनके द्वारा सम्पादित कार्यों के बारे में न्याय-संगत अनुमान लगा सकते हैं? जिस प्रकार का युद्ध उन्हें करना पड़ा, वह हमें इजाजत नहीं देता कि हम इतिहास के दूसरे प्रसिद्ध अभियानों से उनके अभियानों का मुकाबला करें। यह युद्ध इस प्रकार का था

कि इसमें सिवाए अन्तिम लड़ाई के अमरीकियों ने शेष सब में लगभग मार ही खाई। इसमें दूसरी खास बात यह थी कि कोई भी मुठ-भेड़ वहुत बड़े पैमाने पर नहीं हुई। जहाँ तक हम निर्णय दे सकते हैं, वाशिंगटन ने रण-क्षेत्र मे किसो अद्‌भुत प्रतिभा का परिचय नहीं दिया, यद्यपि उन्हें इसके लिए सीमित अवसर प्राप्त हुए थे।

सम्भवतः यह हमारे लिए अत्यधिक न्याय-संगत होगा यदि हम उनकी तुलना अलेक्जेण्डर, फ्रैड्रिक अथवा नेपोलियन से न करके उनके अपने ही उन देशवासियों से करें, जिन्होंने बाद में अमेरिका के गृह-युद्ध में भाग लिया। उनकी सैनिक-बुद्धि इतनी उन्मादपूर्ण नही थी, जितनी कि स्टोनवाल जैक्सन की थी। न ही उनका सैनिक ज्ञान इतना पूर्ण था, जितना कि राबर्ट ई० ली का। ली अथवा मैक्टेलेन की तरह वह अपने साधारण सैनिकों में उत्साहपूर्ण अनुराग भी उत्पन्न नहीं कर सके थे। टामपेन, जो सामन्तशाही से घृणा करता था, के लेखों से उत्तेजना पाकर वाशिंगटन बलपूर्वक कह सकते थे कि केवल भद्र लोग ही अफसर बनने के योग्य हैं। ये अफसर लोग ही उनकी अत्यधिक प्रशंसा करते थे। वह आम सैनिकों के साथ कम मेलजोल रखते थे। यह महत्वपूर्ण बात है कि किसी ने—यहां तक कि ब्रिटिश पक्ष की ओर से भी किसी ने—(प्यार से या चिढ़ाने के लिए) उनका उपनाम नहीं रखा। जब वे अपने समकक्ष लोगों के साथ बैठकर, रात के खाने के बाद, शराब पीते होते, या अपना मनचाहा भोज्य, अखरोट, खाते होते, तो उनसे ऐसे घुल-मिल जाते थे कि सबको वहुत अच्छा लगता था। किन्तु वह हंसी-मजाक नहीं करते थे। अखरोट जरूर तोड़ते थे। एक साधारण सैनिक के लिये वह कठोर-स्वभाव, भयोत्पादक व्यक्ति थे। यह सच है कि वह उन सैनिकों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते, उनके खतरों और कष्टों में उनके साझीदार बनते, किन्तु वह उनमें से नहीं थे। वह उनसे दूर-दूर रहते थे। अपने अनेक आदेशों में वह इसी बात पर जोर भी दिया करते थे। उनके आदेश कठोर और भयोत्पादक

हुआ करते थे। उनमें प्रायः निर्भत्सना तथा निषेधाज्ञाएं पाई जाती थीं। जहां कहीं उनमें प्रशंसात्मक बात भी होती, तो उनमें बर्फ जैसी ठण्डक अर्थात् उत्साहहीनता पाई जाती। वे आदेश प्रशंसा-युक्त नहीं होते थे, प्रत्युत प्रशंसा प्रदान करने वाले होते थे।

इस बात को अधिक विस्तार देना कोई अक्लमन्दी नहीं है। न ही इसमें समझदारी है कि हम १८ वीं शताब्दी के वर्जीनिया के भू-स्वामी से यह आशा रखें कि वह किसी बीसवीं सदी के जनता-सम्पर्क-विशेषज्ञ सरीखा व्यवहार करेगा। तथापि समकालीन साथियों को भी वह चुप-चाप रहने वाले मनुष्य लगे। यह सत्य है कि युद्ध उनके लिए सब कुछ था, किन्तु उन्होंने शाब्दिक रूप में इसकी प्रमुख घटनाओं के अनुकूल अपने आप को नहीं ढाला था। जब साराटोगा का समाचार उन्हें मिला, तो वह उस समय चार्ल्स विल-सन पील से अपना चित्र बनवा रहे थे। पत्र हाथ में लेते ही उनके मुंह से निकला—'ओह! बर्गोयने हार गया' और बस इतना कहने के बाद वह जैसे ही बैठे रहे। और जब कार्नवालिस ने घुटने टेके, तो कांग्रेस को सूचित करने के लिये बजाय अपने आप सन्देश-सामग्री बनाने के, उन्होने अपने एक अंगरक्षक अफसर को यह निर्देश दिया कि वह इस विषय में सन्देश बनाए। यह सूचना संक्षिप्त विवरण के दायरे में न रह कर निराशाजनक रूप से नीरस रचना बनी।

किन्तु यह उस प्रकार की गम्भीर त्रुटियां नहीं हैं, जिन्हें हम ध्यानपूर्वक अवलोकन से जार्ज बी० मैक्लेलेन नाम के दूसरे अमरीकी जनरल में पाते हैं। अमेरिका के गृह-युद्ध के दौरान में इस जनरल को कुछ काल के लिए संयुक्त-राज्य को बचाने का श्रेय प्राप्त हुआ था। इन दोनों व्यक्तियों में यह विचित्र बात थी कि इनमें विनय-शीलता और आत्म-विश्वास पाए जाते थे। किन्तु मैक्लेलेन कोई प्रसिद्ध योद्धा नहीं था। शत्रु के सामने आने पर वह विनय का प्रद-र्शन करता और जब उसके प्रमुख अफसर या सहयोगी होते, तो इस हद तक आत्म-विश्वास दिखाता कि वह मिथ्याभिमान का रूप ले लेता। इसमें शक नहीं कि वह एक सुयोग्य व्यक्ति था, किन्तु वह

बारी-बारी कभी तो अधीर और कभी भगवान् पर भरोसा करने वाला बनता। दूसरी ओर वाशिंगटन एक ऐसे योद्धा थे, जो अपवाद रूप में कुछ मौकों को छोड़ कर, हर समय अपने मन में किसी विषय के बारे में स्पष्ट धारणाएं रखते थे। एक योद्धा के रूप में यदि उन्होंने कभी भूल भी की, तो जल्दबाजी की भूल की। वह अपने गहरे आत्म-ज्ञान द्वारा, जिसकी झांकी वह दूसरों को भी दिया करते थे, यह जानते थे कि वह इसलिए इस त्रुटि का शिकार होते है, क्योंकि उन्हें इस बात पर क्रोध आता है कि कहीं लोग उन पर भीरु होने का आरोप न लगाएं। दूसरे लोग चाहे फेबियस के व्यूह-कौशल का प्रशंसात्मक रूप से अनुमोदन करते हों, किन्तु जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, वे कभी 'विलम्बकारी' फेबियस ककटेटर को दिमाग में नहीं लाए।

अतः यह बात ठीक है कि वाशिंगटन में किसी पूर्ण योद्धा के गुण नहीं पाए जाते थे, किन्तु उनमें ऐसे व्यक्ति के गुण थे, जो असम्भव अपेक्षाओं को पूरा कर सकता है। कांग्रेस सर्व प्रथम ऐसा सेनापति चाहती थी, जो स्वतन्त्रता की लड़ाई की शान को बढ़ाये। वाशिंगटन ने इस कार्य को इतने सुसस्कृत ढंग से किया कि चैथम जैसे अमेरिका से सहानुभूति रखने वाले अंग्रेजों की बात दूर रही, हो जैसे विरोधी भी उनका लोहा मानते थे। चैथम ने फरवरी, १७७७ में हाउस आफ लार्ड्स में कहा था—'अमेरिका वासी कोई जंगली और कानून भंग करने वाले डाकू नहीं हैं। वे ऐसे लोग नहीं हैं कि जिनके अपने पास हानि उठाने के लिए तो कुछ न हो, पर वे इसलिए सार्वजनिक उथल-पुथल में भाग लेते हों कि इससे वे अपने हाथ रंग सकेंगे। इस देश में कितने ही ऐसे नेता हैं जिन्हें इस लड़ाई के फलस्वरूप बड़ी-बड़ी हानियों की सम्भावनाएं हैं। मुझे बतलाया गया है कि जो सज्जन अमेरिका में सेनाओं का संचालन कर रहे हैं, उनकी भू-सम्पति की वार्षिक आमदनी चार-पांच हजार पौण्ड है।' इससे अधिक महत्वपूर्ण छाप वाशिंगटन ने फ्रांसीसियों पर डाली। सम्भवतः उन्होंने उन लोगों को प्रसन्न करने का भरसक प्रयत्न

किया था। यदि यह ठीक है, तो उन्होंने इसमें आश्चर्यपूर्ण ढंग से सफलता प्राप्त की। वह उन सबके लिए सचमुच बिना भय और धिक्कार के 'शिवालियर बयर्ड' थे। इसमें वे सब सहमत थे कि वाशिंगटन ऐसे सज्जन हैं कि जिनमें साधारण रूप से सन्तुलन और दयानतदारी पाई जाती है।

कांग्रेस दूसरी चीज यह चाहती थी कि उसका प्रधान-सेनानायक ऐसा हो, जो योरूप की सेना के नमूने पर भर्ती कर सके और उसका निर्देशन भी उसी ढंग से कर सके, ताकि अमेरिका की सेनाएं व्यवसायी सैनिकों से लोहा ले सकें। उनका अभिप्राय सचमुच की अमरीकी सेना से था जो संयुक्त राज्य की शान के शायां हो। यह वाशिंगटन की भी प्रबलतम इच्छा थी कि अमरीकी सेना में 'व्यवस्था, नियमितता और अनुशासन बद्धता' होनी चाहिए। यह सत्य है कि उन्होंने इन तत्वों के समावेश के लिए केवल पैदल सेना को ही मुख्य-रूप से अपने सामने रखा। घुड़सवार सेना और अन्य प्रकार की सेनाओं में कुछ-कुछ उपेक्षा वर्ती गई। किन्तु उन्होंने अपने दिमाग में एक ऐसी सेना की तस्वीर बनाई थी जिसमें अनुभव प्राप्त योद्धा हों। यह उनकी नीति का एक आवश्यक अंग था और यही कारण था कि लड़ाई के दौरान में वह इतने दुःखी रहा करते थे।

कांग्रेस तीसरी बात यह चाहती थी कि सेना-नायक इस प्रकार का हो, जिसकी सेना में बहुसंख्यक अल्पकालीन मिलिशिया के लोग, अनियमित-रूप से भाग लेते हों। कांग्रेस के मत में डाकुओं को भी, चाहे चैथम ने अपने विचार इस बारे में कैसे भी व्यक्त किए हों— भर्ती करने की छूट थी। कांग्रेस को ऐसा आदमी चाहिए था जो इस प्रकार की अस्थाई सेना को वश में कर सके और उनके विशेष गुणों का लाभ उठा सके। हमारे विचार में शायद यहीं कांग्रेस ने वाशिंगटन से जो आशाएं बांधी थीं, उन्हें पूरा करना उनके लिए सम्भव नहीं था। वह स्वभाव से अमेरिका की तात्कालिक परिस्थितियों के लिहाज से कुछ-कुछ जरूरत से ज्यादा 'योरोपियन मनोवृत्ति' के थे। उनके मिलिशिया के अनुभव, वर्जीनिया-सीमान्त की घट-

नाओं के समय से लेकर अब तक के लगभग सतत रूप से कड़ुवे थे। ऐसा इत्तफाक हुआ कि बंकर अथवा ब्रीड्स हिल से काउपेन्ज की मुठभेड़ों में, जिनमें मिलिशिया ने नाम पाया था, वह मौजूद नहीं थे। इसलिए उन्हें यह स्वीकार करने में झिझक थी कि मिलिशिया में कभी उत्तम गुण मिल सकते हैं। इस मामले में उनको पर्याप्त संभ्रम थे। वह प्रासंगिक स्थितियों को छोड़ कर लाल-कोट वर्दी वाले (अंग्रेज) सैनिकों को परेशान करने में रुचि नहीं रखते थे, बल्कि उन्हें इस बात में दिलचस्पी थी कि येन-केन प्रकारेण उन्हें जमे हुए रणक्षेत्र में बुरी तरह हराया जाये। यहाँ भी वह इतना कुछ कर सके, जितनी कि कांग्रेस को किसी भुलक्कड़ से आशा हो सकती थी।

वाशिंगटन निश्चय ही ऐसे कठोर अनुशासक नहीं थे, जो अमेरिका पर, अन्धाधुन्ध तरीकों से विदेशी नमूने का सैनिक आचार-व्यवहार थोपना चाहते हों। वह इस बात को भली भांति जानते थे कि अमेरिका की परिस्थितियों के लिए विशेष ढंग के, बल्कि अरूढ़िवादी, सैनिक-समाधान चाहियें। किन्तु वह इस प्रक्रिया को अधिक दूर नहीं ले जाना चाहते थे। जनरल की कार्य-विधि में वे कार्नवालिस से बहुत मिलते-जुलते थे। कार्नवालिस एक नियमित-रूप से प्रशिक्षित सैनिक अफसर था, जिसे सुप्रशिक्षित सेना के साथ रणक्षेत्र में लड़ने का अभ्यास था। वाशिंगटन के सामने भी ऐसा ही लक्ष्य था।

सम्पत्तिवान भद्रपुरुष, दोष रहित प्रधान सेनापति. गोरिल्ला लड़ाई में शूरवीर योद्धा—इन सब गुणों का समावेश कांग्रेस वाशिंगटन में चाहती थी। इनके अलावा कांग्रेस यह भी चाहती थी कि ऐसा अनुपम व्यक्ति एक नागरिक के रूप में अपने आपको समझे। उसकी यह भी ख्वाहिश थी कि इस प्रकार का प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध सेनापति, जहाँ तेरह भिन्न भिन्न और अर्ध स्वशासित राज्यों की नियमित सेना एवं मिलिशिया पर नियन्त्रण रखने के योग्य हो, वहाँ वह कांग्रेस की सर्वोच्च सत्ता के आगे हर्षपूर्वक नतमस्तक रहे।

आश्चर्य तो यह है कि नितान्त असम्भव अपेक्षाएं रखते हुए भी कांग्रेस जार्ज वाशिंगटन में लगभग वे सारी अभिवांछित बातें पा सकी। अतिरिक्त लाभ के रूप में उसे एक ऐसा आदमी मिल गया, जिसमें असाधारण दृढ़ता-स्थिरता थी। हमें इस बात की आशा नहीं कि बहुसंख्या में लोग फिट्स पैट्रिक द्वारा संकलित वाशिंगटन के लेखों का विशाल संस्करण आद्योपान्त पढ़ सकें। उस संस्करण में केवल युद्ध के समय से सम्बन्धित १०००० पृष्ठ हैं और जो उनमें दस्तावेज दिए गए हैं वे इतने सूक्ष्म विवरणों से भरे पड़े हैं और इनमें इतनी अधिक पुनरावृत्तियां हैं कि उन्हें पढ़ने के लिए मन में तीव्र इच्छा जागृत नहीं होती। तो भी, इस महापुरुष के स्वभाव को समझने के लिए इन पुनरावृत्तियों का अनुशीलन करना आवश्यक है।

इस पुस्तक में हम वाशिंगटन को सीधी-सादी भाषा में, जिसमें न तो रस है और न शब्दाडम्बर, न अभिमान की बात है और न ही क्षमा-याचना की ध्वनि, अपनी बात को बलपूर्वक और बार-बार कहते हुए देखते हैं। उनकी बात या तो सर्वमान्य होती है और या वह इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि उसके माने जाने की बिल्कुल सम्भावना नहीं। यह बात विशेष रूप से यहाँ लागू होती है जबकि वह युद्ध का अन्त करने वाले साधनों के विषय में, चाहे वे दूर भविष्य के ही क्यों न हों, लिखते हैं। विजय को अपना लक्ष्य मानते हुए उनकी दृष्टि उसी पर गड़ी रहती है। ब्रिटिश सेनापतियों के समान इस प्रकार की निराशाजनक भूल वह कभी नहीं करते थे कि अपने प्रमुख लक्ष्य को छोड़कर गौण लाभ को अपने सामने रखें। वह विशेष रूप से बहुत बड़े पैमानों पर युद्ध-चातुर्य नहीं चाहते थे (और सम्भवतः उनका विश्वास था कि इसे अमल में लाना उनका नहीं, प्रत्युत कांग्रेस का कार्य है)। सन् १७७५-७६ के कैनेडा के आक्रमण के बाद उन्होंने इस प्रकार की महत्त्वाकांक्षा-पूर्ण परियोजनाओं को कभी प्रोत्साहन नहीं दिया। इसकी बजाय उन्होंने उन बातों पर सारा ध्यान केन्द्रित किया, जो नितान्त आवश्यक थीं, जैसे—एक बड़ी सेना, इसके संचारण के उत्तमोत्तम

उपाय, राज्यों की ओर से अधिक शीघ्रतापूर्वक और उदारता से सेनाओं और युद्ध-सामग्री का भेजा जाना, ऐसी नौ-सेना, जो कम से कम, कुछ स्थलों में ब्रिटिश नौ-सेना से बाजी ले जाय, आदि-आदि। यार्कटाऊन की विजय के रूप में उन्हें बहुत देर के बाद अपने दीर्घकालीन प्रयत्नों का इनाम मिला।

साउथ कैरोलीना के डैविड रैम्जे ने १७८९ में 'अमेरिका क्रान्ति का इतिहास' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की। उसने उस पुस्तक में लिखा—'ऐसा विदित होता था कि युद्ध के कारण न सिर्फ सुयोग्य लोगों की आवश्यकता महसूस हुई, बल्कि उसके कारण सुयोग्य व्यक्ति बने भी।' यह बात जार्ज वाशिंगटन पर बिल्कुल ठीक बैठती है। लार्ड हो के सचिव एम्बरोसे सरले ने वाशिंगटन पर व्यंग करते हुए उन्हें सन् १७७५ में 'मिलिशिया का तुच्छ कर्नल' कहा था। किन्तु क्या उसे ऐसा समझना ठीक था? वाशिंगटन के आलोचक यह कहा करते थे कि वह अपनी (मानसिक और आध्यात्मिक) शक्तियों के लिहाज से इतना नहीं बढ़ा, जितना कि वह जनता के आदर और श्रद्धा के कारण ऊंचा उठा। परन्तु जब युद्ध का अन्त हुआ, तो उन्हीं लोगों को यह मानना पड़ा कि वाशिंगटन को जो प्रतिष्ठा-पद मिला, उन्होंने उसे शोभा और विनीत-भाव से सम्भाले रखा।

हम वाशिंगटन महोदय के व्यक्तिगत विकास की प्रक्रिया उन १० हजार सकुल पृष्ठों वाली पुस्तक से जान सकते हैं, जो फिट्स पैट्रिक महाशय द्वारा संकलित हुई। इन पृष्ठों में हम उनमें थोड़ी थोड़ी मात्रा में बढ़ते हुए भरोसे, सूझ-बूझ और चित-स्थिरता के चिन्ह पाते हैं। फ्रांसीसी अफसर जो संघर्ष की अन्तिम अवस्थाओं में उनके साथ शामिल हुए थे (जब कि वे पहले से काफी ज्यादा परिपक्व हो चुके थे), उनकी टिप्पणियां भी उनके बारे में इस प्रकार के विचार उद्घोषित करती हैं। वे टिप्पणियां उन्हें इस प्रकार का व्यक्ति जाहिर करती हैं, जो प्रायः सब ही के आदर का पात्र है—यहां तक कि कुछ लोग उनके लिए पूज्य भाव भी रखते हैं, जिसे

देखकर चाहे लोगों के मन प्रफुल्लित न भी होते हों, पर वे सुख का अनुभव अवश्य करते हैं; जो खिलाने-पिलाने में उदार है, किन्तु स्वयं पियक्कड़ नहीं है; जो सुन्दर और अच्छे सिले हुए कपड़े पहनता है, पर जिसमें तड़क-भड़क और दिखावा नहीं है; जो गर्वीला है, पर जिसमें मिथ्याभिमान की गन्ध तक नहीं है, अर्थात् जो तथ्य और पद दोनों के लिहाज से 'परम श्रेष्ठ' कहलाने योग्य है।

अमेरिका में केवल वाशिंगटन ही ऐसे व्यक्ति नहीं थे, जिनकी योग्यता का निर्माण आपातिक स्थिति के कारण हुआ था। सम्भव है कि होरेशो गेट्स जैसे सुयोग्य आदमियों को बदनाम करके उनकी ख्याति को अनुचित रूप से बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया हो। लोग कह सकते हैं कि यदि उनके आसन पर कोई दूसरा आदमी भी बिठा दिया जाता, तो उनके समान ही वह पर्याप्त रूप से परीक्षा में पूरा उतरता। उदाहरण के लिए यदि फिलिप्स स्कूलर को उनके स्थान पर नियुक्त किया जाता, तो सम्भव है कि वह अपने उच्च वंश के तौर-तरीकों और न्यूयार्क-सम्बन्धी प्रान्तीयता की भावनाओं से ऊपर उठ जाता, जिस प्रकार कि वाशिंगटन ने भी न्यू-इंगलैण्ड तथा अन्य उपनिवेशों के विरुद्ध अपनी प्रान्तीय पक्षपाती भावनाओं पर विजय पा ली थी। यदि नैथेनील ग्रीन, जो रोड-द्वीप का भयंकर जनरल था और जो बहुत वफादारी से लड़ा था, सेनापति की हैसियत में होता, तो सम्भवतः अपने देशवासियों को सन्तुष्ट कर सकता था। किन्तु यह विश्वास करना कठिन है कि बुद्धिमान, किन्तु रूखे, चिड़चिड़े और क्रोधी स्वभाव का चार्ल्स ली शत्रुओं के आक्रमणों को रोक सकता। पर शायद आर्टिमस वार्ड जिसे ली ने घृणा से 'गिर्जाघर की देखभाल करने वाला' कह कर मार्ग से हटा दिया था, नेतृत्व की योग्यता रखता था, किन्तु सन् १७७५ में एक ओर धकेल दिए जाने के कारण उसका यह गुण अभिव्यक्त नहीं हो सका था। यह भी समझ में आता है कि यदि बेनिडिक्ट आर्नल्ड अभिवांछित प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता, तो बजाय देश-विद्रोही बनने के अपने दोष को भस्मी-भूत कर देता। ये केवल अटकलपच्चू

बातें हैं। वास्तव में ध्रुव सत्य यह है कि कांग्रेस (और संयुक्त-राज्य अमेरिका) इस बात के लिए अपनी युक्ति-संगत आशाओं से भी अधिक सौभाग्यशाली रही कि उसने कर्नल वाशिंगटन को अपना प्रधान सेना-पति चुना। 'सुलभ' व्यक्ति, अपने छोटे-मोटे दोषों के बावजूद 'अपरिहार्य' व्यक्ति सिद्ध हुआ।

अध्याय ४

राष्ट्रपति वाशिंगटन

भगवान करे कि कृषक वाशिंगटन, सिनसिनेटस की भांति, हल जोतने के कार्य से हटाया जा कर महान् राष्ट्र का शासन करे !

(सन् १७८८ में, डिलावेयर स्थित विलिमिंगटन में ४ जुलाई को सम्पन्न समारोह में, 'टोस्ट' (स्वास्थ्य-कामना) पेश करते हुए की गई प्रार्थना।)

'अपने भीतर निवर्त्तमान होना'

जनरल वाशिंगटन की तीव्र इच्छा थी कि वह कृषि के काम पर वापिस लौट जाएं। वह भौतिक एवं अध्यात्मिक रूप से सैनिक जीवन से थक चुके थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था—उनके दांतों में सख्त तकलीफ थी। इसके बावजूद उन्हें नौ वर्षों तक भारी उत्तरदायित्वों का इकट्ठा बोझा ढोना पड़ा था। वास्तव में, जैसा कि उन्हें शीघ्र पता चल गया, वे सन् १७८३ के बाद निजी जीवन बसर करने वाले ऐसे नागरिक बने, जिन्हें फिर कभी सच्चा एकान्त-वास नसीब नहीं हो सका। अतः यह स्वाभाविक ही था कि वह शान्त जीवन का छोटा सा और उत्सुकतापूर्ण स्वप्न लें, वह कविता-मय ग्रामीण जीवन को अपने मस्तिष्क में ले आएं।

किन्तु इस ग्रामीण जीवन की छोटी सी कविता को परिस्थि-

तियों ने शीघ्र ही दबोच लिया। हां, इतना जरूर है कि हम उनकी इस कल्पना को उन पत्रों में अब भी देख सकते हैं, जो उन्होंने सन् १७७४ के आरम्भिक महीनों में लिखे थे। वर्जीनिया के इस स्वाभिमानी बागान-स्वामी ने उन पत्रों में माऊन्टवर्नन का उल्लेख करते हुए विचित्र विनम्रता का परिचय दिया था। तब उन्होंने इसे 'झोंपड़ी' और अपना 'देहाती घर' कह कर पुकारा था। इससे पूर्व कभी उन्होंने इन शब्दों में अपने विस्तृत भू-भाग का वर्णन नहीं किया। इस समय उन्होंने स्वयं को वैयक्तिक जीवन बसर करने वाला ऐसा अमरीकी नागरिक महसूस किया जो पोटोमिक नदी के किनारे पर अपना डेरा डाले हुए है और सैनिक कैम्प के भीड़-भड़ाके और राज-दरबार के षड्यन्त्रों से मुक्त होकर अपनी अंगूरों की बेलों और अंजीरों के पेड़ों की छाया तले रह रहा है।' उन्होंने स्वयं को एक ऐसा नागरिक महसूस किया जो 'अपनी अन्तिम घड़ी में पहुंचने तक जीवन की धारा के साथ-साथ धीरे-धीरे बहता चला जाएगा।' उनका कहना था—'मैं न केवल समस्त सार्वजनिक सेवा से निवृत्त हो चुका हूं, बल्कि मैं अपने भीतर निवर्त्तमान हो रहा हूं।'

सम्भवतः वह अर्द्धचेतना से सिनसिनेटस का भाग अदा कर रहे थे। उन दिनों बहुत से आदमी उस देशभक्त से उनकी तुलना किया करते थे और बात को इस ढंग से पेश करते थे कि जिससे यह प्रकट हो कि वह एक महत्त्वपूर्ण जागीरदार होने की अपेक्षा एक सरल व साधारण कृषक हैं। किन्तु उन्हें इस प्रकार के 'स्वप्न' लेने का अवसर अल्पकाल के लिए ही प्राप्त हो सका। यह देख कर कि उन्हें सेवा-निवृत्ति के तुरन्त बाद पर्याप्त अवकाश मिल जाएगा, उन्होंने कई पुस्तकों को खरीदने के लिए आदेश दे दिए। (इनमें कुछ पुस्तकें यात्रा की कहानियां थीं, जिनमें उनके दूसरे स्वप्न अर्थात् फ्रांस में जाने का संकेत मिलता है, जहां उन्हें लिफायट और अन्य लोगों द्वारा स्नेहपूर्ण स्वागत की आशा थी। परन्तु यह स्वप्न भी मिथ्या सिद्ध हुआ।) उन्होंने बिना कोई विशेष कारण बताए ट्रो गिरजा के अधिकार-क्षेत्र की प्रबन्ध-कारिणी सभा से त्यागपत्र दे

दिया। सम्भवतः उन्हें यह सदस्यता भी एक अन्य लघु 'सार्वजनिक सेवावृत्ति' लगी, जिससे छुटकारा पाना, उन्हें आवश्यक जान पड़ा। यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने वर्जीनिया के राजनैतिक क्षेत्र में प्रविष्ट होने की लेशमात्र कोशिश नहीं की, यद्यपि वह कहने मात्र से राज्य संविधान सभा में स्थान पा सकते थे। वे चाहते तो राज्य-पाल का पद भी प्राप्त कर सकते थे। अपवादरूप में उन्होंने केवल एक उच्च पद पर रहना स्वीकार किया और वह भी बिना किसी वेतन के। यह पद सिनसिनेटी सभा के प्रमुख प्रधान का था। यह सेना के पूर्वाधिकारियों की संस्मरण-संस्था थी, किन्तु वे न तो उस संस्था के संस्थापकों में से थे और न ही कभी उन्होंने यह चाहा था कि इसमें प्रमुख स्थान ग्रहण करें। उनकी तो केवल एक आकांक्षा थी कि जीवन के आगामी वर्षों में वह केवल अपने ही मामलों के प्रबन्ध में समय गुजारेंगे। कुछ मामले अपने आप में इतने विविधतापूर्ण और शक्ति और समय लेने वाले थे कि वाशिंगटन को यह विचार छोड़ना पड़ा कि उन्हें कभी फुर्सत भी मिल सकती है अथवा वह कभी एकान्त जीवन भी व्यतीत कर सकते हैं। शीघ्र ही वह उन तीन कामों में उलझ गए, जिनके लिए उनके हृदय में पहले से ही अत्यन्त उत्साह था। पहले काम का सम्बन्ध उनके माऊंट वर्नन वाले घर से था, जिस पर उन्हें उचित रूप से गर्व था। दूसरा कार्य कृषि से सम्बन्धित था। तीसरा काम पश्चिम की भूमियों के विकास के बारे में था। ये तीनों कार्य संकेन्द्रित-वृत्तों के समान घेरने वाले थे और इनके कारण उनकी युद्धोत्तर शान्ति की संक्षिप्त कल्पना अपना अस्तित्व खो बैठी थी।

सन् १७५७ में जब कि वाशिंगटन ने अपनी भू-सम्पत्ति के सुधार का बीड़ा उठाया था, उन दिनों माऊंट वर्नन सही रूप में झोंपड़ी ही थी। किन्तु सन् १७८३ में आकर इस भवन ने, अमेरिका के माप-दंड के अनुसार एक सुन्दर प्रासाद का, एक विशाल सम्पदा का रूप धारण कर लिया था। जो पर्यटक आज-कल उसे देखने के लिए जाते हैं, वे इसे निर्मल और प्रशान्त-रूप से पूर्ण पाते हैं। किन्तु

जब कई वर्षों के निर्वसन के बाद वाशिंगटन की दृष्टि माउंट वर्नन पर पड़ी, तो उन्हें यह अधूरे चित्र के समान लगा। अलंकार रूप में चाहे वह अंगूर की बेलों और अंजीर के पेड़ों की बात कहते हों, यह निश्चित बात थी कि जब तक वह उन्हें बो न दें और उन्हें पाल-पोस कर बड़ा न कर दें, तब तक वह उनके नीचे नहीं बैठ सकते थे। अतः अपने लौटने के बाद प्रथम मास में ही वह अपने भवन की चिमनियों की दशा सुधारने, भवन के बीच के खुले स्थानों के फर्श लगाने और अपने नए कमरे, 'भोज के हाल' के निर्माण के विषय में चिट्ठी-पत्री में व्यस्त हो गए। तब से उन्होंने माउंट वर्नन की जिस कदर देख-रेख की, उसके विवरणात्मक साक्ष्य के रूप में उनके पत्र व डायरी के संकुल पृष्ठ उपलब्ध हैं। उन्होंने इस कार्य के लिए अनुबद्ध-श्रमिकों को 'खरीदा'। ये लोग उन्हीं दिनों बढ़ई और राज के तौर पर काम करने के लिए जर्मनी से आए थे। उन्होंने अपने मकान के भीतर दीवारों पर कागज चिपकाए, किताबें रखने की अलमारियाँ बनवाईं और खिड़कियों में वेनिस के अंधक लगवाए। अपने घर से बाहर उन्होंने एक विशाल वनस्पति-कांच-घर बनवाया, सड़कें बिछवाईं, रास्ते व लान बनवाए और झाड़ियों के जंगल लगवाए। उन्होंने अपने बर्फ-घर का नए ढंग से निर्माण किया; एक हिरन-पार्क बनवाया, जिसके चारों ओर बाढ़ लगवाई और उसमें हिरन रखे; एक फलों का बगीचा बनवाया।

उस भवन और उन मैदानों के आगे माउंट वर्नन के पांच 'फार्म' अथवा बागान थे। (इनमें से कोई शब्द भी प्रयोग में लाया जा सकता है—वाशिंगटन इन दोनों शब्दों का प्रयोग करते थे, क्योंकि उन्होंने रुई तो नहीं बोई, परन्तु उसके स्थान में गेहूँ की पैदावार की, जिसे 'फार्म' की फसल कहा जाता है)। दूसरी ओर, उनके श्रमिक 'बागान' के दास कहलाते थे। वे कुल मिला कर कोई दो सौ थे (जिसमें बच्चे और बूढ़े दोनों ही शामिल थे)। चूंकि वाशिंगटन युद्ध से लौटने पर 'खाली हाथ' थे और उनके पास नकद रुपया-पैसा न था, अतः यह अत्यन्त आवश्यक था कि वह अपने

मामलों की ठीक व्यवस्था कर लें। कुछ इस प्रकार के प्रस्ताव आए कि उन्हें अमेरिका का प्रथम नागरिक होने के नाते कांग्रेस से विशेष भत्ता स्वीकार करना चाहिए, किन्तु आत्माभिमान के कारण उन्हें इन्कार करना पड़ा। व्यवहार-कुशलता का यह तकाजा था कि वह अपने पूरे दिल से खेती के काम में जुट जाएं। उनके सम्मान की भी यही मांग थी। इस मामले में वह तथा थामस जैफर्सन समान भाषा का प्रयोग करते थे—वह भाषा जिसमें बीजों, खाद तथा खेती के औजारों सम्बन्धी यथार्थ शब्दावलि आ जाती है। इन शब्दों के प्रयोग से भला यह बात कब छिपी रह सकती थी कि उन लोगों के हृदयों में खेती-व्यवसाय के लिए सामान्य-रूप से अनुपम अनुराग उमड़ रहा है। वाशिंगटन खेती द्वारा आजीविकोपार्जन को 'सर्वाधिक आनन्द' की वस्तु कहा करते थे। इसमें शक नहीं कि इस व्यवसाय में कठोर परिश्रम करना पड़ता था, इसमें निराशाएं भी मिलती थीं, फिर भी वाशिंगटन को असंदिग्ध रूप से यह पेशा बहुत प्यारा था। उन्होंने अंग्रेज कृषि-विज्ञ आर्थर-यंग से भी इस बारे में परामर्श लिए। उन्होंने यंग महोदय के द्वारा दिए गए विशेष विवरणों के अनुसार अन्न-भण्डार बनाया और बाहर से एक अंग्रेज कृषक मँगवाया, जो उनके बाग-बगीचों और खेती के कार्य की देख-रेख कर सके। उन्होंने नई किस्म के पशु पाले, विभिन्न फसलों तथा सस्यावर्त्तन की पद्धतियों से परीक्षण किए और भूमि-अपक्षरण को रोकने के लिए भारी प्रयास किए।

किन्तु वाशिंगटन को केवल माऊंट वर्नन का ही ध्यान नहीं था। उनकी पश्चिम की भू-सम्पत्ति बेकार सी थी—उसमें अत्यन्त अल्प परिमाण में फसल होती थी और उसका कोई लाभ नहीं हो रहा था। कुछ एक भागों को अनधिवासी घेर कर बैठे हुए थे। कहीं-कहीं अनधिकार रूप से कृषकों ने कब्जा कर रखा था और वे उन्हें उन भू-खण्डों का स्वामी मानने से इन्कारी थे। अतः सन् १७८४ की शरद् ऋतु में वह एक बार फिर एलघनीज के उस पार यह देखने के लिए चल पड़े कि वहां क्या परिस्थिति है। उन्हों

ने अपना पुराना मार्ग पकड़ा। उसके साथ उनकी बहुत सी स्मृतियां बंधी थीं, परन्तु वर्जीनिया की उपहार-स्वरूपप्राप्त भूमि को अनधिवासियों द्वारा घिरी देखकर उन्हें सन्तोष कहां मिल सकता था। अतः उन्होंने आगे यात्रा करने तथा अपने ओहियो तथा ग्रेट कनावा के दावों का निरीक्षण करने का ख्याल छोड़ दिया। यद्यपि आगे जाकर इस यात्रा के महत्वपूर्ण परिणाम निकले, किन्तु उनकी तात्कालिक जीवनचर्या को देखते हुए इस यात्रा का अर्थ था उनके माउंट वर्नन के प्रति निरन्तर कर्तव्यों में बाधा का पड़ना। वाशिंगटन को सन् १७८५ की ग्रीष्म ऋतु से पहले निजी सचिव नहीं मिला, जिसका परिणाम उनका एक शिकायत का पत्र था जो उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा:—

'मैं तुम्हें सच्चाई से यकीन दिला सकता हूं कि जितना मुझे आज-कल लेखनी-युद्ध करना पड़ रहा है मुझे लड़ाई के दिनों में किसी समय भी उससे आधा लिखना नहीं पड़ा। विदेशों से (अक्सर निरर्थक) पत्र आते रहते हैं। मुझ से डिक, टाम और हैरी के बारे में, जो आजकल वहीं होंगे और किसी समय संयुक्त-राज्य की नौकरी कर रहे होंगे, पूछताछ होती रहती है। अपने-अपने राज्यों से बाहर जाने वाले लोग मेरे से चिट्ठियां तथा नौकरी के प्रमाण-पत्र लेने आते हैं। अक्सर लोग मेरे पास परिचय-पत्र प्रतिलिपियों के लिये प्रार्थना-पत्र, सहस्रों पुरानी बातों के उल्लेख लेने के लिये जिन के कारण मुझे असुविधा में नहीं डाला जाना चाहिए, पहुंच जाते हैं। परिणामतः मुझे मुगल महान् से भी अधिक व्यस्तता रहती है, क्योंकि इन पत्रों का कुछ न कुछ उत्तर देना ही पड़ता है। इन व्यस्तताओं के कारण मैं सामान्य व्यायाम से भी वंचित रहता हूं। यदि इनसे मुझे राहत न मिली, तो मेरे स्वास्थ्य पर हानिकार प्रभाव पड़ने की सम्भावना है। मैं काम के इस बोझ को अभी महसूस करने लगा हूं और कई बार इसके कारण सिर-पीड़ा भी होने लगती है।'

लोग उनसे उधार मांगते थे; मित्र व पड़ोसी सदा मशविरा

लेने आते थे। उनकी अपनी अन्तरात्मा उन्हें विवश करती थी कि वह अपने सगे-सम्बधियों के कार्यों पर भी निगरानी रखें, क्योंकि ये कार्य सदा सफलतापूर्वक अथवा समझदारी से सम्पादित नहीं होते थे।

सिनसिनाटी सभा के कारण वाशिंगटन के सिर पर एक और बोझ आ पड़ा। ज्यों ही इस सभा का श्रीगणेश हुआ, त्यों ही अनेक राज्यों में इसके विरोध में आवाजें उठने लगीं। यह प्रधान के लिए एक क्लेशपूर्ण बात थी। जहां तक सभा के सदस्यों का सम्बन्ध है, वे इसे अवकाश-प्राप्त अनुभवी सैनिकों की संख्या समझते थे और इसमें किसी की हानि नहीं देखते थे। इन लोगों ने इसका सिन-सिनाटस पर नामकरण करके इसके शान्तिपूर्ण उद्देश्यों पर जानबूझ कर बल दिया था। किन्तु इसके विरोधी ऐसा नहीं मानते थे। सर्वोत्तम रूप में उनके लिए यह एक हास्यजनक, असभ्य लोगों का क्लब था (क्योंकि इसकी सदस्यता केवल अफसरों तक सीमित थी और उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होती थी)। निकृष्ट रूप में, उनके लिए यह बागी रईसों की आन्तरिक परिषद् थी। वाशिंगटन ने भरसक प्रयत्न किया कि विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया जाए, किन्तु इस सभा के कारण उन्हें निरन्तर आकुलता होती ही रही।

यह ठीक है कि वाशिंगटन लोगों में मिल-बैठ कर बहुत खुश होते थे, किन्तु उनकी संगति की भूख माऊंट वर्नन में ही शान्त होती थी। वह स्वयं और उनका घर—दोनों ही हर प्रकार के अतिथियों—पुराने परिचितों से लेकर कौतूहलपूर्ण विदेशियों तक—के मेल-मुलाकात का स्थान बन गया था। वे अतिथि उनके अतिथि-भवन को एक सप्ताह से दूसरे सप्ताह शरद् व ग्रीष्म में, भरे रखते। वे मनों के हिसाब से खाद्य-वस्तुएं खाते और गैलनों के हिसाब से शराब उड़ाते। एक बार सन् १७८५ की एक रात में वाशिंगटन, उनका परिवार और अनेक अतिथि गहरी नींद में थे, जबकि फ्रांसीसी मूर्तिकार, हौडन, के आने से उनकी जाग खुल गई। हौडन

वाशिंगटन का चित्र बनाने के लिए आया था। उसके लिए और उसके तीन साथियों के लिए किसी न किसी तरह ठहरने का स्थान मिल गया। जिन दिनों वे उनके अतिथि थे, उन्हीं दिनों में वाशिंगटन अपने एक कमरे की छत का एक भाग तख्ते जमा कर बनवा रहे थे। उनके मकान पर उन्हीं दिनों वाशिंगटन के भतीजे और हमनाम, जार्ज आगस्टीन, (जो लुण्ड वाशिंगटन के स्थान पर जागीर का प्रबन्धक नियुक्त हुआ था) और मार्था वाशिंगटन की भतीजी, फ्रांसिस वैसिट में विवाह सम्पन्न हो रहा था। माउंट वर्नन के इस घिरे हुए स्वामी ने १७८५ के जून मास में जाकर कहीं अपनी डायरी में लिखा—'श्रीमती वाशिंगटन के साथ भोजन किया। मेरा विश्वास है कि सार्वजनिक जीवन से निवृत्त होने के बाद यह पहला अवसर इस प्रकार का आया है।' किन्तु इस प्रकार का पृथकत्व उनके लिए दुर्लभ ही रहा।

किन्तु समग्र रूप में वाशिंगटन उन वर्षों में शायद उतने ही खुश रहे, जितने कि वह जीवन में कभी हो सके। चिट्ठी-पत्री कष्ट का कारण भले ही रही हो, परन्तु उन्हें संसार के कोने-कोने से जो उपहार-भेंट के रूप में प्राप्त होते थे, उन से उन्हें अवश्य सन्तोष मिलता होगा। स्पेन के बादशाह ने उन्हें गधा उपहार-स्वरूप भेजा। मजाक में वाशिंगटन ने इस पशु का नाम रखा—'शाही उपहार'। अश्वशाला में भी वह उसके मन्दगति से किए कामों पर हँसी-मजाक उड़ाया करते थे। एक अंग्रेज प्रशंसक ने उन्हें संगमरमर की अंगीठी भेंट की। एक फ्रांसीसी ने उन्हें शिकारी कुत्तों का समुदाय भेजा। एक युरोपियन भद्र-पुरुष ने वाशिंगटन से उनका बड़ा चित्र मांगा, ताकि वह उसे सैनिक वीरों के कक्ष के अन्तर्गत शामिल कर सके। उन्होंने भी एक बार इसी तरह का संग्रह करने की असफल कोशिश की थी। उसे याद करते हुए (यदि उन्हें याद था तो) वाशिंगटन महसूस करते होंगे कि वर्जीनिया की मिलिशिया का कर्नल अन्त में अपने कार्यों का उचित फल पा रहा है। धीरे-धीरे उन्होंने उनकी हानि-पूर्ति अन्य विधियों से भी हुई।

दैनिक कामों को इस ढंग से व्यवस्थित किया कि अपने अतिथियों की उपेक्षा किए बिना वह अपने कामों को पूरा कर सकें। व्यायाम करने के लिए वह प्रतिदिन घुड़सवारी करते हुए अपने 'फार्मों' पर चक्कर लगाया करते। सर्दी के महीनों में लोमड़ी के शिकार का आनन्द उठाते। उन्हें इस बात की बहुत खुशी थी कि माऊंट वर्नन उस शोभा और सौन्दर्य को प्राप्त कर रहा है जिसकी उन्होंने योजना बनाई थी। अनुरूप विवाह के कारण भी उनका जीवन सुख-चैन से कट रहा था (यद्यपि अतिथि-गण कभी-कभी जनरल वाशिंगटन के व्यवहार में कठोरता और तीखापन पाते थे, परन्तु मार्था के मधुर स्वभाव की वे सभी प्रशंसा कर लिया करते थे)। इनके अलावा छोटे बच्चों के कारण उन्हें नया उत्साह प्राप्त होता रहता था। ये छोटे बच्चे जैकी कस्टिस की सन्तान थे और इनमें से दो को वाशिंगटन ने उस समय गोदी में लिया था जब इनकी माता ने पुनर्विवाह किया।

इस सब से बढ़कर उन्हें जिस तीसरी चीज के प्रति अत्यन्त अनुराग था, वह थी देश के यातायात को सुगम-सुलभ करने की बात। सन् १७८२ में उन्होंने शान्ति-स्थिति से लाभ उठाते हुए न्यूयार्क के उत्तरीय भाग की यात्रा की और वहां भूमि का एक टुकड़ा खरीदा। वह अब भी वर्जीनिया और उत्तर कैरोलीना के मध्य में स्थित डिस्मल स्वैम्प में दिलचस्पी रखते थे और इनके अलावा घर के अधिक पास और भी उत्साहपूर्ण लाभ की सम्भावनाएं थीं। वास्तव में सन् १७८४ की उनकी पश्चिमी यात्रा का एक यह भी उद्देश्य था कि इन सम्भावनाओं की जांच की जाय। वह इस दृढ़ विश्वास के साथ वापिस लौटे कि वर्जीनिया और पश्चिमी भाग को जल द्वारा एक दूसरे से मिलाया जा सकता है और मिलाया जाना चाहिए। पोटोमैक नदी के ऊपर का भाग बहुत दूर तक नौगम्य था और एक अल्प पत्तन-द्वार उसे ओहियो-नदी के संस्थान के मुख्य भाग से अलग करता था। इसमें आवश्यक सुधार हो जाने पर (इनमें मुख्य सुधार पोटोमैक प्रपात के गिर्द

नहर का बनना था), जो जबरदस्त और नित्य-प्रति बढ़ने वाला यातायात उनके घर के आगे से होकर नए राजपथ पर चलेगा, उसका चित्र उनकी आंखों के आगे घूम गया। उनके विचार में इस प्रकार का सम्बन्ध हो जाने का यह असर हो सकता था (जिस का उल्लेख उन्होंने अपनी डायरी में एक लम्बी लिखावट में किया है, जो किसी प्रविवरण का प्रथम प्रारूप मालूम होता है) कि वाणिज्य बढ़ेगा, देश का पिछड़ा हुआ भाग आबाद होगा (जिसके कारण एलघनी के पार की जमीनों के स्वामी बहुत फायदे में रहेंगे) और अन्त में, किन्तु महत्व में किसी से भी न्यून नहीं, आन्तरिक भागों के लोग संयुक्त-राज्य के साथ बंध जाएंगे। यदि ऐसा न हुआ तो सम्भव है कि वे लोग, जो पहले से ही अधीर हो रहे थे, स्पेन और ब्रिटेन की चालों में फँस जायें। कारण यह कि ओहियो घाटी की तरफ के मिसिसिपी और ग्रेट लेक्स के बाह्य मार्ग इन दोनों देशों के नियन्त्रण में थे।

वाशिंगटन ने इस योजना पर जितना अधिक सोचा, उतनी ही वह उन्हें अधिक पसन्द आई। इस बात को महसूस किए बिना कि उनकी हिम्मत उन्हें कहाँ पहुँचाती है, वाशिंगटन ने योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए कदम उठाने आरम्भ कर दिए। अमेरिका के मध्य के राज्यों में इन योजनाओं पर यत्र-तत्र चर्चाएं हो चुकी थीं। जेम्स नदी के मार्ग की बात-चीत भी चल
पोटोमेक नदी के अधिकार वर्जीनिया और मे
के
इसलिए भय था कि कहीं स्थानीय ईर्ष्या-
हो जाए। किन्तु दीर्घतापूर्वक काम
प्रतिष्ठा से लाभ उठाते हुए वाशिंग
मार्च में दोनों राज्यों की संविधान स
की। वर्जीनिया के आयुक्त होने के न
से मिले। इसके परिणाम स्वरूप पोट
हुई। न मानते हुए भी वाशिंगटन
यह कम्पनी दोनों राज्यों की संरक्षता

ने ही इसकी सहायता करने का जिम्मा लिया। बाद में जेम्ज नदी कम्पनी का भी निर्माण हुआ।

पोटोमैक आयुक्तों ने सन् १७८५ के वसन्त में माऊंट वर्नन में आकर अपने सम्मिलित इकरार-नामे को पुष्ट किया। इस सुझाव का भी साधारणतया स्वागत हुआ कि मेरीलैण्ड और वर्जीनिया के प्रतिनिधि भविष्य में प्रतिवर्ष एक बार मिला करें। शनैः शनैः इस विचार में विस्तार हुआ। जनवरी १७८६ में वर्जीनिया की संविधान-सभा ने संघ के राज्यों को लिखा कि वे अपने-अपने आयुक्तों से सलाह-मशविरा लें और व्यापार और वाणिज्य के सम्बन्ध मे सामान्य दिलचस्पी के मामलों का सिंहावलोकन करें। इस तजवीज का असर यह हुआ कि एनापोलिस में सितम्बर १७८६ में, एक सम्मेलन हुआ, जिसमें पांच राज्यों ने (जिनमें वर्जीनिया भी था) अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे। इनमें से एक वर्जीनिया के प्रतिनिधि जेम्ज मैडीसन ने अपने प्रतिवेदन में सिफारिश की कि एक और सम्मेलन सन् १७८७ के मई मास में फिलेडैल्फिया में बुलाया जाये। इसमें, जैसा कि सर्व-विदित है, नया संविधान बना। इस नए संविधान में संयुक्त-राज्य के लिये राष्ट्रपति की तजवीज हुई। तदनुसार जार्ज वाशिंगटन को इस पद पर आसीन किया गया।

नए संविधान की ओर

वाशिंगटन के कुछेक अतिशय-प्रशंसा करने वाले जीवनी-लेखकों ने उनके जीवन-कार्यों को इस ढंग से पेश किया है कि मानो वे यथार्थ रूप में अपने जीवन-काल के सम्पूर्ण अमेरिकन इतिहास के पर्यायी हों। उन्होंने हर घटना में उन्हें केन्द्रीय स्थान दिया है। उनकी जीवन-कहानी को पीछे ले जाते हुए उन्होंने परिस्थितियों की सीधी कारणात्मक शृंखला देखी। यह शृंखला सन् १७५३ में वाशिंगटन के लेवाफ के संदेश से आरम्भ होकर पोटोमैक कम्पनी की राजनीतिज्ञ-सदृश योजना तक और फिर सन् १७८९ में उनके राष्ट्र-पति के गौरवास्पद पद पर आरूढ़ होने तक चली गई। इन लोगों मे घोषित किया कि देखिये, वाशिंगटन अपने राष्ट्र के पिता हैं,

कि वे उनकी 'भावनाओं और विचारों' की उपेक्षा करते हैं, यद्यपि वह उन्हें अन्तिम वसीयतनामे के रूप में इन्हें गम्भीरता-पूर्वक समय समय पर देते रहे।' उन्होंने इस गहराई से अमेरिका के साथ अपना समीकरण कर लिया था। उनकी एवं अमेरिका की कीर्ति सघन रूप से आपस में जुड़ी हुई थी और यह बात देख कर उनके दिल को चोट लगती थी कि अमेरिका विदेशियों के सामने आपसी फूट का तमाशा दिखाए। ब्रिटिश प्रतिक्रियाएं उन पर विशेष रूप से प्रभाव डालती थीं। वह अपने शत्रु, अंग्रेजों से, जिन्हें उन्होंने युद्ध में परास्त किया था, इसलिए स्वाभाविक रूप से खीझे हुए थे, क्योंकि संधि की शर्तों के अनुसार वे भिन्न-भिन्न पश्चिमी चौकियाँ खाली करने से इन्कारी थे। उन्हें यह बात भी चुभ रही थी कि कई एक अमेरिका के राज्य संन्धि-पत्र का पालन नहीं कर रहे थे, जिससे कि अंग्रेजों को उस समय शर्तें न मानने का बहाना मिल रहा था।

किन्तु जे को लिखा गया पत्र सन् १७८६ की गर्मियों में भेजा गया। इससे वाशिंगटन के विगत दो वर्षों के दृष्टिकोण की सही तौर पर जानकारी नहीं मिलती। उस समय वह किसी उलझन में नहीं पड़ना चाहते थे। भले ही उनकी तुलना कैटो से अथवा सिनसिनेटस से की गई हो, उन्होंने अपना कर्त्तव्य निभा दिया था और अपने विचार व्यक्त कर दिए थे। इस समय वे एक दर्शक के तौर पर थे और उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि वह अपने जीवन के शेष साल अपनी निजी सम्पत्ति के सम्मेलन में लगाएंगे। यद्यपि उनके अपने सीधे उत्तराधिकारी नहीं थे, किन्तु वर्जीनिया के अन्य शासकों की तरह उनमें सम्पत्ति-संचय का उत्साह मन्द नहीं पड़ा था। यह सत्य है कि उनमें अमरीका की वास्तविक अथवा सम्भाव्य राष्ट्रीयता के प्रति अन्य बहुत से लोगों की अपेक्षा अधिक तीव्र भावना थी। किन्तु यह ध्यान देने योग्य बात है कि पोटोमैक-योजना के प्रति उनमें (अमरीकन होने के नाते नहीं, अपितु) वर्जीनिया वासी होने के नाते गर्व की भावना भरी थी। इस योजना की सिफारिश मूलतः एक दूसरे वर्जीनियावासी, जैफर्सन, ने की थी और

जब वाशिंगटन ने उसकी बाग डोर अपने हाथों में ली, तो शुरू-शुरू में उन्होंने उस पर राष्ट्रीय भावना से नहीं, बल्कि प्रादेशिक भावना से प्रेरित होकर विचार किया था। उत्तर में रहने वाले परिचितों को लिखते हुए उन्होंने ब्रिटेन का कड़ा विरोध करने की तुरन्त आवश्यकता पर जोर दिया जबकि अपने क्षेत्र के लोगों को लिखते हुए उन्होंने बताया कि उन्हें समान रूप से न्यूयार्क के लोगों की प्रतिद्वन्द्विता की चिन्ता है कि कहीं वे हडसन नदी द्वारा अपने राज्य के अन्दर तक का मार्ग न बना लें।

हमारे कहने का तात्पर्य यह कदापि नहीं कि वाशिंटगन अपने व्यवहार में ईमानदार नहीं थे, किन्तु हमारा आशय यह है कि सन् १७८४-१७८५ में उनकी विचारने की प्रणाली संयुक्त-राज्य अमेरिका के नागरिक होने के नाते नहीं थी। उन्हें अपने (वर्जीनिया) राज्य पर गर्व था, किन्तु उनका इस प्रकार गर्वित होना सम्पूर्ण अमेरिका के हितों के विरुद्ध नहीं था। परन्तु कुछ काल के लिए ये हित भी उनकी नजरों से ओझल हो गए थे। उस समय उनकी कल्पना पर इनका प्रभुत्व नहीं था। उनके मित्र, जो कांग्रेस के सदस्य थे, चिट्ठी-पत्री द्वारा उनके सम्पर्क में रहा करते थे, उनका फूला हुआ डाक का थैला संयुक्त-राज्य के बहुत से भागों—मैसाचूसैट्स से जार्जिया तक—के हालात के बारे में समाचार लाया करता था। किन्तु कांग्रेस के अधिवेशन दूर-दूर लगते थे, क्योंकि उसके स्थान बदलते रहते थे। कांग्रेस अन्नापोलिस से ट्रैंटन गई। वहां से उसे न्यूयार्क ले जाया गया।

वाशिंगटन अपनी घरेलू व्यस्तताओं में फंसे हुए थे। उनकी यह इच्छा थी कि वह सेवा-निवृत्त जीवन के आचार-व्यवहार को बनाए रखें। पत्र-लेखक उन्हें जो भी लिखते, उसका वास्तविक अभिप्राय क्या है—इस बारे में वह निश्चय से जान नहीं पाते थे। इसके अलावा वह आपसी फूट से तंग आ चुके थे। इस कारण जो भी सम्मतियां वाशिंगटन प्रगट करते थे, वे भविष्यवक्ता की तरह अस्पष्ट रहती थीं। जान जे, हेनरी ली और जेम्ज मेडीसन सरीखे

आदमी थे जिन्होंने नई ढंग की सरकार बनाने के लिए अपने आपको (यद्यपि सतर्कतापूर्वक) वचनबद्ध कर लिया था। ये लोग थे जिन्होंने इस विषय में नेतृत्व किया। वे इस काम में वाशिंगटन की मदद चाहते थे। उनकी कलम या दिमाग की नहीं, बल्कि उनके यशस्वी नाम की। अमरीकियों के लिए वाशिंगटन विजय और ईमानदारी के प्रतीक थे, किन्तु इस समय वह, जहां तक नई राष्ट्रीय सरकार बनाने का प्रश्न था, अग्रणी लोगों में नहीं थे।

अत: जे ने उन्हें मार्च १७८६ में लिखा—'क्या आप एक तटस्थ दर्शक की तरह' अमेरिका को विघटित होते हुए देख सकेंगे ?' आगे सुझाव देते हुए उसने लिखा— 'आज यह राए बनती जा रही है कि प्रसंघान की धाराओं के पुनरीक्षण के लिए साधारण सम्मेलन बुलाया जाना उचित रहेगा।' एक मास बाद इसका उत्तर देते हुए वाशिंगटन ने सहमति प्रगट की कि देश का 'ढांचा' 'डगमगा' रहा है, किन्तु उन्होंने सतर्कतापूर्ण सामान्यताओं तक अपने आपको सीमित रखा।

हमारा यह आशय नहीं कि वाशिंगटन पर यह आरोप लगाया जाए कि वह मूर्ख अथवा अनुत्तरदायी थे। हम केवल इस बात पर बल दे रहे हैं कि उनके पास कोई तैयार-शुदा समाधान नहीं था। अमेरिका को खेतिहरों और व्यापारियों का समुदाय समझने की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि उस समय यह देश समृद्ध था। कांग्रेस भी बिलकुल अनुपयुक्त (अथवा अवैध) नहीं थी, बल्कि उस देश की वैध सरकार थी।

प्रश्न यह था कि यदि कांग्रेस अपना सुधार स्वयं करने को तैयार नहीं भी थी, तो क्या उस पर किसी अस्थायी सम्मेलन द्वारा वैध रूप से सुधार लादे जा सकते थे? लोग इस बारे में क्या करेंगे ? राज्य इस बारे में क्या विचार प्रगट करेंगे ? दूसरी तरफ प्रसंघान की धाराएं ऐसी थीं जो व्यवहार में सुदृढ़ राष्ट्रीय सरकार के निर्माण में सहायक सिद्ध नहीं हो सकती थीं। राज्य भयंकर-रूप से कांग्रेस से उदासीन थे और एक दूसरे के प्रति वैर-विरोध रखते

थे। अतः यह जरूरी मालूम होता था कि कुछ न कुछ किया ही जाय।

जो लोग सक्रिय रूप से वाद-विवाद में उलझे हुए थे, उनसे कुछ पीछे रह कर चलते हुए, जैसा कि उन्होंने सन् १७७५ से पूर्व किया था, वाशिंगटन धीरे-धीरे अपने विचारों को व्यवस्थित करने लगे। इस प्रकार १ अगस्त, १७८६ के दिन उन्होंने तीन पत्र लिखे। दो पत्र उन्होंने फ्रांस भेजे—एक शिवेलियर डीला लुजरने को और दूसरा अमरीकी मन्त्री, थामस जैफ़र्सन को। तीसरा पत्र उन्होंने न्यूयार्क में जे को लिखा। पहले दोनों में जहां प्रसन्नता ध्वनित होती थी, वहां तीसरा पत्र संकट की आशंकाओं से भरा हुआ था। यह अन्तर क्यों? उसका बड़ा कारण यह था कि वाशिंगटन यह नहीं चाहते थे कि अमेरिका को विदेशों में अपयश मिले, यहां तक कि उन्होंने अपने परम मित्र लिफायट के सामने भी अमेरिका का आशाजनक चित्र पेश किया। एक दूसरा छोटा सा कारण यह भी हो सकता है कि वह स्वयं अभी तक अपना कोई एकमत नहीं बना पाए थे और इसलिए अलग-अलग पत्र-लेखकों के साथ उनमें अलग-अलग प्रतिक्रिया होती थी। इसलिए उन्होंने निराशावादी जे को लिखते हुए स्पष्टता-पूर्वक स्वीकार किया कि 'मैं एक तटस्थ दर्शक की भांति अपने आपको महसूस नहीं करता—मैं आपके विचारों से कि हमारा देश द्रुतगति से संकट की ओर बढ़ रहा है, बिल्कुल सहमत हूँ।'

वाशिंगटन की नजरों में यह संकट मैसाचूसेट्स के राज-विद्रोह के रूप में सन् १७८६ की शरद् में प्रकट हुआ। यह उस पिछड़े हुए प्रदेश के असन्तुष्ट लोगों की निरर्थक और असफल बगावत थी। किन्तु यह विद्रोह और जिस ढंग से इसको दबाया गया—दोनों ही वाशिंगटन को बहुत गहरी अव्यवस्था के सूचक प्रतीत हुए। उनके इस विषय में लिखे गए पत्रों में आलंकारिक भाषा का अभाव है। गुस्से और घबराहट में वह चिल्ला उठे—'क्या आपके लोग पागल हो चले हैं?' इस सबका कारण क्या है? कब और कैसे इसका अन्त होगा?—यह गड़बड़। भगवान बचाए! किसी 'टोरी'

अथवा ब्रिटेन के सिवाए कौन ऐसी घटनाओं की-भविष्य-वाणी कर सकता था ?—दयालु भगवान् ! आदमी भी क्या चीज है ? उसके व्यवहार में इतनी अधिक असंगति और इतना अधिक छल-कपट पाया जाता है !—ऐसा लगता है कि हम शीघ्र ही अराजकता और गड़बड़ी की ओर लुढ़क रहे हैं।'

अब प्रश्न यह था कि वह क्या करें ? महीनों वह चिंताग्रस्त और झिझक में रहे। उन्हीं दिनों अन्य अमरीकियों ने, जो अधिक सक्रिय थे, मई १७८७ में फिलेडेलफिया सम्मेलन की आधार-भित्ति स्थापित की। वाशिंगटन के दिमाग में यह प्रश्न बार-बार उठता था कि क्या उन्हें वर्जीनिया का प्रतिनिधि बन कर सम्मेलन में शामिल होना चाहिए ? उन्हें अनुरोध-पूर्वक कहा गया कि वह इस विषय में घोषणा करें। कांग्रेस ने जब १७८७ के आरम्भ में इस सम्मेलन को आशीर्वाद दिया, तो उनकी एक आकुलता जाती रही। किन्तु अनेक संशयों के कारण वाशिंगटन का बुरा हाल था। वह आयु में पचपन वर्ष के हो चुके थे और वातरोग के कारण अपनी आयु से अधिक उम्र के लगने लगे थे। उनके पास नकद रुपये की कमी थी। उन्होंने पहले से ही सिनसिनाटी की त्रिवर्षीय बैठक में उपस्थित होने से इन्कार कर दिया था। यह बैठक भी फिलेडेलफिया में ही होनी निश्चित थी और उसका समय भी वही था। अब वह कैसे कहें कि उनके वहाँ न उपस्थित होने का कोई ठोस कारण नहीं था, बल्कि एक बहाना-मात्र था ? सबसे बड़ी बात यह थी कि वाशिंगटन ऐसे सम्मेलन में शामिल होने से झिझकते थे जो सितम्बर १७८६ में सम्पन्न एन्नापोलिस सम्मेलन की तरह अशक्त सिद्ध हो। उन के विचार में यदि उत्तर के राज्यों के प्रतिनिधि एन्नापोलिस सम्मेलन की तरह यहाँ भी अलग अलग रहे, तो फिलेडेलफिया के प्रतिनिधि कुछ कर नहीं पाएंगे। बात इससे भी ज्यादा बिगड़ सकती है। हो सकता है कि वे सम्मेलन के उद्देश्य को ही क्षति पहुंचाएँ। इससे न केवल उन के देश को नुकसान पहुंचेगा, बल्कि उन की कीर्ति भी संकट में पड़ जायगी।

अतः वाशिंगटन किसी षड़यन्त्र या दिखावे में हिस्सा लेना नहीं चाहते थे।

वाशिंगटन का सबसे प्रथम जीवन-लेखक, डागलस साउथहाल फ्रीमैन का यह विचार है कि इस समय का उन का व्यवहार अप्रिय-रूप से स्वार्थ-पूर्ण था। यदि उनका ख्याल था कि अमरीका पर संकट के बादल उमड़े हुए हैं, तो फ्रीमैन आश्चर्य करता है कि इसे बचाने के लिए वह जल्दी से क्यों आगे नहीं बढ़े? हमारे विचार में यह निर्णय अनुचित-रूप से कड़ा है। वाशिंगटन के बारे में जो हम अधिकाधिक कह सकते हैं वह यह कि वह भी तो आखिरकार एक मानव ही थे। वह कोई ऐसे देशभक्त नहीं थे जो सरकार की नौकरी में बंधे हुए आदर्श और स्थायी अफसर हों? इस समय उनके प्रयोजन भले ही वीरोचित न हों, किन्तु वे प्रयोजन हमारी समझ में आ सकते हैं। फिर भी उनके इस व्यवहार पर आश्चर्य होता है। क्या अतिशय विनम्रता कभी अपने से विरोधी गुण-अत्यधिक अभिमान-का रूप भी धारण कर सकती है? क्या उनके मामले में ऐसा ही हुआ?

सम्भवतः यही बात हो। आवश्यक तथ्य यह है कि वाशिंगटन ने अन्त में यह फैसला कर लिया कि वह फिलेडेल्फिया जाएंगे। वह वहाँ मई के आरम्भ में पहुंच गए। उन्हें अन्य प्रतिनिधियों की सर्वसम्मत इच्छा से सम्मेलन का प्रधान चुना गया। वह थकाने वाली युक्तियों और वाक्चातुर्य के प्रदर्शनों के बीच में सितम्बर के मध्य में सम्मेलन की समाप्ति तक प्रधान के आसन पर विराजमान रहे। उस से पहले अगस्त में एक लम्बे अर्से के लिए बैठक स्थगित हुई थी। वाशिंगटन इस अवकाश का लाभ उठाते हुए वैलीफोर्ज तथा ट्रेंटन नगर देखने चले गए थे। यह वही स्थान था जहाँ एक बार उन्होंने गत लड़ाई के दिनों में अपना कैम्प लगाया था। यहीं पर उन्होंने हेसियन सेना पर अचानक धावा बोला था। निस्सन्देह इस बीच की अवधि के कारण उन में ताजगी आ गई थी। यह भी निश्चय के साथ कहा जा सकता है

के कारण इसके सदस्य अन्य राज्यों की अपेक्षा संख्या में अधिक होंगे — उदाहरण के लिए दस। इसके मुकाबले में रोड-द्वीप का एक ही प्रतिनिधि होगा।

नए संविधान में जहां हर राज्य को कुछ सीमा तक अपने शासन-सम्बन्धी कामों में स्वतन्त्रता होगी, वहां (वाशिंगटन प्रसन्न थे कि) इसके कारण संघानीय शासन अधिक शक्तिशाली बनेगा। व्यवहार में इसे वे सब शक्तियां प्राप्त होंगी जो अब तक कांग्रेस के पास सिद्धान्त रूप में थीं। इनके अतिरिक्त इसे नई शक्तियां भी मिलेंगी। संविधान के अनुसार संघानीय शासन इस योग्य होगा कि विदेशियों के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बना सके, लगान और कर वसूल कर सके, और साधारण रूप में कानून पर चलने वाले किसी भी अमरीकन के लिए सुविधाएं पैदा कर सके — चाहे वह अमरीकन बाग-बगीचों का स्वामी हो, उद्योगपति हो अथवा व्यापारी हो।

सितम्बर मास में सम्मेलन भंग होने पर वह अपनी गाड़ी में सवार हो कर माऊंट वर्नन वाले घर को इस विश्वास के साथ लौटे कि उन्होंने अपने कर्तव्य को ठीक ठीक निभा दिया है। उनका गृह-भवन इस समय लगभग पूर्ण हो चुका था। अन्तिम कार्य के रूप में, एक लोहे की बनी शान्तिसूचक फाख्ता माऊंटवर्नन के गुम्बद पर वायु-दिशा-दर्शक के तौर पर लगाई जा रही थी। किन्तु नया संविधान अभी तक अपूर्ण ही था, क्योंकि अभी इसे राज्य-सम्मेलनों द्वारा सम्पुष्ट होना था और अमल में लाया जाना था। वाशिंगटन का जीवन एक नए दौर में आया। उन्हें इस समय भी लगभग उतना ही क्लेश और अनिश्चितता थी, जितनी कि उन्हें फिलेडेल्फिया चलने से पूर्व मासों में थी। नए संविधान का समर्थन करने के लिए वह वचनबद्ध थे। इस हेतु जो उनसे बन पड़ा, उन्होंने किया। वर्जीनिया राज्य में उनके अपने प्रभाव ने संविधान सम्पुष्ट कराने में मदद दी। किन्तु जब एक के बाद दूसरे राज्य से विरोध आते गए, तो वह विकल हो उठे। फिलेडेल्फिया के प्रतिनिधियों पर यह आरोप लगाया गया (और इसमें

कुछ सचाई भी थी) कि वे राज्यों द्वारा दी गई हिदायतों की सीमा से आगे बढ़ गए है। वे गुप्त रीति से इकट्ठे हुए और उन्होंने तब तक अपने निर्णयों की घोषणा नहीं की जब तक कि बैठक भंग न हुई। अतः ये प्रतिनिधि षड़यन्त्रकारी, रईस लोग थे। वे अत्यन्त शीघ्रता में थे, इसलिये एक और सम्मेलन होना चाहिए, जिसमें पहले सम्मेलन की तजवीजों का पुनः निरीक्षण हो। इस प्रकार की युक्तियां थीं जो संविधान-निर्माताओं का विरोध करते हुए दी गईं। रैडीकल सिद्धान्त रखने वाले रोड-द्वीप ने फिलेडैलफिया के लिए कोई प्रतिनिधि नही भेजा। अन्य कई राज्यों में संविधान की सम्पुष्टि सन्देहजनक प्रतीत हो रही थी। इन संस्थापक-पिताओं (अथवा नैया को मंझधार में डालने वाले पिताओं) की आलोचना करने वाले केवल ऋणी और कागज की मुद्रा रखने वाले लोग ही नहीं थे। अच्छी स्थिति के असन्तुष्ट लोग भी विरोध करने वालों में से थे। इनमें न्यूयार्क के राज्यपाल, क्लिंटन, मैसाचूसैट्स के राज्यपाल, जान हैनकाक तथा वाशिंगटन के अपने राज्य के पैट्रिक हैनरी, रिचर्ड हैनरी ली, एडमण्ड रैण्डोल्फ, यहां तक कि उनके पुराने मित्र और पड़ौसी, जार्ज मेसन, के नाम उल्लेखनीय हैं।

संविधान के अभिस्वीकरण के लिए यह आवश्यक था कि तेरह में से नौ राज्य इसका अनुमोदन करें। जनवरी १७८८ तक पांच राज्यों ने इसे सम्पुष्ट किया। फरवरी में मैसाचूसैट्स बहुमतों के अत्यल्प अन्तर से अनुमोदकों में शामिल हो गया। उस पर संघान-वादियों की इस सूचना का प्रभाव पड़ा कि उसके राज्यपाल, हैनकाक, को सम्भवतः नई सरकार का उप राष्ट्रपति बनाया जायगा और यदि वर्जीनिया संविधान का अनुमोदन नहीं करता और इस प्रकार वाशिंगटन मैदान से हट जाते हैं तो उसके राष्ट्रपति बनने की भी सम्भावनाएं है। हैनकाक को इस प्रकार अपने पक्ष में कर लिया गया। केवल इतना ही नहीं, उसने एक मूल्यवान सूत्र प्रस्तुत किया, जिसका अनुसरण शेष राज्यों ने भी किया। वह सूत्र यह था कि मैसाच्यूसैट्स इस शर्त पर संविधान को स्वीकार करता है कि जो भी कोई आप-

तियाँ इस दस्तावेज के विरुद्ध उठाई जाएं, उनके आधार पर बाद में संशोधन मान लिए जायें। ये संशोधन एक प्रकार से अधिकारों के विधेयक के रूप में होंगे। ये उसी तरह के होंगे जिस प्रकार के विधेयक भिन्न-भिन्न राज्यों के संविधानों में शामिल किए जा चुके हैं।

कुछ समय बाद दो और राज्य सम्मिलित हो गए। इस प्रकार कुल जोड़ आठ का था और वर्जीनिया, जो सबसे अधिक छान-बीन करने वाला राज्य था, जून मास के अन्त में घोर संघर्ष के बाद शामिल हुआ। एक और भी अच्छी बात हुई। वर्जीनिया में यह सुनने में आया कि न्यूहेम्पशायर ने पहले से ही संविधान को स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार दस राज्य संविधान के पक्ष में हो गए—अर्थात् आवश्यक न्यूनतम संख्या से एक अधिक। अलैक्जैण्डर हैमिल्टन और उसके दूसरे उत्साही संविधानीय शासन के विचारों के लोगों ने इस सुखद समाचार का प्रयोग न्यूयार्क में किया, ताकि इस राज्य में विरोध के दांत तोड़ दिए जाएं। इस प्रकार फिलेडेल्फिया के प्रतिनिधियों के विसर्जन होने के एक वर्ष बाद, जिस संविधान को उन लोगों ने तैयार किया था, वह तेरह में से ग्यारह राज्यों द्वारा आरक्षण सहित अथवा बिना आरक्षण के, संमोदित हो गया। केवल उत्तर कैरोलीना तथा रोड द्वीप पृथक् रहे। उनकी जिद यद्यपि दुर्भाग्यपूर्ण थी, किन्तु घातक नहीं थी।

आगे कौन सा कदम उठाया जाना चाहिए था? सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए यह आवश्यक था कि वर्तमान कांग्रेस की इतिश्री हो और नई कांग्रेस चुनी जाए। भविष्य में कहाँ सरकार की स्थापना हो? इस पर काफी झगड़ा हुआ। अन्त में यह अस्थाई रूप से निश्चय हुआ कि कुछ काल के लिए इसे न्यूयार्क रखा जाए। जहाँ तक वाशिंगटन का सम्बन्ध है, यह एक प्रकार से निश्चित ही था कि यह राष्ट्रपति चुने जाएंगे। जिन दिनों संयुक्त राज्य के अनुमोदन पर वाद-विवाद चल रहे थे, उन्हीं दिनों में उनका नाम संघानीय विचारों के लोगों द्वारा खुल कर लिया जाता रहा था। किसी ने सुझाव दिया था कि

संघानीय विचारों के लोगों को 'वाशिंगटन-विचारवादी' कहा जाना चाहिए और इसके विरुद्ध मत रखने वालों को मैस.चूसेट्स के विद्रोही, डेनियल शेस के नाम पर 'शेस-विचारवादी' कहना चाहिए। संविधान की शर्तें छपने के बाद वाशिंगटन ही स्पष्ट रूप से राष्ट्रपति पद के उपयुक्त उम्मीदवार लगते थे। वह ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें सब राज्यों के लोग जानते-पहचानते थे, जिनका उन जगहों में आदर-मान था और जिन पर उन्हें विश्वास-भरोसा था। वयोवृद्ध फ्रैंकलिन को छोड़ कर अकेले वही व्यक्ति थे जो बड़े-बड़े सरकारी पदों पर आरूढ़ होने के योग्य आवश्यक जादू यश और प्रतिष्ठा (इस गुण के लिए पर्याप्त शब्द नहीं) रखते थे। समाचार पत्रों में यही विचार ध्वनित होते थे और उनके मित्र भी अनुरोध पूर्वक यही कुछ कहा करते थे। लिफायट ने सन् १७८८ के जनवरी मास में उन्हें लिखा—

"अमेरिका के नाम पर, मनुष्य-मात्र के लिए और आपकी अपनी ख्याति के लिए, मेरे प्यारे जनरल, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कि आप आरम्भिक वर्षों के लिए ही राष्ट्रपति के पद को ठुकराएँ नहीं। केवल एक आप ही हैं जो इस देश की राजनीति के यन्त्र को जमा सकते हैं।"

वाशिंगटन के अपने भाव मिले-जुले थे। वह जहाँ प्रसन्न थे, वहाँ व्यग्र और भयभीत भी। प्रस्तावित प्रतिष्ठा अतिमात्रा में थी। किन्तु जब तक वह वास्तविक-रूप धारण न कर ले, वह उसकी चर्चा कैसे कर सकते थे? पहले से ही कोई निकाला गया निष्कर्ष वास्तविक निर्वाचन से बिल्कुल भिन्न वस्तु है। किन्तु यदि उन्हें राष्ट्रपति का पद पेश किया गया, तो उन्हें अवश्य उसे स्वीकार करना चाहिए। यदि उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया, तो वह दया-रहित प्रसिद्धि में जीवन के चार बोझल वर्ष कैसे गुजार सकेंगे? इसमें जरा भी शक नहीं कि कोई दूसरा आदमी ऐसा नहीं था जो इस कार्य-भार को उठाने के लिए उनसे अधिक योग्य हो। उनका यह कहना था कि 'यह मेरे लिए बिल्कुल अपरिचित क्षेत्र है, जो चारों

ओर से बादलों और अन्धकार से घिरा हुआ है।' परन्तु १७८८ की शरद् में जब अपने पत्र में उन्होंने इस प्रकार के उद्गार प्रगट किए, तो उनके जानने वालों को यह विश्वास हो गया कि वही राष्ट्रपति का पद ग्रहण करने वाले हैं। सारी सर्दियों में वे उन्हें अपने कर्त्तव्य की याद दिलाते रहे, परन्तु वह बिना कोई उत्साह दिखाए अपनी आने वाली आजमाइश के बारे में सोचते रहे। १७८९ के अप्रैल मास में जिन दिनों वह माऊंट वर्नन में उस समाचार की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो निश्चित रूप से उन्हें मिलने वाला था, उन्होंने अपने पुराने मित्र हैनरी नौक्स को विश्वस्त रूप से लिखा—

"शासन के राष्ट्रपति पद पर आरूढ़ होते समय मेरे मन को वैसी ही भावनाएं आन्दोलित करेंगी, जैसी कि उस अपराधी को करती हैं जो फांसी के तख्ते पर लटकने के लिए जा रहा हो। मेरा लगभग सारा जीवन सार्वजनिक चिन्ताओं में व्यतीत हुआ है। अब अपनी उम्र के अन्तिम वर्षों में अपने शांतिपूर्ण घर को छोड़ कर बिना राजनैतिक निपुणता, योग्यताओं और झुकाव के, जो इस पद के लिए आवश्यक हैं, मैं संकटों के सागर में उतर पड़ूं-इसके लिए मेरा जी नहीं मानता। मैं यह समझता हूँ कि इस समुद्र यात्रा में मेरा साथ देनेवाले मेरे देशवासी होंगे और मेरी सुख्याति होगी किन्तु बदले में उन्हें क्या मिलेगा—यह केवल भगवान् ही कह सकता है।"

प्रथम शासन: १७८९–१७९३

दो सप्ताह बाद उनकी नहीं किन्तु प्रतीक्षा की अवधि समाप्त हो गई। कांग्रेस ने उन्हें सूचित किया कि निर्वाचन क्षेत्र में वे सर्वसम्मति से कामयाब हो गए हैं और मैसाचूसैट्स के जान एडम्ज को इतनी पर्याप्त संख्या में मत मिले हैं कि वह उप-राष्ट्रपति का पद ग्रहण कर सकता है। वाशिंगटन न्यूयार्क के लिए तत्काल चल पड़े। सड़क कीचड़ से लथ-पथ, दल-दल वाली थी और उन्हें यात्रा में आठ दिन लगे। सारे रास्ते उनका जोर-शोर से स्वागत हुआ। पुष्पों की वर्षा की गई, झंडियां फहराई गईं, विजय-द्वार खड़े किए गए, अभिनन्दन-पत्र पढ़े गए, मिलिशिया ने मार्ग में साथ चल कर रक्षा की, समा-

चार-पत्रों में 'हमारे पूज्य नेता और शासक' के प्रति प्रशंसात्मक लेख निकले।

दर्शकों के लिए उनकी आकृति भव्य थी, किन्तु अन्दर ही अन्दर उन पर डर का भूत सवार था। उपरोक्त प्रचुर प्रमाणों के होते हुए उनकी लोकप्रियता में किसी को कब सन्देह हो सकता था? किन्तु प्रत्येक नए प्रदर्शन से उनकी चिन्ता और भी गहन हो जाती थी। उनके देशवासी उनकी प्रशंसा करते हुए जब उन्हें मानवातीत गुणों वाला कहते थे, तो उनसे मानवातीत कामों की भी अपेक्षा रखते थे। यदि वह किसी ऐसे कार्य के करने में असफल रहे, जिसे वह स्वयं भली-भांति निश्चित न कर सकते हों, तो उनकी कितनी भयानक असफलता समझी जाएगी? ख्याल कीजिए, वहां तेरह असंवादी राज्य थे—जिनमें से दो अभी तक उस संघ में शामिल ही नहीं हुए थे। संविधान की दशा यह थी कि अभी तक वह जोखिम अवस्था में था। जो भी राज्य थे, वे सब अपनी 'प्रिय-प्रभुता' को बचाए रखने के पक्ष में थे। इनका विस्तार अन्ध-महासागर तट पर पन्द्रह सौ मील तक था, जनसंख्या चालीस लाख से कम नहीं थी। (पूरी संख्या को उस समय कोई नहीं जानता था)। इस जनसंख्या में हर पांच व्यक्तियों के पीछे एक नीग्रो दास था। यह ऐसा राष्ट्र था जिस के लिए राष्ट्रीयता सर्वथा नवीन वस्तु थी और जो इस समय संघानीय गणतन्त्रवाद का प्रयोग कर रहा था। सिर पर ऋण का बोझा था और बाहर से शत्रुओं का हर समय खटका लगा रहता था। प्रश्न यह था कि यदि किसी समय देश पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़े, तो इसका क्या होगा?

किन्तु वाशिंगटन की बड़ी-बड़ी खूबियों में से एक खूबी यह थी कि वह कभी धैर्य नहीं छोड़ते थे। कुछ आदमियों में चिन्ता के कारण इच्छा शक्ति को लकवा मार जाता है या उनकी कार्य-शक्ति अचानक दिशाहीन हो जाती है। किन्तु वाशिंगटन चिन्ता के कारण जहां अधिक मात्रा में सावधान हो जाते थे, वहां वह अपने हाथ में लिए हुए कामों में अतिरिक्त हठ से जुट जाते थे।

उस समय का कोई भी कड़वा आलोचक यह महसूस करता था—और उस समय एक या दो ऐसे लोग भी थे जिन्हें सन् १७८९ में वाशिंगटन जैसी भव्य मूर्ति के विषय में भी सन्देह थे—कि अमेरिका के इतिहास में उस महत्वपूर्ण काल में राष्ट्र के प्रमुख कार्य-पालक (वाशिंगटन) उनकी आशाओं को पूरे तौर पर पूर्ण करने में असमर्थ होंगे। उन्हें घरेलू मामले तंग कर रहे थे, क्योंकि उन्हें ऋण चुकाने थे; उनकी अनुपस्थिति में माऊंट वर्नन की देख-रेख का प्रबन्ध किया जाना था; न्यूयार्क के घर को सजाना था एवं प्रोटोकोल-सम्बन्धी बातें तय करनी थीं। साथ ही उन्हें इस बात की भी जरूरत महसूस होती थी कि वह इस आरोप के विषय में (जिसे कोई और नहीं लगा रहा था) कि उन्होंने अपने पूर्व के सेना-निवृत्ति के वचनों को क्यों भंग किया है, वह अपनी सफाई पेश करते हुए अपने आपको निर्दोष सिद्ध करें। इन सब परेशानियों ने उनकी धवल सूरत को गम्भीर व कठोर बना दिया था। कम से कम पेंसिलवेनिया के विलियम मैक्ले जैसे दर्शक को ऐसा ही लगा। मैक्ले सीनेट का सदस्य था और अनादर-पूर्ण व्यंग कसा करता था। अंशतः रोष में आकर अंशतः फब्तियों के अन्दाज में मैक्ले ने वाशिंगटन के उद्घाटन सम्बन्धी भाषण के बारे में लिखा—

"यह आदमी समर में निशाने के लिए लगाई गई तोप अथवा बन्दूक से कभी इतना नहीं घबराया होगा, जितना कि वह उस समय व्यग्र और घबराया हुआ था। वह कांप रहा था और कई बार तो लिखे हुए भाषण को भी पढ़ नहीं पाता था, यद्यपि यह मानना ही होगा कि उसने इसे पहले दो-एक बार अवश्य पढ़ा होगा।"

मैक्ले के विचार में वाशिंगटन की भाव-भंगी से फूहड़पन टपकता था। उसके मतानुसार उनके वस्त्र भी विचित्र से थे, क्योंकि वह अमेरिका में बनी ऊन से बने कपड़े का सूट पहने हुए थे। इन वस्त्रों के साथ उन्होंने तलवार लटकाई हुई थी और सफेद रेशम के मोजे पहने हुए थे। ये मोजे उस किस्म के थे, जो उन दिनों

योरुप के राजदरबारी उत्सव के अवसरों पर पहना करते थे। इनके अलावा, उसकी राय में, भाषण में कोई स्मरणीय बात भी नहीं थी। भाषण परिश्रमीय और अधिकारीय था तथा संतोषजनक होते हुए भी अभिभूत करने वाला नहीं था।

किन्तु, मैक्ले के विपरीत, भीड़ में से, जो उनके अप्रैल के उद्घाटन को देख रही थी, बहुत से लोग अत्यन्त प्रभावित हुए थे। यदि उनमें थोड़ा बहुत भद्दापन दिखाई भी देता था, तो उन लोगों ने उस पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि उन्हें उनमें अधिक विश्वास पैदा हो गया। वाशिंगटन को उस समय मालूम हुआ—यद्यपि उससे पहले उन्हें इस चीज का आभास था—कि उनकी राष्ट्र में अनुपम स्थिति अमेरिका के लिए एक अमूल्य सम्पति है। दूसरे तत्व भी उनके पक्ष में थे। यह ठीक है कि वह वित्तीय मामलों के विशेषज्ञ नहीं थे। न ही वह राजनैतिक मामलों में दांव-पेच खेलने में फुर्तीले थे। संविधान-सम्बन्धी सिद्धान्तों के निर्माण-कर्त्ताओं में भी वह नहीं थे। इनके अलावा वह ऐसे कूटनीतिज्ञ भी नहीं थे, जो विदेशी मामलों को सीधी तरह जानते हों। किन्तु यदि हम उनके आरम्भ के वर्षों के विलियम्जवर्ग तथा अन्य स्थानों के अनुभवों को छोड़ भी दें, तो उन्होंने प्रधान सेनापति के नाते तथा संविधान सम्बन्धी सम्मेलन के प्रधान होने के नाते इन मामलों से तथा शासन के अन्य पहलुओं से अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली थी। वह चाहे राजनीति की उच्चतर प्रणालियों से परिचित नहीं भी थे, उनमें चाहे राजनीति-सम्बन्धी उच्चस्तरीय ज्ञान की कितनी भी न्यूनता क्यों न थी, यह असंदिग्ध है कि वह ईमानदार, शिष्ट तथा विधिपूर्वक काम करने वाले शासक थे। उदाहरण के लिए, उनके पास असंख्य ऐसे लोग पहुँचे थे, जो नई सरकार के अधीन नौकरी चाहते थे। अपनी सामान्य बुद्धि से काम लेते हुए उन्होंने किसी को भी वचन देने से इन्कार कर दिया था। इसमें कोई शक नहीं कि वह न्यूयार्क में जब आए तो उनका मन भारी-भारी था, पर हाथ पवित्र थे।

सौभाग्य से सन् १७८९ की गर्मियों में किसी तात्कालिक संकट का भय उत्पन्न नहीं हुआ। कांग्रेस के अधिवेशन देर से आरम्भ हुए और थोड़ा काल रहे। कांग्रेस ने मुख्य रूप से कार्यविधि जैसी छोटी समस्याओं की चर्चा की। किन्तु इसके अधिवेशनों में बिलकुल मधुरता का और हल्का वातावरण नहीं था। संघानीय सरकार के लिए कौन सा स्थायी स्थान हो—इस पर लम्बे-चौड़े झगड़े चले। इनसे स्पष्ट था कि क्षेत्रीय ईर्ष्या-डाह अब तक कायम है। अब तक बुनियादी बातों में भी आपसी मत-भेदों के चिन्ह थे। इसके बावजूद, खूबी की बात यह कि कांग्रेस तथा समस्त राष्ट्र ने नए संविधान को बिना हो-हल्ला के स्वीकार किया। अधिकार-विधेयक के लिए आवश्यक संशोधन एकत्र कर लिए गए। फिर उन्हें राज्यों में भेज दिया गया, जहां वे निर्विघ्नता-पूर्वक अनुमोदित हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि उत्तर कैरोलीना और रोड-द्वीप दोनों संयुक्त राज्य में शामिल हो गए। संविधान की धाराओं के अनुसार संघानीय न्यायालय पद्धति की स्थापना के लिए न्यायिक विधेयक सन् १७८९ में पास किया गया। इस प्रकार वाशिंगटन के उद्घाटन के कुछ महीनों के अन्दर ही अन्दर संघानीय सरकार का संविधान, जिसका बीज फिलेडेल्फिया में बोया गया था, स्वतन्त्र रूप से पनपने लगा। लोग इसे बिना किसी अवरोध के, निर्देश के रूप में, स्वीकार कर रहे थे। वस्तुतः जिस प्रकार वाशिंगटन संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतीक के रूप में पूज्य माने जाते थे, उसी प्रकार संविधान भी संयुक्त राज्य के द्वितीय और अद्वितीय स्वच्छ प्रतीक के रूप में एक पवित्र वस्तु समझकर मान्यता प्राप्त कर रहा था। अमेरिका के लोग जार्ज वाशिंगटन का अत्यधिक आदर करते थे, किन्तु इससे भी अधिक आदर वे प्रतिनिधायी सरकार के भाव का करते थे। वे भिन्न-भिन्न तरीकों से इस भाव के अर्थ करते थे। कभी-कभी कांग्रेस के अधिवेशनों के बाद विवाद कटुतापूर्ण होते थे और कभी-कभी गूढ़ता-पूर्ण। किन्तु ये निर्देशों के ढांचे अन्दर किए जाते थे। उनसे बाहर जाकर नहीं। इस निर्देश-

ढांचे में अमरीकी चिरकालीन अनुभव के कारण निपुण थे। संविधान इसलिए व्यावहारिक था, क्योंकि बहु-संख्यक अमेरिकन इसे कार्यान्वित करना चाहते थे। दर असल ये महत्वपूर्ण तत्व अर्थात् अभ्यास-लब्ध निपुणता एवं एकरसता न होते, तो वाशिंगटन के सब प्रयास तथा प्रेरणाएं बेकार चली जाती।

वाशिंगटन का कार्य इस कारण भी अधिक सुगम हो गया, क्योंकि नई सरकार ने, जिसका पुनर्गठन १७८९ में हुआ था, शासन की ठोस विशेपताओं को विरसे में ले लिया था। इस प्रकार एक हद तक इन वास्तविक संस्थाओं में अविच्छिन्नता बनी रही। राष्ट्रपति ने संयुक्त-राज्य की कांग्रेस के भूतपूर्व सचिव, विलियम जैक्सन को अपने छोटे से सचिव-समुदाय में, जिस में टोबियस लीयर, डैविड हम्फ्रेज तथा अन्य ज्ञानवान व सुवक्ता लोग थे, शामिल कर लिया। इससे व्यक्तिगत रूप से भी उन्हें लाभ हुआ। किन्तु उन्हें इससे भी अधिक लाभ पुराने कार्य-पालक विभागों के बच जाने से हुआ, क्योंकि उनके बहुत से अध्यक्ष भूतकाल में उनके घनिष्ठ सम्पर्क में रहे थे। संविधान के अधीन इन विभागों का टेढ़े-मेढ़े तरीकों से उल्लेख था। किन्तु कांग्रेस ने आवश्यक विधान पास करके उनकी पुनर्स्थापना की और कुछ बहस के बाद इस बात को स्वीकार कर लिया कि राष्ट्रपति को अपने आज्ञापालक अधिकारियों को हटाने अथवा नियुक्त करने का अधिकार होना चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण बात थी।

वाशिंगटन ने अपने पुराने तोपखाने के सेनाध्यक्ष को युद्ध-सचिव के रूप में नियुक्त किया। न्यूयार्क का जान जे, जो सन् १७८४ से अब तक विदेशी मामलों का सचिव रहा था, उच्चतम न्यायालय का प्रथम मुख्य न्यायाधीश बना। जे के स्थान में वाशिंगटन ने अपने वर्जीनिया के प्रतिभावान मित्र थामस जैफर्सन को अध्यक्ष बनाया और विदेशी मामलों के विभाग का नाम बदलकर 'स्टेट विभाग' रखा। एक और वर्जीनिया-वासी को, जिसका नाम एडमण्ड रैन्डाल्फ था और जिस ने इस बीच में संविधान के प्रति

अपने विश्वासों को बदल लिया था, महा-न्यायकारी का पद दिया गया। वित्तीय विभाग, जिसका उन दिनों 'स्टेट विभाग' के समान ही महत्त्व था, कुछ काल से एक अल्पसंख्यक समिति द्वारा संचालित हो रहा था। वाशिंगटन ने इस समिति के स्थान में उसे न्यूयार्क के अलैक्जैण्डर हैमिल्टन के सुपुर्द किया। इस व्यक्ति ने, यद्यपि वह उम्र में केवल ३० साल के लगभग था, योद्धा, विधिविज्ञ तथा सिद्धान्त बनाने में निपुण होने के कारण अपना अच्छा नाम पैदा किया था। अंत में डाक-संघटन को, जिसका कभी बेंजामिन फ्रैंकलिन ने निर्देशन किया था, अबमहा-प्रेषपति सैमुअल-ओसगुड के हवाले कर दिया गया। यह महाशय इससे पूर्व वित्तीय बोर्ड के सदस्य रह चुके थे। इस प्रकार वाशिंगटन ने उन प्रसिद्ध आदमियों को अपने प्रशासन में स्थान दिया, जो अधिक-न्यून अपने कामों से परिचित थे। वस्तुतः न्यूयार्क में उन व्यक्तियों का जमघटा लग गया, जिन्होंने अमेरिका की स्वतन्त्रता-प्राप्ति में और एक संयुक्त-राज्य बनाने में किसी न किसी रूप में कार्य किया था। उदाहरण के लिए जेम्ज मैडिसन, जो यद्यपि वर्जीनिया में विरोध के कारण सैनेट में स्थान पाने से वंचित रहा था, यह इस समय प्रतिनिधियों की संसद् में अग्रणी व्यक्ति था।

अब तक वाशिंगटन केवल कांग्रेस द्वारा निर्मित विधान को कार्यान्वित करने के लिए संविधान के ढांचे को विस्तार दे रहे थे, किन्तु कुछ ऐसे मामले भी थे जिन में सन्देह था। इन मामलों में से एक यह था कि राष्ट्रपति के पद का सही स्वरूप क्या होना चाहिए। वाशिंगटन और उसके समकालीन साथी मोटे तौर पर इस बात में एक राय रखते थे कि कई एक अधिकारों और कर्तव्यों में कांग्रेस की दोनों शाखाओं का साझीदार होते हुए भी राष्ट्रपति को अंशतः इन से दूर रहना चाहिए। संविधान-सम्बन्धी सम्मेलन में फ्रैंकलिन ने इस बात का विरोध किया था कि राष्ट्रपति को वेतन मिले। उनकी युक्ति यह थी (जैसे कि ब्रिटेन के राजनीतिक ढांचे से भयंकर रूप से जाहिर होता था) कि जब कोई 'प्रतिष्ठा का पद'

लाभप्राप्ति का स्थान भी बन जाता है, तो उसके परिणाम-स्वरूप महत्वाकांक्षा और धन-लिप्सा घोरतम रूप धारण कर लेते हैं। वाशिंगटन ने प्रधान सेनापति की हैसियत में वेतन नहीं लिया था। वह केवल अपना खर्चा ही वसूल करते रहे थे। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में भी इस प्रकार के नियम बनाने की तजवीज की थी। यदि यह सुझाव मान लिया जाता, तो संभवतः वह तबाह हो जाते। किन्तु, यह उनके तथा उनके अधिकारियों के लिए सौभाग्य की बात हुई कि कांग्रेस ने राष्ट्रपति का वार्षिक वेतन २५,००० डालर नियत कर दिया। सन् १७८९ के समय की दृष्टि से यह एक ठोस आय थी, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के सचिव तथा वित्त-विभाग के सचिव, जिनमें से प्रत्येक को ३५०० डालर वार्षिक मिलते थे, से काफी ऊंची थी। यह आय कांग्रेस के सदस्यों से भी अधिक थी, जिन्हें प्रत्येक दिन के लिए ६ डालर मिला करते थे।

इस प्रकार कांग्रेस वाशिंगटन से यह अपेक्षा करती थी कि (इस विपुल वेतन से) रहन-सहन के स्तर को ऊंचा बनाए रखेंगे। किन्तु (एक प्राचीन पहेली की भाषा में) यह ऊंचाई कितनी ऊंची रखनी चाहिए थी? इसका पूर्ण उत्तर अप्राप्य था। तड़क-भड़क से रहने में खतरा यह था कि मैक्ले जैसे लोग, जिन्हें अब भी यह संदेह था कि कुछ अमरीकी सम्राट् बनने की लालसा रखते हैं, (बेकार में) शत्रु बन जाते। दूसरी ओर अनुचित किफायत करना राष्ट्रपति के प्रतिष्ठित-पद को घृणास्पद बनाने वाली बात थी। वाशिंगटन ने मध्य-मार्ग का अवलम्बन किया और इससे उनके बहुत से देशवासी खुश थे। अपने उद्घाटन-भाषण के समय उन्होंने जो वस्त्र ओढ़े हुए थे, उनसे भी यह मध्य-मार्ग उपलक्षित था। उस समय उन्होंने इस प्रकार के भद्र पुरुष के कपड़े पहने हुए थे जो निश्चित रूप में अमेरिका का भद्र-पुरुष प्रतीत होता था। ज्ञान और सामान्य बुद्धि उनके पथ-प्रदर्शक थे। दूसरी समस्या यह थी कि उन्हें किस प्रकार सम्बोधित किया जाए? जान एडम्ज ने, जबकि वह सैनेट की अध्यक्षता कर रहे थे, इस बात पर जोर

अभिधान हो। इस पर लोगों
दिया कि उनके लिए कोई राजसी अभिधान हो। इस पर लोगों
ने उनकी खिल्ली उड़ाई। सैनेट ने यह सुझाव दिया कि उन्हें
'महाराज, संयुक्त-राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति एवं उसकी स्वतन्त्रता
के रक्षक' कह कर पुकारा जाए। किन्तु सदन 'संयुक्त-राज्य
अमेरिका के राष्ट्रपति' जैसा सरल अभिधान चाहता था। (कहते हैं
कि वाशिंगटन 'शक्ति पुंज, संयुक्त-राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति'
अभिधान को अधिक पसन्द करते थे)। उन्होंने समझदारी से काम
लिया, जबकि उन्होंने उस वाद-विवाद को उस समय तक प्राकृतिक
रूप से ठण्डा होने दिया, जब तक कि आम प्रयोग के कारण
'राष्ट्रपति महोदय' का सरल अभिधान प्रचलित नहीं हुआ।

वाशिंगटन ने सामान्य बुद्धि के आधार पर ही अपनी आतिथ्य
तथा मुलाकात-सम्बन्धी नीति अपनाई। माऊंटवर्नन वाले घर को
उन्होंने खुला छोड़ा हुआ था; कोई मुलाकाती किसी समय भी
आ-जा सकता था। न्यूयार्क में यह सम्भव नहीं था। अतः पूर्व
परामर्श करके उन्होंने साप्ताहिक मुलाकातों की पद्धति चलाई।
इस दिन औपचारिक रूप से मुलाकातें हो सकती थीं और बाद में
(देर से सांझ के समय जब मुलाकातें समाप्त होतीं) रात्रि का
भोज हुआ करता था। वह व्यक्तिगत निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया
करते थे, यद्यपि नाटक देखने की उत्सुकता के कारण वह कई बार
अपने कार्य के बोझ को हल्का करने के लिए अतिथियों के साथ
नाट्यशाला जाया करते थे। दुबारा परामर्श पा कर, उन्होंने
निश्चय किया कि अमेरिका के भिन्न-भिन्न भागों में यात्रा की जाय।
तत्पश्चात् उन्होंने देश-पर्यटन में संतुलन रखने का प्रयत्न किया;
यदि वह सन् १७८९ में न्यू इंगलैंड में घूमे-फिरे, तो दो वर्ष बाद
उन्होंने दक्षिण के राज्यों में पर्यटन किया।

शायद यह सब (उनके कामों का) कुछ कुछ कठोर स्वरूप
था। यही बात निश्चय से उनके कांग्रेस के साथ सम्बन्धों के बारे में
लागू होती थी। दोनों का एक दूसरे से अत्युत्तम व्यवहार था। किन्तु
अत्युत्तम व्यवहार (सदा) सरल व्यवहार नहीं हुआ करता। उनके सम्बन्ध

में दिए गए भाषणों के औपचारिक उत्तर मिलते, फिर उन उत्तरों के प्रत्युत्तर मिलते। इसका एक परिणाम, जिसके बारे में 'संस्थापक-पिताओं' ने पहले कभी नहीं सोचा था, यह निकला कि राष्ट्रपति और सैनेट एक दूसरे से दूर होते चले गए। शायद यह अवश्यभावी भी था, क्योंकि नई सरकार के सब विभाग अपने-अपने विशेषाधिकारों तथा कदम-कदम पर बनने वाले पूर्वोदाहरणों के विषय में अत्यधिक सचेत थे। किन्तु किंचित् उदासीनता और संभ्रान्ति अवश्य पैदा हो गई। सैनेट वाशिंगटन की आन्तरिक परिषद् बनने की बजाय, उनसे दूरी पर रहने लगी। वह केवल एक बार ही विदेश-नीति पर विचार-विनिमय के लिए सनेट में आए। यह ऐसा क्षेत्र था जिसमें कार्य-पालक विभाग और सैनेट, दोनों की सांझी 'जिम्मेदारी समझी जाती थी। इस मौके पर शोकपूर्ण असफलता मिली। यदि मैकले का विश्वास करें, तो उसके शब्दों में, वाशिंगटन उस अवसर पर दुर्विनीत और अधीर थे और जब सैनेट ने उनकी इच्छाओं को तत्काल स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, तो वह खीझ कर सैनेट से उठ कर चले गए।

किन्तु मैकले भी इस बात को स्वीकार करता है कि जब वाशिंगटन स्थगन के पश्चात् दोबारा लौटे, तो उस समय वह प्रसन्न मुद्रा में थे। उन्होंने न केवल अपने पिछले व्यवहार को ही नहीं दुहराया, बल्कि अपनी इच्छाओं को मनवाने में जिद्द भी नहीं की, अन्यथा आपसी तनाव विध्वंसकारी होता। कुछ भी हो, उन्हें सलाह-मशवरे की कमी नहीं थी। शुरू-शुरू के सालों में जेम्स मैडीसन के साथ उनके घनिष्ठतम सम्बन्ध थे। मैडीसन उन्हें मिलने आता, उनके लिए कागजात तैयार करता और सांवैधानिक राय देता। जब सन् १७९२ में वाशिंगटन ने अपनी प्रथम अवधि की समाप्ति पर राष्ट्रपति पद से निवृत्त होने की बात सोची, तो मैडीसन ने विदाई के समय के भाषण का प्राथमिक प्रारूप तैयार किया। चार साल पीछे इसी भाषण ने एक शोहरत पैदा कर दी। अलेक्जेंण्डर हैमिलटन पर भी वह बहुत आश्रित रहते थे। उससे कम जान-

जे और उपराष्ट्रपति एडम्ज पर। धीरे-धीरे वह कार्यपालक विभाग के अध्यक्षों पर अधिकाधिक निर्भर रहने लगे। यह प्रक्रिया बिना किसी योजना के थी, क्योंकि किसी ने कभी ख्याल नहीं किया था कि राष्ट्रपति को प्रधान-मंत्री के उत्तरदायित्व निभाने होंगे। फिर भी वस्तु-स्थिति यह थी कि वाशिंगटन के प्रथम शासन-काल के अन्त में (प्रधान मन्त्री की तरह ही) उनका एक 'मन्त्री-मण्डल' सा बन गया। लोगों में इस शब्द का प्रयोग भी होने लगा और इस विचार ने बीज-रूप में अपना अस्तित्व जमाया।

उस समय तक, बिना किसी पूर्व योजना के, वाशिंगटन को एक प्रकार की दल-पद्धति का भी सामना करना पड़ा। वास्तव में वह स्वयं घोर विरोधों का केन्द्र बन गए। उदाहरण के रूप में, परिणाम यह हुआ कि वह और मैडीसन पूर्ण रूप से एक दूसरे से भिन्न मार्ग पर चले गए। मैडीसन ने एक भविष्यदृष्टा के तौर पर यह महसूस किया था कि किसी भी राष्ट्र में 'दल और दलीय झगड़ों की भावना' का होना आवश्यक है और इन भिन्न-भिन्न बद्धहित दलों का समाधान करना, अपरिहार्य रूप से, कांग्रेस तथा राष्ट्रपति का काम होगा। वाशिंगटन ने भी राष्ट्रपति बनने से पहले इस बात को पहचाना था कि सामान्य प्रान्तीय स्पर्धाओं के अतिरिक्त, देश नए संविधान के विषय में गम्भीर रूप से बटा हुआ है। उन्हें यह भी ख्याल था कि यह सम्भव है कि संघानीय पक्ष के विरोधी लोग चुनाव-क्षेत्र में उनके विरुद्ध अपने मत दें।

वाशिंगटन और उनके साथ अनेक लोग यह देखकर निराश हुए कि संविधान के पारित होने के बाद, वाद-विवाद का अन्त होने की बजाय इसके गुणावगुणों पर और भी अधिक चर्चा होने लगी है। साधारण-रूप से वे लोग जिन्होंने १७८७-१७८८ में संविधान का सक्रिय रूप से समर्थन किया था, उन्होंने श्रेणी-बद्ध होकर उन लोगों का विरोध करना शुरू किया जिन्हें इस बारे में शंकाएं थीं। उन्होंने अपने आपको संघवादी और दूसरे पक्ष को असंघवादी के नाम से पुकारा जाना पसन्द किया और अपने बाल-राष्ट्र के अभीष्ट-

स्वरूप पर जोर-शोर से लड़ना-झगड़ना जारी रखा। उन में साफ-साफ विभाजन नहीं था। मैडीसन और रैंडोल्फ जैसे कुछ आदमियों ने अपने विचार बदल लिए थे। एक ही परिवार में मत-भेद पाए जाते थे। मैसाचूसैट्स निवासी फिशर एमेश का, जो प्रतिनिधि-संसद में संघवाद का अत्यन्त ओजस्वी समर्थक था, अपना ही सगा भाई नैथानील घोरतम शत्रु था। इस नैथानील ने कुछ साल पीछे अपने भाई फिशर की अर्थी में इसीलिए शामिल होने से इन्कार कर दिया, क्योंकि उसका विचार था कि इसे संघवाद के प्रचार का साधन बनाया जा रहा है। मोटे तौर पर संघवाद के पोषक (जो नैथानील ऐमेस के विचार में 'दम्भी-टोला' था) धनी और समृद्ध लोग थे, जैसे वकील, व्यापारी आदि, और बहुत अंशों में वे देश के पूर्वीय भागों के थे। उनके विरोधी (जिन्हें उस समय की शब्दावली में 'एक-छत्र राज्यवादी' के विरोधी पक्ष के रूप में 'अराजक-भीड़-राज्य-वादी' कहा जाता था, भिन्न-भिन्न कारणों से विरोधी-पक्ष के थे। कुछ लोग अब भी एक सुदृढ़ राष्ट्रीय सरकार को नहीं चाहते थे, अथवा वे इस सिद्धान्त के भी खिलाफ थे कि कोई प्रशासकीय अधिकारी हो। टामपेन की तरह ही उनका भी विचार था कि 'प्रशासन निर्दोषता के लोप का चिन्ह है।' अन्य लोग, विशेष रूप से पश्चिमी और दक्षिण भागों के वासी, इसलिए विरोध करते थे, क्योंकि उनकी राय में संघवादी स्वार्थी व्यापारियों का गुट था।

आगे जाकर जो संघर्ष चला, वह वाशिंगटन के लिए, कम से कम इन चार कारणों से घोर अरुचिकर और विक्षोभोत्पादक था। प्रथम, वाशिंगटन को इस बात से बहुत दुःख होता था कि संयुक्त-राज्य अमेरिका की स्थिरता को संकट-ग्रस्त करने के प्रयास किए जाएं। दूसरे, उनके अपने ही कार्य-पालक विभाग के अन्दर इसी प्रकार का संघर्ष जारी था। तीसरे, यह संघर्ष विदेशी-नीति के क्षेत्र में भी अपने पांव फैला रहा था। चौथी बात यह कि उस संघर्ष की वजह से उनकी अपनी सुकीर्ति को धक्का पहुंच रहा था।

जब सन् १७८९ में वह राष्ट्रपति के पद पर आरूढ़ हुए, तो उनका ख्याल था कि सरकार के प्रमुख संचालक के रूप में उनकी सेवाओं की अपेक्षा रहेगी। यह इस लिये नहीं कि उनमें मिथ्याभिमान की भावना थी, बल्कि इसलिये कि बहुत से अमरीकियों ने उन्हें ऐसा विचार दिया था। यदि हम जहाज-सम्बन्धी अलंकार का प्रयोग करें, तो यह कहना अधिक उत्तम मालूम होगा कि उनकी जरूरत 'सेतु' पर थी। जैसा कि उन्होंने महसूस किया, अमेरिका की प्रमुख आवश्यकता थी एक दूसरे का विश्वास। संयुक्त-राज्य अमेरिका का सरकारी मोटो उपयुक्त रूप से यह हो सकता था—'जैसा-जैसा वह आगे बढ़ता है, वैसे ही अभिवृद्धि को प्राप्त करता जाता है।' वाशिंगटन के विदाई-भाषण के शब्दों में 'प्रशासन के सही रूप को प्रस्थापित करने के लिए समय और अभ्यास इतने ही आवश्यक हैं जितने कि अन्य मानवीय संस्थाओं में।' उनका मत यह था कि एक बार राज्य-संघ को सही आधार पर स्थापित कर दिया जाय, तो अन्य सभी बातें इसके पीछे-पीछे चलेंगी। राष्ट्र के पास छोटे पैमाने पर जल और स्थल सेना हो और शान्ति रखने के लिए उपयुक्त नागरिक-सेना का संगठन हो; लगान और कर वसूल कर लिए जायें; कानून का पालन हो और देशाभिमान को बढ़ावा दिया जाय। इतना हो जाने के बाद सब कार्य अपने-अपने ढंग से चलेंगे। उनकी यह धारणा थी कि अमेरिका और राज्य-संघ सम्भाव्यत: ठोस और महान् हैं। यह कोई ऐसा सिद्धान्त नहीं था कि जिसे उन्होंने कविता के रूप में अभिव्यक्त किया हो अथवा अधिक गहनता के साथ उसका विश्लेषण किया हो। न ही वह अपना धीरज कायम रखने के लिए इन सुन्दर शब्दों का प्रयोग कर रहे थे। यह उनके विश्वास का अंग था। यह ऐसी चीज थी कि जिसे वह हृदय से महसूस करते थे।

इस प्रकार के विचार रखते हुए वाशिंगटन ने जहां तक विभाग का सम्बन्ध था—प्रमुख अधिकारक की तरह अपना कार्य सम्पादित किया, न कि प्रमुख कार्य-पालक के रूप में। हैमिल्टन के लिए

'संविधान इस प्रकार का ढांचा था, जो कभी विचल नहीं रह सकता और यदि उसे आगे न ले जाया गया तो वह पीछे की ओर चलेगा।' डेमास्थीनोज के मूल कथन को उद्घृत करते हुए हैमिल्टन कहा करता था कि राजनीतिज्ञ का कर्तव्य है कि वह 'मामलों का अग्रगामी बनें और 'घटनाओं को स्वयं अस्तित्व में लाए।' अतः उसकी नजरों में विश्वास ऐसी चीज थी जिसे साधा और पुष्ट किया जाता है—वस्तुतः जिस का निर्माण किया जाता है। हैमिल्टन का 'राजनीतिज्ञ' से अभिप्राय स्वयं से था।

हैमिल्टन अमेरिका के इतिहास के चित्ताकर्षक व्यक्तियों में से था। वाशिंगटन हमारे लिए पहेली है, क्योंकि वह इतने श्रेष्ठ प्रतीत होते हैं कि विश्वास ही नहीं होता। उससे विपरीत हैमिल्टन का व्यक्तित्व रहस्यमय है—आश्चर्यजनक रूप से विविध और असंगत। वह कभी आत्मसमर्पण करता हुआ और कभी स्वार्थ में अन्धा बना हुआ दीखता है, कभी जरूरत से ज्यादा सावधानी बर्तने वाला और कभी अव्यवस्थित रूप से कार्य करने वाला, कभी समझ से काम लेने वाला और कभी अन्धा-धुन्ध काम करने वाला, कभी गुर्रानेवाला और कभी शुद्ध, पवित्र व्यवहार वाला, कभी क्रियात्मक और कभी स्वप्न लेने वाला। ऐसा व्यक्ति कभी भी किसी राष्ट्रपति के लिए इने-गिने आदमियों में से होता होगा। ऐसे समय में जबकि सरकार के ढांचे के विस्तार अभी तय नहीं हुए थे, यह अत्यन्त आत्मविश्वासी और असाधारण रूप से योग्य युवक कार्य-पालक विभाग पर अपना सिक्का जमाने की फिक्र में था। इस बात का खतरा था कि वह कहीं प्रधानमन्त्री के प्रकार की सत्ता न हथिया ले और वाशिंगटन केवल सीमित सत्तायुक्त संवैधानिक सम्राट् के सदृश न रह जाएं।

इन महत्वाकांक्षाओं के अतिरिक्त हैमिल्टन कुछ और कारणों से भी अपनी इस प्रकार की स्थिति को निश्चित करना चाहता था। तत्कालीन ब्रिटेन में (जिसकी परिस्थितियों का उसने निकट हो कर अध्ययन किया था और जिसके संविधान को वह प्रतिष्ठा की

दृष्टि से देखता था) विलियम पिट प्रधान-मन्त्री होने के साथ साथ राज्य-कोष महामात्र भी था। पिट उम्र में हैमिल्टन से भी छोटा था। चूँकि अमेरिका की वित्त-सम्बन्धी व्यवस्था का किसी न किसी हालत में नियमन आवश्यक था, अतः यह लाजमी था कि वाशिंगटन के प्रथम प्रशासन में हैमिल्टन की योजनाएं प्रमुख-रूप से आगे आएँ। इसके अलावा हैमिल्टन की नियुक्ति में इस प्रकार की भाषा भी थी जिससे यह संकेत मिलता था कि कार्य-पालक अध्यक्षों के सामान्य कर्तव्यों के अतिरिक्त उसका विशेष कार्य यह होगा कि वह राष्ट्रपति और कांग्रेस का अन्तःस्थ बने। अन्त में, उसकी विशेष स्थिति इसलिए भी बन गई, क्योंकि एक अन्य कार्यपालक-अध्यक्ष, थामस जैफर्सन, ने अपना दायित्व तब संभाला जबकि हैमिल्टन को इस पद पर आरूढ़ हुए छः मास हो चुके थे। इन छः महत्वपूर्ण मासों में सब प्रमुख मामलों पर, जिन में विदेश-नीति भी थी, हैमिल्टन की नितान्त रूप में सलाह मांगी जाती रही थी। हैमिल्टन ने इस प्रकार की सलाह देने में कभी गफलत नहीं की।

इसके परिणाम लगभग विध्वंसकारी निकले, क्योंकि जैफर्सन और हैमिल्टन शीघ्र ही आपस में उलझ पड़े। यह सम्भव है कि हैमिल्टन जैफर्सन मत-भेदों पर लोग इसलिए अधिक बल देते हों, क्योंकि इन से अमेरिका की कहानी के बुनियादी मत-भेद प्रगट होते हैं। तथ्य यह है कि उनके सैद्धान्तिक मत-भेद इतने गहरे नहीं थे, जितने मत-भेद कि इतिहास की अनेक अन्य घटनाओं में से पैदा हुए। फिर भी इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि उन के पारस्परिक झगड़ों में तीखापन था। न ही कोई उस शोर-गुल से इन्कार कर सकता है जो अमेरिका के राजनैतिक विरोधी-दलों के कारण उठा करता था, जिनके नमूने के रूप में यह दोनों महाशय थे। थामस जैफर्सन यद्यपि हैमिल्टन के समान महान्, सम्भवतः उससे अधिक महान् था, किन्तु उस जितना कलह-प्रिय नहीं था। हैमिल्टन के विपरीत वह व्यक्तिगत रूप से विवाद में नहीं उलझता था। न ही उसमें हैमिल्टन के समान चोटों पर

पहुंचने की लालसा थी। वह ऊंचे खतरनाक पदों से आकंपित नहीं होता था। हैमिल्टन ने (अपने सैनिक जीवन में) लड़ाई में फौज का नेतृत्व किया था (और यार्क टाऊन में किले की मजबूत दीवार पर गोलाबारी की थी) और अब फिर उसकी जोखम में पड़ने की अभिलाषा थी। (प्रसंगवश, मौका लगने पर, वह अपने और राज्य-सचिव के पद के अलावा युद्ध-सचिव के रूप में भी नौकरी करने के प्रलोभन का प्रतिरोध नहीं कर सका)। जैफर्सन कभी सैनिक नहीं रहा था और न ही कभी उसने सैनिक गुणों से सम्पन्न होने का दावा ही किया।

फिर भी ये दोनों व्यक्ति क्रोधावेश में बार-बार एक दूसरे के साथ टक्कर लेते थे। संविधान में अधिकार-सम्बन्धी विधेयक शामिल किए जाने पर जैफर्सन इससे काफी सन्तुष्ट था, किन्तु जहां तक हैमिल्टन की नीतियों का सम्बन्ध है, जैफर्सन, मैडीसन तथा अन्य कई लोग इनसे खुश नहीं थे। उनकी नजरों में ये नीतियां अति-संघवादी और दुष्टता-पूर्वक बनाई गई थीं। वाशिंगटन इन पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा चुके थे। इनमें से बहुत सी अमल में भी आ चुकी थीं। आज वही नीतियाँ अमेरिका की बपौती बन चुकी है और वे इतनी सामान्य लगती हैं कि कल्पना में नहीं आता कि उनके कारण उस समय इतना विरोध क्यों हुआ।

इसका मुख्य कारण हमें यह लगता है कि हैमिल्टन की तजवीजें संघ के अनुदार तथा वाणिज्य तत्वों को बहुत भाती थीं, किन्तु इनके विपरीत उन्मूलनवादी (रैडीकल तत्व) तथा कृषक-समुदाय इनका विरोध करते थे। इन परिस्थितियों में किसी समझौते पर पहुँचना कठिन था। परिणामतः एक न एक बद्धहित-समुदाय का असंतुष्ट रहना अवश्यम्भावी था।

सर्वप्रथम समस्या जिसे हैमिल्टन ने सन् १७९० में सुलझाने का प्रयास किया, वह अमेरिका के ऋणों से सम्बन्धित थी। ये ऋण, जिनकी राशि लगभग आठ करोड़ डालर थी, क्रान्तिकारी युद्ध के दौरान में अमेरिका पर चढ़े थे। इनमें से अढ़ाई करोड़ की राशि

भिन्न-भिन्न राज्यों की तरफ से फर्जे के रूप में दी गई थी। हैमिल्टन ने तजवीज किया कि उन्हें पूर्णतया चुकाया जाए, यद्यपि उनके द्वारा प्रतिनिहित पत्र प्रतिभूतियों के मूल्य बहुत गिर चुके थे। उसने तजवीज किया कि अंकित मूल्य पर राष्ट्रीय ऋण का निधीयन किया जाए और राज्यों के ऋणों को लगभग सम-मूल्य पर ही राष्ट्रीय ऋण के रूप में चुकाया जाए। हैमिल्टन वाद-विवाद में जीत गया। उसने अपनी युक्तियों के दो आधार बनाए—राष्ट्र की प्रतिष्ठा और राष्ट्र की सीरत। ये दोनों दलीलें वाशिंगटन को ठोस लगीं। निधीयन तथा अभिधारणा के विरुद्ध जो तर्क दिए गए, वे भिन्न-भिन्न प्रकार के थे। किन्तु इन सब में जिस युक्ति पर सर्वाधिक गर्मी पैदा हुई, वह यह थी कि हैमिल्टन अपनी योजना के द्वारा सट्टेबाजों को धनाढ्य बनाना चाहता है। कारण, कि सामान्यतः पत्र-प्रतिभूति-धारी मूलरूप में इनके स्वामी नहीं थे, जिन्होंने कि उन्हें देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर खरीदा हो और जरूरत पड़ जाने के कारण उपहार पर बेच दिया हो, किन्तु ये कपटी, पूर्वोय लोग थे। उनकी प्रतिभूतियों को पूर्ण-रूप में चुकाने का अभिप्राय यह था कि उन्हें संघानीय शासन की ओर से साहाय्य दिया जाय। हैमिल्टन स्वयं इस प्रक्रिया से भली भांति परिचित था, किन्तु उसने इसके ध्वनितार्थों को एक दूसरी रोशनी में देखा। उसने यह सही भविष्यवाणी की कि जो उपाय उसने निर्दिष्ट किए हैं, उनसे संघ दृढ़ बन्धन में 'जुड़' जाएगा, क्योंकि इससे प्रत्येक वह समुदाय जिसने इसके हित में अपना धन जोखिम में झोंका है, इससे बंध जाएगा।

जैसे जैसे हैमिल्टन की योजनाएं खुले रूप में आती गईं, जैफर्सन का क्रोध बढ़ता चला गया। कारण यह कि उसे एक समझौते के आधार पर निधीयन और अभिधारणा का समर्थन करने के लिए तथा कांग्रेस पर अपना असर डालने के लिए प्रेरित किया गया था। इन मामलों का वित्तीय व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नहीं था। उसने अब यह महसूस किया कि हैमिल्टन ने उसकी आंखों में धूल झोंकी

है। इस समझौते के अनुसार उत्तर के कांग्रेस-सदस्यों ने, जो हैमिल्टन के मित्र थे, राष्ट्र की राजधानी की संस्थापना के झंझट वाले मामले पर दक्षिण वालों के साथ मतदान किया। इन मतों के कारण दक्षिण वालों की जीत हुई और फिलेडेल्फिया की बजाय पोटोमैक नदी के क्षेत्र में राजधानी बनाने का निश्चय हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि सन् १८०० तक जब तक कि 'संघानीय प्रशासन की नई राजधानी' कांग्रेस की बैठकों के लिए तैयार नहीं हो जाती, कांग्रेस के अधिवेशन फिलेडेल्फिया में चलते रहेंगे। यह सत्य है कि यह दक्षिण वालों के लिए एक रिआयत थी, और इसके अलावा वाशिंगटन के लिए चुपचाप रूप से प्रसन्नता का स्रोत—क्योंकि इनका घर इस स्थान से कुछ ही मीलों पर नदी के तट पर था। किन्तु ऐसा लगा कि हैमिल्टन की उन कोशिशों के विरुद्ध जो वह संविधान को संघानीय रूप-रेखा देने में कर रहा था, यह सफलता एक प्रकार से थोथी थी।

सन् १७६१ के आरम्भ में वित्त-सचिव और राज्य सचिव की राष्ट्रपति के सामने ही जोरदार टक्कर हो गई। हैमिल्टन प्रशासन के संरक्षण में राष्ट्रीय बैंक की स्थापना चाहता था। उसने अपने अत्युत्तम लेखों में से एक में इस बारे में प्रतिनिधि-सदन को प्रतिवेदित किया था। इस कदम का इतने जोर-शोर से विरोध हुआ कि वाशिंगटन ने विवश होकर अपने कार्य-पालक अध्यक्षों से इस विषय में लिखित सम्मति मांगी। सम्मति इस बारे में नहीं थी कि राष्ट्रीय बैंक होना चाहिए अथवा नहीं, बल्कि इस बारे में कि ऐसा बैंक स्थापित करना सांवैधानिक होगा या नहीं। हैमिल्टन ने स्वाभाविक रूप से पहले की तरह तर्क-पूर्ण ढंग से उत्तर देते हुए इसे सांवैधानिक बताया। जैफर्सन ने उसी प्रकार योग्यता से यह सिद्ध करने की कोशिश की कि संविधान को इतनी दूर तक खींचा नहीं जा सकता। वाशिंगटन के लिए यह समस्या थी कि इस परिस्थिति में वह क्या करें? यह दोनों सम्मतियां एक दूसरे से सर्वथा विपरीत थीं। इनमें से कोई एक भी पूर्णतया धार्य नहीं थी। चूंकि कांग्रेस ने विधेयक

को पारित कर दिया था, अब उन्हें निर्णय करना था कि वह उस पर हस्ताक्षर करें, या उसका अभिषेध करें। चूंकि यह जैफर्सन के दिमाग की नहीं बल्कि हैमिल्टन के दिमाग की उपज थी, अतः उन्होंने उस पर हस्ताक्षर कर दिए। थोड़े ही समय पीछे उन्होंने मद्य-कर विधेयक को अनुमति दी। इसकी भी हैमिल्टन ने सिफारिश की थी। इसका उद्देश्य यह था कि आयात-शुल्क से पृथक्-रूप से प्राप्त आय में वृद्धि की जा सके। यह कर उस मद्य पर लगाया जाना था जिसका उत्पादन करके पश्चिम के अनेक कृषक प्रमुख-रूप से अपनी आजीविका कमाते थे। इस प्रकार मत-विरोध का एक और मौका पैदा हो गया।

निधीयन, अभिधारणा, एक राष्ट्रीय बैंक, मद्य-कर—इन सबका अमल में आना मैडीसन और जैफर्सन की नजरों में यह सिद्ध करना था कि हैमिल्टन के हाथों में सत्ता है और यदि वह इसी प्रकार अपनी योजनाओं में सफल होता चला गया, तो एक दिन यह अमेरिका को दूषित कर देगा। फिर अमेरिका के, जिसमें जागरूक खेतो-व्यवसायी रहते थे, एक शान्त देश बनने के अवसर समाप्त हो जाएंगे। उसकी बजाए 'एक-छत्र-शासन' वाले लोग अपनी स्थिति सुदृढ़ बना लेंगे और अमेरिका को योरुप की नकल-मात्र में परिवर्तित कर देंगे। कांग्रेस में सरकारी नौकरी का जमघटा होगा, और यदि यह विष आगे फैला, तो अमेरिका वंशगत राजवंशीय शासन को पुनः अपनाएगा। अतः उनकी दृष्टि में यदि कोई इसका निदान था, तो एक यह था कि हैमिल्टन का विरोध किया जाए। जैफर्सन इस विरोध का नेतृत्व अपने हाथों में नहीं लेना चाहता था। वाशिंगटन की तरह ही उसकी तीव्र इच्छा थी कि वह अपनी जन्मभूमि वर्जीनिया में लौट कर एक साधारण नागरिक की तरह रहे। किन्तु घटनाओं का अपना चक्र था। धीरे धीरे जैफर्सन, मैडीसन और कुछ उनके साथी उन अमरीकियों के मुखिया (प्रतिनिधि-प्रवक्ता) बने, जो अपने आप को संघानीय-शासन की विचार-धारा के विरुद्ध समझते थे। जब उनका शिथिल और कुछ-कुछ आकस्मिक सहमिलन

अधिक चेतनायुक्त हुआ, तो इसका नया नाम पड़ा। इसके सदस्य अपने आपको डेमोक्रेटिक-रिपब्लिकन अथवा संक्षेप में, रिपब्लिकन कहने लगे।

विचारों में इस बढ़ती हुई दरार का एक चिन्ह उस समय दृष्टिगोचर हुआ, जबकि अक्तूबर १७९१ में 'नेशनल गजट' नाम के 'रिपब्लिकन' पत्र का श्रीगणेश हुआ। यद्यपि 'फैडूलस्ट' पक्ष पर हमले करने वाला यह प्रथम पत्र नहीं था, फिर भी यह एक ऐसा पत्र था जो राष्ट्रीय स्तर पर फैडूलिस्ट पत्र 'गजट आफ दी यूनाइटिड स्टेट्स' को प्रभावशाली--वस्तुत: विनाशकारी--ढंग से चुनौती देने की सामर्थ्य रखता था। इस पिछले पत्र का जन्म सन् १७८९ में नई सरकार बनने पर हुआ। उसके सम्पादक का नाम जान फैनो था और हैमिल्टन को इससे निश्चित-रूप में समर्थन मिलता रहता था। फैनो का प्रतिद्वन्दी सम्पादक कवि फिलिप फ्रैनो था, जो मैडीसन का कालेज के दिनों का मित्र था और उत्साही रिपब्लिकन विचारों का था। वह फ्रैनो से अधिक साहसी पत्रकार था और अंशकालिक अनुवादक के रूप में राज्य-विभाग में भी काम करता था। चूंकि सन् १७९२ में फैनो विवाद में अधिक तर्क-संगत दिख रहा था हैमिल्टन ने (फैनो के स्थान में भिन्न-भिन्न उपनामों से लिखते हुए) कवि पर यह आरोप लगाया कि वह जैफर्सन की हाजिरी बजाने वाला है। फ्रैनो ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

सम्भवत: बाद की पीढ़ियों को यह स्थिति अजीब सी लगे। स्पष्टत: वाशिंगटन के मन्त्रिमण्डल के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण सदस्य कड़ुवाहट-पूर्ण ढंग से और बुनियादी बातों के आधार पर आपस में लड़-झगड़ रहे थे। यद्यपि यह गुप्त रीति से लड़ रहे थे, परन्तु इसका ज्ञान सबको था। उनकी देखा-देखी अन्य कार्य-पालक अध्यक्षों का भी इनमें से किसी न किसी का पक्ष लेने की ओर रोहझान रहता था। नौक्स हैमिल्टन के साथ और रेण्डाल्फ अपने वर्जीनिया के साथी जैफर्सन के साथ थे। हैमिल्टन अब भी सक्रिय-

रूप से (यद्यपि चुपचाप) विदेशी मामलों से सम्बन्ध रखे हुए था। हैमिल्टन ने महा-प्रेषपति का संघटन सम्भाल लिया, हालांकि इसे अधिक उपयुक्तता के साथ राज्य-विभाग को सौंपा जाना चाहिए था। और नई संघानीय टकसाल, जिसे वित्त विभाग के आधीन रखा जाना अधिक तर्क-संगत था, इसे जेफर्सन के आधीन कर दिया गया। क्या यह सब गड़बड़ और विद्वेष के कारण था?

उस समय वाशिंगटन के काल में ऐसा नहीं माना जाता था। 'मंत्री-मण्डल' में अभी तक संसक्ति का अभाव था, 'दलों' में उनका श्रेणी-बन्धन भी नहीं था। केवल कार्य-पालक-अध्यक्षों के कार्य-क्रम ही मोटे और अनिश्चित-रूप में राष्ट्रपति के कार्य-क्रम समझे जाते थे, न कि किसी सर्व-सम्मत प्रशासन के। हैमिल्टन और जेफर्सन दोनों राष्ट्रपति का आदर करते थे और उनके तथा अपने संघ-सम्बन्धी भिन्न-भिन्न विचारों के प्रति वफादार थे। उनकी उपस्थिति में वे प्रायः झगड़ा नहीं करते थे। उनको शिकायतें एक-दूसरे के विरुद्ध हुआ करती थीं—वाशिंगटन के विरुद्ध नहीं, और यह कहना चाहिए कि उनमें से प्रत्येक एक दूसरे पर एतबार न करते हुए भी अपने प्रतिद्वन्दी की इज्जत करता था। यद्यपि आपसी लड़ाई-झगड़े थे, परन्तु निराशा-जनक संकट की स्थिति पैदा नहीं हुई थी। (यह ठीक है कि) वाशिंगटन को कुछ-कुछ दूर हटकर रहना पड़ता था और विधान के सक्रिय प्रकल्पन तथा प्रवर्तन में उनका हाथ नहीं था, किन्तु वह मूर्ख अथवा निर्बल नहीं थे। उनकी प्रथम पदावधि में कोई उन पर यह भयंकर आरोप नहीं लगा सकता था कि वह हैमिल्टन के हाथों खेल रहे हैं। क्रान्तिकारी युद्ध में उन्होंने हैमिल्टन को चार साल तक अच्छी तरह जाना-पहचाना था। उन दिनों यह वाशिंगटन का परिसहाय था। उन्होंने बाद में १७८६ में फिले-डेल्फिया सम्मेलन में हैमिल्टन के राज्य-सम्बन्धी अनुदार विचार भी सुने थे। उन्हें इस बात के भी यथेष्ट अवसर मिले थे कि वह मंत्री तथा अन्य लोगों के उन विचारों का अध्ययन कर सकें जो उन्होंने हैमिल्टन की 'पद्धति' के बारे में व्यक्त किए थे। निस्सन्देह उनके

मन पर इस युवक की बौद्धिक योग्यता की गहरी छाप पड़ी थी। सम्भवतः वह अपने परिसहाय की युद्धकालीन बात-चीत से यह जानते थे कि हैमिल्टन बहुत पहले से ही अर्थात् सन् १७७६ में भी वित्त व्यवस्था एवम् व्यापार-सम्बन्धी समस्याओं में दिलचस्पी लिया करता था। इसमें भी शक नहीं कि वह हैमिल्टन के स्वभाव की खामियों को भी पहचानते थे। इस प्रकार की जानकारी उन्हें अवश्य बहुत पहले १७८६ में प्राप्त हुई होगी जबकि हैमिल्टन यह समझ कर कि मेरी बेइज्जती हुई है रुष्ट होकर वाशिंगटन के मुख्यालय से उठकर चला गया था।

जो भी हो, राष्ट्रपति के लिए सन् १७९२ आकुलता का वर्ष था। गर्मियों के आने तक वह अपने कार्य-भार से पूर्ण निवृत्त होना चाहते थे—ऐसा कार्यभार जिसमें उन्हें कोई आनन्द नहीं मिल रहा था। उन्हें दो गम्भीर रोग आ चिपके थे—सन् १७८९ में जांघ पर एक गांठ (अर्बुद) सी हुई और फिर १७९० में निमोनिया का दौर चला। इसके अलावा उनके पत्रों में कई ऐसे उल्लेख मिलते हैं जिन से यह पता चलता है कि इन्हीं दिनों में उनकी स्मरण-शक्ति भी क्षीण होती जा रही थी। वह बूढ़े हो चले थे और उनके हृदय में माऊंट वर्नन के लिए उसी प्रकार का अनुराग बढ़ता जा रहा था, जिस प्रकार कि जैफर्सन का मौंटीसैलो के लिए। जिन दिनों कांग्रेस के अधिवेशन नहीं हुआ करते थे, वह माऊंट वर्नन चले जाते थे और वहां ठहरने का प्रबन्ध करते थे। जब माऊंट वर्नन से दूर चले जाते, तो अपनी चिट्ठियों में अपने अधिदर्शकों को लम्बी-लम्बी और सूक्ष्म-रूप से विशेष हिदायतें लिख कर भेजते।

क्या उनके लिए निवृत्ति पाना व्यवहार्य था? इण्डियनों के साथ सीमान्त पर निरन्तर संघर्ष होते हुए भी संघ समृद्ध था। किन्तु फैडूलिस्ट—रिपब्लिकन वाद-विवाद बढ़ता जा रहा था। उसकी तीव्रता में किसी प्रकार की कमी नहीं आई थी। अपनी गुप्त बात-चीत में मैडीसन ने वाशिंगटन से अनुरोध किया कि

उन्हें राष्ट्रपति के पद को छोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि उसके विचार में और लोग, यहां तक कि उनका अपना घनिष्ट मित्र, जैफर्सन भी, एकता की रक्षा नहीं कर सकेगा। उप-राष्ट्र-पति, जान एडम्ज जहां फैड्रलिस्ट था वहां वह अशिष्ट और न्यू-इंगलैंड-वासी भी था। इन कारणों से वह भी संशयित था। यद्यपि जान जे के बहुत कम विरोधी थे, किन्तु वह भी अधिकांश में फैड्रलिस्ट ही था। प्रमुख फैड्रलिस्ट होने के कारण हैमिल्टन का प्रश्न ही नहीं उठता था। यद्यपि मैडीसन ने बातचीत में अपना जिक्र नहीं किया, पर चूंकि वह स्वयं रिपब्लिकन था, इसलिए उसे यह आशा नहीं थी कि इस पद के लिए उसे पसन्द किया जाएगा। केवल वाशिंगटन ही ऐसे व्यक्ति थे, जो (हर पहलू से) इस पद के लिए उपयुक्त थे।

यह विचार (कि वह दुबारा राष्ट्रपति का आसन ग्रहण करें) उनके लिए अरुचिकर था। हम नहीं कह सकते कि किस मौके पर उन्होंने अपने आपको अन्तिम रूप में भाग्य के भरोसे छोड़ दिया। सम्भवतः अब तक वह यह धारणा लिए बैठे थे कि कोई न कोई और उम्मीदवार मिल सकेगा, बशर्ते कि वह हैमिल्टन और जैफर्सन के बीच की खाई को दूर कर सकें। कुछ भी हो, उन्होंने इस बात का प्रयास किया कि स्थिति को स्पष्ट किया जाए। जैफर्सन ने हैमिल्टन के विरुद्ध इक्कीस आरोपों की एक सूची पेश की। हैमिल्टन और उसके साथियों को 'कागजों के व्यापारियों का भ्रष्ट दल' और सामान्य-रूप से फैड्रलिस्ट प्रवृत्तियों वाले कहा गया। जैफर्सन के कथनानुसार इन लोगों का अन्तिम उद्देश्य परिवर्तन के लिए मार्ग तैयार करना और सरकार के वर्तमान रिपब्लिकन-स्वरूप को ब्रिटिश संविधान के नमूने पर बदलना था। वाशिंगटन ने इन आरोपों की प्रतिलिपि बनाई और उसे बिना जैफर्सन का जिक्र किए हैमिल्टन के पास भेज दिया। ऐसा करके वह यह बताना चाहते थे कि प्रेषित सामग्री उन आलोचनाओं का संक्षेप है जो उन्हें भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त हुई है। यथोचित समय पर हैमिल्टन ने इसका उत्तर क्रोध से, किन्तु वाक्-पटुता

और परिस्थित्यनुसार दिया, जिसमें उसने सब आरोपों को मिथ्या बतलाया।

दोनों में मेल-जोल पैदा करने की कोशिशें जारी रहीं। उन्होंने चतुरता-पूर्ण भाषा में दोनों व्यक्तियों से अनुरोध किया कि उन्हें सामान्य हितों को दृष्टि में रखते हुए अपने मत-भेदों को भुला देना चाहिए। उनके उत्तर निराशाजनक थे। उनसे यह जाहिर होता था कि उनके स्वभावों में क्रूरता भरी हुई है। जैफर्सन ने अपने आरोपों को दुहराया और साथ ही साथ नए आरोप लगाए। हैमिल्टन ने सारा दोष जैफर्सन के मत्थे मढ़ा। उसने रिपब्लिकनों के विरुद्ध अपना आन्दोलन बंद करने से इन्कार कर दिया। वाशिंगटन इस से अधिक और कर ही क्या सकते थे, सिवाए इसके कि उन्हें प्रेरणा करते कि वे एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता के भाव रखें और जैफर्सन को मनाते कि उसे राज्य-सचिव के पद से निवृत्ति पाने की बात नहीं सोचनी चाहिए। इन दोनों में से किसी की भी सेवाएं वह खोना नहीं चाहते थे, क्योंकि वे दोनों दुर्लभ योग्यता के व्यक्ति थे, जिनकी सलाह उनके लिए अनिवार्य थी। हो सकता है कि उन्होंने यह भी महसूस किया हो कि यदि उन्होंने उन्हें अपने पर छोड़ दिया, तो वे पहले की तरह सक्रिय तो होंगे ही, किन्तु पहले से अधिक तेज और सावधान हो जायेंगे। और शायद यह वाशिंगटन को सूझा भी कि इन पदों पर आसीन वे किसी हद तक एक दूसरे को संतुलन में रखते हैं। ऐसे 'मन्त्री-मण्डल' में जिसमें जैफर्सन नहीं होगा, हैमिल्टन को अपनी नीतियों का विस्तार करने में प्रोत्साहन मिलेगा। इससे इस युक्ति को अधिक बल मिलेगा कि राज-तन्त्र बनने की तैयारियां हो रही हैं। वाशिंगटन इस युक्ति को गम्भीरता से नहीं लेते थे। एक बार जब सन् १७८३ में सेना-अधिकारियों के एक समुदाय ने उन्हें यह संकेत किया कि वह उनकी सहायता से संयुक्त-राज्य के बादशाह बन सकते हैं, तो उनके दिल में कुछ-कुछ चोट पहुंची और सम्भवतः वह चकरा भी गए। हमारे पास कोई ऐसी चीज नहीं है, जिससे यह प्रगट हो कि वह

अपने लिए अथवा किसी और अमेरिका-वासी के लिए इस प्रकार की योजना को चित्य समझते थे। ऐसा जान पड़ता है कि जैफर्सन के विपरीत वह इस बात में कोई हानि नहीं देखते थे कि संविधान के अधीन सिद्धान्त-रूप से राष्ट्रपति अनेक बार पुनः निर्वाचित हो। किन्तु यदि राज-तन्त्र के संदेह हो, तो वह उन्हें दूर करने के लिए उद्यत हैं। जहां तक हैमिल्टन को हटा कर 'मन्त्री-मण्डल' के निर्माण का प्रश्न था, उनकी राय यह थी कि इससे रिपब्लिकनों को हैमिल्टन की पद्धति का अन्त करने का प्रोत्साहन मिलेगा। वाशिंगटन का विचार था कि इस पद्धति ने अपनी यथार्थता को सिद्ध कर दिया है। इसके अतिरिक्त, यदि हैमिल्टन को वर्गीय और व्यावसायिक पक्षपात रखने वाला माना भी जाए, तो वही बात जैफर्सन में लागू होती थी, क्योंकि उसने अपने इस इरादे की घोषणा की थी कि वह हर हालत में दक्षिण का समर्थन करेगा।

संक्षेप में, वाशिंगटन इस परिणाम पर पहुँचे कि उन्हें अपने कार्यालय-अध्यक्ष बनाए रहने चाहिएं और उन्हें (कर्तव्य-भावना को सामने रखते हुए) राष्ट्र-पति बना ही रहना चाहिए। (यह बिल्कुल स्पष्ट था कि निर्वाचन-कर्ता इन्हीं को ही १७९२ में चुनेंगे—यह और बात है कि वह उनसे प्रार्थना करें कि उन्हें न चुना जाय)। यदि उनकी यह अभिलाषा थी कि दोनों विरोधी गुट झगड़े-बाजी को बंद करें, तो सम्भवतः इससे उन्हें व्यंग्यात्मक संतोष मिला होगा कि वे दोनों ही उनकी आवश्यकता महसूस करते हैं। जैफर्सन और हैमिल्टन दोनों ने ही (उनके साथ रैंडाल्फ, मैडीसन तथा अन्य लोगों ने भी जो उनके निकट थे) उनसे प्रार्थना की कि उन्हें राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। इस प्रकार एक बार फिर उन्हें और उनके साथ जान एडम्ज को चार-वर्ष के लिए राष्ट्रपति के अकेले वैभव-युक्त आसन पर बिठा दिया गया।

द्वितीय-प्रशासन: १७९३-१७९७

नहीं कह सकते कि वाशिंगटन ने इस बात का अनुमान लगाया या नहीं—उन्हें अपने दूसरे प्रशासन-काल में जितनी अधिक आलो-

चना का शिकार होना पड़ा, उतने वह सारे जीवन में कभी नहीं हुए। राष्ट्रपति की हैसियत में जहां उन्हें सम्पूर्ण देश में दलबन्दी के कारण चित्त में व्यग्रता बनी रही, वहां उन्हें शासन के अन्दर की दलबन्दी ने विशेष रूप से अशान्त बनाए रखा। अब जबकि विदेशी-नीति-सम्बन्धी गम्भीर प्रश्नों के कारण देश में मत-विभिन्नता पैदा हो गई थी, तो यह झगड़े अधिक जोर-शोर से होने लगे।

वाशिंगटन के सन् १७८९ के प्रथम उद्घाटन के थोड़े ही अरसे बाद फ्रांस में क्रांति का आरम्भ हुआ। सन् १७९२ की शरद् में जबकि वाशिंगटन हैमिल्टन और जैफर्सन में आपसी समझौते कराने का प्रयत्न कर रहे थे, फ्रांस ने अपने आप को गणतन्त्र-राज्य घोषित कर दिया। समवेदनापूर्ण अमरीकियों की नजरों में यह संयुक्त-राज्य अमेरिका के उदाहरण का अनुसरण था, यद्यपि इसके द्वारा अफसोसनाक ज्यादतियां हुईं। फ्रांस की 'मानवाधिकारों' की घोषणा जैफर्सन की स्वतन्त्रता-सम्बन्धी घोषणा की वंशक्रमागत थी। इस प्रकार इस समय संसार में केवल अमेरिका ही प्रजातांत्रिक गणतन्त्र नहीं था, फ्रांस भी उसके पद-चिह्नों पर चल रहा था। किन्तु मार्च सन् १७९३ में, वाशिंगटन के दूसरे उद्घाटन के कुछ ही समय पश्चात्, फ्रांसीसियों ने अपने पहले बादशाह, लुई १४ को फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया और ब्रिटेन को भी उन देशों की सूची में शामिल कर लिया जिनके साथ फ्रांस की युद्ध की स्थिति थी।

यह समय वस्तुतः नवीन राष्ट्र अमेरिका के लिए संकट का था। उसके लिए तटस्थता को बनाए रखना कभी भी सरल नहीं रहा है। वास्तव में उसके सम्पूर्ण इतिहास में योरूप की बड़ी २ लड़ाइयों में तटस्थता असंभव सिद्ध हुई है। सन् १७९३ में स्थिति असाधारण रूप से तनाव-पूर्ण और नाजुक थी। इधर फ्रांस अमेरिका का भूतपूर्व संमित्र था। यार्क टाऊन में प्राप्त विजय के कारण जो कृतज्ञता की भावना अमेरीका के लोगों पैदा हुई थी, उसने उनमें यह भावना भरी कि नई दुनिया (अमेरिका) को गणतन्त्र की रक्षा के लिए पुरानी दुनिया का साथ देना ही चाहिए। ऐसी

ही प्रेरणा उन्हें उन निश्चित दायित्वों के कारण मिली, जो फ्रांस के साथ संमित्रता की शर्तों की वजह से संयुक्त-राज्य पर आ कर पड़े थे। अब जबकि उसका संमित्र, समानता-प्रेमी फ्रांस, अत्याचारी ब्रिटेन के साथ, जो अमेरिका का भूतपूर्व शत्रु था, उलझ गया, तो यह कैसे हो सकता था कि वह (अमेरिका) अपनी अधिमानता प्रगट न करे ?

दूसरी ओर ब्रिटेन के साथ अमेरिका के अधिक घनिष्ट सम्बन्ध थे। स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़ने तक, अमेरिका के उपनिवेश, ब्रिटेन के समान ही फ्रांस को अपना शत्रु मानते आए थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति का अर्थ यह नहीं था कि ब्रिटेन के साथ सम्पूर्ण सम्बन्ध ही टूट जाएं। अनेक अमरीकियों के लिए (जिनमें हैमिल्टन प्रमुख था) जार्ज तृतीय और विलियम पिट का देश, अपने सब दोषों के रहते हुए भी, एक निकट सम्बन्धी की तरह था। अमेरिका का बहुत सा समुद्र-पार व्यापार ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत देशों से था। यदि इस व्यापार का सिलसिला बीच में टूट जाए, तो हैमिल्टन की राजस्व-पद्धति चकनाचूर हो जाती थी। दूसरी बात यह कि अमेरिका का गणतन्त्रवाद योरुप के गणतन्त्रवाद से बिल्कुल भिन्न तरीकों पर प्रस्थापित हुआ था। योरुप में इसे लाने के लिए खून की नदियां बहीं थीं और तब जाकर क्रान्ति आई थी। अमेरिका में 'टोरी' विचार-धारा रखने वाले लोगों को केवल तारकोल से पोत दिया गया था और उन पर पंख चिपका दिए गए थे। फ्रांस के रईस और कुलीन लोग, उस देश के बादशाह के समान, फांसी के तख्ते पर लटकाए गए थे। वाशिंगटन का प्रिय मित्र, लैफायट, जो कुछ काल तक फ्रांस के नेताओं में से एक था, सन् १७९२ में अपमानित होने पर आस्ट्रेलिया के एक कारागार में डाल दिया गया। यह बन्दी-गृह एक संदिग्ध रूप से पावन स्थान था, जहां वह चार साल तक पड़ा सड़ता रहा। इस कैद के कारण वह अपने बहुत से साथियों से अधिक भाग्यवान् निकला, क्योंकि वह फांसी पर चढ़ने से बच

गया। वाशिंगटन की दृष्टि में—जिसमें कि उनके आपस में लड़ने-झगड़ने वाले सलाहकार भी एकमत थे—अमेरिका के लिए स्पष्ट मार्ग यह था कि वह तटस्थ बना रहे। अतः उन्होंने इस नीति की तुरंत सरकारी रूप से घोषणा कर दी। पर उन्होंने फ्रांस के विचारों का आदर करते हुए (और जैफर्सन के विचारों का भी, जिसने इस बात का अनुरोध भी किया था) उन्होंने अपने दस्तावेज में 'तटस्थता' शब्द का प्रयोग नहीं किया। इसके अलावा उन्होंने, फ्रांसीसी सरकार के मन्त्री, नागरिक जैनेट, के स्वागत की तैयारियां करके एक प्रकार से फ्रांस की नई सरकार का अनुमोदन किया। अतः फ्रांस की नई सरकार के बारे में इतनी बात असंदिग्ध और निश्चित थी। बाद में कुछ समय तक अमेरिका में क्रोधपूर्ण उपद्रव की स्थिति रही, क्योंकि अमेरिका भले ही सरकारी रूप में तटस्थ हो, किन्तु व्यक्तिगत रूप से अमेरिका-वासी तटस्थ नहीं थे। उन्होंने फ्रांस में क्रांति फूटते ही इसका पक्ष लेना आरम्भ कर दिया था। अब वह उत्साह से एवं आश्चर्यजनक मात्रा में उल्लसित हो उठे थे। फ्रांस के पक्ष के लोगों ने टाम पैन की पुस्तक 'मनुष्य के अधिकार' को बाइबल के समान माना; धनी लोगों के शासन की तीव्र निन्दा की और स्वतंत्रता के लिए हर्ष के नारे लगाए। उन्हों अपने अपने प्रजातान्त्रिक क्लब बनाए और जब जेनेट अमेरिकन मंच पर आया, तो उसका हृदय से स्वागत किया। 'अंग्रेजों के पक्ष के लोगों' ने इस सब को भय और घृणा से देखा और उन्होंने अपने विरोधियों को विनाशकारी, उन्मत्त व्यक्ति कह कर उनकी निन्दा की।

डेढ़ शताब्दी के अन्तर पर भी इन घटनाओं के ठीक स्वरूप को देखना अथवा वाशिंगटन ने उन में कितना भाग लिया—उसे ठीक २ आंकना कठिन लगता है। कट्टर पंथियों को छोड़ कर वह सब फैड्रलिस्टों के लिए एक वीर-पुरुष और राष्ट्र के प्रतीक थे। उनके नाम की प्रतिष्ठा सब वाद-विवादों में दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए अन्तिम हथियार थी। मर्यादा में रहने वालों को

छोड़ कर वह सब गणतन्त्रवादियों के लिए एक कांति-हीन योद्धा थे। उनकी दृष्टि में वह फेडरलिस्ट लोगों की योजनाओं तथा कुमन्त्रणाओं का जाने-अनजाने में मूर्त-रूप थे। सन् १७९३ में, अपने लम्बे जीवन-कार्य में प्रथम बार, वाशिंगटन खुली और निरन्तर आलोचना के शिकार बने। सन् १९८९ में अमरीकियों ने ('गोड सेव आवर ग्रेशस किंग' की तान पर) यह गाया था—'गाड सेव ग्रेट वाशिंगटन' (परमात्मा महान् वाशिंगटन की रक्षा करे)। सन् १७९३ में गणतन्त्रवाद के पोषक पत्रों में वे एक दूसरे को स्मरण करा रहे थे कि वाशिंगटन कोई देवता नहीं हैं, बल्कि गलतियां करने वाले एक मानव हैं, जिन्होंने अपने को 'दरबार के खुशामदी अनुचरों' तथा 'कुम्भी जैसे छोटे शासकों' से घेर रखा है। दो वर्ष बाद फिलेडेल्फिया के एक पत्रकार ने वाशिंगटन को ऐसा व्यक्ति बताया 'जो राजनैतिक रूप से सठिया गया है' और जो 'अत्युद्धत और निष्ठुर-शासक है।' उसी पत्रकार ने १७९६ के अन्त में लिखा कि 'यदि कभी कोई राष्ट्र किसी व्यक्ति द्वारा भ्रष्ट हुआ है, तो 'निस्सन्देह अमेरिका राष्ट्र वाशिंगटन द्वारा हुआ है।'

किन्तु समकालीन टिप्पणियां अधिक-परिमाण में अपने लहजे में वाशिंगटन के प्रति अधिक आदरपूर्ण थीं। तो भी ये उदाहरण उस युग के भावों के माप-दण्ड हैं। गणतन्त्र-वादियों ने महसूस किया कि प्रमुख राष्ट्रपति एक दलीय सरदार बनता जा रहा है और निस्स्वार्थ देशभक्ति के चोले में फैडरलिस्ट अंग्रेजों के हाथों में खेल रहे हैं। वह यह मानते थे कि फ्रांस का व्यवहार न सिर्फ एक पहेली है, बल्कि निन्दनीय भी है। उदाहरण के लिए जैनेट ने अपने व्यवहार में इस कदर गंवारूपन प्रदर्शित किया कि जैफर्सन को इस बात में वाशिंगटन का समर्थन करना पड़ा कि फ्रांस से उसे वापस बुलाने की मांग की जाए। किन्तु, कुछ भी हो, वे ब्रिटेन की अपेक्षा फ्रांस को अधिक चाहते थे, क्योंकि उन्हें अतीत की अपेक्षा भविष्य का अधिक ख्याल था। वे देख रहे थे कि अमेरिका अपने सच्चे मित्र के प्रति तो उदासीन है और जो उसका वास्तविक शत्रु है उसके प्रति

उसमें आदर की भावना है। उन्होंने जब सन् १७९४ में यह सुना कि वाशिंगटन, एक प्रसिद्ध फेड्रलिस्ट और अंग्रेजों के प्रशंसक, जान जे को लन्दन इसलिए भेज रहे हैं, ताकि शेष बचे-खुचे चन्द भेद-भावों के सम्बन्ध में समझौते की बात चलाई जाय, तो उन्हें बहुत क्रोध आया। उनके सबसे बढ़ कर सन्देह मार्च, १७९५ में, सम्पुष्ट हुए जब उस समझौते के विवरण अमेरिका में पहुँचे, जिन पर कि जे ने हस्ताक्षर किए थे।

लोगों को ऐसा लगा कि जे ने अमेरिका के अधिकारों को दृढ़ता पूर्वक मनवाने की बजाय अंग्रेजों के आगे विनीततापूर्वक मस्तक झुका दिया है। यह सच है कि इस समझौते के अनुसार ब्रिटेन सरकार ने वचन दिया कि वह अमेरिका के पश्चिम मे स्थित अपनी फौजी छावनियों को, जहाँ से वे लोग इण्डियनो को अमेरीकियों के विरुद्ध भड़काया करते थे, खाली कर देगी। किन्तु गिनती में केवल यही एक महत्वपूर्ण रियायत थी, जो उन्हें मिली। इस विषय में भी लोगों का यह कहना था कि आखिर इस समझौते के द्वारा ब्रिटिश सरकार केवल अपने उस वायदे को पूरा कर रही है, जो उसने दस वर्ष पूर्व किया था। इसे छोड़कर शेप जितनी रियायतें थीं, वे अमेरिका की ओर से ब्रिटेन को दी गई थीं। मजेदार बात यह कि कई महत्त्वपूर्ण मामले भविष्य में बातचीत के लिए छोड़ दिए गए थे। अतः रिपब्लिकन विपक्षियों का यह आरोप था कि अमेरिका में ब्रिटेन के प्रशंसक अपने देश के जन्मसिद्ध अधिकारों को बेच रहे हैं और जे देश-विद्रोही है (उन्होंने उसका कागज का बुत बना कर उसे दियासलाई दिखाई थी); फेड्रलिस्ट गुण्डे हैं; 'वाशिंगटन राजनैतिक क्षेत्र में बगुला-भगत है; वह राष्ट्र का वास्तविक पिता नहीं, 'सौतेला पिता' है। जे द्वारा किये गये समझौते पर इस प्रकार का लड़ाई-झगड़ा सैनेट द्वारा दस्तावेज के सम्पुष्ट होने और वाशिंगटन के हस्ताक्षर होने के बहुत काल बाद तक, सन् १७९५ के वर्ष में और १७९६ में, अनेक मासों तक चलता रहा। किन्तु यह हल्ला-गुल्ला सब बेकार गया, क्योंकि समझौता अमल में आ गया और इस प्रकार समर्थन के कारण जे का सिर ऊंचा हुआ।

दूसरी तरफ वाशिंगटन ने अपने फ्रांस के वर्जीनिया-वासी गणतन्त्रवादी दूत, जेम्ज मनरो, का तिरस्कार करते हुए इसलिए उसे वापिस बुला लिया, क्योंकि वह फ्रांसीसियों को यकीन नहीं दिला सका था कि जे द्वारा किया गया समझौता समूचे अमेरिका की मरजी से हुआ था, न कि केवल फैड्रलिस्ट दल की इच्छा से।

ये विदेश-नीति के सम्बन्ध में विचार थे, जिन्हें गणतन्त्रवादी वाशिंगटन के द्वितीय शासन-काल में व्यक्त किया करते थे। देश में उन्होंने फैड्रलिस्ट की विद्वेषपूर्ण नीतियों का एक और साक्ष्य ढूंढ़ निकाला। यह हैमिल्टन का उच्छुल्क-कर (मद्य-कर) सम्बन्धी कानून था, जिसे जैफर्सन ने 'घृणित-रूप से अहितकर' कहा। इसके विरुद्ध रोष की आग इस कदर भड़की कि सन् १७९२ में वाशिंगटन ने कड़े शब्दों में इसकी घोषणा करके इसे सबल बनाने का प्रयास किया। दो वर्ष बाद हैमिल्टन की इस सूचना से प्रेरणा पाकर कि पश्चिम पैनसिलवेनिया के 'मद्य-कर विद्रोही' संघ की सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं, उन्होंने एक बहुत बड़ी मिलिशिया बुलाई और सम्मिलन-स्थान पर उनका निरीक्षण करके उन्हें गड़बड़ी वाले स्थान पर भेज दिया। वहाँ किसी प्रकार की लड़ाई नहीं हुई, क्योंकि गणतन्त्रवादियों के कथनानुसार-वहाँ वास्तव में कोई विद्रोह था ही नहीं, केवल हैमिल्टन द्वारा अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए एक अवास्तविक वस्तु की कल्पना की गई थी। डेढ़ सौ पैनसिलवेनियन पकड़ लिए गए, जिनमें से दो को मौत की सजा मिली। वाशिंगटन ने बाद में उन्हें माफ कर दिया। किन्तु ऐसा लगता है कि हैमिल्टन ने उन्हें अपने विचारों का बना लिया। मैडीसन की राय में यह तमाशा इसलिए किया गया था कि प्रजातान्त्रिक सभाओं को विद्रोह के घृणित कार्य से सम्बद्ध किया जाए और कांग्रेस में गणतन्त्रवादियों का सम्बन्ध इन सभाओं के साथ जोड़ दिया जाये, ताकि राष्ट्रपति दूसरे (फैड्रिल) दल के प्रमुख नेता नजर आएं। जैफर्सन ने एक वर्ष पहले राष्ट्रपति से कहा था कि हैमिल्टन का यह इरादा है कि उन्हें 'राष्ट्र की प्रमुखता से नीचे उतार कर एक दल का प्रमुख

बनाया जाय।' वाशिंगटन जब इस सीमा तक चले गए कि उन्होंने नवम्बर, १७९४ में अपने कांग्रेस को दिए गए वार्षिक भाषण में विद्रोह का आरोप 'कुछेक स्वयं-निर्मित सभाओं' पर लगाया, तो मैडीसन के विचार में 'उन्होंने सम्भवतः अपने राजनैतिक जीवन में सब से बड़ी भूल की।'

उस समय की घटनाओं के विषय में गणतन्त्रवादी क्या विचार रखते थे, उसका हमने जिक्र किया है। इस बारे में हमें यह देखना है कि वाशिंगटन का अपना दृष्टिकोण क्या था ? (यह निश्चित है कि) वह न तो अंग्रेजों के पक्षपाती थे और न फ्रांसीसियों के। उनकी नजरों में यह इस प्रकार से स्वतन्त्रता की लड़ाई का विस्तार ही था, किन्तु इसे बिना युद्ध के लड़ा जाना चाहिए था। अमेरिका के दायित्व को प्रमुख खतरा बाहर से था, क्योंकि अभी तक अमेरिका में, लज्जास्पद मात्रा में, प्रभावशाली आत्म-शक्ति की कमी थी। अमेरिका अभी न तो पूर्णतया स्वतन्त्र था और न ही परिपक्व था। किसी भावना प्रधान नाटक की किशोर-नायिका की तरह, अमेरिका विपुल सम्पत्ति का अधिकारी था। इसके नकली अभिभावक इस बात के लिए कोशिश कर रहे थे कि उस किशोरी को निजी सम्पत्ति से वंचित कर दिया जाए—या तो विवाह के लिए विवश करके और या जरूरत पड़ने पर उसे मौत के घाट उतार कर।

इन स्वतः नियुक्त अभिभावकों में से फ्रांस अधिक खतरनाक था। ब्रिटेन का रवैया रूखा और तिरस्कारपूर्ण था। साथ ही वह अपनी ही शैली में तटस्थता-सम्बन्धी अधिकारों को ठुकराया करता था। किन्तु अमेरिका में उस समय इतनी शक्ति नहीं थी कि वह ब्रिटेन को चुनौती दे सके। उसका उद्देश्य था व्यापारिक सम्बन्धों का संरक्षण और सुधार, अंग्रेजी सेना को पश्चिमी किलों से निकलवाना, निकट के वायदों से बचना और सामान्य-रूप में समय को किसी न किसी तरह बिताना। यद्यपि वाशिंगटन जे के कार्य से निराश थे, फिर भी वह इस बात को जानते थे कि अमेरिका इतना निर्बल है कि उसके लिए कोई चमत्कार दिखाना सम्भव नहीं।

जहां तक फ्रान्स का सम्बन्ध है, खतरा अधिक सूक्ष्म था और इसलिए उसका मुकाबला करना अधिक कठिन था। वाशिंगटन ने 'तटस्थता' पर बल दिया, फ्रांसीसी 'मैत्री-पूर्ण तटस्थता' पर जोर देते थे। उन्होंने वर्तमान सम्मिलता के समझौते का आश्रय लेना इसलिए पसन्द नहीं किया, क्योंकि वे संयुक्त-राज्य के साथ पूर्व सम्बन्धों की अस्पष्टताओं से लाभ उठाने की आशा रखते थे। उन्हें रसद मिलती थी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे अमेरिका को लुटेरे-पोतों का और सम्भवतः कैरिब्बीन तथा पृष्ठदेश में साम्राजीय साहसिक कार्यों का अड्डा बना सकते थे। ये दोनों सम्भावनाएँ सक्रिय-रूप से जैनेट के ध्यान में थीं और, अपने उत्तराधिकारियों की ही तरह, उसने यह मान लिया था कि वह भलीभांति समर्थन पाने के लिए अमेरिका की क्रान्तिकारी भावनाओं पर भरोसा रख सकता है। उसे आशा थी कि यदि वाशिंगटन और फैड्रिस विचारों के लोग कभी रास्ते में रोड़े बनें भी, तो फ्रान्स उनसे आगे जाकर अमेरिका-वासियों तक अपनी बात पहुंचाने की चेष्टा करेगा। वस्तुतः सन् १७९६ आने पर अमेरिका में ठहरे हुए फ्रान्सीसी कारिन्दों ने चुनावों में गणतन्त्रवादियों की जीत के लिए ऐड़ी से चोटी तक का जोर भी लगाया।

दलों के षड्यन्त्रों के कारण वाशिंगटन की समस्याएं जटिल बन गईं। हैमिल्टन जान-बूझ कर, बिना सोचे-समझे, ब्रिटेन के कूटनीतिज्ञ प्रतिनिधि को अपने भेद बता दिया करता। दूसरी ओर गणतन्त्रवादी (यद्यपि इस में जैफर्सन इतना दोषी नहीं था) फ्रान्स को अपने सम्पूर्ण संमित्र के रूप में मानते थे। यद्यपि जैफर्सन ने सन् १७९३ के अन्त में और हैमिल्टन ने सन् १७९५ में अपने-अपने पद से इस्तीफा दे दिया, फिर भी उनकी नीतियों का राष्ट्रीय मामलों पर प्रभाव पड़ता रहा। हैमिल्टन विशेष रूप से सरकारी मामलों में प्रभावी रहा। यह मानना पड़ेगा कि यह अंशतः वाशिंगटन के निमन्त्रण के कारण था। उसने ऐसा इन्तजाम किया था कि न्यूयार्क में विधि-व्यवसाय को करते हुए भी वह मन्त्रीमन्डल

का एक अदृश्य सदस्य सा बना रहे। जैफर्सन का उत्तराधिकारी राज्य-सचिव, एडमण्ड रैंडाल्फ, विचित्र परिस्थितियों में सन् १७९५ में पद-च्युत कर दिया गया। गलत या सही, वाशिंगटन का यह विचार था कि वह जे के समझौते के विरुद्ध फ्रान्स के मन्त्री से साज-बाज करने का अपराधी है।

किन्तु इन षड्यन्त्रों, खुशामदों और स्पष्ट दुर्वचनों के बावजूद, वाशिंगटन अपनी नीति पर अड़े रहे। हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि बाद के इतिहास की रोशनी में—वह रोशनी जो उन्हें उस समय प्राप्त नहीं थी—वह सही थे। और अति-गणतन्त्रवादी जो, यदि उनका बस चलता, अमेरिका को फ्रान्स के दायरे में घसीट ले जाते, वे गलत थे, चाहे उनके आशय उचित ही क्यों न हों। वाशिंगटन समझदार और साहसी थे। यदि कभी वह आपे से बाहर भी हो जाते 'थे', तो भी वह अपनी पकड़ को नहीं खोते थे। यह भी नहीं कह सकते कि उनकी कूट-नीति परिणामों के लिहाज से सर्वथा निषेधात्मक थी। जे के द्वारा किए गये समझौते के अल्प लाभों के बदले में इससे भी बढ़िया लाभ स्पेन के साथ १७९५ में समझौता करने में मिले, जिसे थामस पिकने ने सम्पादित कराया था। इस समझौते के अनुसार मिसीसिपी नदी में (जिसका निकास स्पेन के इलाके में होता था) स्वतन्त्रता-पूर्वक पोत चलाने के अमरीकी दावे को स्वीकार कर लिया गया। साथ ही उसके इस दावे को भी मान लिया गया कि उसकी पश्चिमी सीमा मिसीसिपी नदी है। उसी साल ओहियो क्षेत्र में जनरल एंथनी वेन की निर्णायिक जीत के बाद इण्डियनों के साथ एक समझौता हुआ जिसके फलस्वरूप उत्तर-पश्चिम सीमा अधिक सुरक्षित हो गई। वाशिंगटन ने अपने विदाई-भाषण में इस बात को दोहराया—'मेरे राष्ट्रपति-काल में मेरा प्रधान लक्ष्य यह रहा है कि मैं कोशिश करूँ कि हमारे देश को इतना समय मिल जाये कि उसकी स्थिति निश्चित हो जाये, उसकी आधुनिक संस्थाएं परिपक्वावस्था में आ जायें और वह इस कदर निर्विघ्नता-पूर्वक प्रगति करे कि उसे उस हद तक

शक्ति और स्थायित्व प्राप्त हो जो उसे अपनी सम्पदा को भली-भांति वश में रखने के लिए आवश्यक है।'

इस प्रकार की परिस्थितियां उपलब्ध होने पर देश प्रगति किए बिना नहीं रह सकता था। वाशिंगटन ने उन्नति और समृद्धि के प्रमाण अपने चारों ओर अपनी आंखों से देखे। उनके दूसरे प्रशासन-काल के अन्त तक तीन नए राज्य—वर्मोन्ट, केंटकी और टैनेसी—संघ में शामिल हो गए और शेष की भी उनके पद-चिन्हों पर चलने की आशा बंध गई। शुल्क-द्वार वाली सड़कें बन रही थीं। पेनसलैवेनिया में कोयले के निक्षेप मिले। यद्यपि पोटोमिक कम्पनी की प्रगति की रफ्तार धीमी थी, फिर भी वह अभी तक जिन्दा थी। इसी प्रकार अल्प-सुधार योजनाएं भी चालू थीं। संघानीय राजधानी (जिसमें कि वाशिंगटन गहरी दिलचस्पी ले रहे थे) की नींव महत्ता और क्षुद्रता के मिश्रित वातावरण में रखी जा रही थी—ऐसा वातावरण कि जिसने बाद में सदा के लिए अपनी छाप छोड़ी।

इन महत्व-पूर्ण कामों की पूर्ति के लिए वाशिंगटन को बहुत सा श्रेय मिलना चाहिए-यद्यपि उन्होंने कभी इसकी अभ्यर्थना नहीं की, क्योंकि अपनी विदेश-नीति में जो उन्होंने एकरूपता दिखाई, यदि उस में कोई न्यूनता रह जाती, तो उनके महान् कामों में से एक भी सम्पादित न हो सका होता। जे के समझौते के पारित होते ही फ्रांसीसी विरोध अधिकाधिक तीव्र होता चला गया, यहां तक कि अमेरिका और फ्रांस के बीच जो तनाव पैदा हुआ वह लगभग असह्य हो गया। जान क्विन्सी एडम्ज ने, जो उपराष्ट्रपति का सुपुत्र था, हालैण्ड से (जहां वह अमेरिका का राजदूत था) सन् १७९५ के अन्त में लिखा—"यदि अब भी हमारी तटस्थता को सुरक्षित रखा जा सकता है, तो यह केवल राष्ट्रपति के कारण ही सम्भव हो सकेगा। उनके महान् चरित्र व सुख्याति, जिनके साथ उनकी दृढ़ता और राजनैतिक निर्भीकता भी शामिल हैं, का वजन ही इस वेगपूर्ण जल के प्रवाह को रोक सकते थे, जो अब भी

तीव्र कोप के साथ गड़बड़ी मचा रहा है और जिसकी गूंज अन्ध-महासागर के पार भी सुनाई दे रही है।"

यदि हम यह स्वीकार कर लें कि वाशिंगटन ने इन संकटपूर्ण सालों में यह दिखा दिया कि उनमें नेतृत्व के अद्भुत गुण थे, तो क्या यह सही है कि एक प्रमुख कार्यपालक की बजाय उन्होंने यह सब कुछ एक राजनैतिक दल फेड्रिल दल—के नेता के रूप में किया ? हमने देखा है कि अपने बहुत से समकालीन लोगों की तरह, वह दलों की उत्पत्ति अवांछनीय समझते थे। उनका मत था कि राष्ट्रपति को राजनैतिक स्पर्धाओं से ऊपर उठना चाहिए और सर्वाधिक महत्त्व की बात यह है कि वह संयुक्त राज्य में विधि और व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे। गणतन्त्रवादियों के विरोध की तीव्रता उनके लिए विस्मय और कड़वाहट की चीज थी, यद्यपि, जब तक उनके आक्रमण हैमिल्टन तक सीमित रहे, उन्होंने अपना संतुलन नहीं खोया। किन्तु दूसरे प्रशासन-काल में जबकि राजनैतिक वाद-विवाद बढ़े और उन पर भी नुक्ताचीनियों की बौछार पड़ने लगी, तो वाशिंगटन के विचार धीरे-धीरे कठोरता पकड़ने लगे। 'मेरे विचार में' जैफर्सन ने कहा, 'वह इन बातों को किसी भी आदमी से, जिसे मैं आजतक मिला हूं, अधिक महसूस करते हैं।' १७९३ में मंत्रिमण्डल की एक बैठक में वाशिंगटन फूट पड़े कि फ्रेनो 'धूर्त' है, जिसका मुंह बन्द करना चाहिए। बाद में उसी वर्ष फ्रेनो के समाचार-पत्र का प्रकाशन तो बन्द कर दिया गया, किन्तु शेष गणतन्त्रवादी पत्रों ने अपने हमले जारी रखे। आलोचनाओं को सदा बुरा मानने के कारण तथा इस बात में तर्क-संगत रूप से विश्वास रखते हुए कि गणतन्त्रवादी अनुत्तरदायी और दुराशय-पूर्ण हैं, वाशिंगटन अन्ततोगत्वा फेड्रिलवादियों से इस बात में सहमत हो गए कि उनकी विरोधी कोई दूसरी पार्टी नहीं, 'बल्कि दलबन्दी वाले लोग' हैं; वे 'विपक्षी' नहीं, जिनके हाथों में एक दिन न्याय-संगत रूप से हकूमत की बागडोर आ सकती है, बल्कि वे इस प्रकार के विरोधी लोग हैं जिनके विचारों में राज-

विद्रोह, षड्यन्त्र और फ्रांस के लिए दीवानापन समाया हुआ है।" यही कारण था कि वह सर्वरूपेण गणतन्त्रात्मक सभाओं की निन्दा किया करते थे, यद्यपि इन में से बहुत से अहानिकर राजनैतिक क्लब भी थे। इसी वजह से उन्होंने अपने १७९८ में लिखे एक पत्र में यह क्रोधपूर्ण टिप्पणी की—"एक स्पष्ट घोषित प्रजातन्त्रवादी के सिद्धान्तों को बदलना ऐसा ही असंभव है जैसाकि एक काले हब्शी को बार-बार रगड़ कर सफेद बनाना।" यह भी लिखा कि इस प्रकार का आदमी 'अपने देश की हकूमत को उलटाने में कोई कसर उठा न रखेगा।' (यही कारण था कि) उन्होंने अपना अन्तिम मंत्रिमंडल केवल फैड्रिलवादी लोगों को लेकर बनाया।

अब इससे आगे केवल एक ही कदम था—वह कदम जो उन्होंने संभवतः अनजाने में उठा ही लिया—अर्थात् वह इस बात को स्वीकार करें कि वह स्वयं फैड्रिलवादी हैं। सन् १७९९ में, जो उनकी आयु का अन्तिम वर्ष था और जबकि उन्हें अपना पद त्यागे दो वर्ष हो चुके थे, उन्हें सानुरोध यह प्रार्थना की गई कि वह १८०० में राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए खड़े हों। अनुरोध का आधार यह था कि संयुक्तराज्य अमेरिका गम्भीर संकट की स्थिति में है। उन्होंने इस प्रार्थना को मानने से इन्कार कर दिया। उन का कहना यह था कि 'आजकल व्यक्ति की बजाय सिद्धान्त ही विवाद का विषय है और भविष्य में भी रहेगा।' आगे उन्होंने कहा—'यदि मैं निर्वाचन के लिए खड़ा भी हो जाऊं, तो मुझे फैड्रिल-विरोधी पक्षों से एक वोट भी नहीं मिलेगा, और इसलिए मैं किसी और भली-भांति समर्थित फैड्रिलवादी से अधिक दृढ़स्थिति में नहीं हूंगा।' वह इस बात को मानने को तैयार नहीं थे कि गणतन्त्रवादी यथार्थ लोगों का ही दल है। किन्तु उन के पत्र समग्र-रूप से पढ़ने पर (जिसमें उन्होंने 'किसी अन्य फैड्रिलिस्ट' का उल्लेख किया है) पता चलता है कि उन्होंने अमेरिका की राजनीति के बदलते आधार को समझना आरम्भ कर दिया था।

यदि इस समय वह अपने (राष्ट्र-पति के) पद पर आरूढ़ होते,

तो शायद वह अपने आप को फैड्रिलवादी कहलाने को तैयार न होते। उस समय वह इस बात का प्रतिपादन करते कि राष्ट्रपति को अपने आपको अलग रहने की कोशिश करनी चाहिए। निश्चय ही इससे उन पर कोई गम्भीर दोष नहीं लगता, किन्तु इस प्रश्न पर उन्होंने इस प्रकार की उच्चकोटि की तथा भविष्य-दृष्टा के उपयुक्त अक्षुब्धता प्राप्त नहीं की थी, जैसी कि उनके जीवनी-लेखकों ने उनमें देखी और उद्घोषित की। उस दशाब्दी को सर्वथा वाशिंगटन अथवा फैड्रिलवादियों की आँखों से देख कर ही हम इस बात में सहमत हो सकते हैं कि उन्होंने राजनैतिक समीकार को न्यायोचित ढंग से संविन्यस्त किया।

अन्तिम कार्य-निवृत्ति

ये कई एक परिकल्पी बातें है। चाहे किसी अन्य बात में हमें संदेह ही क्यों न हो, इस बात में जरा भी शक की गुंजाइश नहीं है कि राष्ट्रपति-पद को छोड़ते हुए वाशिंगटन को अपार हर्ष हुआ। अनेक लोग उनसे आशा रखते थे कि वह तीसरी अवधि के लिए भी अपनी स्वीकृति दे देंगे। यह किसी से छिपा नहीं था कि यदि वह खड़े होते, तो सहज में पुनः निर्वाचित हो सकते थे। किंचित् विद्वेषपूर्ण टिप्पणियां होते हुए भी, वह सर्वाधिक प्रशंसित अमेरिकन थे। किन्तु उन्होंने काफी, बल्कि काफी से भी ज्यादा, समय तक इस प्रतिष्ठित-पद को शोभा प्रदान की थी। उनके उत्तराधिकारी जान एडम्ज को, यद्यपि राष्ट्रपति का प्रतिष्ठित-पद मिलने से काफी खुशी हुई, किन्तु इस सम्बन्ध में उसे रत्ती भर भ्रम नहीं था कि किन विकट परिस्थितियों से उसे जूझना होगा। एडम्ज ने मार्च सन् १७९७ के उद्घाटन का वर्णन करते हुए अपनी धर्म-पत्नी को लिखा—"वस्तुतः यह एक गम्भीर दृश्य था, जिसने जनरल महोदय की उपस्थिति के कारण व्यक्तिगत रूप से मुझ पर अपना असर छोड़ा। उस समय जनरल महोदय का मुख-मण्डल प्रशान्त और दिन के प्रकाश के समान निर्मल और स्वच्छ था। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह मुझ पर विजय पाने का मजा ले रहे हों। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं उन्हें यह

कहते हुए सुन रहा हूं—"अरे! मैं वाहर हूं और तुम अन्दर हो। देखें, हम में से कौन सबसे अधिक खुश रहेगा।" प्रतिनिधियों के सदन में इतनी अधिक भीड़ थी कि भवन के अन्दर सब जगह लोगों से खचाखच भरी हुई थी। मेरा विश्वास है कि इस भारी भीड़ में एक वाशिंगटन थे जिनकी आंखें जरा भी नहीं भीगी थीं।"

अन्य बड़े अवसरों पर वाशिंगटन का हृदय द्रवित हो उठता था—उदाहरण के लिए उस मौके पर जबकि उन्होंने १७८३ में फ्रान्सिस टेवर्न में अपने अधिकारियों से विदाई ली थी। उस तरह के आंसू इस समय नहीं थे। उन्होंने अपनी डायरी में उपर्युक्त उद्‌घाटन के बारे में बस इतना ही लिखा—"आज भी कल की तरह ही दिन था। तापमान ४१ अंश था।"

इसका यह आशय नहीं कि अपना पद छोड़ते हुए उनके मन में उदासीनता की भावना थी, किन्तु असल बात यह थी कि उस समय कोई चीज और कोई आदमी उन्हें यह विश्वास नहीं दिला सकता था कि वह अमेरिका के लिए अपरिहार्य थे। उन्होंने उन्हीं दिनों में अपना पैंसठवां जन्म-दिवस मनाया। (या यों कहना चाहिए कि एक 'शोभा-युक्त मनोरंजन' द्वारा उनके लिए जन्म-दिवस-समारोह मनाया गया) जिसमें बारह सौ फिलेडेल्फिया-निवासी उन की सराहना के लिए अत्यधिक भीड़ में इकट्ठे हुए। उस समय उन्हें इस बात की आशा नहीं थी कि वह अधिक सालों तक अपना जन्म-दिवस मना सकेंगे। अतः जो थोड़े-बहुत वर्ष उनके जीवन के शेष थे, उन्हें वह माऊंटवर्नन पर ही रहकर व्यतीत करने की इच्छा रखते थे। उनका प्रौढ़-जीवन बड़ा शानदार रहा। किन्तु बुढ़ापे एवं सार्वजनिक सेवा की मांग ने उनकी शक्तियों को बहुत हद तक क्षीण कर दिया था। उनके बहुत से पुराने मित्र परलोक सिधार गए थे। फेयरफैक्स परिवार में से केवल एक ही व्यक्ति वर्जीनिया वापस लौटा था। बैलवोयर खण्डहर बन चुका था और सैली फेयरफैक्स इंगलैण्ड से लौटी ही नहीं थी। लिफायट अपनी कैद से दुबारा छूट चुका था। वाशिंगटन ने अपनी सहज उदारता से

उसकी पत्नी की रुपये-पैसे से मदद की थी, पर वह महासागर की चौड़ाई जितने अन्तर पर था। अब महज उनकी माऊंटवर्नन वाली जागीर ही शेष थी और मर्था की हर्षोत्पादक संगति तथा उनके कुछ तरुण सगे-सम्बन्धी बाकी थे।

यदि उनकी जीवनी को इतना ही सुन्दर और सुरुचिपूर्ण बनाया जा सकता जैसा कि कोई उत्तम नाटक हुआ करता है, तो हम वाशिंगटन पर (नाटक की तरह) धीरे से पर्दा गिरा सकते और उन्हें बुढ़ापे का शान्त व सुख-पूर्ण जीवन बिताते हुए छोड़ देते। किन्तु उनका जीवन इस प्रकार के ढांचे में नहीं ढला था। पर्दा नित्य बार-बार झटके के साथ ऊपर उठता ही रहा और हर बार ऐसा संगीत छिड़ता कि लोरियों से सुलाए गए उन्हें अचानक जगा देता। यही दशा फिर उनकी १७९८ में हुई। एक प्रकार से यह उनका अपना ही दोष था। यदि वह देखने में बूढ़े लगते, तो उन्हें निजी जीवन बसर करने के लिए छोड़ दिया जाता। जब-जब वह अपने फार्म की देख-रेख कर रहे होते, मेहमान निवाजी में लगे होते अथवा चिट्ठी-पत्रियों को निपटा रहे होते, तो वह पहले की तरह ही शक्तिशाली एवं ओजपूर्ण प्रतीत होते थे। वास्तव में, अब उनके पत्र अधिक उत्तेजना-दायक प्रतीत होते थे, संभवतः इसलिए कि अब वह अपने मन की बात अधिक खुल कर कह सकते थे। पहले ऐसी बात नहीं थी, क्योंकि उस समय उन्हें अधिकाधिक सतर्कता घेरे हुए थी। जो भी हो, उन्हें सन् १७९८ में पुनः सैनिक जीवन में दाखिल होने का आदेश दे दिया गया। फ्रांस का व्यवहार इतना हिंसक और उत्तेजनापूर्ण हो चुका था कि वह वस्तुतः अमेरिका के साथ युद्ध की स्थिति में था। यह नौ-सैनिक युद्ध था। अमेरिका के पास कोई फौज नहीं थी, सिवाए उन स्थायी सैनिकों के जिन्हें सूक्ष्म-सेना-यष्टि के रूप में वाशिंगटन ने कायम रखने की कोशिश की थी। अब उन पर सेना की भर्ती का काम डाल दिया गया और उन्हें कहा गया कि वह प्रधान-सेनापति का पद संभालें। इस दायित्व के विचार से ही उनका हृदय कराह उठा। जब हैमिल्टन ने भविष्यवाणी की थी

कि निकट भविष्य में उनका किसी दूसरे कार्य के लिए आह्वान होगा, तो वाशिंगटन ने उत्तर दिया था कि 'मैं अपने वर्तमान शान्तिपूर्ण निवास-स्थान से अलग होते हुए उतनी ही हिचकिचाहट महसूस करूंगा जितनी कि अपने पुरखाओं की कब्रों की ओर जाते हुए।' जब राष्ट्रपति ऐडम्ज ने उन से पूर्व सलाह लिए बिना उन्हें प्रधान-सेनापति मनोनीत किया, तो उन्हें बहुत बुरा लगा। वह इस बात से चिंतित थे कि पहले की तरह ही उनके विरोधी उनके इस प्रकार से अधिकारपद पर लौटने पर या तो इसे उनकी महत्त्वाकांक्षा कहेंगे और या उनके विदाई भाषण को दृष्टि में रखते हुए उन्हें पाखंडी समझेंगे। जो भी हो, वह इस कर्त्तव्य से अपना मुंह नहीं मोड़ सकते थे। अपने कामों में त्वरित, बुद्धिमान् तथा अंतःकरणानुयायी वाशिंगटन ने प्रधान-सेनापति के रूप में अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। पहले की तरह सर्व-व्यापी अलैक्जैण्डर हैमिल्टन, बिना विलम्ब के, उनके अधीन कार्य करने को उद्यत हो गया। उसने पीछे से चुपचाप हर प्रकार की व्यवस्था करनी आरम्भ कर दी और अपनी नियुक्ति इस प्रकार के पद पर करवाई कि जिस से वह वाशिंगटन का उपसमादेशाधिकारी बन सके।

यह घोर संकट का समय था, विशेष रूप से बिचारे जान एडम्ज के लिए। उसकी जगह वाशिंगटन होते, तो उनकी भी शायद उसी प्रकार निन्दा होती। किन्तु हम यह निश्चय-पूर्वक कह सकते हैं कि यदि वाशिंगटन एडम्ज की जगह होते, तो प्रशासन के संचालन में एडम्ज द्वारा की गई कुछ एक भूलों को न करते। यदि हम दोनों के राष्ट्र-पतित्व की सविस्तार तुलना करें तो इस बात का भली-भांति पता चल सकेगा कि वाशिंगटन में कहीं अधिक दृढ़ता और गम्भीरता थी।

किन्तु सन् १७९८ अथवा १७९९ में कोई लड़ाई नहीं हुई। परिणामतः वाशिंगटन का जीवन पहले की तरह सामान्यरूप से चलता रहा। इस प्रकार मास बीतते गए। उनकी डायरी की साधारण लिखावट चलती रही—गर्मी के दिन, ठण्डे दिन, वर्षा, बर्फ।

फिर: सर्वेक्षण, घुड़सवारी, अतिथियों का आना, रात्रि-भोज, उनकी भतीजी वेंटो ल्यूइस की लड़की का उत्पन्न होना, इत्यादि। इसके बाद १३ दिसम्बर को डायरी की लिखावट समाप्त हो जाती है, केवल एक नोट में इतना दर्ज है कि तापमान कुछ कुछ तुषार के ताप तक नीचे उतर गया है। तब वस्तुतः पर्दा एक दम नीचे गिर पड़ता है।

वाशिंगटन को अभिशीत हो चुका है; उनका गला कष्ट दे रहा है। डाक्टर उनके शरीर में से रक्त निकालते हैं। फिर दुबारा खून निकालते हैं, पर सब व्यर्थ। १४ दिसम्बर की रात्रि के दस बजे वह आखिरी सांस लेते हैं और बिना किसी स्मरणयोग्य-अन्तिम कथन के (सिवाए उनके जो पार्सन वीम्ज ने उनके मरने के पीछे आविष्कृत किए) — उनकी जीवन-यात्रा समाप्त हो जाती है। दुख की बात यह कि उन्हें तत्कालीन बर्बरता-पूर्ण चिकित्सा के प्रति अपने जीवन को बलिवेदी पर चढ़ाना पड़ा, यद्यपि चिकित्सा करने वालों के हृदय में उनके प्रति सद्भावना मौजूद थी।

यदि इनकी देखरेख इतनी प्राचीनतम चिकित्सा-पद्धति के अनुसार न होती, तो संभव था कि वह कुछ वर्ष और जिन्दा रह सकते। इस अर्से में वह संघानीय शासन को संघानीय राजधानी (जिसका नाम बाद में वाशिंगटन के नाम पर रखा गया) में स्थानान्तरित होते देखते, जिस से उन्हें प्रसन्नता होती; अथवा वह १८०१ में गणतन्त्रवादियों की जीत के बाद थामस जैफर्सन को राष्ट्रपति-पद पर आसीन होते देखते, जिससे उन्हें अप्रसन्नता होती। समाचार पत्रों में वह 'लुइसियाना परचेज' तथा द्वन्द्व-युद्ध में हैमिल्टन की मृत्यु के बारे में पढ़ते। इन खबरों से उन्हें खुशी भी होती और गमी भी। पर क्या उन्हें किसी और चीज की कामना होती? उनकी शताब्दी अपने अन्त पर थी और साथ ही उन्होंने भी दुनिया से विदाई ले ली थी। उनकी मृत्यु के अवसर पर वृद्ध, भ्रांत-चित्त और समृद्ध अमेरिका के कोने कोने में अनेक वक्ताओं और लेखकों ने (जिन में फ़ैनो भी था) उनकी प्रशंसा में अपनी

आलंकारिक और मधुर वाणी का प्रयोग किया। किन्तु स्पेंसर की निम्न पंक्तियां उन सब से अधिक उपयुक्त दीखती हैं :–

"परिश्रम के बाद नींद का आना ; तूफानी समुद्रों में सफर करने के बाद बंदरगाह में पहुंचना ; लड़ाई के बाद आराम पाना तथा संघर्षमय जीवन के बाद मृत्यु को प्राप्त करना, चित्त को अतिशय आल्हादित करता है।"

अध्याय—५

सम्पूर्ण व्यक्तित्व

'अपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये वाशिंगटन को धन्यवाद मिले; उन्हें स्वच्छ और निर्मल यश मिला, जिसे बहुत कम लोग प्राप्त कर पाते हैं।'

(बायरन द्वारा लिखित डान ज्यूअन, सर्ग ६।)

मूकता

अभिलेखों को गौर से देखने के बाद और अपने विचारों को लिपि-बद्ध करने के बाद भी, जार्ज वाशिंगटन के बहुत से जीवनी-लेखकों को यह ख्याल अक्सर सताता रहा कि उनके बारे में कोई बात सम्भवतः उन से छूट गयी है। यह बात नहीं कि अभिलेख खण्डित हों अथवा परस्पर विरोधी हों। हम यह जानते हैं कि बाल्यावस्था से निकलने के बाद वाशिंगटन अपने जीवन को किस अवस्था में क्या करते रहे। हम लगभग निश्चय से यह अनुमान लगा सकते हैं कि विशेष अवसरों पर उन्होंने क्या सोचा होगा। सम्भवतः हम उनके बारे में कुछ अधिक गहरी अन्तर्दृष्टि रख सकते, यदि उन का मर्था से हुआ पत्र-व्यवहार सुरक्षित हो सकता अथवा यदि आज से तीस वर्ष पहले जे० पी० मार्गन ने तथाकथित 'अश्लील' पत्र आग की नजर न किए होते। किन्तु इसमें सन्देह है कि इनकी वजह से चित्र में किसी प्रकार का कोई ठोस परिवर्तन

होता। यह ठीक है कि वाशिंगटन के जीवन की, विशेष रूप से उनके राष्ट्र-पति होने के समय की, कुछ कहानियों का अभी तक उचित ढंग से विश्लेषण नहीं हुआ। यह होते हुए भी, पूरे कद के चित्र की सामग्री मौजूद है—उनके अपने शब्दों में और उनके बारे में विपुल टिप्पणियों के रूप में।

फिर यह पहेली क्यों? यह अभिस्वीकृति क्यों कि वास्तविक वाशिंगटन हम से बच कर निकल गए हैं? जब आकृति के समस्त चिह्न इतने गहरे अंकित हैं, तो फिर यह चित्र इतना धुंधला क्यों है? इसके दो मुख्य कारण हैं—एक उनके व्यक्तित्व की प्रकृति और दूसरे वह लम्बी छाया जो वाशिंगटन की कल्पित कहानियों द्वारा पड़ती है—जिसे हम वाशिंगटन स्मारक कहते हैं।

इनके व्यक्तित्व से हम चकरा जाते हैं, क्योंकि यह किसी प्रकार भी रहस्यमय न होने से हमारे लिए एक रहस्य बन जाता है। यह हमारी आदत है कि हम महान् व्यक्तियों के जीवन-कार्यों की जांच करने के समय उनके आवृत्त विचार-क्रमों अथवा निर्बलताओं के साक्ष्यों को ढूंढ़ा करते हैं। कई एक ऐसे लोगों में हम नव-विभवोदित आवेशपूर्ण महत्वाकांक्षा अथवा निष्ठुरता पाते हैं, जो प्रायः छोटे कद के लोगों में सामान्यरूप से मिलती है। (यह दोनों बातें नेपोलियन अथवा अलेक्जैण्डर हैमिल्टन सरीखे आदमियों के व्यवहार पर विशेष प्रकाश डालती है)। कई अन्य लोगों पर सिद्धान्त का भूत सवार होता है। उन्हें कुछ आवाजें सुनाई दीं और फिर जरूरत पड़ने पर वह मृत्यु का आलिंगन करके भी उस सुनिश्चित आह्वान का अनुसरण करते हैं। कुछ एक में कार्य करने का संकल्प गहरे और गुप्त स्रोतों से फूटता है (उदाहरण के लिए, ब्रिटिश वीर पुरुष जनरल गोर्डन की गुप्त समलिंगी-कामुकता)। बहुतों में, उनकी भव्यता के साथ ही साथ बदले में कोई न कोई इस प्रकार का दोष होता है—जैसे, संकीर्णता, लोभ, अभिमान इत्यादि। किन्तु वाशिंगटन के रहस्य को समझने के लिए हम उनकी किन किन बातों को देखना चाहेंगे या हम कौनसी चीज

ढूंढ़ सकेंगे ? उनके बारे में हम जानते हैं कि वह लम्बे कद के, देखने में सुन्दर, भले आदमी, विचारों में मध्यम मार्ग को अपनाने वाले, विनयी, संयमी और निरापराधी (सिवाए आरम्भिक और सतर्कता-पूर्ण लालसा के जो उनके मन में सैली फेयरफैक्स के लिए थी) थे। फिर क्या वह मध्यम दर्जे के थे ? उनका स्मारक इसका उत्तर नहीं देने देता। ऐसा लगता है कि प्रत्येक भावी निष्पक्ष इतिहासकार या तो निश्चित रूप से उनके सम्बन्ध में परम्परागत निष्ठा के सामने झुक जायगा अथवा उनकी छोटी-छोटी बातें लेकर उनके दोष निकालेगा। यह सोच कर भी हमें सन्तोष प्राप्त नहीं हो सकता कि वाशिंगटन के समकालीन लोगों को भी झूठी प्रशंसा और दोषान्वेषण—इन में से एक विकल्प चुनना पड़ा था।

इस समस्या का सामना होने पर कुछ जीवनी-लेखकों ने इसका समाधान यह मान कर किया है कि इस प्रकार की कोई समस्या ही नहीं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वाशिंगटन में 'मनुष्योचित' गुण थे। ब्रैडले टी० जानसन की दृष्टि में 'वाशिंगटन सर्वांगीण-रूप में मनुष्य थे—ऐसे 'मनुष्य जिनमें तीव्र वासनाएं थीं; जिनका स्वभाव क्रूर था और जो दृढ़, लड़ाके और आक्रमणकारी प्रवृत्ति के थे।' रूपर्ट ह्यूजिज का मत है कि वाशिंगटन 'अत्यन्त उत्सुक, बहुत विषयों में दक्ष, मानवोचित-गुण-सम्पन्न व्यक्तियों में से थ।' साल के० पैडओवर की नजरों में वह 'आवेशाभिभूत, सूक्ष्मग्राही, पार्थिव, गहराई से महसूस करने वाले मनुष्य थे।' 'महापुरुष जार्ज वाशिंगटन एक मनुष्य के रूप में,' नामक पुस्तक में होवार्ड स्विगेट वीर-पुरुष वाशिंगटन के विषय में लिखता है कि वह चुम्बक-शक्ति तथा भव्यता, क्रोध और चुभनेवाली दिल्लगी, नेकी और दानशीलता, कष्ट और विपत्ति—इनका संमिश्रण थे—और वह शान और शिष्टाचार में विश्वास रखते हुए भी उन पर हँस सकते थे और उन्हीं को छोड़ भी सकते थे। उनकी असावधानीपूर्ण शूरवीरता, मनमाऊपन न्यायालय-गृह में खाई गई सौगन्ध जबकि

गरमागरम वाद-विवाद और खीझने के कारण उन्होंने चार्ल्स ली को 'अभिशप्त कायर' कह कर पुकारा था, महिलाओं में उनकी लोक-प्रियता, उनकी नृत्य में रुचि आदि-आदि के उल्लेख उस पुस्तक में मिलते हैं।

इन बातों पर जो हमने बल दिया है, वह बेकार की चीज नहीं है। इनसे मार्शल, वीम्ज और स्पार्क्स सरीखे आरम्भिक जीवनी-लेखकों की उन्हें देवता-समान पूजने की प्रवृत्ति का उपयोगी शोधन हो जाता है। हम वाशिंगटन-सम्बन्धी मनगढ़न्त कथाओं के अति-निरर्थक तत्वों के बिना गुजारा कर सकते हैं—जैसे, चेरी पेड़, फोर्ज घाटी में की गई प्रार्थना तथा अन्य कथाओं से सम्बन्धित घटनाएं। यह विशेषरूप से महत्वपूर्ण है कि हम स्टूअर्ट चित्र के वाशिंगटन से पहले उस नाम के अधिक तरुण व्यक्ति की ओर जाएं, जो अपनी किशोरावस्था में भेद्य था; जो क्रियाशील भू-मापक और वर्जीनिया का व्यस्त कर्नल था और जो अपनी जागीरों में अनुरक्त, बागान का स्वामी था। उनके जीवन के इस भाग में, जैसा कि डागलस साऊथ हाल फ्रीमेन ने स्पष्ट किया है, हम न केवल व्यक्ति को 'स्मारक' से पृथक् कर सकते हैं, बल्कि इस बात का पता लगा सकते हैं कि किस प्रकार उनके चरित्र का विकास हुआ। हम और गौर करने से देख सकते हैं कि यद्यपि उनके परिवार के लोग सम्मानित अवश्य थे, तथापि वे वर्जीनिया-उपनिवेश के रईसों में से नहीं थे। (यहां हम विनोदपूर्ण ढंग से यह कह सकते हैं कि वाशिंगटन चांदी का चमचा मुंह में लिए पैदा नहीं हुए, बल्कि ऐसा चमचा लेकर जिस पर चांदी की चद्दर विठाई गई थी और अपने पिता की मृत्यु पर तो वह इससे भी वंचित हो गए थे)। हम यह भी देखते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपने सगे-सम्बन्धियों और शक्तिशाली फेयरफेक्स परिवार के लोगों की सहायता से तथा निजी परिश्रम से अपना स्थान बनाया। फिर किस प्रकार उनमें महत्वाकांक्षाएं (निस्सन्देह वह महत्वाकांक्षी भी थे) पैदा हुईं; किस प्रकार वे सैनिक-जीवन से बढ़ी; बाद में ब्रिटिश स्थायी सेना का संरक्षण न मिलने पर किस

प्रकार उन पर निराशा का तुषारपात हुआ। (मोननगहेला के युद्ध में चाहे बाद में वाशिंगटन को अपने उत्तम व्यवहार के कारण कितनी ही यश-कीर्ति क्यों न मिली हो, यह ठीक है कि ब्रैडॉक की मृत्यु से उनकी गम्भीर हानि हुई)। फिर यही महत्वाकांक्षाएं उनके एक समृद्धशाली परिवार मे विवाह सम्पन्न होने के कारण अधिक मधुर बनीं। इसके पश्चात् वह हमें उच्चस्थिति पर आरूढ़ एक भद्र पुरुष और ज्ञानोद्दीप्ति के कारण स्वतन्त्रता के श्रेष्ठ पुजारी के रूप में दीखते है—जो तर्कसंगत ढंग से तथा बिना हृदय-वेदना के अपनी मातृभूमि के पक्ष या विपक्ष में अपना मार्ग तय करने की योग्यता रखते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपनी अपरिपक्वता के कारण की गई भूलों से लाभ उठाया और किस प्रकार उन्होने धीरे-धीरे महत्त्व और आत्म-संयम को प्राप्त किया।

हम में से प्रत्येक में अतीत के निजी संस्कार विस्मृत अवस्था में रहते हैं। वाशिंगटन के वर्जीनिया के संस्कार उनके अन्तस्तल में दबे पड़े रहे। अत: यह युक्ति देना काल्पनिक नहीं है कि उनमें सदैव बाल्यकाल के उत्साह और ओज के अवशेष क्रियाशील थे। वर्जीनिया का एक दूसरा युवक, वुडरो विलसन, भी अमेरिका का राष्ट्रपति हुआ है। उसने १८८४ में अपनी मंगेतर को लिखा—'तीव्र भावनाएं रखना सुखद अथवा सुविधाजनक कभी नहीं होता। मैं ऐसा महसूस करता हूं कि मैं अपने साथ एक ज्वाला-मुखी पर्वत उठाए हुए हूं। इससे मैं दुखी रहता हू।' इस प्रकार के शब्द युवक वाशिंगटन के लिए भी प्रयोग में लाए जा सकते थे। वस्तुत: विलसन के समान ही अपनी परिपक्वता के कारण वे संसार की परेशानियां कठोरता से झेल सके थे।

किन्तु, हमारे विचार में, वाशिंगटन के 'मानवी' पहलू पर बल देने में एक अन्तर्हित भूल है। ऐसा करने से इस बात की सम्भावना है कि हम उन्नीसवीं शताब्दी के लेखकों द्वारा वर्णित वाशिंगटन के स्थान में उस वाशिंगटन को समझ लें जिसके विषय में बीसवीं शताब्दी के लेखकों ने अपनी कलम उठाई। यह वर्णन भी पहले की

तरह ही भ्रामक है, क्योंकि वह आखिरकार अठारहवीं शताब्दी के थे। हमें यह स्वीकार करने में झिझकना नहीं चाहिए कि वाशिंगटन की रुचियां नवाबों जैसी थीं, यद्यपि ये अधिक शिष्ट थीं। वह खाने-पीने के शोकीन थे और मदिरा, संगीत, ताश, नाटक, घुड़-दौड़, लोमड़ी का शिकार—इत्यादि को पसन्द करते थे। वह विनोद-प्रिय थे, यद्यपि उनके मजाक कुछ-कुछ गम्भीरता-पूर्ण होते थे। वह यहां तक भावनात्मक थे कि कभी-कभी आंसू बहाने की नौबत भी आ जाती थी। इन सब को स्वीकार कर भी लिया जाए, तो इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि वह किसी प्रकार उस अमरीकी वीर-पुरुष के सदृश थे जो ऐतिहासिक उपन्यासों अथवा हालीवुड में चल-चित्रों का आधार बनते हैं।

वाशिंगटन शूरवीर थे, किन्तु वह कभी शीघ्र क्रोधावेश में नहीं आये। सीमांत क्षेत्र का उन्हें अच्छा ज्ञान था। वह उपयुक्त परिस्थितियों में सीमान्त-प्रदेश-निवासियों की तरह वस्त्र पहनने के लाभों को समझते थे, किन्तु वह डेवी क्राकेट के सदृश नहीं थे। ब्रिटिश लोगों की नजरों में वह राजद्रोही थे, किन्तु उन्होंने अपने आपको कभी ऐसा नहीं समझा। वह अपने आपको क्रान्तिकारी भी नहीं समझते थे। जब लिफायट ने वाशिंगटन को तानाशाही के उलटने के प्रतीक स्वरूप बैस्टिले नगर की चाबी भेजी, तो उन्होंने केवल इतना ही किया कि नम्रतापूर्वक इसे स्वीकार करते हुए उसके बदले में निशानी के तौर पर एक भेंट भेजी। उसे भेजते हुए वाशिंगटन ने लिखा—'मेरे प्यारे मार्क्विस! यह भेंट, मूल्य के लिहाज से नहीं, बल्कि स्मृति-चिन्ह के विचार से भेजी जा रही है। मैं यह जूते के बकसुओं की जोड़ी इसलिए भेज रहा हूं, क्योंकि यह इसी नगर के बने हुए हैं।'

जूते के बकसुओं की जोड़ी! यह भी कितनी रसहीन वस्तु थी, जिसे भेजने की उन्हें प्रेरणा मिली!

कुछ एक बातों के लिहाज से वाशिंगटन एक सरल, अहंकार-रहित व्यक्ति थे। माऊंटवर्नन में आये मुलाकाती उनकी सादा पोशाक के

बारे में विस्मय से जिक्र किया करते थे जो वह अपने फार्मों का दौरा करने के लिए पहना करते थे। वे यह भी बतलाते थे कि रात्रि के भोजन के समय वह अपनी पोशाक बदला करते थे। वह स्वयं विद्वान् नहीं थे, पर दूसरों की विद्वत्तापूर्ण बातों से अधीर नहीं हो उठते थे। चाहे वह कभी-कभी बात-चीत करते हुए अथवा चिट्ठी-पत्री लिखते हुए अप्रशस्त भाषा का व्यवहार कर भी लेते हों, किन्तु निकृष्ट लोकतन्त्रवादी के मुहावरों का कभी उन्होंने प्रयोग नहीं किया। परम्परा से प्राप्त दुर्लभ प्रतिवेदनों से निर्णय करने पर हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि यदि कभी उन्होंने कसम खाई भी, तो खुशी के साथ नहीं। (प्रसंगवश, यह कहानी कि उन्होंने मानमाऊथ में ली पर जबान-दराजी की, निराधार है)।

वाशिंगटन मित्रों में प्रसन्न रहते और उन्हें प्रसन्न रखते थे, यद्यपि वे उनके साथ खुलते नहीं थे। जहां तक हम जानते हैं, उन्होंने अपने समस्त जीवन में अपनी उम्र के किसी भी व्यक्ति को अपना लंगोटिया यार नहीं बनाया। वाशिंगटन लिफायट से कोई बात छिपाते नहीं थे। इस फ्रान्सीसी की ओर लिखे गए पत्रों में अनूठी प्रफुल्लता पाई जाती है। उनका कैरोलीना के युवा स्टाफ-अफसर, जान लौरेन्स, के साथ विशेष स्नेह था। यह अफसर क्रान्तिकारी युद्ध में मारा गया था। किन्तु इन दोनों के साथ उनके सम्बन्ध पितृ-तुल्य थे या कम से कम चाचा के समान अवश्य थे।

हमारे युग के मुकाबले में वाशिंगटन का जमाना मौन-चुप्पी का था। किन्तु यदि आप उनकी तुलना अपने समकालीन प्रमुख व्यक्तियों से करें, तो उनके तौर-तरीकों में भिन्नता स्पष्ट रूप से नजर आती है। यदि वाशिंगटन 'आवेश-पूर्ण, छोटी-छोटी बातों को महसूस करने वाले, पार्थिव' हैं, तो पैट्रिक हैनरी अथवा आरोन बर्र सरीखे व्यक्तियों का तो क्या कहना, फ्रैंकलिन, जैफर्सन, मेडीसन और हैमिल्टन को हल्ला-गुल्ला करने वाला कहना चाहिए। विदेशी अवलोककों के निर्णयों को सुनिये। एक डैनमार्क निवासी जो १७८४ में माऊंटवर्नन गया था, वाशिंगटन के 'गुणों' को परखना चाहता

था।' किन्तु सारे समय में वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि 'जनरल (वाशिंगटन) इतने उदासीन, सतर्क और अत्यनुवर्ती हैं कि उन से जानकारी प्राप्त करना दुःसाध्य था।' एक और योरुप-निवासी चार वर्ष पीछे उनसे मिला। उनके बारे में उसका यह कहना था 'शिष्ट-व्यवहार पाते हुए भी मुझे ऐसा लगा कि उनके अन्दर छिपी हुई निषेधक उदासीनता है जो मेरे मन को अच्छी नहीं लगी।' वास्तव में इसका कारण कई अंशों में उनकी लज्जाशीलता थी। अपने निकट परिचितों से वह शीघ्र घुल-मिल जाते थे। किन्तु हम इस धारणा को कभी स्वीकार नहीं कर सकते कि वह अपने जीवन के किसी भी काल में दूसरों को महज खुश करने वाले रहे हों। यह शायद हम उनके प्रति अन्याय करेंगे यदि हम नमूने के तौर पर इस बात का उल्लेख करें कि अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में उन्होंने 'अन्य देशीय' तथा 'राज-द्रोह' सम्बन्धी कठोर विधेयकों की स्वीकृति दी जिससे यह नतीजा निकाला जा सकता है कि वह अपनी कठोर, रूढ़िवादी विचार-धारा में अलेक्जेण्डर हैमिल्टन को भी मात करते थे। अपनी बहुत पहले की जिन्दगी में, जब कि वह वर्जीनिया के सैनिक विभाग से छुट्टी पाने ही वाले थे, उनकी रेजमेंण्ट के अधिकारी (जिनमें कुछ अवस्था में उनसे बड़े थे) उन से दूर रहते हुए भी अपने युवा कर्नल की प्रशंसा किया करते थे। उनके मन में वाशिंगटन के लिए सच्चा सम्मान था, दिखावे का नहीं।

संक्षेप में, वाशिंगटन को महज मानव का रूप देने की चेष्टा करना उनके व्यक्तित्व को झुठलाना है। इसमें यह भी खतरा है कि कहीं हम उनके व्यक्तित्व की सारभूत सच्चाई को ही न खो बैठें। इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि उनके मानवीय गुणों के कारण ही संगमरमर ढालने की वह प्रक्रिया हुई जिसने उन्हें एक स्मारक का रूप दिया। वस्तुतः इन गुणों के कारण ही यह प्रक्रिया सम्भव हो सकी। अतः यह कहना होगा कि वास्तविक व्यक्ति में तथा उसके विषय में जो कहानियां रची गई उनमें समान महत्वपूर्ण तत्व मिलते हैं।

श्रेष्ठ शास्त्रीय संकेतावलि

इसे अभिव्यक्त करने की संक्षेपतम विधि यह है कि हम दोनों (अर्थात् व्यक्ति और कथाओं) को शास्त्रीय नाम दें, अथवा यह कहें कि दोनों ही अधिक विशिष्ट रूप से रोमन आकार-प्रकार के हैं। वाशिंगटन-साहित्य में बार-बार यह पढ़कर हम उकता जाते हैं कि वर्जीनिया के यह खेत-बगीचों के मालिक दूसरे सिनसिनेटस थे। किन्तु इस पुरानी उक्ति में अब भी बहुत वजन है। वास्तव में हम जितनी अधिक इसकी जांच करते हैं, हमें इन दोनों की आपसी समानता उतनी ही ज्यादा नजर आती है। अठारहवीं शताब्दी का अंग्रेज भद्र-पुरुष, चाहे वह अपने घर इंगलेण्ड में था, अथवा किसी वर्जीनिया जैसे उपनिवेश में था, वह दोहरी नागरिकता का अधिकारी होता था। वह अंग्रेज तो था ही, पर उसे समान रूप से रोमन नागरिकता के अधिकार प्राप्त थे। अपनी आकृति में भी वह रोमन ही लगता था। अठारहवीं शताब्दी के चित्र, जिनमें मुखाकृतियां बिना दाढ़ी के हैं और जिनमें दृढ़ता एवं पुरुषत्व झलकता है, अक्सर रोमन अर्द्धप्रतिमाओं से आश्चर्यजनक रूप से मिलते-जुलते हैं, और विलोमतः उस समय के पत्थर के स्मृति-अभिलेखों में पुरानी दुनिया की झलक मिलती है। उदाहरण के लिए वेस्टमिंस्टर ऐबे के कुछ एक स्मारकों पर ध्यान दीजिए। रोबिलैक द्वारा निर्मित जैनरल वेड (१७४८) के स्मारक पर ये शब्द पाये जाते हैं— 'सुकीर्ति की देवी जनरल के विजयोपहारों को काल के हाथों विनष्ट होने से बचा रही है।' उसी मूर्तिकार द्वारा निर्मित एडमिरल सर पीटर वैरन (१७५२) के स्मारक पर यह वाक्य खुदा हुआ मिलता है—'हरक्यूलीज इस एडमिरल की अर्द्ध-प्रतिमा को पादपीठ पर स्थापित करता है, जबकि नौ-परिवहन प्रशंसा और सन्तोष के साथ उसकी ओर देख रहा है।' एक तीसरा स्मारक एडमिरल वैडमन का है, जिसे सकीमेकरस ने १७५७ में बनाया था। उस पर ये शब्द मिलते हैं—'एडमिरल चोगा पहने हुए मध्य में बैठे हैं और उनके हाथ में ताल पेड़ की शाखा है। उनकी दाहिनी ओर कलकत्ता

नगर अपने घुटने टेक कर उनके आगे अपनी याचिका पेश कर रहा है।' वाशिंगटन के समय के शिष्ट युवक, जाने-अनजाने अपने अलंकार तथा जीवन-मूल्यों की नियमावलि रोम से लिया करते थे। सब लोग इस प्रकार के न भी हों, किन्तु ऐसे लोग तादाद में काफी थे कि जिनके रोमन वातावरण से हम वाशिंगटन और उनकी प्रकाशयुक्त झांकी ले सकते हैं।

यह महज दैवयोग नहीं है कि वाशिंगटन एडीसन के नाटक, केटो, से बार-बार उद्धरण देते थे। उनके बड़े भाई लारेन्स ने बैल्वायर में, फेयरफेक्स की अतिथि-पुस्तक में कोई उदात्त भावना लिखने की इच्छा करते हुए यह लिखा था—'वर्टस ओमनिया पैरिकुला विन्सिट'—अर्थात् 'साहस सब संकटों पर विजय पा लेता है।' कैटो उस शताब्दी के मन-भाते नाटकों में से था। ऐसा लगता है कि यह नाटक कनैक्टीकट के तरुण अधिनायक, नाथन हेल, के मन में होगा, क्योंकि जब अंग्रेजों ने १७७६ में उसे जासूस समझ कर मरवा डाला, तो उसके अन्तिम शब्द थे—'मुझे इस बात का खेद है कि मुझे अपने देश पर बलि चढ़ाने के लिए केवल एक ही जन्म मिला है।' उसकी इस उक्ति में एडीसन के निम्न शब्द गूंजते दिखाई देते हैं—

'यह बात कितनी शोचनीय है कि अपने देश के त्राण के लिए हम केवल एक बार ही अपने प्राणों की आहुति दे सकते हैं।'

'साहस' रोमन लोगों की नजरों में प्रसिद्ध गुण था (और व्यवहार में वर्जीनिया वासियों के लिये भी) गम्भीरता, अनुशासन तथा प्राधिकार के लिए सम्मान, स्पष्ट अभिव्यक्ति, निःस्पृहता तथा यश-प्राप्ति रोमन लोगों के लिये अन्य अहित गुण थे।

जिस प्रकार के गुण कहीं होते हैं, वहां ऐसा ही वातावरण हुआ करता है। रोम की संस्कृति सैनिक थी। उसके सीमान्त क्षेत्रों में सदैव अशान्ति रहा करती थी, इस कारण कानून बनाना और व्यवस्था करना उसके लिए अनिवार्य था। रोमन सभ्यता कुछ-कुछ कठोरता और स्थूलता लिए हुए थी; इसकी जड़ें वास्तविकता में

थीं, न कि आनन्ददायक काव्यात्मक कल्पनाओं में। इसमें धार्मिक भावनाएं परिमित सीमा तक विद्यमान थीं, इस सीमा को उल्लांघना बुरा माना जाता था। रोमन-समाज में दास-प्रथा का बोल-बाला था और इसमें (राजधानी और प्रादेशिक केन्द्रों को छोड़ कर) फार्म सम्बन्धी जागीरें पड़ोस की इकाई थीं। यह ऐसा समाज था जो परिवार के संलाग-बल पर अवलम्बित था। प्रेम, सम्मान, वफादारी इत्यादि गुण परिवार से बाहर की ओर फैलते थे। परिवार इस प्रकार राज्य का एक छोटा सा रूप था। यह ऐसा समाज था कि जिसमें ठोस और सही ढंग से सोचने वाले नागरिक पनपते थे—जो नागरीय एवं उपार्जनशील थे; जो संकीर्ण, किन्तु नेक तबीयत के थे; और जो अपने से आगे भी देखते थे, किन्तु जिन में बेकार की कल्पनाएं करने की आदत नहीं थी। इस प्रकार के भाव हैं जो उनके ग्रैवीटेस (गम्भीरता), पाएटस (अनुशासन एवं प्राधिकार का सम्मान), सिम्पलीसिटस (स्पष्टता) जैसे शब्दों से प्रगट होते हैं।

यहां 'रोम' के स्थान पर हम वर्जीनिया पढ़ लें, तो क्या इस में कोई हर्ज होगा? और क्या वाशिंगटन के पुरानी शैली के जीवनी-लेखक अथवा उसकी पीढ़ी के प्रशंसक अधिक गलती पर थे, जब उन्होंने यह घोषणा की कि वह पुराने सांचे में ढले हुए हैं और ऐसे लगता है कि मानो सिनसिनेटस ने दुबारा जन्म ले लिया हो? वाशिंगटन न केवल एक सैनिक ही थे, अपितु वह बहुत बड़े 'भू-स्वामी और राजनीतिज्ञ' भी थे—किन्तु उनका यह चित्र मोटे रूप में एक रोमन का है। सिनसिनेटस रोम के अनेक वीर पुरुषों में से था, जिसमें ये तीनों बातें पाई जाती थीं। इसी प्रकार वाशिंगटन के बारे में विस्तार भी किसी रोमन के अनुरूप थे। वाशिंगटन की पारिवारिक स्थिति में भी हमें रोमन विचारधारा के अंकुर मिलते हैं—जैसे, उनका माऊंटवर्नन से अटूट अनुराग, उनकी अपनी माता के प्रति (यद्यपि उत्साहहीन) कर्तव्य-निष्ठा, उनका बिना शिकायत के वाशिंगटन परिवार की असंख्य संतति—भाई-बहिनों, भतीजों,

भतीजियों, सौतेले बच्चों तथा अन्य सगे-सम्बन्धियों के हितार्थ निरन्तर अवधान। इससे उनकी उदारता टपकती है, (शब्द 'जैन-रोसिटी'--उदारता-लातीनी भाषा का है और हमें अपने मौलिक रूप 'जीनस' की ओर ले जाता है--जिसका अर्थ है, एक गोत्र के लोग)। किन्तु उनका न केवल स्वभाव ही उत्तम था, अपितु उनमें अपने कर्तव्य के प्रति निश्चित निष्ठा की भावना थी।

'कर्तव्य' शब्द में भी वाशिंगटन की पृष्ठभूमि को समझने के लिए रोम तालिका है। 'कर्तव्य' शब्द से हमारा तात्पर्य दायित्वों का समूह है। इस प्रसंग में 'दायित्वों' शब्द का प्रयोग ठीक है, न कि आधुनिकतम विवशताएं' शब्द का; क्योंकि 'दायित्व' की निजी अपेक्षाएं नहीं हैं, वरन् सामाजिक अपेक्षाएं हैं। वाशिंगटन चाहे विशेष रूप से मिलनसार न भी हों, किन्तु थे तो वह सामाजिक प्राणी ही---अर्थात् वह संयोजन करने वाले न सही, पर समाज के एक सदस्य तो थे। अतः इस आदर्श से जिस प्रकार के व्यक्तित्व का उद्भव होता है, वह परिपक्व अवस्था में पहुंच कर ठोस निःस्पृही होता है। यह होते हुए भी वह पूर्ण, सन्तुलित और साथ ही साथ शान्तचित्त भी होता है। रोमन शब्द 'इंटैगरीटस' का यह उपर्युक्त आशय है। ऐसा व्यक्ति संशयों से पीड़ित हो सकता है, किन्तु यह संशय उसे पंगु नहीं बना सकते। उसका शिष्ट व्यवहार जटिलतम समस्याओं को सुलझा देता है। उसका साहस स्वतः उसके कार्यों का संचालन करता है। मृत्यु उसे आतंकित नहीं करती।

'एक विचारवान मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह अपने मृत्यु के प्रति न तो बाह्यवर्ती, न अधीर और न ही घृणा-युक्त रहे, बल्कि उसे यह चाहिए कि वह इसे प्रकृति के अनेक संकार्यों में से एक ऐसा संकार्य समझे कि जिसकी अनुभूति उसे अवश्य करनी पड़ती है।'

यह मार्क्स आरिलियस के शब्द हैं। वाशिंगटन भी, जबकि उन्होंने अपना वसीयतनामा लिखवाया, अमरीकी जनता के नाम विदाई-भाषण प्रकाशित कर सकते थे और माऊंटवर्नन की महराबदार छत

की मरम्मत करके अपनी मरणोपरान्त समाधि के लिए उसे तैयार कर सकते थे।

'ग्लोरिया' शब्द महत्त्वाकांक्षा का अर्थ देता है। महत्त्वाकांक्षा को जानपद-आवेग के रूप में समझा जाता है। यह कोई वैयक्तिक पीड़ा की वस्तु नहीं। निश्चय से यह बात वाशिंगटन पर चरितार्थ हुई जब उन्होंने अपनी युवावस्था की अपनी ओर ध्यान खींचने और अधिमान-पद को प्राप्त करने की लालसा पर काबू पा लिया। इसके अतिरिक्त वाशिंगटन महोदय की यह कामना कि उन्हें एक अच्छा आदमी समझा जाए और उनकी ख्याति निष्कलंक रहे, यह भी एक प्रकार से शास्त्रीय कामना थी। यह कामना उस जनवादी, 'अन्य-निर्दिष्ट' चिन्ता से तनिक भी मेल नहीं खाती, जिसके परिणामस्वरूप आजकल के प्रसिद्ध व्यक्ति जनता की राय में अच्छा बने रहने की आकुलता प्रदर्शित करते हैं। ये लोग इस जनमत को, जो निर्वाचन क्षेत्रों में, पुस्तकों की सर्वाधिक बिक्रियों आदि में प्रगट होता है, देव-वाणी तुल्य समझते हैं। यह सच है कि जब वाशिंगटन सैनिक थे, तो वह किसी योजना को निश्चित करने के लिए अपने अफसरों की सलाह ले लिया करते थे। राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने यह कोशिश की कि देश की मानसिक अवस्था से सम्पर्क बनाए रखें, किन्तु नाजुक मौकों पर, विशेषरूप से जिन दिनों जे के समझौते-पत्र के ऊपर हो-हल्ला मचा था, उन्होंने बिना किसी झिझक के विशाल-हृदय रोमन की तरह व्यवहार किया। उन्होंने बिना किसी घृणा के 'जनता' का उल्लेख किया।

यह मन में सोचना बेकार सा है कि वाशिंगटन वर्जीनिया, के रहने वाले केवल प्राचीन संसार के तौर-तरीकों और अनुभवों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते थे, अथवा उनके सब समकालीन व्यक्ति, उन्हीं की तरह, विशेष रूप से अपने अपने मिजाजों में 'शास्त्रीय' थे। असल बात यह है कि उन का युग हमारे युग से अत्यधिक भिन्न था और इस लिए उन्हें ज्यादा अच्छी तरह

समझने के लिए, हमें उन्हें आधुनिक युग का आदमी न मान कर, शास्त्रीय ढांचे को अपने सामने रखना चाहिए। यह बात भी हमें ध्यान में रखनी चाहिए कि उन दिनों बागान-मालिकों के वर्जीनिया की सभ्यता और संस्कृति भी ब्रिटेन से इतना मेल नहीं खाती थी, जितना कि वह 'रोमन' से।

यहां हमने रोम का एक आदर्श चित्र खेंचा है। अधिक ठीक बात यह है कि यह उस समाज की प्रतिमूर्ति है जिसके मूल्य कठोरतापूर्वक क्रियात्मक थे और यह छाप है जो वाशिंगटन का चरित्र हमारे मनों पर अंकित करता है। हमारी पीढ़ी में इस प्रकार के उदात्त चरित्र का अभाव है। इतिहास की शब्दावली में अधिक से अधिक तुलना-योग्य वस्तु समीप की विशेषताएं रखती है, कविता में यह अद्भुत रूप से सन्निकट हो जाती है। इतिहास पर दृष्टि डालने से हमें कम से कम इस बात को समझने में मदद मिलती है कि वाशिंगटन जैसे व्यक्ति क्यों इस बात में विश्वास रखते थे कि वे गणतन्त्रीय नमूने पर एक महान् राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। यद्यपि ये लोग आरम्भ में जार्ज तृतीय की वफादार प्रजा थे, किन्तु उनके वातावरण की परिस्थितियां एवं उनके चिंतन के तौर-तरीके स्वभावतया, यद्यपि अदृश्य रूप में, उन्हें राजों-महाराजों से तथा योरुप से दूर हटा ले गए और उन्हें एक नई राजनैतिक व्यवस्था को अपनाने की प्रेरणा दी। यह व्यवस्था असल में उन की तात्कालिक स्थिति के ठीक अनुरूप थी। शास्त्रीय अतीत के अनुभव जहां तरुण संसार को—और अमेरिका उन दिनों तरुणावस्था में अपने आप को महसूस करता था—संकेत दे रहे थे कि इस प्रकार की गण-तंत्रीय पद्धति कार्य-रूप में आ सकती है, वहां चेतावनी भी दे रहे थे कि हो सकता है कि इसमें उनके सारे प्रयास विफल हों। अतः उनकी यह क्रांति संरक्षण के द्वारा हुई थी। उन्होंने नई चीज बनायी नहीं बल्कि खोज निकाली।

यद्यपि रोम इस शिशु-राष्ट्र के लिए 'पाठ-वस्तु' के रूप में था, वह उसके लिए फोटोग्राफी के 'ब्ल्यूप्रिन्ट' की तरह नहीं था। उस

समय अनेक ऐसी चीजों की जरूरत थी जो देश की राज-तांत्रिक पद्धति को गण-तांत्रिक पद्धति में बदल सकें और उपनिवेशों के भूतपूर्व शिथिल समूह को एक दृढ़ संघ के अन्तर्गत ला सकें, जैसा कि १७९० के दशाब्द में हुआ। स्वतन्त्रता के लिए न केवल संघर्ष करना पड़ा, बल्कि उसे ठोस और वास्तविक रूप देना पड़ा। यह कहा जा सकता था कि भावनात्मक-रूप से एक राष्ट्र होने से पहले ही अमेरिका वैधानिक रूप से राष्ट्र बन चुका था। शब्द 'अमरीकी करण' जिसका आज 'शेष संसार पर अमरीकी प्रभाव' के अर्थों में प्रयोग होता है, आरम्भ में वाशिंगटन के समय में आविष्कृत हुआ। उस समय इस का प्रयोग अमरीकियों के रक्षात्मक संघर्ष के लिए होता था, ताकि उन्हें योरुपीय लोगों से पृथक् समझा जा सके।

इसलिए इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि आज वाशिंगटन की प्रतिष्ठा जितनी उनके सुकार्यों के लिए होती है, उतनी ही उनके उदात्त व्यक्तित्व के लिए भी होती है। इसमें भी हमें आश्चर्य नहीं होता कि इन गुणों और कार्यों के कारण उनके जीवन-काल में ही उनके सम्बन्ध में स्मारक-योग्य कहानियों की रचना हुई। १७७५में सेनापति पद को ग्रहण करने के कुछ ही मास पीछे जनरल वाशिंगटन का अनुपम दर्जा बन गया और जैसे जैसे युद्ध का समय बढ़ता चला गया, वैसे ही वैसे उन का दर्जा बढ़ता ही चला गया और मजबूत होता गया। यह केवल इस कारण नहीं था कि वह एक उत्तम सैनिक अथवा एक सुयोग्य शासक थे। यह उल्लेखनीय है कि वह सीधे तौर पर, अपने सैनिकों के लिए प्रेरणादायक नहीं बन पाए। उन का साहस दूसरों के लिए शिक्षा का काम करता था, किन्तु उन में नेतृत्व के संक्रमणशील व वैद्युत गुणों की कमी थी जो कुछेक सैनिक विभूतियों में पाए जाते हैं। उनकी प्रतिदिन की हिदायतों पर इस प्रकार का उत्साह नहीं उभरता था कि जिस प्रकार सैनिक बिगुलों की ध्वनि पर अहा! हा! कह उठते हैं, यद्यपि उन आदेशों में अक्सर विनोद-सामग्री हुआ करती थी। उन्होंने ९ जुलाई १७७६ वाले दिन जो सामान्य आदेश 'अनेक ब्रिगेडों' को दिए, उनमें

यह कहा गया था कि वे स्वतन्त्रता-घोषणा-पत्र ऊंची आवाज में पढ़ें। इन आदेशों के अन्त में सब अफसरों और भर्ती किये गए लोगों को स्मरण कराया गया कि अब 'वे ऐसे राज्य के सेवक हैं जो उनकी श्रेष्ठता के लिए इनाम देने एवम् एक स्वतन्त्र देश में सर्वोच्च प्रतिष्ठा-पद प्रदान करने के लिए पर्याप्त रूप से सशक्त है।' क्या यह तो नहीं था कि इन आदेशों को देते समय वाशिंगटन महोदय को अपनी वे निराशाएं याद आ रही थीं जो उन्हें वर्जीनिया में सेना-विभाग में नौकरी करते हुए मिली थीं। सम्भव है कि ऐसा ही हो।

क्या उनके शब्द कुछ-कुछ नीरस थे ? शायद ऐसा ही था। वास्तव में उन शब्दों का महत्त्व इस बात में था कि वे जेफर्सन की सुन्दर, ओजस्वी प्रस्तावना को ठोस-रूप में सहारा देते थे। वह किसी को भी यह महसूस नहीं होने देते थे कि उनमें ओछापन है। उनका शिष्टतापूर्ण आत्मसंयम, उनकी जगत्सिद्ध सत्य-परायणता तथा उनका सम्पूर्ण रिकार्ड यह सब घोषणा करते थे कि वह इस प्रकार के व्यक्ति नहीं हैं। वह न सिर्फ देखने में, बल्कि अपने व्यवहार में भी एक शास्त्रीय वीर-पुरुष थे। उनके ऊपर ही अमेरिका की भावी पीढ़ियों का भाग्य अवलम्बित था। वह भूत और भविष्यत् का संयोजन करते हुए भी वर्तमान काल की तथ्यता और वास्तविकता को मजबूती से पकड़े हुए थे। वह अमेरिका के प्रतीक थे। किन्तु इतना वास्तविक, ठोस तथा स्पष्ट प्रतीक आज तक दुनिया के दृष्टिपथ पर नहीं आया। जेफर्सन ने जीवन-स्वतन्त्रता तथा आनन्द-प्राप्ति के बारे में बहुत कुछ लिखा और कहा; वाशिंगटन ने वेतन और उन्नति को देश-भक्ति के एक मूल-तथ्य के रूप में माना। वाशिंगटन की शाब्दिकता-मात्र ने स्वतन्त्रता की परियोजना में वास्तविकता ला दी। उन्होंने उस असहाय दिवा-स्वप्न के वातावरण को छिन्न-भिन्न कर दिया जो उन दिनों अमेरिका पर छाया हुआ था। जिन बातों को कल्पना-विहारी अनिश्चित समझते थे, उन्हीं बातों को सच मानते हुए वह अपने पथ पर

आगे बढ़े। वे बातें ये थीं—कि एक तो राष्ट्र का उद्धार होगा और दूसरे, यह सुख-समृद्धि को प्राप्त करेगा। और हमें इस बात में विरोधाभास लगता है कि जिस व्यक्ति के पांव भूमि पर इतनी दृढ़ता से टिके हुए थे, उसी को ही धीरे-धीरे अपने ही देशवासियों ने आकाश में 'उड़ाना' शुरू किया। पैनसलेवेनिया पत्र के अनुसार (वर्ष १७७७):—

'यदि उनके चरित्र में कोई धब्बे भी हैं, तो वे सूर्य के धब्बों के समान हैं जिन्हें दूरवीक्षण यन्त्र की विशालन-शक्ति के द्वारा ही देखा जा सकता है। यदि वह उन दिनों जीवित होते जब लोग मूर्तियों की पूजा किया करते थे, तो निस्सन्देह उन्हें एक देवता मान कर पूजा जाता।'

आलोचनाएं

कुछ अमरीकी सोचते थे कि उनकी पूजा की जा रही है।

'मुझे यह देखकर ठेस पहुंची है कि सदन के कुछ सदस्य मूर्ति-पूजा करने लगे हैं—ऐसी मूर्ति की पूजा जिसे उन्होंने अपने हाथों से घड़ा है। मैं यहां अन्धी श्रद्धा का उल्लेख कर रहा हूं जो जनरल वाशिंगटन के प्रति कभी-कभी प्रदर्शित की जाती है। यद्यपि मैं उन के श्रेष्ठ गुणों के लिए उनका आदर करता हूं, किन्तु इस सदन में मैं अपने आप को उनसे उच्चतर महसूस करता हूं।'

इसके लिखने वाले थे जान एडम्ज। यह उन्होंने उस समय लिखा था जब १७७७ में वे संयुक्त-राज्य कांग्रेस के सदस्य थे।

हमें इस स्थिति को अधिक निकट होकर जांचने की जरूरत है, क्योंकि हम वाशिंगटन के विषय में इससे बहुत कुछ जान सकते हैं। सर्वप्रथम, कौन-कौन लोग उनके स्पष्ट आलोचक थे? युद्ध के दिनों में, जैसा कि हम आशा रख सकते हैं, मुख्य रूप में उन लोगों ने उनका विरोध किया जो उनके अधीन सैनिक अफसर थे तथा जो उन अफसरों के मित्र कांग्रेस के सदस्य थे। तब और बाद में, अधिक अनुपात में वे लोग थे, जिन्हें बुद्धि-जीवी अथवा हाजिर-जवाब कहा जा सकता था। यह कहना कि वे उन्हें घृणा अथवा

तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे—यह उनके बारे में अत्यधिक कड़ी राय है। कुछ-कुछ लोग विरोधी मत अपने तक ही रखते थे, किन्तु जौसफ रीड, एडमण्ड रैंडाल्फ, अलैक्जैण्डर हैमिल्टन, आरान बर (जो एक बार मन्त्री या पदिसहाय थे), टिमोथी पिकरिंग (उनके एडजूटेंट जनरल), बेंजामिन रश—इन सरीखे लोगों तथा अन्यों ने अलग-अलग अवस्थाओं में वाशिंगटन की खामियों पर टिप्पणियां कीं। उनके विचार किस धारा में बहते थे, इसे जेम्स पार्टन ने आरोन बर के बारे में लिखते हुए भली-भांति संक्षेप में दिया है—

'आरोन बर वाशिंगटन को एक अत्यन्त ईमानदार और सद्भावनायुक्त देहाती सज्जन समझते थे। किन्तु वह उन्हें कोई बड़ा सैनिक नहीं मानते थे। उनके विचार में वाशिंगटन (देवता होना तो दूर की बात रही) अर्ध-देवता से भी वास्तविक रूप में बहुत दूर थे। वरं कायर मनुष्य से दूसरे दर्जे पर नीरस आदमी से नफरत करते थे और वे जनरल वाशिंगटन को एक नीरस आदमी समझते थे। हैमिल्टन तथा अन्य क्रांति के समय के तरुण सैनिक और विद्वान भी स्पष्टरूप से यही राय रखते थे, किन्तु हैमिल्टन का यह विचार था कि जनरल वाशिंगटन की लोक-प्रियता अपने लक्ष्य में विजय-प्राप्ति के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि वाशिंगटन के बारे में उसके जो भी विचार थे, उन्हें वह अपने तक ही रखता था।'

वास्तव में बात यह है कि एक श्रेणी के रूप में उन्हें इस बात की खीझ थी कि बौद्धिक-रूप से इतने कम स्तर का व्यक्ति इतनी ज्यादा शोहरत हासिल कर ले। जब १७८७ में वाशिंगटन महोदय ने सरकारी पद सम्भाला, तो कुछ लोगों ने (बाध्य होकर निजी पत्रों में) यह शिकायत की कि अब अपने ऊपर अमेरिका के प्रति बागी होने का आरोप लिए बिना उनका विरोध करना असम्भव हो गया है। अन्य लोग, जिनमें हैमिल्टन भी था, अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए उनकी लोक-प्रियता पर भरोसा करते थे। इस तरह के लोग उनके स्मारक की आड़ लेते थे। (सन् १७८५ में) जान एडम्ज ने तर्क करते हुए लिखा:—

'वाशिंगटन जैसे महानुभाव की पूजा करने की बजाय, मनुष्यों को उस राष्ट्र की सराहना करनी चाहिए जिसने इस प्रकार के व्यक्ति को सुशिक्षित किया—मैं वाशिंगटन सरीखे मानव पर गर्व करता हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि वे अमरीकी उच्च-चरित्र के एक उदाहरण हैं। पाम्पे के दिनों में वाशिंगटन सीजर होते। उनके अफसर और दल के लोग उन्हें ऐसा बनने की उत्तेजना देते। चार्ल्स के समय में, वह क्रामवेल होते। फिलिप द्वितीय के वक्तों में वह औरेंज के राजकुमार होते और हालैण्ड के काउंट बनने की अभिलाषा करते। किन्तु अमेरिका में उनकी सिवाए कार्य-निवृत्त होने के और कोई आकांक्षा न होती।'

इस प्रकार (इन लोगों के विचारों के अनुसार) वाशिंगटन की पूजा अनुचित, मूर्खता-पूर्ण और खतरनाक थी। उनका विचार था कि यदि अमरीकी चीजों को उचित अनुपातिक दृष्टि से नहीं देखते, तो वे राज-तन्त्र की स्थापना के लिए अपने मत देंगे और परिणाम-स्वरूप होने वाली उसकी बुराइयों को भुगतेंगे। वाशिंगटन के अत्यधिक आलोचक यह स्वीकार करते थे कि खतरा पूर्वोदाहरण में है, क्योंकि चापलूसी समय पाकर आदत की शकल-सूरत अख्तियार कर लेती है। वे इस बात को मानते थे कि वाशिंगटन स्वयं घमण्डी नहीं हैं और न ही, उनके विचार से, वह कभी हो भी सकते थे। तो भी, जैसे जैसे उन की यश-कीर्ति बढ़ती जाती थी, उन पर जैसे कांच लगता जा रहा था। वह साधारण मनुष्यों से दूर हटते जा रहे थे। राष्ट्रपति होने पर तो अत्यधिक 'प्रोटोकोल' उन्हें घेरे हुए था।

हम इस आधार पर इन में से कई एक बातों पर अविश्वास कर सकते हैं कि ये ईर्ष्या और दलीय भावना की उपज थीं, किन्तु सर्व-प्रकार से ऐसा नहीं कह सकते। हम समझते हैं कि ऐडम्ज सही था जब उसने, चाहे अशोभनीय ढंग से, यह कहा कि वाशिंगटन का आत्म-त्याग उनकी निस्स्वार्थता को इतना प्रगट नहीं करता, जितना कि वह इस बात का प्रमाण है कि अमरीका-

निवासी शासन की स्वतन्त्र गणतन्त्र-शैली का आनन्द उठाने के लिए दृढ़-संकल्प थे (यद्यपि वाशिंगटन ने इस प्रकार की श्रेय-प्राप्ति का दावा नहीं किया)। वह इस बात में भी सही था, यद्यपि इस बात मे भी उसने पुनः अशिष्ट का सा ही व्यवहार किया, जब उसने वाशिंगटन के प्रधान-सेनापति बनने पर खर्चे के सिवाए किसी प्रकार का वेतन न लेने के लिए उनकी आलोचना की। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार के इन्कार से एक सार्वजनिक (सरकारी) कर्मचारी के रूप में उन्हों ने अपने आप को कुछ न कुछ ऊंचा ही उठाया। वाशिंगटन ने केवल सर्वोच्च विचारों से प्रभावित हो कर ही इस प्रकार सोचा था। वह संयुक्त-राज्य की कांग्रेस को अपना अन्तिम स्वामी समझते थे और उसके निर्देशों के पालन में सतर्क थे। यह होते हुए भी उन्होंने स्वयं को, अपने आधीन नियुक्त किए गए सेनापतियों से, विभिन्न रखा। उनकी भांति ही वे लोग भी कांग्रेस द्वारा नियुक्त किए गए थे और उन्हीं की भांति ही वह भी कांग्रेस द्वारा अपने पद से पदच्युत किये जा सकते थे (सिवाय आपत्कालीन विशेष परिस्थितियों में जबकि कांग्रेस ने उन्हें विशेषाधिकार प्रदान किए थे)। किन्तु, जो बात उनके मतानुसार परोपकार-भावना के अन्तर्गत थी, लोग उसी को सम्भवतः दूसरी प्रकार से समझ सकते थे। कम से कम गेट्स, कौनवे, तथा अन्य सेनापतियों में जो कुछ कुछ रोष उभरा था और जिसके फलस्वरूप उन्होंने तथाकथित षड्यन्त्र रचा था, वह इस कारण हुआ कि उन लोगों को यह विश्वास हो गया था कि वाशिंगटन यह समझते हैं कि उन्हें कोई अपदस्थ नहीं कर सकता।

उनकी अपनी दृष्टि में तथा अत्यधिक अमरीकियों के विचार में यह विशुद्ध देश-भक्ति का मामला था। उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा अमेरिका की प्रतिष्ठा में विलीन कर दी थी, किन्तु, क्या कोई भयंकर भूल करने पर उन्हें वस्तुतः पदच्युत किया जा सकता था? यह एक प्रकार की समस्या थी जिसमें एडम्ज और संयुक्त-राज्य की कांग्रेस के सदस्य उलझे हुए थे। यह बात नहीं थी कि वे उन्हें

अपदस्थ करने का सचमुच इरादा ही रखते थे। किन्तु, उन लोगों ने यह अवश्य देखा होगा कि युद्ध के दिनों में किसी समय भी उन्होंने इस बात का संकेतमात्र नहीं किया कि वे अपने पद से त्यागपत्र देना चाहते हैं। वे शायद आश्चर्य करते होंगे कि कानवे कैबल के समय उन्हें यह बात क्यों नहीं सूझी कि वे इस प्रकार का क़दम उठाएं, ताकि वे सदन का विश्वास प्राप्त कर सकें? या उन्हें अपना त्यागपत्र देने का विचार उस समय क्यों नहीं आया जब यार्कटाऊन की विजय के बाद युद्ध सक्रिय रूप से बंद हो चुका था?

इन प्रश्नों का उत्तर यह है कि उन में कर्त्तव्य-परायणता इस हद तक थी कि वे इस प्रकार का विचार ही नहीं कर सकते थे। वे अपने इस विश्वास में न्याय-संगत थे कि एक बार उनका नियन्त्रण हट गया, तो अमरीकी प्रतिरोध समाप्त हो जाएगा। किन्तु, जितने अधिक काल तक वह प्रमुख स्थान में रहे, वह उसमें उतना ही अधिकाधिक उलझते गए—यहां तक कि उस में से स्वयं को निकालना उनके लिए दुसाध्य हो गया; साथ ही साथ वह उतने ही अधिक संयुक्त-राज्य के प्रतीक बनते गए। मोटे तौर पर, व्यक्तिगत रूप से जनरल वाशिंगटन तो विलुप्त हो गए और उनके स्थान में एक असाधारण पुरुष दृष्टिगोचर हुए जो कि अमरीकी संत जार्ज थे। वह इस सारी प्रक्रिया के शिकार बने, किन्तु हमारे विचार में कुछ हद तक उनका इस में अपना भी हाथ था। यह केवल इसलिए नहीं कि उन्हों ने इतनी भव्य सफलता प्राप्त की थी, न केवल इसलिए कि अपने व्यवहार में वे इतने शान्त और राजनीतिज्ञ-तुल्य थे, न केवल इसलिए कि उनका दृष्टिकोण निस्वार्थपूर्ण और राष्ट्रीय था, बल्कि इसलिए भी कि उन्होंने जानबूझकर और स्थिरतापूर्वक अपने वैयक्तिक अस्तित्व को देश के हित के लिए समर्पित कर दिया था। वह स्वयं जिस प्रकार के इन्सान थे उन से यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वह इससे इतर कुछ और कर सकते हैं। किन्तु उन के चीखने-चिल्लाने और बोझल दायित्व का विरोध करने के बावजूद परिणाम एक समान रूप से अपरिहार्य

थे। उन के एक बार अमेरिका के संक्षिप्त प्रतिनिधि-रूप बन जाने पर वह स्वाभाविकतया सार्वजनिक जीवन में नितान्त काम करने वाले उम्मीदवार की भांति उलझ गये। अतः प्रधान-सेनापति के आसन पर आरूढ़ वाशिंगटन महोदय को सिवाय मृत्यु, रुग्णता अथवा अपमान के कोई अन्य वस्तु राष्ट्र-पति होने से नहीं रोक सकती थी।

और जब वह एक बार राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए, तो मानव वाशिंगटन पहले से अधिक स्थिरता-पूर्वक वाशिंगटन स्मारक में विलीन हो गए। इस मौके पर भी इनके आलोचकों की टिप्पणियां सर्वथा-रूप में अन्याय-संगत नहीं थीं। लोगों का एक देवता-तुल्य व्यक्ति को अपने मध्य पाना ही खीझ पैदा करने वाली चीज थी, और जब यह देवता-तुल्य मानव फैड्रलिस्ट-दल के एक अंग बन गए, तो उनके क्रोध का पारावार न रहा। गणतन्त्र-वादियों के दृष्टिकोण के अनुसार वह व्यक्ति जो पहले अनाक्रमणीय था, वह अब ऐसी नीति का संपोषक बना, जो उनके लिए असह्य थी। यह ठीक है कि जब वाशिंगटन अपने पद पर आरूढ़ थे, तो उन्होंने कभी इस बात को स्वीकार नहीं किया कि वे भी फैड्रलिस्ट हैं, किन्तु उन्होंने इतनी बात मान कर कि फैड्रलिस्ट विचारधारा के सिवाए कोई और ग्रह्य विचार-धारा नहीं है, उन्होंने फैड्रलिस्ट विचार-धारा को एक बहुत बड़ी प्रतिष्ठा प्रदान की। वाशिंगटन की मृत्यु के बाद गणतन्त्र-वादियों ने उन प्रयासों को देखा जिनके द्वारा फैड्रलिस्ट-दल के लोग वाशिंगटन-लोक-कल्याण 'समितियां' बना कर वीर-पुरुष वाशिंगटन-सम्बन्धी गाथाओं से लाभ उठा रहे हैं। यह समितियां वास्तव में राजनैतिक क्लब थे, जिन्हें संत-चरित्र के प्रचारक के रूप में जाहिर किया गया था। (इन समितियों की पुस्तिकाओं में वाशिंगटन का विदाई-भाषण आवश्यक रूप में होता था।) अमेरिका के लोग, उन पर हमला करने से विशेष-रूप से झिझकते थे। गणतन्त्रवादियों के कांग्रेस-सदन के भाषण धैर्य-हीन स्वरद-त्यागों तथा आरम्भिक समादर से भरे रहते थे, किन्तु वे जो आक्रमण करते

थे वे सर्वस्व-रूप में चिंताकुलता अथवा रोष के परिणाम-स्वरूप नहीं होते थे। वे चाहते तो यह थे कि वाशिंगटन की तारीफ करें, किन्तु उन्हें इसके सम्भाव्य परिणामों की भी चिन्ता रहा करती थी। अपने फैडूलिस्ट अनुयाइयों के कारण वाशिंगटन को हम कठोर, कष्ट पहुँचने योग्य, और स्पष्टता से किए विरोध पर नाराज होते हुए देखते हैं। क्या यह वेदनापूर्ण व्यंग्य नहीं था कि पैनसिलवेनिया के सन् १७९४ के मद्य-विद्रोह में, जिसमें कि राष्ट्रपति (वाशिंगटन) के आदेश से लोग पकड़े गए थे, उनमें से आधे लोग उस क्षेत्र के रहने वाले थे जिसका नाम उनके सम्मानार्थ वाशिंगटन रखा गया?

डैविड-मीड, वाशिंगटन के परिसहाय रिचर्ड मीड के भाई थे। उन्होंने प्रधान-सेनापति के बारे में एक बार कहा था—'वे उदासीन व नीरस स्वभाव के हैं। अपनी प्रकृति एवं आदत के कारण वह गणतन्त्र देश के सेनापति बनने की अपेक्षा पूर्व देशों में सम्राट् बनने के अधिक योग्य हैं।' उन दिनों जब कि गणतन्त्रवादियों और फैड्-लिस्टों के मध्य वाद-विवाद चल रहा था, इस प्रकार का कथन और भी अधिक उपयुक्त रूप से लागू होता था। अलैक्जैण्डर हैमिल्टन के प्रस्ताविल टकसाल-स्थापना-विधेयक में एक तजवीज थी कि वाशिंगटन का सिर संयुक्त-राज्य अमेरिका के सिक्कों पर अंकित किया जाए। ऐसा हमारे पास कोई साक्ष्य नहीं है कि जिससे यह सिद्ध हो कि वाशिंगटन महोदय ने इस विचार को जोरदार तरीके से अनुमोदित किया। वास्तव में ऐसी सम्भावना ही नहीं हो सकती थी। किन्तु गणतन्त्र वादियों की नजरों में, जो इस प्रस्ताव को गिराने में सफल हुए, यह उस अशुभ प्रवृत्ति का नमूना था जो वीर-पूजा के रूप में उस समय मौजूद थी।

मनो-वेदना

किन्तु वाशिंगटन के आलोचकों में उदारता की कमी थी। उन्होंने इस बात को महसूस नहीं किया अथवा इस बात की गुंजाइश नहीं छोड़ी कि इस प्रवृत्ति को पूर्व ही जानना-समझना चाहिए था और उसे सर्वथा रूप में प्रोत्साहित करना चाहिए था। वस्तुतः उस

समय अमेरिका को एक महात्मा जार्ज की आवश्यकता थी। राष्ट्रीय एकता का प्रत्येक प्रतीक मूल्यवान था और यह कहना गलत है कि वाशिंगटन फैडरलिस्ट लोगों के हाथों में महज एक कठ-पुतली थे। उन्होंने सच्चाई से उन सब आकांक्षाओं को पूरा किया जो समान रूप से सब अमरीकियों के हृदयों में थीं। वह यदि निर्बल, मूर्ख अथवा अपने व्यवहार से दूसरों को उकताने-थकाने वाले भी होते, यद्यपि इनमें से कोई दुर्गुण उनमें नहीं था, तो भी उनकी लोक-प्रियता एक ऐसी चीज थी जिसका बहुत ज्यादा महत्व था। 'रैडीकल' सिद्धांतों के उग्रवादी अमरीकी जब उनकी लोकप्रियता के बारे में शिकायत प्रदर्शित करते थे, तो वे किसी बुराई की शिकायत नहीं कर रहे होते थे, बल्कि इस बात पर भय प्रदर्शित कर रहे होते थे कि कहीं उनकी अच्छाई अपनी सीमा को ही न उल्लांघ जाये। वे लोग सच्ची अमरीकी शैली में, अन्याय-संगत रूप से, अनुत्तरदायी प्रकार से, क्रूरता-पूर्वक पर स्वस्थ-रूप से उनको देवोचित आस्था का पात्र व्यक्ति मानते थे।

अधिक गहराई में जाकर हमें लगता है कि वाशिंगटन के सम-कालीन लोगों ने उनकी उस मनोवेदना की ओर ध्यान नहीं दिया, जो (सम्भवतः विशेष रूप से या योरोपीय लोगों की दृष्टि में) उनके कार्यों में तथा सामान्यतया अमेरिका के इतिहास में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित होती है। उदाहरण के लिए वाशिंगटन की निजी स्थिति के सतृष्ण पहलुओं पर विचार कीजिए। उनको इस बात से बड़ा सन्तोष मिलता था, कि वह अपना कर्तव्य निभा रहे हैं और उनके इन कामों के लिए जनता इतने व्यापक रूप से सराहना कर रही है। किन्तु कुछ लोगों के विपरीत उनके हृदय में सार्वजनिक जीवन के लिए चाह नहीं थी। उनकी जो शास्त्रीय संहिता थी, उसमें आनन्द भोगने पर जोर नहीं था। दूसरे लोगों को इस योग्य बनाने के लिए कि वे अपनी वैयक्तिक प्रवृत्ति के अनुसार आनन्द भोगें, उनका अपना वैयक्तिक जीवन एक खोखले ढांचे में बदला हुआ उन्हें नजर आया। राष्ट्र के पिता स्वयं संतान-हीन थे। यह

चाहे उनकी अपूर्व ऐतिहासिक कहानी में ठीक ही क्यों न बैठती हो, यह बात उन जैसे वास्तविक मनुष्य के लिए आजीवन निराशा का विषय रही होगी कि उन्होंने अपने पीछे अपना कोई सीधा उत्तराधिकारी नहीं छोड़ा। उनका एक सौतेला बेटा भी अपनी छोटी उम्र में मौत का ग्रास बना। उन्होंने माऊंट वर्नन के सुधारने में चिरकाल तक प्रयत्न किए, किन्तु अपनी पिछली आयु के बहुत बड़े भाग तक वह अपने इस घर से दूर ही रहे। अप्रैल १७९५ में, जब उन्हें राष्ट्रपति-पद से अवकाश मिला, तो अपने गृह-भवन की मरम्मत के लिए उन्होंने कई आवश्यक बातें पायीं। ये मरम्मतें इस कदर ज्यादा थीं कि उन्होंने अपने एक साथी को थके-थके, पर व्यंगपूर्ण ढंग से एक पत्र में लिखा:—

'इस समय बढ़ई, राज, रंग-रोगन करने वालों से मैं घिरा हुआ हूं। मुझे इस बात की चिन्ता हो रही है कि इन से जल्दी से जल्दी अपना पिंड छुड़ाऊं, क्योंकि न तो मेरे पास कोई ऐसा कमरा है, जिसमें मैं अपने किसी मित्र को रख सकता हूं और न ही मैं हथौड़ों के संगीत सुने बिना अथवा रोगन की खुशबू ग्रहण किये बिना अपने किसी कमरे में बैठ सकता हूं।'

और उन्हें जो वहां रहकर अल्पकालीन शान्ति प्राप्त हुई, अन्त में जाकर लड़ाई की आशंकाओं के कारण वह भी भंग हो गई।

निस्सन्देह हर मानवीय योजना में मनोवेदना का तत्व मौजूद रहता है। अन्त में जाकर, जैसा कि मार्क्स आरिलियस दुबारा साक्षी देता है, केवल एक मृत्यु का महत्व रह जाता है।

'उदाहरण के लिए वेस्पेशियन के समय को लीजिए। इसमें भी वही पुराना दृश्य सामने आता है—विवाह, बालक का उत्पन्न होना, रोग व मौत, लड़ाई और आनन्दोत्सव, वाणिज्य व कृषि, खुशामद व जिद्द। एक व्यक्ति भगवान् से प्रार्थना कर रहा है कि कृपया यह—यह ले लीजिए। दूसरा अपने भाग्य पर सिर धुन रहा है। फिर कुछ और भी लोग हैं जो राज्यों और प्रतिष्ठा के पदों के पीछे लोलुपता से अन्धे हो रहे हैं।

यह सब अपना जीवन व्यतीत कर चुके और अपना-अपना स्थान छोड़ कर दूसरे लोक को सिधारे। इस प्रकार ट्राजन के राज्य की ओर जाइए, वहां भी वही चित्र है और वहां भी जीवन इसी प्रकार व्यतीत हो जाता है और मृत्यु आ दबाती है।'

किन्तु जहां तक वाशिंगटन के जीवन-कार्यों का सम्बन्ध है, उन में विशेष-रूप से मनो-वेदना नजर आती है, क्योंकि उसके सार्वजनिक और वैयक्तिक पहलुओं में असमानता पाई जाती है। जो कोई भी राज्यिक कार्य उन्होंने अपने हाथों में लिए उनमें उन्हें भरसक सफलता मिली। किन्तु जो कुछ उन्होंने स्वयं के लिए किया वह विचित्र रूप से क्षणिक रहा। वर्जीनिया की वैस्टमोर लैण्ड काउन्टी में, जिस स्थान में कि उनका जन्म हुआ, वह १७७९ में आग की भेंट हो गई। यद्यपि माउन्ट वर्नन एक ऐसी जागीर थी, जिससे उन्हें बहुत प्यार था, किन्तु उससे उन्हें कभी लाभ नहीं हुआ। न ही क्रान्ति अथवा किसी बाद की घटना से बाढ़ग्रस्त खेतों और खेत-बगीचों के मालिकों की दुर्दशा को दूर ही किया। इसका कारण यह था कि वहां की भूमि ऊसर थी और वहां का जलवायु अति-ऊष्ण था। यही कारण था कि वाशिंगटन की देख-रेख तथा इस बारे में उनकी योजनाएं इन त्रुटियों को दूर न कर सकीं। सूखा, फसलों को लगने वाले कीड़े, रोग इत्यादि मानव शत्रुओं से भी बढ़ कर निर्दयी थे। वे एक स्थान में लिखते हैं:—

'लोकस्ट पेड़ों के पत्ते पिछले वर्ष की तरह अब भी मुरझाने शुरू हो गए हैं और बहुत से मर चुके हैं। काली गोंद के पेड़, जिन्हें मैंने उखाड़कर चौड़े रास्तों व घूमने-फिरने की चक्करदार वीथियों में लगाया था और जिन में से पत्ते भी निकल आए थे और जो आरम्भ में बहुत अच्छे लग रहे थे, वे सब के सब मर गए हैं। यही दशा चिनारों व शहतूत के पेड़ों की हुई। क्रैब की किस्म के सेबों के पेड़ भी, जिन्हें (उखाड़ कर) झाड़ियों में बोया गया था और ताड़ के पेड़ भी मर चुके हैं। ससाफरास भी बहुत हद तक मर चुके हैं। चीड़ के पेड़ तो मारे के मारे

समाप्त हो चुके हैं। कई देवदार और हैमलोक के पेड़ भी बिल्कुल मर चुके हैं।'

जुलाई, १७८५ के जनवरी के उद्धरणों से पता चलता है कि उस वर्ष अपवाद से बहुत बुरी तरह गर्मी पड़ी; किन्तु यह कोई एकलित उदाहरण नहीं था। दूसरी ऋतुओं में 'हौली' बाड़ उग भी नहीं सकी। यही दशा हनीलोकस्ट बाड़ की रही, जिसे अंगूर की बेलों के इर्द-गिर्द लगाया गया था। उन्होंने कुछ सुनहरी रंग के तीतर पक्षी आयात किए थे, वे भी कमजोर होकर मर-खप गए। उन्होंने एक हिरन-पार्क बनाया था। इसके हिरन लगातार निकल भागते रहे। उन्होंने साथ उगे हुए छोटे-छोटे पौधों को भी काट खाया और फिर कुछ साल बाद ऐसी स्थिति हो गई कि उस पार्क को भी समाप्त करना पड़ा। इस प्रकार यह संघर्ष निरन्तर चलता रहा और उन्हें निरुत्साहित करता रहा, मानो जिस भगवान् को वे कभी-कभी याद कर लिया करते थे, वह नहीं चाहता था कि जार्ज वाशिंगटन उस स्थान में स्थायी-रूप से अपनी रिहायश रखें। यदि उन्हें एक सुयोग्य उत्तराधिकारी भी मिल जाता या कोई निष्ठावान (तथा महंगा) प्रबन्धक होता, तो भी माऊंटवर्नन अन्ततोगत्वा आस-पास वाली उजाड़ भूमि अथवा कृत्रिम समाधि से अधिक अच्छी हालत में न हो सकता।

संयुक्त-राज्य अमेरिका में पश्चिमी भू-भागों का समावेश होता जा रहा था। वहां भी वाशिंगटन महोदय कोई जादू न कर सके। उनके वहां विस्तृत-भू-भाग थे, किन्तु अपने मरने से कई वर्ष पूर्व उन्हें यह निश्चय हो गया था कि ये पश्चिमी-भू-भाग आमदनी की अपेक्षा अधिक कष्टदायक हैं। क्या आप जानते हैं कि पोटोमैक कम्पनी का क्या हुआ, जिसने इस नदी को नाव्य करके एलघनी के पश्चिम की ओर यातायात की योजना बनाई थी? वाशिंगटन ने इस परियोजना पर अपनी पूरी ताकत लगा दी थी और इसलिए वह इस पर बहुत आशाएं बांधे हुए थे। वर्जीनिया की संविधान-सभा को भी विश्वास था कि इसके परिणाम ऐसे अच्छे होंगे जो

वाशिंगटन महोदय की कीर्ति के 'स्थायी स्मारक के रूप में' नजर आएंगे।' शोक कि उनकी मृत्यु से पूर्व ही यह कम्पनी दुरावस्था में हो गई। तीस साल पश्चात् इसका दिवाला निकल गया। यद्यपि चैसापीक तथा ओहियो कैनाल के प्रवर्त्तकों ने पुरानी पोटोमैक कम्पनी को अपने में शामिल कर लिया और यह योजना बनाई कि वाशिंगटन डी० सी० को पिट्स वर्ग के साथ मिला दिया जाए, तथापि वे १८५० तक एलघनीज की तराई से कम्बरलैण्ड से आगे नहीं बढ़ सके। जार्ज वाशिंटन बहुत पहले १७५३ में इसी स्थान में सर्वप्रथम गए थे (जब इसे विल्जक्रीक कह कर पुकारा जाता था) उस समय वह गवर्नर डिनविड्डी के आदेशानुसार अपना प्रथमतम दायित्व निभाने के हेतु वहां गये थे। इस सम्बन्ध में 'खोदा पहाड़ और निकली चुहिया' वाली बात सार्थक हुई।

यही बात उनके और साहसिक कार्यों के बारे में कही जा सकती है। उनकी असफलताओं का कारण यह नहीं था कि उन्होंने योजनाएं ठीक प्रकार नहीं बनाईं; अपितु उनमें सफलता पाना वाशिंगटन के भाग्य में बदा नहीं था। उदाहरणार्थ, वाशिंगटन इस बात में दिलचस्पी रखते थे कि कोलम्बिया के जिले में एक राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय की स्थापना की जाए। वे सच्चे दिल से इसे चाहते थे और उनकी योजना सराहनीय थी। उनका यह उद्देश्य था कि संयुक्त-राज्य अमेरिका के कोने २ से युवकों को एकत्रित किया जाए। उन्होंने अपनी वसीयत में से इस विश्व-विद्यालय के लिए पोटोमैक कम्पनी के ५० भाग निर्धारित कर दिए, किन्तु कई एक कारणों से उनके वसीयतनामे की यह अनुधारा अमल में नहीं आ सकी। जहां तक उनके फैडरलिस्ट दल के साथ सम्बन्धों की बात थी—जिन सम्बन्धों को उन्होंने अन्तिम रूप में अभिस्वीकार कर लिया था—उसी दल को उनकी मृत्यु के थोड़े समय बाद करारी हार मिली और फिर कभी उसे राष्ट्रपति-पद नहीं मिल सका। वस्तुतः यह दल एक राजनैतिक शक्ति के रूप में रह ही नहीं सका, बल्कि विघटित हो गया। इस विघटन के परिणाम-स्वरूप कुछ वर्षों तक

उनकी अपनी कीर्ति को भी धक्का लगा। जब नई शताब्दी का आरम्भ हुआ, तो पहली दशाब्दी में ही वाशिंगटन 'स्मारक' धराशायी होता हुआ प्रतीत हुआ। उनके समकालीन लोग सम्भवतः यह सब कुछ आंकने की स्थिति में नहीं थे, (जैसे कि वह इस काबिल नहीं थे कि उनकी अभिकल्पित विशाल सम्पति की सीमाओं को जांच सकें)। इन से भी अधिक एक और मनो-वेदना है जो समय-गमन के साथ ज्यादा स्पष्ट होती चली गई। यह मनो-वेदना संयुक्त-राज्य अमेरिका में वीर-अधिनायक के रूप में, विशेषतः राष्ट्रपति के तौर पर दायित्व निभाते हुए विद्यमान रहती है। उदाहरणार्थ, यदि उनका व्यक्तित्व अपेक्षतया कम 'शास्त्रीय' होता, अथवा उनके स्थान में कोई और व्यक्ति अमेरिका का राष्ट्रपति होता, तो यह नहीं कहा जा सकता कि ढांचा इससे भिन्न अथवा इस प्रकार का होता। जहां तक आवश्यक तत्त्वों का सम्बन्ध है, दर असल यह वाशिंगटन ही थे, जिन्होंने अनजाने में इस ढांचे को जमाया था। जब उनका द्वितीय प्रशासन समाप्त होने को आया, तो राष्ट्रपति के पद को एक निश्चित स्वरूप मिला। यद्यपि उस समय भी इस में अस्पष्टता और परस्पर-विरोध की बातें थीं, किन्तु इसमें स्थायित्व था। राष्ट्रपति का यह स्वरूप सम्राट् और प्रधान-मन्त्री अथवा दल प्रमुख और पिता के बीच का था। राष्ट्रपति सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में होते हुए भी जनता का प्रतिनिधि था। एक ओर तो यह डेल्फी के अनन्त-कालिक भविष्यवक्ता के समान था, जिसकी वाणी सदा के लिए स्थायी रूप से रहने वाली हुआ करती है और दूसरी तरफ वह एक भूलें करने वाला इन्सान था, जिसे दुर्वचनों का तुरन्त और प्रलोभी निशाना बनाया जा सकता है। (हम फिलिप फ्रैनो जैसे को कवि वाशिंगटन के साथ दोनों प्रकार का व्यवहार करते हुए पाते हैं)।

इस प्रकार का शिष्टाचार रखते हुए सम्भवतः वाशिंगटन ने अपनी कठिनाइयों को बढ़ा लिया। (यदि उनका यह प्रस्ताव कि वह अवैतनिक रूप से सेवा करेंगे, कांग्रेस मान लेती, तो उनकी

विपदाएं बढ़ जातीं)। शायद उस समय जबकि उनके राष्ट्र-पिता पद की अवधि समाप्त होने वाली थी, वह अमेरिका के भविष्य का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व करने में असफल रहे थे, यद्यपि वह इसके अतीत और वर्तमान के सुन्दर प्रतीक थे। अभी उन्नीसवीं शताब्दी में अन्य प्रकार के वीर-पुरुष आने थे। उनमें से एण्ड्र्यो जैक्सन सन् १७९६ में एक अपरिपक्व कांग्रेस सदस्य था। उसका छोटा सा ग्यारह सदस्यीय, मुट्ठी में आ सकने वाला, अल्पसंख्यक दल था, जिसने कार्य-निवृत्त होने वाले राष्ट्रपति को दी जाने वाली कांग्रेस सदस्यों द्वारा विदाई-श्रद्धांजलि का विरोध किया था। 'जैक्सोनियन' युग में, जिसमें साधारण मानव को महत्व दिया जाता रहा, वाशिंगटन में पाये जाने वाले गुणों से भिन्न गुणों को अधिमानता दी गई।

इतना श्रेष्ठ और गुण-सम्पन्न होने पर भी वाशिंगटन से कार्य-चतुरता सम्बन्धी भूलों का हो जाना और किसी न किसी को नाराज कर देना स्वाभाविक था। मनुष्य हर एक को खुश नहीं कर सकता। इससे विपरीत उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वह ऐसा कर सकेंगे। यदि उनका व्यवहार गणतान्त्रिक जनरल के समान अधिक और तथाकथित पूर्वी सम्राट् के तौर पर कम होता, तो भी लोग उनका अनादर करते। वस्तुतः उस दशा में परिणाम संयुक्त-राज्य अमेरिका के लिए विनाशकारी होता।

आज राष्ट्र-पति की कार्य-सम्बन्धी धारणा, संक्षेप में, विचित्र व अशिष्ट-उत्कृष्ट प्रकार की है। एक तरफ यह गम्भीरता का तकाजा करती है और दूसरी तरफ दुर्वचन जैसे व्यवहार को निमन्त्रित करती है। राष्ट्रपति करीब-करीब उन आदिम बादशाहों में से है जिनका उल्लेख फ्रेजर ने अपनी पुस्तक 'गोल्डन बो' में किया है। यह बादशाह ऐसे थे जो आन और शान से तब तक हकूमत करते रहते थे जब तक उनको धार्मिक प्रथा के अनुसार जान से मार नहीं दिया जाता था--(सिवाए अमेरिका के शासकों के जिन्हें अन्तिम रूप से खत्म होने से पहले थोड़ा-थोड़ा करके दारुण कष्टों

को सहना पड़ता है) । किसी की पूजा करने तथा दूसरों को कलंकित
करने की भावनाएं आपस में परस्पर पूरक होती हैं । वाशिंगटन के
लिए अनुपम रूप से कष्टदायक परिस्थिति पैदा हो गई थी, क्योंकि
जब उन्होंने राष्ट्रपति का आसन ग्रहण किया, तो उनकी स्थिति
किसी अन्य अमेरीकी राजनीतिज्ञ से बढ़ कर एक सार्वजनिक वीर-
पुरुष की थी । अमेरिका के राष्ट्रपति से यह अपेक्षा की जाती है—
इसमें वाशिंगटन अपवाद नहीं थे—कि वह अपने शासन की अवधि
में चमत्कार-पूर्ण समझ-बूझ और दूर-दर्शिता प्रदर्शित करेगा । उससे
यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह एक साधारण मनुष्य की तरह
होगा । उसे विचित्र-रूप से क्षति पहुंचाए जाने योग्य बना कर छोड़
दिया जाता है । उससे हर प्रकार की अपेक्षाएं की जाती हैं । उसे
कोई ठोस चीज दी नहीं जाती, सिवाए उधार पर—न उसे उपाधियां
मिलती हैं, न मकान और न ही साज-सज्जा । वह अपने राष्ट्र के
लिए करीब-करीब जीती-जागती कुर्बानी है । जान एडम्ज की
वाशिंगटन पर अविनीत टिप्पणियां यहां महत्त्वपूर्ण हैं । वह प्रति-
पादित करता है कि यह वाशिंगटन की अहंकारी भावना थी कि
जिसके कारण उन्होंने अवैतनिक-रूप से सेवा करने का इरादा किया
और यह उनके लिए वैसे ही गलत बात है कि वह आठ साल तक
प्रधान सेना-पति का पद सम्भाले रखने के बाद कार्य-निवृत्ति की
मांग करें । (उसने यह उस समय लिखा जब अभी वाशिंगटन
राष्ट्रपति नहीं बने थे) ।

एडम्ज लिखता है:—

'अधिक समझदारी और पवित्र भावना के समयों में कभी
वाशिंगटन ऐसा न करते, क्योंकि यह भी एक महत्त्वाकांक्षा है । वह
अब भी सन्तुष्ट होंगे, अगर उन्हें वर्जीनिया का गवर्नर, कांग्रेस का
अध्यक्ष, सैनेट का अथवा प्रतिनिधि-सदन का सदस्य बना
दिया जाय ।'

स्पष्ट रूप में, एडम्ज के विचार में वाशिंगटन के लिए उप-
युक्त मार्ग यह था कि वे अपने पद पर आसीन रहते हुए अपना

काम चलाते जाते, उस दैवी-घोड़े के समान जिसे काम पर जोत दिया गया हो। इस प्रकार की सद्भावना के लिए बदले में कोई चीज नहीं और यदि है तो अधिकतर मरने के बाद ही प्राप्त हो सकती है।

हम अक्सर यह सोचा करते हैं कि अमरीकी दृष्टिकोण व्यवसायी और भौतिक है। इसमें शक नहीं कि अंशतः ऐसा ही है (और वास्तव में वाशिंगटन की मनोवृत्ति भी ऐसी थी)। किन्तु जब हम इस दृष्टिकोण का मुकाबला गहरे, दूर-दर्शी और सांसारिक ब्रिटेन-वासियों से करते हैं जिनसे कि अमेरिका वालों के दृष्टिकोण का उद्भव हुआ, तो हमें यह विस्मयकारी रूप से पतला, बिखरा हुआ और रोमान्स-पूर्ण लगता है। होरेशो नैलसन जो रीयर एडमिरल थे, एक दिन चत्राकीर खाड़ी की लड़ाई से कुछ पहले जब रात का खाना खा कर उठे, तो उन्होंने अपना मुंह पोंछा और भविष्यवाणी की, "मैं कल इसी समय से पूर्व या तो लार्ड की उपाधि प्राप्त कर लूंगा या वैस्टमिन्स्टर ऐबे में पहुँचा दिया जाऊंगा।' उसका अनुमान बिल्कुल सही था, क्योंकि इसके आधार में ब्रिटेन देश के समाज की वास्तविकताएं थीं। नैलसन ने लड़ाई जीत ली। उस विजयी को उपयुक्त रीति से 'नील के बैरन नैलसन' की उपाधि मिली। इतना ही नहीं, ब्रिटिश पार्लियामैण्ट ने उसे २००० पौण्ड वार्षिक पैन्शन के रूप में दिए और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने उसे १०००० पौण्ड का बोनस दिया। नेपल्स के बादशाह ने उसे ड्यूक की पदवी दी, जिसकी वार्षिक आय तीन हजार पौण्ड थी और बाद में उसका विवाह भोग-विलास की शौकीन लेडी हैमिल्टन से हुआ। यह सत्य है कि जब वह ट्रेफालगर पर मारा गया, तो उसे वेस्टमिनस्टर में दफनाया नहीं गया, बल्कि उसकी बजाय उसी भव्यता के साथ सैन्ट पोल के मुख्य गिर्जाघर में दफना दिया गया।

वाशिंगटन के भाग्य का मुकाबला नैल्सन से कीजिए। उसके विपरीत वाशिंगटन अकेले में और अपने सैनिक संघर्षों में कष्ट भोगते हैं। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वह असम्भव अनुपातों

में सतर्कता, अखड़पन और विनीतता को मिलाएंगे। प्रमुख कार्य-पालक होने के नाते भी उन्हीं कारणों से वह अकेले हैं और दुःख पा रहे हैं। उनके पथ-प्रदर्शन के लिए कोई पूर्वोदाहरण नहीं है (यद्यपि अपने उत्तरदायित्वों की अत्यन्त कठोरता के कारण वह उच्चासीन हैं, जैसा कि प्रायः अमरीकी नेता हुआ करते हैं)। वह एक प्रकार से भव्यता-पूर्ण अनाथ बच्चे हैं जिन्हें एक अनाथ और शिशु समान राष्ट्र का प्रमुख बना दिया गया है। वह इस कठिन परीक्षा से जिन्दा बच निकले हैं क्योंकि उन्होंने इसका साम्मुख्य अधिकतम शान्तिमय प्रतिष्ठा और न्यूनतम सिद्धान्तवाद और अन्तर्दृष्टि से किया। अपनी सेवाओं का इनाम नैलसन को पर्याप्त और वास्तविक रूप में मिला, वाशिंगटन को जो इनाम मिला, वह महज आलंकारिक था। उन्हें अपने वक्ष पर लगाने के लिए चमकते हुए तारे भी नहीं दिए गए, क्योंकि उनके देश-वासियों की नजरों में सिनसिनेटी के चिन्ह को भी लगाना अविवेक-पूर्ण बात थी। वाशिंगटन को सम्बोधित करते हुए किसी उपाधि का प्रयोग भी नहीं किया जाता था। नैलसन के लिए जहां 'वाईकाउंट' 'ड्यूक आफ ब्रान्टे' का प्रयोग होता था, वहां वाशिंगटन के लिए सादा सम्बोधन था—राष्ट्रपति महोदय। नैलसन की गाड़ी पर गौरवांक चित्रित किए गए, किन्तु बाद के राष्ट्रपतियों के लिए यह चीज भी हास्यास्पद मानी गई। राष्ट्रपति का सिर सिक्कों पर तब तक नहीं अंकित हो सकता था, जब तक वह आराम और सुरक्षित रूप से मर न जाएं। निस्सन्देह जैसा कि वाशिंगटन समझते थे, यह तरुण गणतन्त्र राज्य के लिए विवेकपूर्ण निश्चय थे, क्योंकि ऐसा न होने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकते थे। निस्सन्देह किसी कार्य-पालक पद के लिए सर्वोत्कृष्ट बात यह थी कि उसे यथासम्भव अनाकर्षक बनाया जाय, क्योंकि मानव स्वभाव प्रलोभनों में फंसने वाला और महत्वाकांक्षी होता है। किन्तु यह कितना अल्पव्ययी और अरुचिकर लगता है। कितना कृपणतापूर्ण। कांग्रेस ने उनकी अश्वारोही-मूर्ति को, जिसे प्रस्ताव के रूप में सन् १७८३ में पारित किया गया था, कहीं १८६० में जाकर स्था-

पित और अनावृत्त किया। वाशिंगटन महोदय के विशाल, दैत्याकार स्मारक को, बहुत वाद-विवाद और झगड़ों के बाद १८८५ में पूरा करके समर्पित किया गया—अर्थात् जिस महानुभाव की स्मृति को यह ताजा करता है उसके मरने के ८७ साल पीछे।*

माऊंट वर्नन की क्या दुरवस्था हुई? इसकी भूमि सूर्य की तेज धूप से मरुस्थल सी बन गई। वर्षा उस प्रासाद के इर्द-गिर्द खेतों को खा-खाकर उनमें नालियां बनाती चली गई। गर्म हवाओं के कारण सजावट के पेड़ और पौधे सूखते और मरते रहे। बेकार की घास और पत्तियां वहां ढेरों मे उगती रहीं।† माऊंट वर्नन उत्तराधिकार में भतीजे को मिला, फिर भतीजे के भतीजे को। वे योग्य आदमी थे, किन्तु कौड़ी-कौड़ी के मोहताज। अन्त में उन्हें कांग्रेस ने नहीं बचाया, बल्कि उनकी जान बची, तो माऊंट वर्नन की महिला-समिति की निजी कोशिशों द्वारा तथा उन लोगों की वजह से जिन्होंने सुन्दर-भाषण देकर उनके लिए रुपया-पैसा एकत्रित किया। क्या यह विकृत नाटक एमर्सन की 'हमात्रेय' कविता की इन पंक्तियों की याद नहीं दिलाता?

---

* वाशिंगटन की माता सन् १७८९ में मरी। उनकी कब्र जो फ्रैड्रिक्सबर्ग में थी, सन् १८३३ तक बिना किसी नाम-चिन्ह के रही। तब ५० फुट के स्तूप की योजना बनी, जिसे सन् १८९४ में जाकर कहीं पूरा किया गया।

† हमें यहां यह जोड़ना चाहिए कि इसकी दशा जैफर्सन के माऊंटीसैलो से कहीं अधिक अच्छी थी, जबकि सन् १८३९ में अर्थात् जब उसके मरने के १३ वर्ष उपरान्त एक मुलाकाती वहां पहुंचा। वह लिखता है—'मैंने अपने चारों तरफ उजाड़ ही उजाड़ देखा। छज्जा टूटी-फूटी हालत में था; कुटीर जीर्ण-शीर्ण थी; 'लानों' में हल चलाए गए थे और इटली से आए हुए कलश मिट्टी में पड़े थे। इन के बीच में जानवर घूम-फिर रहे थे। वह स्थान उस महापुरुष और उसके परिवार की सम्पत्ति की बरबादी का सही प्रतिनिधित्व कर रहा था—बहुत कठिनाई से मैं उस समय अपने आंसू रोक सका और मेरे मुंह से अकस्मात् निकला—'मानवीय महत्ता क्या है?' (मार्गरिट बी० स्मिथ द्वारा लिखित—'वाशिंगटन सोसायटी के प्रथम ४० वर्ष'—न्यूयार्क, १९०६, पृष्ठ ३८२–३८३)।

'यह भूमि है,
जो वनों से ढकी है,
इसकी प्राचीन घाटी हैं,
उभरे हुए टीले हैं और यहां बाढ़ें आती हैं,
किन्तु इनके उत्तराधिकारी कहां गए ?
बाढ़ की झाग की तरह उड़ गए हैं।
न वहां वकील रहे और न कानून,
और वहां का राज्य,
उस स्थान से विलुप्त हो गया।'

विजय

क्या सचमुच ऐसा हुआ ? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हुआ। वाशिंगटन के बारे में हम यह नहीं कह सकते। राज्य अब भी वहां मौजूद है, यद्यपि यह गणतन्त्र राज्य है। इस प्रकार उस राज्य के उत्तराधिकारी भी हैं, यद्यपि यह उत्तराधिकारी राष्ट्र के रूप में हैं।

वस्तुत: यह अनुचित मालूम होता है कि कहानी का अन्त हम नीरस शब्दों में करें। जैसा कि शायद हर महापुरुष के जीवन में होता है, वाशिंगटन के जीवन में भी उदासी की गाढ़ी गन्ध लगती है।

उनके व्यक्तित्व में एक प्रकार का तीखापन है, जो दूसरों में आत्मीयता और प्रेम उत्पन्न करने की बजाय भय-मिश्रित आदर की भावना को जन्म देता है और जो ऊष्ण मांस-मज्जा को भी संगमरमर की तरह ठंडा लगने लगता है। कारण यह था कि उनका मिजाज ही इस तरह का बना हुआ था। अमेरिका के लोग भी इस प्रकार की बर्फ की तरह की ठंडी उत्कृष्टता पर बल देते थे। जब आदमी वाशिंगटन के सदृश अपनी खामियों को पहचानने लगता है तो उसे बहुत बड़े दायित्वों को सम्भालना चिंताकुल कर देता है। एक अनन्त रूप से चलने वाले युद्ध, वाद-विवाद तथा संकटमय स्थिति में छलांग लगा देना और विपत्ति की चाकू जैसी तेज धार पर चलना भयोत्पादक बात है।

किन्तु वाशिंगटन के कार्यों का लेखा-जोखा देखने से हमें यह लगता है कि वह बहुत सन्तोषप्रद है। यहां हम एक ऐसे महानुभाव के दर्शन करते हैं, जिन्होंने वह सब कुछ किया जो उनसे करने को कहा गया और जिनकी गम्भीरता में ही उनकी दृढ़ता और शक्ति थी—जिस गम्भीरता को कुछ लोग घातक नीरसता समझते थे। वस्तुतः वे ऐसे महानुभाव थे जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से यह सिद्ध किया कि अमेरिका मानसिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ एवं ठोस है। वे एक अत्युत्तम मानव थे, यद्यपि सन्त नहीं थे। एक सुयोग्य सैनिक थे, यद्यपि महान् सैनिक नहीं थे। एक विवेक-शील परिरक्षक थे, यद्यपि चतुर सुधारक नहीं थे। एक ईमानदार शासक थे, यद्यपि प्रतिभावान् राजनीतिज्ञ नहीं थे। किन्तु कुल मिलाकर एक अलौकिक व्यक्ति थे।

जहां तक उनके निजी जीवन का सम्बन्ध है, उनको यह जान कर सान्त्वना मिल रही थी कि अपने जीवन में अन्त तक उन्होंने सीधा और यशस्वी मार्ग अपनाया। उनको इस बात से भी तसल्ली थी कि उनकी ऐसे घर में मृत्यु हो रही है, जिसे वह संसार के सब स्थानों से अच्छा समझते हैं और जहां उनकी धर्म-पत्नि उनके पास हैं—जिसके साथ उन्होंने वफादारी से चालीस वर्ष बिताए। उनके सार्वजनिक कार्य दूसरी प्रकार से उनके व्यक्तित्व के माप-दण्ड हैं। वह यह जानते हुए मरे कि अमेरिका सही-सलामत था; उन्होंने उसके निर्माण में वैसा ही योग दिया, जैसा किसी और ने; और यद्यपि वह स्वयं संसार छोड़ रहे हैं, परिस्थितियां उनके देश के पक्ष में हैं। उनके इन महान् कार्यों ने इतिहास के अनेक अन्य महान् कार्यों की अपेक्षा अधिक स्थायी प्रभाव डाला।

उनके अकेले का, इन कामों के लिए, कितना श्रेय है—इसे कहना कठिन है। अन्तिम विश्लेषण में यह प्रश्न ही असंगत है। उन्होंने अपने आप को अमेरिका में इतना विलीन कर दिया था कि उनका नाम सम्पूर्ण देश में, वायु के कण-कण में व्याप्त है। वाशिंगटन के जीवनी-लेखक के लिए उन्हें, अनेक कल्पित कहानियों

और उन चित्रों से पृथक् करना बेकार है, जो उन्हें घेरे हुए हैं—उदाहरणार्थ, डाक-टिकटों तथा डालरबिल पर अंकित उनका मुख, जो इतना परिचित हो गया है कि कोई उसे देखता तक नहीं, प्रसंधान-मोहर पर अंकित घुड़-सवार, एण्ड्रयू-जैक्सन का राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के तौर पर (अपनी पुरानी आपत्तियों को भूलते हुए) 'दूसरे वाशिंगटन के रूप में' इधर-उधर भागना, चेरी पेड़, हल जोतने वाला सिनसिनेटस, डिलावेयर की कष्ट दायक बर्फ, मोनोनगहेला पर काल्पनिक इण्डियन सरदार, जिसने घोषणा की थी कि कोई मनुष्य जार्ज वाशिंगटन को अपनी गोली का निशाना नहीं बना सकता, इत्यादि। सचमुच उन्हें कोई मार नहीं सकता। कारण कि वह स्मारक हैं और वह स्मारक अमेरिका है।